अनुक्रमणिका.

पृष्ठांक विषय.

उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालमहात्म्यग्रंथनी अनुक्रमणीका.





श्री जैन तीर्थ निर्णय.

॥ दुहा ॥

नमुं वीर जीनेंद्रने, तीरथ वर्तक सार;
दिये देशना त्रिपदी, ग्रहे गुण गणधार. १
लब्धि क्षयोपशम नाणथी, स्वन्नाव न्नानु प्रकाश;
महुरतमां द्वादश रचे, सूत्र पूर्ण उल्लास. २
नयो द्रव्य पर्यायनुं, ज्ञान अति गंन्नीर;
स्वयंन्नू रमण समुद्रनो, पार लहे थइ धीर. ३
संघ चतुर्विध तीरथनुं, स्थापन त्यां कहेवाय;
जैन तीरथ निर्णयतणो, न्नाषा ग्रंथ लखाय. ४
अल्प बुद्धि में आदर्यो, देजो न्नारती साह्य;
जीन वाणि निरंतरे, प्रणमुं धरि उछाह. ५

जैन तीर्थ कहेतां साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध संघ ते सर्वे आत्म सत्ताना ग्राहक छे. परंतु आत्मसत्ता ग्राहकमां आवती नथी तेनुं कारण ए छे के अनादि संबंधे आत्मसत्ता कर्मे करीने अवराइ गइ छे. दवाइ गइ छे. ने उदय जोगे हणाइ गइ छे. ते कर्म प्रकृतिना मूळ आठ न्नेद छे. तेमां चार घाती छे. ते आत्माना गुणनी घात कर्ता छे. ने चार कर्म अघाती छे. ते आत्माने शुन्नाशुन्न

सुख दुःख दाता छे जे घाती कर्म छे. तेमां ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी ने अंतराय ए त्रण कर्मनो क्षय उपशम थाय छे. वळी क्षय पण थाय छे. ने चोथुं मोहनी कर्म छे, तेनो क्षय उपशम थाय छे, उपशम थाय छे, ने क्षय पण थाय छे ए क्षय उपसमादी भेदो कह्या ते जोगे श्रावकनो ने संजतीनो धर्म संपजे, ते विना न लाधे तेमां क्षय उपसमना वे भेद, एक अज्ञान जोगनो ने अज्ञान जोगनीश्रानो वीजो ज्ञान जोगनो ने ज्ञान जोगनी श्रानो, हवे अज्ञान जोगनो क्षय उपसम तेना त्रण भेद, मती अज्ञाननो, श्रुत अज्ञाननो ने वीभंग ज्ञाननो, ए त्रण भेदो अज्ञानना क्षय उपसमना कह्या ते मीथ्यात्वी देवता नारकीने तो गती प्रत्ये त्रणे भेदो लाधे छे, ने मनुष्य, तीर्यंचने गती प्रत्ये प्रथमना वे भेदो लाधे छे, परंतु अज्ञाननो क्षय उपसम पण वीचीत्र प्रकारे छे, ए जोगे वृद्धी पामे, उत्कृष्टता पामे, तो मनुष्यना भवमां केइक उरसुत्र अज्ञापकपणा सुद्धी पहोंचे छे. वळी तेहेन दीपक समकीत पण कह्युं छे, गती आश्रीने देवगतीए, नवमा ग्रीवेके, जघन्य त्रीस ने उत्कृष्ट एकत्रीस सागरोपमना आयुष्यनी त्यां स्थीती छे. ते स्थीतीनो वीभागी ग्राहक थाय छे, वळी भव्य जीवने वोध वीजनी प्रातिनो जावत् मोक्षनो हेतु थाय छे, एटला सुधी अज्ञान जोग ने अज्ञान जोग नीश्राए, एटले अज्ञान जोगने दीपक समकीतनी द्रव्य चारीत्रनी, तपनी नीश्रा छे, ते नीश्राए वृद्धी पामतां अभवी पण आवे छे, यथा प्रव-

तींकरण सुधी आवे. साते कर्मनी स्थीती अधीकताने छेदी एक कोमा कोमी सागरोपमनी राखे त्यां सुधी पोंचे. परंतु उपर अज्ञान जोगनी उत्कृष्टता कही छे तेमां एक अंशे उंगाश छे ते कहुं छुं अपूर्व करण जे वीजुं त्यां पण अज्ञान जोग कहेवाय कारण के ग्रंथी नेद न थयो त्यां सुधी अज्ञान जोग छे. ग्रंथी नेद थयां समकीत कहीए त्यां ज्ञान जोग कहीए ते ग्रंथी नेद बीजा करण अंते थाय छे ने समकीत त्रीजा अनीवरती करणे प्राप्त छे.

यतः कह्युं छे के—

, जागंठीतापढमं गंठिं समइ च्छनेववीअं।
अनिअट्टिकरणंपुण सम्मत्तपुरखमे जीवे॥१॥

परंतु वीजा अपूर्व करणे कोण आवे छे के जे शुक्ल पक्षीउं जीव छे ने संसार स्थीती अर्ध·पुदगल परावर्तननी मांहली कोरे रही छे अधीक नथी ते आवे छे. वीजा न आवे एम छे ए अज्ञान जोगने अज्ञान जोग नीश्रानो क्षय उपसम उतकृष्ट न्नागे कह्यो ते आत्म हेतु नथी. पुदगलीक सुख हेतु छे. एटले पून्य वंधनो हेतु छे ने क्षय उपसमनी हानी ते दुःख हेतु एटले पापबंध हेतु छे.

गाथाः—

विरयासावज्जाउ कसायहीणामहाव्वयधरावि
सम्मदिठ्ठीविहूणा कयाविमुक्कं न पावंति. १

हवे ज्ञान जोग कहुं छुं ज्ञानावरणीना क्षय उपसम जोगे ग्रंथीभेद थयो चोथा गुणठाणाथी ज्ञान जोग कहीए ए क्षय उपसम भावे ज्ञान जोगना चार भेद. मतीज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधी ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान ए चार भेदो कह्या. तेमां प्रथमना त्रण भेद समकीती देवता नारकीने गती प्रत्ये लाधे छे. ने समकिती मनुष्य त्रीयंच सन्नीने प्रथमना बे भेद गती प्रत्ये लाधे छे ने उपरना भेद केइकने गुण प्रत्ये लाधे ए भेद कह्या. तेमां प्रथम मती ज्ञानना अठा-वीस भेद कहुं छुं. मती कहेतां बुद्धी एटले जाणवारूप प्रकाश शक्ती ते आत्मानो सद्भाव छे परंतु कर्मबंध आ वर्णे करीने उदय जोगे आभी भींत समान प्रकाश शक्ती हणाइ गइ छे ते पोते पोताथी जाणी न शके माटे क्षय उ-पसमनी साजे भींतमां जाळी बारी फांकां पराय अजवाळुं करतां आत्माने पांच इंद्रीने छठुं नोइंद्री जे मन ते जाण-वाने नीमीत कारण छे. ते नीमीतनी नीश्रायें वंजनावग्रह अर्थावग्रह, इहावग्रह, अपायावग्रह ने धारणावग्रह ए पांच भेदो कह्या. तेनो अर्थ कहुं छुं. वंजना ते फरसइंद्री, रस-इंद्री, घ्राण इंद्री ने श्रोत इंद्री ए चार इंद्रीउ कही तेमां श्रोत इंद्री ते कानमें शब्द आवीने पडे छे घ्राण इंद्रीमें गंध आवीने पडे छे, रस इंद्री ते जीभमां रस पडे छे, फ-रस इंद्री ते त्वचा तेमां फरस पडे छे. ए चार इंद्री छे, ते प्राप्यकारी छे, ने चक्षु ने मन ए बे अप्राप्यकारी छे माटे तेमां वंजनपणानो असंभव छे. ने बाकीनी चार इंद्री उपर

कही ते प्रमाणे तेमां वंजनपणुं लाधे माटे प्रथम वंजनना चार भेद अवक्तव्यपणे थया हवे बीजो भेद अर्थाअवग्रह कहुं छुं ते वक्तव्यपणे जाणयुं जे मने फरस थयो, स्वाद लाग्यो, गंध आवे छे, शब्द सांभळीए छीए ए चार ने पांचमो चक्षुथी देखे ने छगे चींतवणा ए मनमां जाणीए ए छ भेद अर्थावग्रहना कह्या. एटले दश भेद थया हवे इहा अवग्रह त्रीजो भेद कहुं छुं इहा एटले वीचारणा शक्ती तेने इहा कहीए ते वीचारे जे फरस तो थयो पण शेनो फरस छे उंदरनो छे के सर्पनो छे वळी स्वाद तो लाग्यो पण खारो छे वा खाटो छे के मधुरो छे. वळी मधुरो तो खरो पण द-राखनो छे वा साकरनो छे वळी गंध आवे छे ते सुरभी छे के दुरभी छे सुरभी छे तो चंपानो के केवडानो छे वळी च-क्षुए देखीए छीए ते मनुष्य छे वा तीर्यंच छे के वंठं वाजरी आवे छे वळी शब्द सांभळीए छीए ते सर्प बोले छे के होलो बोले छे. वली मनसु वीचारे के एम तो नही पण आम छे, ए छ भेदे इंद्रीनो इंद्रीना वीषयनी वीचा-रणा गवेखणा करवी तेनुं नाम इहा कहीए ते इहानो छ भेद भेगा करतां सोल भेद थया हवे चोथो अपायाअवग्रह कहुं छुं अपाया एटले नीश्चय कर्यो के आ सुंवाळो फरस ते सर्पादीकनो छे. ने उष्ण फरस ते अग्नीनो छे. वा खारु ते लूण छे ने तीखां ते मरचां छे वळी जे सुगंधी आवे छे. ते अमूक वस्तुनी छे, वली देखीए छीए ते कीकी छे वा कं-थवो छे. सांभळीए छीए ते शब्द नगारानो छे वा सारंगीनो

ठे वली मनसुं नीश्चय कर्यो के आ वात आमज ठे ए ठ भेद अपायावगृहना कह्या ते भेगा करतां वावीस भेद थया हवे पांचमो अवग्रह धारणा ठे, ते जे ए ठ भेदे वस्तुनुं जाणपणुं थयुं ते घणा काले पण भूले नही. काम पमे क्षय उपसम पूर्वक संख्यातः असंख्यात काळ सुधी यादी रहे ठे, ए धारणाना ठ भेद भेगा करतां मती ज्ञानना अठावीस भेद थाय, ते गवेखीने कह्या. सो अठावीस भेदोना प्रत्येके एक एक भेदना वहुं, अवहुं, वहुवीध, अवहुवीधादी, वार वार भेदो थाय ठे ते कहुंतुं. वहुश्रुत गीतारथनी देशना सांभलवा अनेक भाइर्ड वाइर्ड आवे ठे, गीतारथ महा मुनी करूणाना सागर भव्य जीवने तारवानी बुद्धिए नय गर्भीत वचनो वरसावता ठता मेघाभंवर नाद धुनीए गाजता थका उपदेस करे ठे, भव्य जीवोनो समुदाय सांभळे ठे ते मधे क्षयो पसमनी वीचीत्रताए करी केइ एक जीव घणा शब्द ग्रहे, ते पहेलो भेद वहु, ने केइ एक जीव थोमा शब्द ग्रहे ते वीजो भेद, अवहुं केइ एक जीव एक एक शब्दना परमार्थने स्यादवाद पक्षनी अने कांततताने जाणे ते त्रीजु वहुंवीध केइ एक जीव थोमा भेद शब्दार्थ पुर्वक जाणे ते चोथु अवहुवीध केइ-एक जीव वचन श्रवण थतांज भावार्थने समजे, ते पांचमुं क्षीप्र, कइएक जीव हेतु दृष्टांते समजाव्यां समजे, ते ठठुं अक्षीप्र, कइएक जीव उच्चारणनी पटुता दि जोइने उपदेश कर्ताने पंमीत माने ते सातमु सलींग, कइएक जीव पुर्वा-

पर अवीरोधीपणु वस्तुगते वस्तुपणानी प्ररुपणा नय नय पक्षे जीन्न जीन्न अपेक्षा हेय ते हेय, उपादेय ते उपादेय, साधक ते साधक, बाधक ते बाधक, नीर्जरानुं कारण ते संवर, ने बंधनुं कारण ते आश्रव, सकाम नीजरा ते मोक्षनुं कारण, ने बंध ते न्नवज्रमण एम यथास्थीत बोध उपयोगीक न्नाव जोइने वचननी पटुतानी अपेक्षाने राखतां उपदेश कर्ताने पंरीत माने ते आठमो न्नेद अर्लींग, केइएक जीव उत्तर प्रती उतरे संकाने ठेदे नही असंकीत थाय नही थीर न्नावे श्रधा करे नही ते नवमुं, संदीग्ध, केइएक जीव संका संदेहनी पुच्छा करी टाळी असंकीत थइ, थीर न्नावे श्रधा करे ते दशमुं असंदीग्ध, केइएक जीवने गुरुराए एकवार कह्युं ते ज्रुले नही ते अगीयारमुं ध्रुव, केइएक जीवने रोज शीखामण देवी पमे ते वारमुं अध्रुव ए बारे बोलने पुर्वोक्त अगावीस न्नेदोथी गुणाकार करतां त्रणसोने बत्रीस न्नेद मती ज्ञानना थया. इत्यादि मति ज्ञानना घणा न्नेदो ठे. परतु ए न्नेदो कह्या ते श्रुतनीश्रीत जाणवा, कारण के श्रुत ज्ञानना चउद अथवा वीस न्नेद कहीएठीए ते द्रव्य थी उत्पत्ती आदी आश्रीने ठे, हवे मती ज्ञान ठे ते श्रुत ज्ञाननुं कारण ठे ने न्नाव श्रुत ठे ते मती ज्ञाननुं कार्य ठे तथा मती ते नीरक्षर ठे, ने श्रुत ते साक्षर ठे, नीरक्षर ते उच्चारण, जे बोलवु वचननुं प्रवर्तावबु तेना अन्नावे नीरक्षर कहीए, ने वचन प्रवृती जोगे साक्षर कहीए, ते वचन प्रवृती मती ज्ञानादी मे नही ठे ए शकित तो श्रुत ज्ञा-

न मां छे, परंतु मतीना अन्नावे श्रुत ज्ञानादी न्नेदो कोइ जीव पामेज नही ते कारणे मती ज्ञान मुख्य छे, परतु श्रुत वीना मती ज्ञानादी जे न्नेदो छे ते स्व अपेक्षीज हेतु छे, पर एटल वीजा न्नाइर्ड वाइर्डने उपगार न करी शके परने उपगार करवामां तो श्रुत ज्ञान वचन जोगे प्रवर्तावी योग्य जीवने हठ कदाग्रहथी मुक्त करी तत्व, अतत्वनो न्नेद जणावी सरलता मेलावी असंकीत करी, अज्ञात पणु नी· वारी, सम्यक संवेगे ज्ञान सम्यक संवेगे दर्शन जे समकीत ते पमाने एटले ग्रंथी न्नेद करवानी शक्ति पामवी तेनो हतुं थाय, ए उपगारनी वरोवरीमां वीजा घणा उपगार करीए ते ना आवे ए शक्ति श्रुत ज्ञानमां वचन जोगे छे, माटे श्रुत ज्ञान छे ते स्वपर अपेक्षी हतुं छे, ते कारणे श्रुत ज्ञान मुख्य छे हवे श्रुत ज्ञानना चौद न्नेद कहे छेःतमां प्रथम अक्षर श्रुतना त्रण न्नेदः संज्ञाक्षरः व्यंजनाक्षरः तथा लवध्याक्षर· तेमां संज्ञाक्षर ते अढार प्रकारनी लीपी अक्षरना आकारे करी छे· ए पहेलो न्नेदने वीजो न्नेद व्यंजनाक्षर ते अकार आदि हकार पर्यंत वावन अक्षर मुखे उचारवा रूप जाणवो· ए वन्ने न्नेदो अदपि अज्ञानात्मक छे तथापि श्रुतना कारण होवाथी उपचारें करी तेने श्रुत ज्ञाननी संज्ञा आपी छे हवे त्रीजो न्नेद लवध्याक्षर ते शब्द श्रवण तथा रूप दर्स- नादिक थकी अर्थ परिज्ञान गर्भित जे अक्षरनी उपलब्धि ते लवध्याक्षर ए अक्षर श्रुतना त्रण न्नेद कह्या· वीजुं अ- नक्षर श्रुत तेः सिरकंपन हस्त चालन प्रमुखः समस्याए

करी गमना गमनादिक मनना अभिप्रायनुं परिज्ञान एटले जाणपणु थाय तेने अनक्षर श्रुत कहीए. त्रीजुं संज्ञि श्रुत ते संज्ञा त्रण प्रकारनी छे. दीर्घ कालिकी हेतु वादोपदेसिकी तथा द्रष्टि वादोपदेसिकी हवे तेहनी समज कहे छे अतीत अनागत घणा कालनुं जे चिंतववुं ते दीर्घ कालिकी संज्ञा. संज्ञी पंचेंद्रीने छे, अने जे तात्कालिक इष्ट अनिष्ट वस्तु जाणीने प्रवृति निवृति ते हेतु वादोपदेसिकी संज्ञा विकलेंद्रिय असंज्ञीने छे,अने द्रष्टि वादोपदेसिकी संज्ञा तो क्षयोपसम ज्ञाने करी सम्यक द्रष्टीने कही छे ए संज्ञी श्रुत कह्युं.

हवे चोथो भेद असंज्ञी श्रुत ते इंद्रीयोना प्रयोगे बोध पामे तेने असंज्ञी श्रुत कहीए, पांचमुं समकीत श्रुत ते अनेक कारणथी बोध पामी आत्म स्वरूपनो जाण थइने ग्रंथी भेद करे, तेने समकीत श्रुत कहीए, छठो भेद मीथ्या श्रुत ते अनेक वस्तुने जाणे पण आत्माने न जाणे, न उलखे तेने मीथ्या श्रुत कहीए, सादी श्रुत, ते पांच भरत ने पांच ऐवरत ए दस खेतरमां अवसरपिणी, उत्सरपिणी काले जैनतीर्थे सुत्र सीद्धांत प्रवर्ते एटले प्रथम तीर्थंकरने केवळ ज्ञानादी क्षायक भावनी लब्धी प्राप्त थाय, देव देवेंद्र मली समोवसरणनी रचना करे. तीर्थंकर देव देसना देइ भव्यने बोध बीज पमाडी गणधर आदे चतुर वीधी संघनी थापना करे गणधर देव द्वादसांगी सीद्धांत रचे त्यां श्रुत ज्ञाननी आदी कहीए, ते सातमो भेद

कह्यो, ने आठमो भेद सपर्यवसीत श्रुत ते ए ती रथ जीनेंद्र देवनुं पाट परंपरागत चालतां वीछेद पामे, तीहां ते अवसरे ते काळे सुत्र सीद्धांतनो अंत आवे एटले नाश थाय तेने सपर्यवसीत श्रुत कहीए, नवमो भेद अनादि श्रुत ते पंच महावीदेह क्षेत्रमां अनादी सबंधे अ- वीछेदपणे सदा सर्वदा जैन तीरथ प्रवर्ते छे माटे अनादी श्रुत हवे दशमो भेद अपर्यवसीत श्रुत ते कोइ काळे जैन तीर्थनो वा द्वादसांगी सुत्र सीद्धांतनो महावीदेह क्षेत्रमां वीछेद थयो नथी, थवानो नथी ने आंतरो पडवानो नथी माटे अपर्यवसीत श्रुत कहीए, अगीयारमो भेद गमीक श्रुत एटले सरखा पाठ आलावाए रच्यां छे, बांध्यां छे, द्रष्टी वाद प्रमुख सीद्धांतो ते सुत्रने गमीक श्रुत कहीए, बारमो भेद अगमीक श्रुत ते काळीक सुत्रनी पेरे सरखा आला- वा सरखा पाठ न होय ते सुत्रने अगमीक श्रुत कहीए, तेरमो भेद अंग प्रवीष्ट श्रुतते आचारंगादी द्रष्टीवाद पर्यंत सुत्रने अंग प्रवीष्ट श्रुत कहीए. चउदमो भेद ते अंगबाह्य बार उपांगादी भेद पयन्ना मुळ नंदी अनुयोग आदे सुत्र सीद्धांत तथा ग्रंथ प्रकरणादी सर्वेने अंगबाह्य श्रुत कहीए ए श्रुत ज्ञानना चउद भेद कह्या. हवे अवधि ज्ञान कहुं छुं तेना विशेष अपेक्षाए असंख्याता भेद छे ने संक्षेप छ भेद कह्या छे तेमां पहेलो भेद अनुगामी ते जेने जे स्थानके अवधि ज्ञान उपज्युं छे ते स्थानकने छोडी देश देशांतर ज्यां जाय त्यां पोतानां चर्म चक्षुनी पेठे साथे आवे तेने

अनुगामीक अवधी कहीए बीजो भेद अनानुगामी ते जे ने जे स्थानके अवधी ज्ञान उपज्युं छे. ते स्थानकेज पोताना क्षय उपसम पूर्वक खेत्रनी मरजादा पूर्वक जाणे देखे ने ए खेत्रने छोडी अळगा थाय त्यारे न जाणे न देखे पाछा उत्पति स्थानके आवे त्यारे जाणे देखे एम ए ज्ञान क्षेत्र आश्री प्रत्येक क्षयो उपसमना लीधे घरना दीपकनी पेठे उत्पत्ति स्थानकेज प्रकाश करे बीजे न करे तेने अनानुगामीक अवधी कहीए त्रीजो भेद हीयमान ते क्षयोपसमनी विसुद्धी जोगे अवधी ज्ञान उपजे ते क्षय उपसम बाह्य भाव बाह्य रमण जोगे अवरातो थको हांणी पामे ते कारणे ज्ञान पण हानी पामे तेने हीयमान खीण पामतु अवधी कहीए. चोथो भेदवर्धमान ते अवधी ज्ञान उपज्युं त्यांथीज वर्धी पामे जेम अग्नी सळगी छे तेमां सर्पण नाखता जाइए तेम तेम अग्नी वर्धी पामती जाय छे तेज दृष्टांते अंतंगत अंतर रमण जोगे क्षयो पसम वर्धी पामे छे तेज कारणे ज्ञान पण वर्धीने पामतुं जाय छे तेने वर्धमान अवधी कहीए पांचमो भेद लोका अवधी ते जावत समग्र लोक चउद राज प्रमाण जाणे देखे तेने लोका अवधी कहीए ए पांच भेद कह्या हवे छठो भेद परमा अवधी अप्रतीपाती छे. ते एक अंतर महुर्तेज केवळज्ञान पामे तेने ऊपजे छे ते ज्ञाने समग्र लोकने अलोकमां लोक प्रमाण असंख्याता खंड कल्पव्यापणे जाणे देखेएटली सत्ता मरजादा परमा अवधीज्ञाननी छे परंतु ए ज्ञान पाम्या ते बहुधा उपयोग करता नथी. कारण के श्रे णीगते

आत्मा गुण ठाणाथीज अवधी मन पर्यवनो उपयोग नथी ने एक अंतर महुरतमां तो केवलज्ञान प्रगट करवु छे ते केवळज्ञान तो तदगत भावमे परिणाम पामतां एकत्व शुद्ध स्वरुप अनुभवतां प्रगटे छे. माटे उपयोग तो न करे पण सातमा अपरमतस्थानके उपजे ते आठमे जइ क्षपक श्रेणी मांडी सुकल ध्यान जोगे घातीकर्म हणी केवलज्ञान पामे एम संभवे छे ए अवधी ज्ञानना छ भेद कह्या ए अवधीज्ञानने अवधीदर्शननी नीश्रा छे तेथी ज्ञाने करी जाणे ने दर्शने करी देखे वळी इंद्रीनो इंद्रीआदीकनी अपेक्षा वीना प्रत्यक्ष प्रमाणे स्पष्ट उतकृष्ट भागे असंख्याती उसरपिणी, अवसरपिणी पर्यंत अतीत अनागतकालने जाणे ने देखे छे.

हवे मनपर्यव ज्ञान कहुं छुं. मनपर्यव ज्ञान एक मनुष्यना भवमांज संजतीपदे अप्रमत, सातमा गुणठाणे उपजे छे ते परभवे साथे पण जतु नथी तेना बे भेद ऋजुमतिने वीपूलमती ऋजुमती ते त्रीछुं मनुष्य क्षेत्रमां अढीद्वीप लगे. ने उर्ध जोतशी पर्यंत अधो पहेली रत्नप्रभा नरकना क्षूलक परतर लगे. एम उंचुं नीचुं अढारसो जोजनमां रह्या जे संज्ञी पंचेद्री जीव तेना मनोगत चितवीत भावने जाणे ने वीपूलमती अढी अंगूळ खेत्र अधीक परंतु विशुद्धिपणे विस्तारे जाणे छे. उतकृष्ट भागे एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अतीत अनागत काळने जाणे देखे छे. ए मनपर्यव ज्ञानना बे भेद कह्या एटले क्षय

उपसम नावे, त्रण अज्ञानने चार ज्ञान कह्यां ते ज्ञानमां मतीना अगावीश श्रुतना चौद,अवधीना ठ, मनपर्यवना वे, मळी चार ज्ञानना पचाश नेद कह्या. तेमां जे ज्ञान ठे. ते विशुद्धीपणे यथार्थ, जाणे ठे. ने जे अज्ञान ठे ते मलीन ठे तेथी वीपर्यासपणे अवळाने, सवळु ने सवळाने अवळु एम बहुधातो विप्रीत जाणे ठे ते अज्ञानी पण क्यो ज्ञापसमनी अधीकता पामतां जातीस्मरण. मतीज्ञाननो नेद ठे, ते पामे ठे. ते ज्ञाननी सता उतकृष्ट नांगे अतीत एटले गया कालना संज्ञी पंचेद्रीना संख्याता नव पोताना जाणे ठे. परंतु अवधी दर्शनना अनावे देखे नही. ए क्यो उपसम नावे ज्ञान अज्ञानना नेद समुदाये कह्या. परंतु सर्व जीवने प्रथम अज्ञान मीथ्यात्व होय ठे. तेनो नाश थतां ग्रंथी नेद पूर्वक चोथु गुण ठाणुं पांम्या समकीत कहीए, त्यां ज्ञान कहीए, ते ज्ञान प्राप्तीनो हेतु मतीश्रुत अज्ञाननो क्षय उपसम जातीस्मरण आदे ठे. विनंग नथी ए कारणनी अधीकता पामतां मतीश्रुत आदे ज्ञान पामीए. परंतु केवलज्ञान पामवुं तेनो हेतु कोण ठे तो मतीश्रुत ज्ञान ठे. अवधी मनपर्यव नथी. कारण के केवल ज्ञाननी प्राप्ती श्रेणीगते शुकल ध्यान ध्यातां थाय ठे ने त्यां अवधी मनपर्यव ज्ञाननो उपयोग करतां श्रेणी वा शुकल ध्यान नजीक पण आवतुं नथी. पुठ करे ठे माटे, केवलज्ञान प्रगट करवानु कारण तो मतीश्रुत ज्ञान ठे. ते मतीश्रुत ज्ञानना क्षय उपसमना समुदाये बे नेद एक प्रतीपाती बीजो अप्र-

तीपाती. प्रतीपाती ते ज्ञान जोग वृद्धी पामेलो आवरण उदयागत प्राप्त थये ठते हणइ जाय ने जरुता वृद्धी पामे ते क्षयो पसमने प्रतीपाती कहीए, हवे अप्रतीपाती ते क्षय पसम ज्ञान जोगमां ज्ञानावरणी कर्म प्रकृतीनो क्षय पसम थयेलो ठे एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश ठे. तेमां जे जे आत्म प्रदेशथी, आवरण उदयागत वीपाके प्राप्त थयां तेने क्षयो पसम वले खेरव्यां एटले नीर्जयां ने जे जे आत्म प्रदेशथी उदयागत आवरण प्राप्त न थयां तेने उपसमाव्यां,(एटले दवाव्यां) तेनुज नाम क्षय उपसम ठे त्यां सता ए रहेलां आवरण क्षपक श्रेणीगते भेद ज्ञानती, अनंती शकती आठमा अपूर्व, गुणठाणे पामतां आत्माना सर्व प्रदेशोथी घातीकर्मनां आवरण चलायमान करी मुकयां ठे ते उदयागत प्राप्त थइने सामां आवे तेने पोताना ज्ञान जोगने अवाधा पूर्वक पोते हणे ठे. (नीर्जरे ठे.) एम करतां करतां आत्माना असंख्याता प्रदेशे रहेलां घाती कर्मनां आवरण प्रकृती दल ठेवटे खुटे एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश घाती कर्म रहीत. (नीरावरण थाय) तीहां केवलज्ञान प्रगटे ते केवलज्ञाने द्रव्यथी अरुपीने रुपी, खेत्रथी लोकने अलोक, कालथी, अतित अनागतने, वर्तमान, भावथी उत्पत्ति वीनासने ध्रुवपणे समस्त पदार्थने केवल उपजे तेज समे जाणे तेने केवलज्ञान कहीए, देखे तेने केवल दर्शन कहीए ते केवलज्ञान, केवल दर्शनती प्राप्तीनो हेतु क्षय उपसमभावनो अप्रतीपाती मतीश्रुत ज्ञान जोग उपर कह्यो

छे ते अप्रतीपाती ज्ञान जोगने चर्म शरीरी एटले छेले भवे सर्वे जीवो पामे छे. ए ज्ञान जोग समुदाये पांच भेदे परिपूर्ण कह्यो परंतु नीश्राविना परिपूर्ण थाय नही. ते ज्ञान जोगने समकीतनी चारित्रनी अने दानादीक पांच लब्धीनी नीश्रा छे. ते आत्मीक जाणवी तेमां प्रथम समकीतनी कहुं छुं. ते समकीतना बे भेद, एक वहेवार बीजो निश्चे,तेमां प्रथम, व्यवहार समकीत, ते त्रण तत्वनी श्रद्धा,देवनी,गुरुनी ने धर्मनी, तेमां प्रथम देवतत्वनी कहुं छुं. देव ते वितराग [अरिहंत ने सिद्ध] ए सीवाय बीजान विषे देवपणुं न माने एटले मोहनी कर्मनो सत्ताथी उछेद थयां क्षीण मोह बारमा गुण ठाणेथी वीतराग कहीए ने ज्ञानावरणी दर्शनावरणी ने अंतराय ए त्रण कर्मनो वीतराग भावे क्षय करतां चौघाती कर्म अभावे अढार दोषे रहित थया. बार गुणे बीराजमान केवलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यात चारित्रने क्षायक समकीत वली क्षायक भावनी दानादी पांचलब्धीवंत सजोगी तेरमे ने अजोगी चउदमे गुणठाणे वर्ते तेमने अरिहंत कहीए. वली देहातीत रुपातीत जोगातीत अरुपी अटल अवगाहनावंत अव्याबाध सुखना भोगी अगुरु लघु परजायवंत नीरंजन नीराकार अलख अगोचर अचल अविनाशी जोती स्वरुपी अनंत गुणपर्याय प्रगट वक्ती रुपे एकमां अनेक अनेकमें एक लोकाग्र भागे सादी अनंत भांगे स्थीर रह्या. तेमने सिद्ध भगवान कहीये. एम दृढ श्रद्धा छे जेने तेहने देव तत्वनी प्रथम श्रद्धा कहीए.

हवे गुरु तत्व उलखावुं छुं. गु, कहेतां जे पाप एटले द्रव्यभाव दु भेदे हींसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, ने परिग्रह, ए पांच दुदस भेद पापना थया, ते ओलखावुं छुं, पहेलुं पाप तो हींसा छे, तेना बे भेद, द्रव्यहींसा, भावहींसा, द्रव्यहींसा ते त्रसथावर जीवना द्रव्य प्राण हणवा ते द्रव्य हींसा कहीए, ने भाव हींसा ते मीथ्यात्व, अज्ञान, कषाय, जोगे आत्माना भाव प्राणज्ञान दर्शन, चारीत्र आदे हणाय छे, ते भाव हींसा कहीए, ए बे भेदे प्रथम पाप कह्युं, हवे बीजुं पाप, मृषावाद छे, तेना बे भेद, १ द्रव्यभाव, २ द्रव्य मृषावाद ते असत्य, एटले जूठुं बोलवुं, तेना हेतुं चार कषायने, हास्य, भय, ए बेनो कषाय, मली छ प्रकृती छे, तेनी भगास करीए त्यारे द्रव्य मृषावाद टले छे, ने भावमृषा वाद तो घटमे ज्ञान लावी, वस्तु स्वभावने उलखीए, उदीकता उपर दृष्टी न राखीए, उदीकताने वस्तु मानवी, ते बाह्य दृष्टीनो भ्रम छे, ने स्वभावने वस्तु मानवी ते अंतर दृष्टीनुं ज्ञान छे, एम, समज आवी नही. ने द्रव्यभाव दुभेदे मृषावाद रह्युं, ते बीजुं पाप कह्युं, हवे त्रीजुं पाप ते चोरी छे, एटले अदत्त (वीना दीधे) लेवुं तेना बे भेद, द्रव्य भाव, द्रव्य चोरी ते अणमागी वस्तु, रस्तामां पडेली, वाताला कुची कबजानी, नीधान होय के एक त्रणुं होय तेने लेवुं ते द्रव्य अदत्त कहीए, हवे भाव अदत्त तेना बे भेद, एक आज्ञा अदत्त, बीजुं वस्तु अदत्त, आज्ञा अदत्त ते सीद्धांतमां परमात्माए आज्ञा करी छे, ने गुरु

माहाराजे आपणने उपदेश कर्यो छे,अप्पाण भावि माणे विहरीयं एटले अप्पाण कहेतां आत्मा तेने भाविमाणे कहेतां भावता थका विहरीयं केंवीचरो,एम कह्या छते आपणे तेम न प्रवृतीए ने जरु भावमां इंद्रीनो इंद्री संगे वीषय भोग करता थका उपरांठा रहीए, वळी आज्ञा करी छे के हे भव्यो तमे मीथात्वने तजीने समकीत प्रगट करो, अज्ञानने तजीने ज्ञान प्रगट करो, कषायने तजीने चारीत्र प्रगट करो, अंतरायने तजीने दानादी लब्धीने प्रगट करो, वेदनीने हणीने अव्यावाध सुखने प्रगट करो, आउखा कर्मने हणी ने अटल अवगाहना अक्षय स्थितीने प्रगट करो, नाम कर्मने हणीने अरुपी गुण प्रगट करो, गोत्र कर्म हणीने अगुरु लघु गुण प्रगट करो, इत्यादी परमात्मानी आज्ञा वळी गीतारथ बहु श्रुतनो उपदेश ते आज्ञा कहीए, तेने आपणे ग्रहण करीए नहीं, ने मीथात्ववसे अवळी चाले चालीए, तेने आज्ञा अदत्त कहीए,हवे वस्तु अदत्त कहुंछुं, जीव समये समये सात आठ कर्म छठा गुणठाणा सुधी वांधे छे, एटले आउखुं वांधे त्यारे आठ वंधाय, नही तो सात वांधे, एटले आउखा कर्म आवता भवनुं आखा भव में एकवारज वंधाय छे, ने सात कर्मनो वंध तो समय समय थाय छे, वळी छठा गुणठाणा उपरांत आउखा कर्मना वंधनो प्रारंभ होतो नथी, छठा गुणठाणे आउखा कर्मनो वंध प्रारंभेलो सातमे गुणठाणे पुर्ण करे,परंतु सातमेथी आरंभे नही माटे सातमा गुणठाणाथी नवमा गुणठाणाना

अंत सुधी सात कर्म वांधे ने दशमा गुणठाणे मोहनी कर्म न वांधे ने आउखा कर्म सातमेथी वांधे नहीं, एटले ए वे कर्मनो वंध न करे, ते वर्जीने दसमे गुणठाणे ठ कर्म वांधे एम श्री ज्ञगवती सुत्रे, ठठा सतके गउतम स्वामीए पुठयुं तेनो ज्ञगवान वीर स्वामीए उत्तर कर्यो ठे, वळी पन्नवणाजीना वंध पदमे पण एज रीते ठे, उपरांत एटले अगीयारमा गुणठाणेथी कर्म वंध कह्यो नथी, परंतु कर्म ग्रंथना मते अगीयारमे, वारमे ने तेरमे ए त्रण गुणठाणे एक सातावेदनी वांधे, एम ठे ने कर्म वंध ते कारमण वर्गणा आठमी, ते पुज्ञल दल ठे, तेनो स्वामी पुज्ञल ठे ते आपणे ग्रहण करीए, ने एक्तापणे आत्म प्रदेश साथे वांधीए, तेने ज्ञावथी वस्तु अदत्त कहीए, एशुज्ञाशुज्ञ आश्रव कारमण दळ तेनो दाता कोइ ठे नही, माटे एम ड्रव्यज्ञाव ज्ञेदे सरागता वृतीए आत्माना असुध्ध उपयोगे अदत्त ग्रहण करवुं ते त्रीजुं पाप कह्युं, हवे चोथुं पाप मैथुन ठे तेना वे ज्ञेद ड्रव्य ज्ञाव ड्रव्य मैथुन ते वेद वीषय ज्ञोगने कहीए, एटले पुरूषने स्त्री संगे ने स्त्रीने पुरूष संगे वली नपुंसकने स्त्री पुरूष वेउना संगे वेद वीषय सेववो ते ड्रव्य मैथुन ठे, हवे ज्ञाव मैथुन कहुं ठुं, ज्ञाव मैथुन ते परप्रणती जोगे पुज्ञलने मथवुं एटले ज्यां सुधी शुद्ध प्रणती परीपूर्ण थइ नथी त्यां सुधी अशुद्ध प्रणती कहीए, एटले प्रणती ए इष्टा नीष्टपणुं रह्युं ठे, तेनुंज नाम राग द्वेष, ने एज अशुद्ध प्रणती ठे, ते अशुद्ध प्रणतीनेज परप्रणती कहीए, वली तेने

भाव मैथुन पण कहीए, ते भाव मैथुननो पुर्णना, सदसमा गुणठाणा अंते थाय छे, ने अंशे नाश चोथा गुणठाणे थाय छे, आठमा गुणठाणेथी शुद्ध प्रणतीनी पुष्टता छे, ने सातमा गुणठाणा सुधी शुद्ध प्रणती कृश छे, अशुद्ध प्रणती पुष्ट छे, चोथा समकीत गुणठाणाना अभावे एकली अशुद्ध प्रणती छे, ते भाव मैथुनने पूर्वे कह्युं ते द्रव्य मैथुन. ए बेहु भेदे चोथु पाप कह्युं. हवे पांचमुं पाप ते परीग्रह छे, तेना बे भेद एक द्रव्य बीजो भाव, द्रव्य परीग्रह ते नव भेदे ते वंदीता सुत्रनी गाथा .

धणधन्न खित्तवत्थु रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे
दुपएचउप्पयंमि, पडिक्कमे देसियं सव्वं.

अर्थ–धन्न कहेतां तोळीने वा भरीने वा मापीने वा नजरे जोइ परीक्षा करीने वस्तु आपीए लइए सोधन करीए,१ ने धान्य ते साळी प्रमुख घउ जव आदे धान्य कहीए,२ ने खीत कहेतां क्षेत्र खलु,३ वत्थु कहेतां घर दुकान, महेलात,४रुप कहेतां रुपु,५सुवन्नेअ कहेतां हीम,६कुवीअ कहेतां कुधातु, तांबु पीतळ, कांसु, जसत, कलइ, लोढु आदे,७ परीमाणे कहेतां देश वीरतीने घरे परीमाण करवानुं छे, इहांतो मुनीपदे सर्वथी त्याग छे, दुप्पए कहेतां बे पगे चालवावाळा मनुष्यो दास दासी आदे,८ने चउप्पयंमी कहेतां चार पगे चालवावाळां तीर्यचो गाय भेंस प्रमुख जाणवां,९ एम नव भेदे परीग्रह कह्यो ते द्रव्य परीग्रह, हवे भाव

परीग्रह कहुं छुं, तेना चउद भेद छे, एक मीथात्व, चार कषाय, ने नव नोकषाय, मळी चउद भेदे अभ्यंतर ग्रंथी कहीए, ते भावपरीग्रह छे, एम द्रव्यभाव दुभेदे परीग्रह ते पांचमुं पाप, ए प्रकारे द्रव्यभाव अपेक्षाए पांच दुदश भेद पापना थया, तेने रुंधे सो पुरुषो तमने बीजो गुरु तत्व कहीए, हवे धर्म तत्व एउ लखावुं छुं, धर्म ते केवळज्ञानीए प्ररुप्यो, तेज धर्म तत्व छे, तेने संक्षेपे वर्णवुं छुं, तेना बे भेद एक व्यवहार बीजो, नीश्चय, व्यवहारना बे भेद एक शुद्ध, बीजो अशुद्ध, शुद्ध व्यवहार छे ते समकीत पक्षी छे, ने अशुद्ध व्यवहार छे ते मीथात्व पक्षी छे, ए वचन तो यथारथ छे, परंतु मतीनें खुच्यो ते प्रश्न करे छे, द्रव्य प्राण ते जीव खरो के नही वळी आवश्यकादी क्रीया ते चारित्र कहीए के नही, तेनो उत्तर, हे भाइ द्रव्य प्राण ते एकेद्रीना चार, बेरंद्रीना छ, तेरंद्रीना सात, चउरंद्रीना आठ, पंचेद्री, असंज्ञीना, नव, संज्ञीपंचेद्रीना दश, एम एकेद्रीथी पंचेद्री पर्यंत सर्वे जीव छे, वळो आवश्यकादी क्रीया एटले बे वखत प्रतीक्रमण करवुं, बे वखत पडीलेहण करवुं, बे वखत पोरसी भणाववी, सातवार चैत्यवंदन करवां, बेताली दोष रहीत आहार लेवो, पांच दोष तजीने वापरवो, नव कल्पी वीहार करवो, पांच सुमति, त्रण गुप्ति, आदे चरण सीतरी, करण सीतरी, मळीने एकसोने चालीस भेदे क्रीया तेने चारीत्र कहीए, त्यारे मती उवाच, तमे द्रव्य प्राण ने जीव कहो छो वळी आवश्यकादी क्रीयाने

चारीत्र कहो छो, ए कीयो व्यवहार छे, उत्तर—हे भाइ अशुद्ध व्यवहार छे, मतीउवाच, तमे अशुद्ध व्यवहार मीथात्व पक्षी कहो छो, त्यारे शुं करवा चारीत्र कहो छो तेनो उत्तर-हे भाइ अमे जे द्रव्य प्राणने जीव कहीए छीए वली आवश्यकादी कीयाने चारीत्र कहीए छीए, तेनी साथे उपचरीत अनुपचरीत ए बे व्यवहार भेद ज्ञान घटमां लावीने मेलवीए छीए, एटले हमारे तो शुद्ध व्यवहारनीज मुख्यता छे, वळी समकीत पक्षी छे, मीथात्व पक्षी होतो नथी, तमे पण एज रीते ए बे व्यवहार मेलवता होय तो अमने समजावो, त्यारे मतीउवाच, ए बे व्यवहार उपचरीत अनुपचरीत, मेलववा तमो कहो छो ए समज तो मने नथी तमो समजावो, तेनो उत्तर, हे भाइ नय पक्ष रीते समजो इहां कंइ हठ मतनुं काम नथी, तमारे हठ होय तो छोडी देजो ने थीर चीत्ते धारजो, वली शंका पडे तो पुछजो, हवे जे द्रव्य प्राणने जीव कहेवो तेने समजो जे इंद्रीयादीक द्रव्य प्राण छे ते पूर्व कृत कर्मबंध योगे ने उदीकताजोगे जीवने प्राप्त थया छे ते वस्तु गते पुद्गल छे. जीव नथी, जीव तो चेतना लक्षणवंत अंतर व्यापकपणे रह्यो छे, ते छे, एम वीभाग वहेंचण थइ नही, ने भेदज्ञान आव्युं नही, ने पुद्गलने जोइने एटले एकेंद्री, बेइंद्री, आदे पुद्गलने जीव कहेवो ते अशुद्ध व्यवहार थयो; तेनी साथे उपचरीत, अनुपचरीत, ए बे व्यवहार मेलवीए एटले एकेंद्री यादीने जीव कहेवो, तेमां भेदज्ञान जोगे अंतर दृष्टी करी

वीभाग वहेंची स्वभावने ओलखी जीवने जीव कहेवो तेमां कणोए उपचार नथी, ते अनुपचरीत व्यवहारने इंडीयादी पुद्गलने जीव कहेवो ते उपचरीत व्यवहार एम वे भेदे व्यवहार जोइीए, तेनुंज नाम शुध्ध व्यवहार छे, हवे आवश्यकादी क्रीयाने चारीत्र कहीए छीए ते पण अशुद्ध व्यवहार छे कारण के जडनो कर्त्ता जड छे, शा माटे के पुद्गलनी करणी करे छे, ने आत्मानी माने छे, एटले क्षय उपसम भावनुं चारीत्र माने छे, पण एमतो जाणता नथी के क्षय उपसम भावनुं चारीत्र तो स्वरुपे ज्ञान दर्शन उपयोगनुं स्थीरपणु ते छे, एम भेदज्ञान घट मेलावी वीभाग वहेंचण करी, वस्तुगते वस्तु मानीए सद्दहीए ते अनुपचरीत व्यवहार थयो ने कलपनी मर्यादाए आवश्यकादी क्रीया व्यवहार नयने अनुसरीने चारीत्रनी एटले द्रव्य चारीत्रनी कहीए ते उपचरीत व्यवहार एम वीभाग वहेंचण ज्ञान जोगे थाय तेनुंज नाम शुद्ध व्यवहार कहीए, भेदज्ञानना अभावे अशुद्ध व्यवहार छे तेना वे भेद, एक शुभ, वीजो अशुभ, शुभ ते शुभ कर्मवंध हेतु, मन जोग ए कृत्यमां भळे तो एटले वीजे न जाय त्यारे. मन दुर्ध्याने हणाएलुं होय, ने क्रीया शुभ करीए, तीहांतो शुभ कर्मवंधनी भजना शुभे वांधे ने अशुभे वांधे, ए व्यवहार नयना छ भेद कह्या तेमां नयो कहुं छुं, उपचरीत व्यवहार कह्यो ते नैगम नयनो पक्ष छे, अनुपचरीत व्यवहार कह्यो ते संग्रह नयनो पक्ष छे, शुभाशुभ व्यवहार

सो व्यवहार नय छे, शुभ व्यवहार सो रुजुं सुत्र नयनो पक्ष छे, ने शुध्ध व्यवहार सो शब्द नयपक्षी छे, नैगम, संग्रह व्यहवारने रजु सुत्र ए चार नयो सो द्रव्यास्तीक कहीए, शब्द, संमभीरुढ, ने एवंभुत, ए त्रण नयो सो पर्यास्तीक कहीए, पर्यास्तीक नयने भाव कहीए, वली नीश्चय नय कहीए, सो गवेखुं छुं, शब्द नय समकीत प्रातीथी कहीए तीहां ज्ञान जोग कहीए, वली दशमा गुणठाणाना अंत सुधी शब्द नयनी मुख्यता छे. वीतराग भावे वारमा क्षीण मोहथी अयोगी अंत सुधी संमभीरूढ नय कहीए. दशमा गुणठाणाना अंत सुधी 'परणती' धर्मे पांच नयनुं प्रवर्तन छे. ने क्षीण मोह वारमाथी अयोगी चउदमा अंत सुधी छ नयनुं प्रवर्तन छे सिद्धमां लोका अग्रभागे आत्म प्रदेशनो नोवरुधन जे अटळ अवगाहना सो सिध्ध तीहां एवंभुत नय एकज कहीए ज्यां सुधी काया छे ने सत्ताए तेज सकारमण वर्गणा छे.त्यां सुधी द्रव्यास्तीक नयनो संभव छे. सो कायानो एटले उदारीक कायाने तेना संगे श्वासोश्वास वर्गणा वली तेजस कार्मण शरीर आदे सर्वे पुदगलना बंधनथी अयोगी गुणठाणा अंते छुट्या त्यां द्रव्यास्तीक नयनो अभाव थयो एटले अशुध्ध संग्रह नय हतो ते छुटी गयो ने शुध्ध संग्रह नय द्रव्यास्तिकपणे शक्तीरूपे हतो ते परीपूर्ण व्यक्तिरुपे भाव पर्यायमय सो एवंभूत थयो ए नीश्चे नय वली पूर्वे कह्यो सो व्यवहार नय सो त्रीजो धर्म तत्व कहीए एम त्रण तत्वनी दृढ श्रध्धा सो व्यवहार समकीत

रमहीत थयो नही,एकरणे रहेतो एक अंतर महुर्त रहे, चढे तो अपुर्व करणे जाय पमे तो मुळ ठेकाणे पाछो आवे, ए प्रथम करण कह्यो, हवे वीजुं अपुर्वकरण चींतवुं छुं, अपुर्व कहेतां पुर्वे कोई काळे आव्यो नथी ने आत्माए जाण्यो नथी, एवो अपुर्व परिणाम, ज्ञानशक्ति अंतहकरणमां प्रगट थई छे, तीहां सात कर्मनी स्थीती यथा प्रवृतीकरणे एक कोमाकोमी सागरोपम, ते मधे एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग न्युन एटली रही छे, तेमांथी एक महुर्त खपावे त्यारे अपुर्वकरण थाय, तीहां अपुर्व वीर्य उदेरे पछी अपुर्व मोगर लेइने ग्रंथी उपर जाय तीहां गांठने वीदारे सो ग्रंथी भेद, एटले वीदारे कहेतां अनादी सवंध्ये अशुद्ध प्रणती छे तेहने तोमवी ने भेद एटले छेदजोगे अंसे शुद्ध प्रणती प्रगट करवी तेनुंज नाम ग्रंथीभेद, कहीए, वली समकीत कहीए, ने ग्रंथी भेद थयो तीहां अपूर्व करणनी सीमा आवी रही, त्रीजु अनीवृतीकरण कहीए, तीहां अपुर्वकरण रहेलां कर्म ते स्थीतीमांथी एक महुर्त खपावे, तीहां मीथात्व मोहनी तथा अनंतानुवंधी कपायनी चोकमीए पांच प्रकृती उदये आवी रुधे, वीपा के तथाः प्रदेसे अंतर महुर्त मात्र ए पांच प्रकृती उपसमावेतीहां उपसम समकीत कहीए, ते समकीतमाही शुभ परीणामे मीथात्व मोहनीना त्रण पुंज करे, एक सुद्ध पुंज वीजो अर्ध सुद्ध पुंज, त्रीजो असुद्ध पुंज, इहां उपसम समकीतनी एक अंतर महुर्तनी स्थीती छे, तेनी पुर्णता एटले अंते ए पुंजनो उदय थाय तेमां शुद्ध पुंजनो

ज्ञदय थाय तो क्षय उपसम समकीत कहीएने अर्ध शुद्ध पुंजनो उदय थाय तो त्रीजुं मीश्र गुणगाणुं कहीए, अशुद्ध पुंजनो उदय थाय तो मीथात्व गुणगाणुं पहेलुं कहीए, ए उपसम समकीत वर्णव्यो. हवे क्षय उपसम समकीत कहुं छुं क्षय उपसम समकीत दर्शन मोहनीना क्षय उपसम जोगे आवे, ने क्षय उपसमनुं पामवुं वीचीत्र न्नेदे छे त्यारे जेटला न्नेदे दर्शन मोहनीना क्षय उपसम थाय एटला न्नेदे क्षय उपसम न्नावनुं समकीत पामे एम जोतां तो क्षय उपसम समकीतना वीचीत्र न्नेद थाय, ते कंइ कहेवामां आवे नहीं, परंतु क्षय उपसम समकीत चोथा गुणगाणेथी सातमा गुणगाणा सुधी छे, माटे एकतो चोथा गुणगाणानुं तत्व दृष्टी सो समकीत, बीजुं रोचक समकीत ते पांचमा गुणगाणानुं, त्रीजुं कारक समकीत छग्गा सातमा गुणगाणानुं ए त्रण न्नेदे क्षय उपसम समकीत कहुं छुं, तेमां प्रथम तत्व दृष्टी थवी जोइए, ए दृष्टी तो ज्यारे नीजपर न्नेद समज्यामां आवे एटले नीजपर न्नेद समजवाने बे कारण छे,एकनी सर्ग,ने बीजो उपदेश, नीसर्ग ते पोते पोताना स्वज्ञावे गुरु उपदेश विना बोध पामे एटले ज्ञान पामे, त्यां घटंतर वृती एलोचन प्रगट थाय, त्यांज नीजपर न्नेद समजाय छे, ए प्रथम कारण बीजुं कारण सदगुरुनो उपदेश छे, ते गुरुमहाराजनां नय गन्नींत वचनो श्रवण इंद्री जोगे मन पात्रमें श्रोताजनो वक्ता पुरुषनां सामी दृष्टी करीने जीले एटले धारणामां राखे, वळी तेमां मनन करे, चींतवन करे, ते जोगे नीजपर न्नेद समजे ने

नीजपर भेद समज्यामां आवशे त्यां पर वस्तु अतत्व भासे छे, त्यां पर वस्तु उपरथी रुची छठे छे ने सरागता छुटे छे, नीज वस्तु उपर रुची जाय छे, ने आगता थाय छे, ते आगताना प्रेर्यो थको नीज वस्तुनो अर्थी थयो, त्यां बाह्य रमण अवल्लभ लागे, ने घटंतर वृतीए नीजस्वरुप रमण वल्लभ लागे ते जोगे आनंदीत थाय, एटले अभ्यासी थाय एम करतां करतां मनजोग थीर थाय त्यां हेय, ज्ञेय, उपादेय, बुद्धि प्रगट थाय छे त्यां ज्ञान जोती वीस्तारे प्रकासीत थाय छे, त्यां नीजपर सर्व ज्ञेय वस्तु गुण प्रर्याय लक्षण स्वभाव साधक बाधक कारण अकारण, युक्त अनुंभव ज्ञाने जाणवामां आवे छे, ने हेय कहेतां पर वस्तु भेद रुपे एटले जुगइ रुपे छांमवा योग्य समजाय छे, ने उपादेय कहेतां एक पोतीको आत्मा सीद्धनो साधर्मी मोक्षमइ, मोक्षमां रहेनवालो अनंत गुणपर्यायनी पुंज अरुपी, अवीनासी, नीरंजन नीराकार, जोती स्वरुपी, अलख, अगोचर, अव्याबाध सुखनो भोगी, सो आदरवा जोग छे, एम अनुभव युक्त प्रत्यक्ष, दृष्टीगोचर थाय, सो तत्व दृष्टी चोथा गुणठाणानुं नीश्चय समकीत कहीए, ग्रंथी भेद तो पूर्वे करेलो छे, ते फरीने कहेवानी जरुर नथी, इहां ७ प्रकृतीनो क्षय उपसम थयो छे.ने समकीत मोहनी तो उदयमां छे.ए समकीतभाव गवेख्यो ते स्व अपेक्षीत छे,बीजा बाजद्दष्टि पुरुसो एने समकीती वा धर्मी ना जाणे,जेने एवी तत्व दृष्टी प्रगट थइ छे ते पुरुसोमां सदगुरुना सनमुख उभा थइने बे

हाथ जोडी मस्तके चढावी चतुरवीधी संघनी साक्षी पूर्वक दवादस वृत उचरे, त्यां पांचमुं देश वीरती गुणठाणुं कहीए वळी त्यां रोचक समकीत कहीए, इहां दवादस वृत श्रावकनां वर्णवुं छुं, पांच अणुंव्रत त्रण गुण व्रत, चार शीक्षा व्रत, तेमां पहेलुं व्रत सो दया, तेना त्रण भेद, स्वरुप दया, हेतुं दया अनुंबंध दया, स्वरुप दया तो केवळीने घरे पण स्वरुप हींसा लागे छे एटले जे पोतानी काया छे एज जीवने हणवानुं सस्त्र छे, ए पहेलो भेद कह्यो, बीजी हेतु दया एटले दयानो हेतु सो जतना बुद्धि जीवने बचाववानी रक्षण करवानीबुद्धि तेना बे भेद, थावरनी जतना, त्रसनी जतना ए बेहुनी जतना करे, रखोपु करे, सो बीस बसानी दया कहेवाय छे, एतो छठा सातमा गुणठाणे महा वीरतीना घरे संभवे, इहां नही छे, एटले स्थावरनी दया ग्रहस्थीना घरे छे नही, माटे दसबीसा थावरना गया ने त्रसना दस रह्या तेमांथी कारण जोगे जतना थाय नही ने जीवो हणाय ते दसमांथी कारणना पांच वीसा गया ने विनाकारणे पांच रह्या तेमां पण अप्राधीने हणुं मारो अपराध करे तेनी जतना थाय नही माटे अढी वीसा अप्राधीना पांचमांथी गयाने अढी रह्या तेमां पण कारण परत्युं नथी नेए जीवो ए आपणो अपराध कर्यो नथी ते जीवोनी जतना पण ग्रहस्थोने घरे नही छे तेवी वरीने कहुछु· घोडा उपर बेसीने गामंतरे जाय छे, पीठ उपर तो चढी बेठो छे घोडुं चाले छे आपणो अपराधी पण नथी उतावळा जवानुं कारण पण नथी ते वीना कारणे वीना अपराधे, जेरबंध मारे दोडावे, इहांज-

तना रहेती नथी एम अनेक प्रकारे ग्रहस्थीना घरे जतना रहीतनां द्दष्टांतो लागु पडे छे, ने अजतना थाय छे तेनो सवावीसो गयो ने सवारह्यो ते वीना कारणे वीना अपराधे संकल्पीने त्रस जीवने नमारुं न हणुं एम सवावीसानी दया व्रतधारी श्रावकने धरे छे, ए वीजो भेद कह्यो, हवे त्रीजो भेद अनुवंध दयानो ते इहां दर्शन मोहनीनी तथा चारीत्र मोहनीनी प्रकृतीयोनो क्षय उपसम थयो छे, तेथी सद्भावे, आत्मीक गुणनी नीर्मळता प्रगटता स्वरुपे सामान्य वीशेस उपयोग नीस्पन्न पणे थइ छे, शोभा व दया कहीए, तेनुंज नाम अनुवंध दया छे, ए त्रीजो भेद कह्यो ए प्रथम अणुं व्रत. हवे वीजुं व्रत सत्य वचन, असत्य वचननो त्याग सर्व थी तो महा वीरतीना धरे छे, इहां तो देशथी छे तेना पांच भेद, कन्याळी, भूमाळी, गवाळी, थांपणमोसो, ने कुडो साख, ए पांच भेद कह्या तेमां राग ध्वेस मोहना वसथी असत्य वचन बोलाय छे तेनो त्याग करे एटले संसारमे माता पीता भाइ वेन, स्त्री, पुत्र, आदे माया, प्रीती स्नेही साथे जे सगपण वालेसरीपणो, हेतुपणो, मारापणो, वांध्यो छे वळी पोताने जे जे अणमलतां पोताथी प्रतीपक्षी कुडुंबी, अकुटुंवी ज्ञाती अज्ञाती साथे दुस्मन दावो वांध्यो छे ते सवंधी पणो लोकीक रीते हेतु अहेतु छे, परंतु लोकोत्तर सवंधे वने अनुकुल प्रतीकुल समुदाय अहेतु छे, एम जाणी राग ध्वेस मोहनो त्याग देश पक्षथी थाय ने वीरतीपणाथी खरूं सगपण लोकोत्तर रीते हेतुपणो मारापणो अती रागे वाल-

पणुं थाय,त्यारे व्यवहारे देशथी सत्य वचनी कहेवाय, ए बीजुं अणुंव्रत, कहु हवे त्रीजुं व्रत अदतदान ते अणदीधे मालीक पासे माग्या वीना दांत खोतरवा सळी जोइए ते न लीए एम सर्वथी अदत्तनो त्याग तो महा वीरतीने घरे छे, ते इहां न संभवे इहां तो राजा दंडे एवी चोरी करू नही ते चोरी करवाना बे हेतु छे, एक तो कपट मायाने बीजो लोभ ए बे प्रकृतीनी उगरस करीए त्यारे गुनापात्र न थइए, ए त्रीजुं अणुव्रत,कहु हवे चोथुं व्रत ब्रह्मचर्य ते स्त्रीथी छेटे अलगा थइए वली नव वाड युक्त पालवुं सो सर्वथी स्त्रीनो त्याग तो महा वीरतीने घरे संभवे इहां तो देसथी छे, माटे परणेली जे होय एटलेज संतोष करे नवी बीजी न करू वली एमांथी पण मुर्छा उतरे तो शुकल पक्ष कृष्न पक्ष,ए बेमांथी एक पक्षनो त्याग करे एटले सेवे नही वली मुर्छा उतरे तो समजे के, चामकी कोटडीमां मांस भरया हे, मांही भरया मल मुत्र वीकारा, एटले असुचीज भरी छे, अपवीत्र स्थान छे तेमां चतुर नेरी जनथी कर्म बंधको कारण, संसार वृधीनुं मुल, भवनी परंपरानो हेतु एम वीगोवी वीगोवीने वीषय भोगनो त्याग सोय दोराना आकारे करे सो चोथुं अणुव्रत, कहु हवे पांचमुं व्रत तेमां परीग्रहनो त्याग सर्वथी करवो तो संजती पदे छे ते इहां न संभवे इहां तो देशथी त्याग छे एटले जेटलु पोता पासे होय एटलेज संतोष करे, अप्रसस्त वेपार, मोह स्त्रीनो वको पुत्र लोभ तेना वस थइने अढारे पापस्थान करे वननो अहो रात्रीनो मनथी,वचनथी ने काया-

थी, आशा, तृष्ना, मुर्छा, उतारीने च्यासी जेदे पाप वंध करवानो हेतु अशुन्न उद्यम तेनो त्याग करे जेटलुं पोता पासे होय एटलेज संतोष, ए पांचमुं अणुव्रत कह्युं, हवे त्रण गुण व्रत कहुं छुं, गुण व्रत ते शा माटे के जे पांच अणुव्रत कह्यां तेने गुण करता छे, तेमां पहेलुं गुण व्रत दीसी परीमाण, ते चार दीसी, चार वीदीसी, उर्धदीसी, ने अधोदीसी, ए दस दीसाए पोतानी कायाथी लोकीक संवंधे गमना गमन करवुं एटले जवानो आववानो प्रथक्त दसे दीसीए सरखो वा न्युनाधीक पोतानी इच्छा पुर्वक प्रमाण वांधे ते प्रमाणने कारण पडे उलंगे नही वली एक दीसीए प्रमाण राखेलुं छे तेथी गमना गमन उछुं कर्युं तेना वदले वीजी दीसीए अधीक जवानुं कारण आवे वधारीने जाय नही, वळी पोताना जावा आववाना प्रमाणथी जणस मंगाववी मोकलवी प्रमाणथी अधीक दीसी साथे कायाथी वचनथी जवा आववानो, वा जणस मंगाववा मोकलवानो अशुन्न एटले संसार हीत अर्थे पच्चखाण छे, एम लोकीक संवंधे अशुन्ननुं संकोचन करवुं एटले गमना गमन दसे दीसीए उछुं करवानुं प्रमाण करवुं ते प्रतीवंध आत्म हीत अर्थे छे, वली लोकोत्तर सवंधे ज्ञान दर्शन चारीत्र अर्थे देव गुरुना वंदन नमन पुजननो वा वोध वीज प्राप्तिनो वा देश वीरतीपणानो, वा जीनेंद्र पंथ प्रवर्जा दीक्षानो लाज लेवा वीचारवा अर्थे कोइ दीसीए गमना गमन करवानो प्रतीवंधज नथी इहां तो प्रतीवंध करवो आत्माने अहीत

ञ ए प्रथम गुण व्रत कह्युं. हवे वीजुं गुण व्रत ते जोग उपजोग जोग ते एकवार जोगववुं, ने उपजोग ते वारंवार जोगववुं, तेना वे जेद एक शुज ने वीजुं अशुज, शुजना वे जेद एक आरोपीत शुज वीजुं अणारोप शुज, आरोपीत शुजना वे जेद, एक नीमीत्त वीजु उपादान अशुजना वे जेद एक नोमीत वीजु उपादान ए जेदो वहेंच्या तेनो अर्थ कहुं हुं जोग उपजोग ते अंतराय कर्मना एक तो त्रुटवाथी ने वीजुं क्षय उपसमथी वा क्षयथी आत्मा करे ठे तेमां जे तुटवाथी कह्युं ते अघाती कर्मनी अशुज प्रकृतीना उदय, अजावे अंतराय तुल्यो कहीए, त्यां सुज आरोपीतना नीमीत्त उपादान बे जेद लागु ठे शुज एटले रुका मनोज्ञ मनने गमता पुजल सातावेदनीना हेतु तेनुं उदय जोगे पामवुं ते नीमीत्त शुज आरोपीत कहीए, तेनो जोग उपजोग आत्माने आरोप प्रशस्त ठे. तेनुं उपादान कारण पुर्वकृत शुज प्रकृती सताए रहेली ते ठे ते कर्मने उपादान शुज आरोपीत कहीए, ते जोग उपजोगमां हेतु ठे, हवे अशुजना वे जेद कहु हु, अशुज एटले अमनोज्ञ अणगमता पुजल असाता वेदनीना हेतुं तेनुं उदय जोगे पामवुं ते नीमीत अशुज कहीअे, तेनो जोग उपजोग आत्माने अप्रसस्त ठे तेनुं उपादान कारण पुर्वकृत अशुज प्रकृती सत्ताए रहेली ते ठे ते कर्मने उपादान अशुज आरोपीत कहीए ते जोग उपजोगमे हेतुं ठे, एम शुजाशुजनो जोग उपजोग कह्यो तेमां जे अशुजनो जोग उपजोग ठे ते आ-

त्याने पुद्गल जोगे करणवीर्य शक्तीनी हांणी करता थाय ठे, ते माटा जोग उपजोग जोगे व्यवहारे वहुधा अशुज आचरण करे तेथी पातु अशुज उपार्जे, ते आगल जोगववुं पमे एम पापजोगनी परंपरा चाले माटे आ जोग उपजोग बीजा गुणव्रतमे अशुज आचरणनो वीवेक लावी त्याग करे तें कहुं तुं कायाथी, वचनथी, ने मनथी, पोतें करे नही ने बीजा पासे करावे नही ते वर्णवुं तुं, कंदमुळ वादर साधारण वनसपती आदे बत्रीस अनंत कायवळी वावीस अजक्ष तेनुं जक्षण न करे, वळी फागण चौमासे, तली, खसखस, जाजी आदे अजक्ष कहेवाय ठे, वळी असाढ चौमासाना काळे खांड आदे चार अजक्ष कहेवाय ठे वळी बारे मास रात्री जोजन अजक्ष ठे, वली चार महावीगे जे मध, माखण, महुमां, ने मांस ए सदा सर्वदा अजक्ष ठे, वली रातनी करेली सुखनी तेने पण वासीनो जांगो लागे ठे सो आ जक्षमां गणवा योग्य ठे, वली वासी बोळो, वीदळ, करा, काचुं मीठुं, पापमीतुं उधेलीयुं आदे अजक्ष वस्तु जक्षण करवा योग्य नही ठे तेनो त्याग करवो वली पोताने आजीवीका अर्थे वेपार करवो ते पंनर कर्मादान वर्जीने न्यायोपार्जीत लाज मळे एम चींतवे, दीन प्रत्ये चौद नीम धारे, संक्षेपें, एम अशुज प्रवृत्ती व्यवहारे ठेठी करवी तेनुंज नाम बीजुं गुणव्रत ठे ते कह्युं, परंतु उपर जे जेदो वहेंच्या ठे तेमां एक आरोप शुजनो जोग उपजोग सुधात्मा करे ठें, ते देखाडुं बु, इहां पांचमा गुणगणानी अपेक्षाए अ-

गीयार प्रकृतीनो क्षय उपसम थयो ठे एटलो आत्मा नीर्मळ थयो समकीत गुणवळी देश वीरतीपणानो गुण ते स्वरुपे ज्ञान दर्शन उपयोगनुं स्थीरपणुं गुणठाणा पुर्वक समाधीपणुं नीश्चल अरूपणुं थयुं ते स्वरुपे गुण नीस्पन कहीए, ते गुणनो जोग सुद्धात्मा करे ठे, वली उपजोगपण सुद्धात्मा करे ठे तेमां कसोए उपचार नथी, कारण के आत्मानो गुण आत्मा जोगवे तेमां उपचार सेनो, सदभुतपणामां उपचारनो, असंभव ठे माटे अणारोप कहीए, ए जोग उपजोग स्वअपेक्षाए प्रमोदीत ठे वळी वृधी पामवाने मागीए ठीए ए जोग उपजोग कह्यो, हवे त्रीजुं गुणव्रत कहुं ठुं, गुण एटले ज्यां सुधी आत्मा दंडाय ठे त्यां सुधी गुणी नही ठे, एटले गुनाह्त ठे तेना वे भेद एक अनार्थे ने बीजो अर्थे ए वे भेदमे प्रवृत्ती त्रण भेद थाय ठे, मनथी, वचनथी ने कायाथी, तेमां प्रथमथी समजो के पांचमे गुणठाणे जे जीवो वर्ते ठे तेने मांथे चारीत्र राय धणी ठे, वळी पांचमु गुणठाणुं ठे ए तो चारीत्ररायनो देश कहेतां मुलक ठे ने ए गुणठाणामां जेटला जीवो वसे ठे सो चारीत्ररायनी रैयत ठे ते रैयत सत्ताए बाह्य अपेक्षाए केटली रीद्धीए धनाढ्य ठे, ते कहुं ठुं तेना वे भेद, जगन्य उत्कृष्ट जघन्य सत्ता सुधर्म कल्पवैमानीकनीने उतकष्टी सत्ता अचुत वारमा देवलोकनी मनुष्यनी अपेक्षाए ने तीर्यंच पंचेन्द्री संज्ञीनी अपेक्षाए उतकष्टु सेहसार देवलोक आठमुं त्यां सुधी कहीए एथी ठठी रीद्धीनी सत्तात्तो राजानी आज्ञाए त्रीकरण जोगे आराधक थइने, चाले तेनी

होतीजनथी सर्व रैयतने चारीत्रराये धनाढय करी मुक्या ठे परंतु आज्ञावीराधक ठे तेना बे नेद जगन्य उतकष्टा जगन्य सत्तानुवन पतीनीने उतकष्टी सत्ता ज्योतीसीनी एम वीरती परीणामे वीराधक ठे तेना आत्म प्रदेसे एक हीते रीद्धीनी योग्यतानुं उपादान कारण शुन कर्म प्रकृती सत्ताए होय ठे वळी देवगतीनां ए स्थानको कह्यां तेनी स्थीती पुर्वक आउखा कर्म बंधाय ठे ते सत्ताए देश वीरतीने होय ठे वीरती परणामे कदापी मनुष्यनुं वा तीर्यंचनुं वा नारकीनुं आयुष्य न बांधे एक देवगतीनुंज बांधे, तेमां जे आराधक ठे ते तो वैमानीकनुज बांधे एम जगवती सुत्रे प्रथम शत के बीजे उदेसे कह्युं ठे.

अवीराहीय संजमासंजमाणं जहणेणं सोहमे कप्पे उक्कोसेणं अचुए कप्पें, विराहिय संजमा संजमाणं, जहनेणं नवण वासिसु उकोसेणं जाइसीयेसु तिरिठियाणं जहनेणं नवणवासिसु उकोसेणं सहसारकप्पे

एम वीरती परीणामे तो एक देवगतीनुंज आयुष्य बांधे वळी कर्म ग्रंथे पण पांचमा गुणठाणे एक देवगतीना आयुष्यनो बंध कह्यो ठे ते कारणे वीरती परीणामी जीव बीजुं आयुष्य न बांधे न जाय परंतु वीरतीपणुं पामीने बीजी गतीमे जाय ठे तेनुं कारण ए ठे के एक तो वीरती परीणाम करता पहेला जे गतीनुं आयुष्य बांध्युं ठे तेने ते गतीमां जावुं पमे ठे ने बीजुं कारण वीरती परीणामनो नंग करे सो नर-

कादीगतीनुं आयुष्य बांधी ते गतीमां जाय छे कुन्डरीक मुनीवत एक हजार वर्ष सुधी सर्व वीरती महावीरतीपणुं पाळीने छेवटे अढी दीवस अवीरती थइ सातमी नरके तेत्री सागरोपमने आउखे गया तदवतः, हवे पांचमा गुणठाणे जे जीवो वर्ते छे तेने इष्ट शुं छे ते कहुं छुं एक तो परमात्मानी आज्ञा इष्ट छे ने बीजुं आत्मगुणनी प्रगटता सो तत्व इष्ट छे त्रीजुं वीधी पूर्वक पांचमा गुणठाणानी क्रीया सो इष्ट छे चोथु जेटलो समभाव एटली नीर्जरा करे सो इष्ट छे पांचमुं सर्व कर्मथी रहीत थइने मोक्षनुं पामवुं सो इष्ट छे, हवे अनीष्ट शुं छे ते चींतववुं, पांचमा गुणठाणानी शुभ क्रीया करे छे ते क्रीयावीधी पूर्वक न थाय ते अनीष्ट लागे छे. वळी क्रीयामां मनथी, वचनथी ने कायाथी दुसण लागे ते अनीष्ट छे वळी अप्रसस्त सुभासुभनो राग तो छेध्यो छे परंतु प्रसस्त राग सो गुणनो राग छे ते जोगे शुभ कर्मदळ आवे छे तेनो बंध आत्मा करे छे सीध्धांतना वा कर्म ग्रंथना अभीप्राये सो भव अटवीमांनी अनीष्ट लागे छे कारण के मोक्षना अर्थीने शुभ आश्रव पण वल्लभ होतो नथी. कदाच पुर्वकृत घाती कर्मनी मोहादीक प्रकृतीनो उदय गुणठाणानी हद छोडीने अधीक प्राप्त थाय ते जोगे क्षय उपसम भाव हणाय त्यां चेतनभाव हणाइ जाय ने भमता थाय सो अती अनीष्ट लागे छे ए पांचमा गुणठाणानी शुभ परवृती स्थीती कही ए पांचमा गुणठाणानी वृत्तीए आरत ध्यान करतां धर्म ध्यान थाय छे, सो अचंभाभुत वात छे ए तो वीरतीपणानो गुण गवेख्यो,

हवे ए गुणना रखोपा माटे दंडाय नही सो दंड ते शु छे तो अशुभकृत जोगे आतमा दंडाय छे ते गवेखुं तुं. राजकथा, देश कथा, स्त्री कथा, ने भक्त कथा, ए चार वीकथा करवी, आरत ध्यान रुद्र ध्यान ध्यावुं इत्यादी कारणे आत्मा दंडाय छे माटे घटमां ज्ञान लावी संसारने पुंठ देई मोहपल्लीनी आज्ञा छोडी चारीत्ररायनी आज्ञा ग्रहण करी इछा रहीत थई एक मोक्षनो प्रमोद लावी कर्म क्षय मारगे चालीए, त्यां गुनाहत थईए नहीं दंडीए नही, ए त्रीजु गुणव्रत कह्युं, हवे चार सीक्षाव्रत कहुंछुं, सीक्षा एटले धर्म शीक्षा साधन शीक्षा अयोगी चौदमा गूणठाणा अंत सुधीनो बोध तेने शीक्षाव्रत कहीए, तेमां पहेलुं व्रत सामायक ते सातनये गवेखुंछुं.

॥ जस विलासमे पद पात्रीसमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥

चतुर नर सामायक नयधारो ॥ टेक ॥ लोक प्रवाह छांडकर अपनी परिणति सुध विचारो ॥ चतुर नर ॥ १ ॥ द्रव्यत अखय अभंग आतमा सामायक निजजाति सुधरुप समतामय कहीए संग्रह नयकी वाते ॥ चतुर ॥ २ ॥ अब व्यवहार कहेसु सवजन सामायक हुइ जावे ॥ ताते आचरना सो माने ऐसा नै गमगावे ॥ चतुर नर ॥ ३ ॥ आचरना रिजु सुत्र सियलकी विनु उपयोग न माने ॥ आचारी उपयोगी आतम सो सामायक जाने ॥ चतुर नर ॥४॥ शब्द रांज जो ऐसो सो सामायक कहिये चोथे गुणठाने

आचरना उपयोगे जिन लहिये ॥ चतुर नर ॥ ५ ॥ अप्रमत ठाणे इर्याको सम निरुढ नय साखी ॥ केवलज्ञान दसाथिति उनकी एवंभूते जाखी ॥ चतुर ॥ ६ ॥ सामायक नय जो डु न जाने लोक कहे सो माने ज्ञानवंतकी संगति नाही रहियो प्रथम गुनठाने ॥ चतुर नर ॥७॥ सामायक नय अंतरद्रष्टे जो दिन दिन अभ्यासे जग जस वादल हेसो बैठो ज्ञानवंतके पासे ॥ चतुर नर॥८॥ संपूर्ण हवे ए पदनो भाव ग्रहीने अर्थ कहुं छुं.

लोकप्रवाह मारगे परानुजाइ द्रष्टीए अन्योअन्य अनुष्टान आचरणाए सामायक कहीए, सो नैगमनये, सामायक कहीए. हवे बीजो संग्रह नय छे सो सत्ताए परीपुर्णनीज वस्तुनो शक्तिभावे ग्राहक छे, सुद्ध छे, बुद्ध छे, अलिप्त छे आवरण मले लेपातोज नथी हणातोज नथी एवो अनादी अनंत भांगे जीवनो सदभावनीज वस्तु ए एकत्व अभेदपणे सो संग्रह नये सामायक कहीए श्री भगवती सुत्रे कह्युं छे.

आया सामाइए वळी द्रष्टांते समजावुंछुं, जेम माटीमां घटनी सत्ता छे तंतुमे पटनी सत्ता छे, काष्टमे अग्निनी सत्ता छे दुधमे घीअनी सत्ता छे, तेम जीवमे ज्ञानदर्शन चारीत्रनी सत्ता छे, तेतुज नाम संग्रहनय सामायक कहीए, हवे त्रीजो व्यवहार नयसो घटमे ज्ञान लावी वीचार करे के सत्ता ए यथारथ नीर्मल वस्तु शक्तिभावे तादस छे परंतु वक्तिभावे नथी, ए महारीज भूल छे कारण के मे परने पोतानुं मान्युं ने पोतानी वस्तु भूली गयो ते जोगे चउगती संसारमे भ-

मण करतां अनंतां पुद्गल परावर्त कीधां, अनंतां दुःख सह्यां हवे तो हे चेतन तने कर्मे वीवर दीधो छे एटले क्षय उपसर्म-नी वृद्धि थातां तु संज्ञी पंचइंद्रीपणुं पाम्यो तेमां पण मनुष्यनो भव लाध्यो ने तने नीज पर वस्तुनो भेद जाणवामे आव्यो माटे उंडो उतरीने विचार करके आत्मा साक्षात परमात्मा सरखो नीज वस्तुनो भोगी ने पर वस्तुनो अभोगी तेने तुं मीथात्व मोहना वस थइने सुपर एटले पुद्गलनो भोग पंचेंद्रीना विषयनो आपे छे ए भोग तो तारे अग्राह्य छे, छांडवा योग्य छे एम वीचारी इंद्री एटले श्रवण चक्षुरस घ्राणने फरस ए पांच इंद्री संगे वीषय व्यापकपणे चेतनाहुती तेने वीर्य फोरवी पलटावी स्वरुपे प्रणमावी स्वरुपे रसीक करी तीहांनो इंद्री जे मन ते पण थीर थयो, राजीपो मान्यो एटले इंद्रीयो संगे पुद्गल भोगी हुतो ते भोग अनीष्ट लाग्यो ने स्वरुप रमण अती वल्लभ लाग्युं उपाधी हती ते तुटी गइ समाधी प्राप्त थई सो शुद्ध व्यवहार नय सामायक कहीए ने अशुद्ध व्यवहार तो नैगम पुर्वक जाणवो. हवे चोथो रजु सुत्रनय गवेखुं छुं, व्यवहार नय समाधीमे स्वरुप रमण भेगो मन जो रसीक थैने चाले छे, उपयोगी थैने प्रवर्ते छे परंतु वस्तु गले ए पण जडजाती छे एटले पुद्गल वस्तु छे. ते उपाधी कहीए, तेने रमणथी अटकावी पलटावी अचेतन करी ज्ञान खीले ने समाधी दोरडे बांधीए, थीर मन तीहां कहीए सो रजुसुत्रनय, सामायक कहीए, हवे शब्दनय चोथा गूणठाणाथी भीन्न एटले उपाधीथी अळगो उ-

पयोगी एटले पोतानो प्रकास कर्ता पोतेज अनुभव भुवने प्रत्यक्ष द्रष्टीगोचर चीनमुर्ती एटले ज्ञानमुर्ती सो सहेज समाधी कहीए वलि सामायक, अप्रमत गुणठाणा सुधी शब्द नय कहीए, हवे समभीरुढनय अप्रमतादी आठमा गुणठाणेथी श्रेणीगते शुकल ध्यान जोगे क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए भेद छेद करता उपाधी उनमुळन रुपे अनंतो-संवर अनंती नीर्जरा करता वीशुद्धी वरता चढती कळाए अपुर्व गुणठाणेथी नीरालंब, आकासवत, अरुपी सो ज्ञान मुर्ती अनंतदान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, स्फुरणा स्व अपेक्षीतपणे वीशुद्ध अनुभव ज्योती प्रकास स्वभावभानु उदय पाम्यो छे अपुर्व खेल खेले छे त्यां प्रस्थुळ सपाट बगीचो छे चौधारु हाथमे खड्ग छे उद्यागत उपाधी आवतीज, ज्ञान ध्यान जोगने अबाधा पुर्वक छेदाती हणाती जाय छे, सांमो पड्दो वा भींत कंइपण देखातुज नथी अनंती अ-क्षयरीद्धि अनुभव भूवने आळेखी छे एम प्रत्यक्ष द्रष्टीगो-चर द्रव्यगुण पर्यायनुं संक्रमण एटले पर्यायने गुणमे संक्र-मावे गुणने द्रव्यमे संकमावे, वळी भीन्न गवखे सो भेद ज्ञान कहीए ने गुण पर्यायमय आत्मा गवेखवो तेने अभेद ज्ञान कहीए, भेदज्ञान जोगे शुकलध्याननो पहेलो पायो क-हीए, ने अभेद ज्ञान जोगे बीजो पायो कहीए, बीजापाये एकत्व स्वरुप प्रणमतां मोहपल्लीनोने रागद्वेष असुद्ध प्रणतीनो ध्वंशा कहीए त्यांज सुद्ध प्रणती पुर्ण कहीए सो समभीरुढनय सामायक, कहीए हवे सातमो एवंभूत नयसो क्षीणमोह

वीतराग गुणठाणाथी यथाख्यात चारीत्र कहीए तीहां ज्ञा-
नावरणी दर्शनावरणीने अंतराय, ए त्रण कर्म उद्यागत प्राप्त
थयां ते उपाधीने शुकल ध्याननो वीजो पायो ध्यातां हणयां
त्यां केवलज्ञान केवल दर्शनने क्षायक भावनी दानादी पांच
लब्धी, प्राप्त थइ, तेने एवंभूतनय सामायक कहीए, ए प्रथम
शीक्षाव्रत कह्युं, हवे वीजुं देशावगासीक व्रत तेमां मन व-
चन ने कायाना जोगने एकत्व करी एक स्थानके वेसी एटले
पोषधशाळा कही एवा उपासरो कहीए, त्यां ध्यान करवुं
वली ते नगरीमे जीन मंदीरो होय त्यां दर्शन करवा जवुं,
वली वहु श्रुत गीतारथ होय तो तेमने वांदवा वली उपदेश
सांभलवा, वोधवृधी अर्थे जवु वली काया संबंधी वसवरती
जोगे वडो मात्रु करवा जवु पडे, एटली दीशाउ मोकळी
राखी वाकीनुं गमनागमन करवुं वंध करे वली उपर ध्यान
करवुं कहु छे ते उंडा उतरी घटंतरव्रतीए चक्षु प्रगट करी
वस्तुनो वीचार करे एटले धर्मास्ती, अधर्मास्ती, आकास्ती,
काळ, पुद्गलास्ती, जीवास्तीए षट द्रव्य सो वस्तु कहीए
तेमां प्रथमना चार द्रव्य तो आपणथी नोखाज छे कारण
के शुद्ध छे. माटे कारणमे हेतुपणे साजकर्ता थाय छे, परंतु
प्रणमन पोतानुं पोतामे छे, ने संसारस्थीतीए जीवने पुद्गल ए
वे द्रव्यनु एकत्व प्रणमन अनादी संवंधीत छे, तेने भेदज्ञान
घटमां लावी वीभाग वहेंचण करी उपयोगि थै स्वरूपे प-
रीणाम पामीए त्यां भीनता थाय, सो चेतन शक्तिभावे अ-
नंता गुण पर्यायनो पुज साक्षात् प्रमात्मा छे तेनु वक्तीभा-

वमां आरोपण करी अनुभव करे, सो आत्मध्यान कहीए एम सीद्धा अवस्था सु उपादेयपणे सो देसावगासीक बीजुं शीक्षाव्रत कहीए. हवे त्रीजुं पोसहव्रत एटले दीवसनो पोसह ते चार पहोरनो ने दीवस रात्रीनो पोसह ते आठ पहोरनो समता परीणामे सावद्य छोडी नीरारंभपणे ज्ञान ध्यान जोगे आत्माने पोसी पुष्ट करे, पर्वतीथी दीवसे सो पोसह कहीए, तेमां सावद्य छोडवानुं कह्युं ते जीवने अढारे पाप स्थानक सावध्य छे तेने तजवां पडे, सो गवेखुंछुं तेमां प्राणातीपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, ने परीग्रह ए पांच पापस्थानक तो प्रथम गुरुतत्वना अधीकारे गवेख्यां छे त्यांथी जाणवां, हवे छठुं पापस्थान सो क्रोधछे एटले क्रोध सा कारणे आवेछे तो कांतो लोभना माटे ने कांतो मानना माटे आवेछे. ए बे प्रकृतीनी उछास करवाथी एटले तजवाथी क्रोध न आवे, हवे सातमुं पापस्थान सो मान एटले मोटप छे ते सा कारणे आवे छे तो के संसारमे बोलुं कुटुंब होय बोलुं धन्न होय मोटी पदवी होय, बोला पक्षी होय, इत्यादि जोगे मान आवे छे तेनो त्याग करे एटले संसार छोडी कंचन कामनीना त्यागी थै गीतारथ गुरु पासे जीनेन्द्र पंथ प्रवर्जा सो दीक्षालीए, सीद्धांत ग्रंथ आदे जीनवचननो बोध पामे, व्याकरण कोषआदे भणे त्यांपण मान मोटपनु प्रगटपणु देखाय छे, ए मोटी अचंबाभूत वात छे जुवो के मोह राजानो मान पुत्र केवो बळवान छे कारण के घणा प्रयत्न जोगे जीवात्माए सुक्रीत धन्न मेळवेलुं ते वीना प्रयत्नथी मोह पह्लीनो पुत्र जे मान ते वीचक्षण पुरुसोतम

पासेथी पामी लेइ नीर्धन करी मुके छे धन सचवातुज नथी इहां घणो वीचार करवानो छे, शीरीते सचवाय त्यारे पोतानी भूलेज पोते नीर्धन थाय छे, जुवो के पोताना विषे गुणीपणुं जुवे त्यां मान अंग आपे छे जो छंठासने जुवे तो मान अंग आपे नही, छंठासने जोवुं त्यांतो चारीत्र रायने पोत्तानुज अंग छे सो गुण वृधी करता थाय, हवे आठमुं पापस्थान सो माया छे एटले कपट फंद केळवणी ते सा अर्थे करे छे तेनो वीचार करवो तो के कांतो मान राखवाने कांतो लोजना अर्थे ए वे प्रकृतीना माटे वक्रता माया करे छे तेनो त्याग करीए त्यां मायानो अवकास नथी, नवमुं पापस्थान सो लोज छे तेने शी रीते तजीए त्यां घटमां ज्ञान लावी वीचार करीए के लोज छे ते सुखना माटे छे के डुःखना माटे छे, सुखना माटे होय तो तजवानी खप नथी त्यारे तत्व ड्रष्टीए जोतां तो लोज तजवा योग्य छे. परंतु जे लोज छे ते स्वअर्थे करे छे ने हांणी पामे छे वळी तज्यो तजातोज नथी त्यारे वीवेक लावी नीश्चे कर्यो के पुजलीक अप्रसस्त वस्तुनो लोज तो नर्कादी गतीनो हेतु छे, ते माटे लोजने पलटावीने आत्माना ज्ञानदर्शन चारीत्र आदे गुणनो लोज करीए वस्तु गते वस्तध---र्म ---यो छे तेने प्रगट करवानो लोज सो प्रशस्त कप्रणमन पोतानुं प---े लोज थयो कहीए, सो सुख हेतु छे. वे ड्रव्यनु एकत्व प्रण---ो त्यां एक नर्कने वीजी तीर्यंच ए वे घटमां लावी वीजाग व---धंध थयां, एक देवनोने वीजी मनुरीणाम पामीए त्यां त्रीन- आववुं रह्युं छे त्यां लोजनो प्रेरयो नंता गुण पर्यायनो पुज सा(४४)

थको वीर्य फोरवी क्षपक श्रेणीए चढी क्षीणमोहवार मुगुण ठाणु पामे त्यां लोजनो अजाव थयो कहीए. कांटाथी कांटो नीकळी गयो ए न्याय ठे, संसारनुं वीज वळी गयुं तद जवे मुक्ति थइ. हवे दसमु पापस्थान सो राग ठे सो पापस्थान तजवुं अती डुर्धर ठे. सफरी वहाणनो दोर तोमवो सुलज ठे परंतु रागतंतु तोमवो अती डुस्कर ठे कारण के कसाय कह्या ते, प्रकृती ठे, ने राग सो प्रणती ठे, वळी अगीयारमुं पापस्थान सो द्वेस ठे, एम प्रणतीए इष्टानीष्टपणुं रहु ठे सो राग द्वेस कहीए तेनो नास आगळ प्रणतीए समकीत जाव गवेखीसुं त्यां कहीशुं हवे वारमुं पापस्थान सो कलह कहीए, तेनो वीचार करवो के कलहतो लढवुं, वढवुं युद्ध करवुं, सो कलह कहीए ते सा कारणे करवुं पमे ठे, त्यारे एक तो लोजना माटे, ने वीजु माननां माटे ए वे प्रकृती सो कलह कारण कहीए तेने तजीए त्यां कलहनो संजव नथी, तेरमुं पापस्थान अज्याख्यान कहीए, एटले ठतु अठतुं कलंकनुं मुकवुं तेतुंज नाम अज्याख्यान ठे ते सा कारणे कलंकनो आरोप करे ठे तारे कारण जोइए तो द्वेस ठे, वळी चौदमुं पापस्थान सो पैशुन ठे एटले एकनी चामी वीजाने करे तेनुं नाम पैशुन कहीए, ते पण द्वेस कारण ठे एम तेरमु चौदमु ए वे पापस्थाननो हेतु द्वेस ठे तेनो विचार करतां द्वेसजाव थावानो हेतु एक लोजने वीजुं मान ए वे ठे तेने तजीए त्यारे ए वे पापथी ठुटीए, हवे पंनरमु पापस्थान सो रती अरती कहीए तेनो वीचार करवो त्यारे शुज क-

र्म प्रकृती सो रती एटले सातावेदनीनो हेतु ने अशुभ कर्म प्रकृती सो अरती ते असातानो हेतु, एम साता असाता सो वेदनी कर्म छे तेनो उदय सो रती अरती, पापस्थान कहीए, तेने शीरीते टाळवु तो शुभ प्रकृती सुभवीपाक आपे ने असुभ प्रकृती असुभ वीपाक आपे सो सुभासुभ वीपाक आत्मा अंतर व्यापकपणे सहेज समाधीजोगे स्वरुप रमण एकत्व प्रणमन करतां वळी मनवचनने कायाए त्रण जोगमां नही प्रमणतां सहन करे, सो समताजोग कहेवाय त्यां ए पाप स्थान टळे छे, रतीअरतीनो संभव नथी माटे पुनरपी कर्म बंधन करे, हवे सोलमुं पापस्थान परपरिवाद ते पारकी नींदा करवी तेनुं कारण जोइए तो द्वेसीनीज नींदा करे छे त्यारे द्वेस भाव थावानुं कारण तो एक लोभ ने बीजुं मान छे,तेने तजीए त्यारे ए पाप टले, छे हवे सत्तरमु पापस्थान सो माया मृपावाद छे एटले जुठू बोलवु, तेनी तो परीक्षा चतुर पुरुस करे छे, परंतु कपट साथे जुठ बोलनारनी परीक्षा बहु श्रुतथी पण थती नथी, कारण के वीनय रत्न कपट जोगे दीक्षा लेइ मुनीपणानी क्रीयामां सावधान थइ, वीनय जोगे गुरुराये वीनय रत्न नाम पाड्युं छे घणां वर्ष सुधी गुरु महारायनी सेवा करी छेवटे पोताना ओधामां कंकण छुरी राखेली ते सत्तेज दाइ राजरुपीने मारी प्राणरहीत करीने गयो, सो महापापी जाणवो सो पाप सा कारणे थाय छे तो एक लोभने बीजु मान ए ज कारण छे तेने तजीए त्यां ए पाप टले, छे हवे अढारमु पासो मीथ्यात्वसल्य एटले मीथात्व कहेतां वीप्रीत

श्रद्धा तेना दश भेद छे जीवने अजीव माने ने अजीवने जीव माने धर्मने अधर्म माने ने अधर्मने धर्म माने साधुने असाधु माने ने असाधुने साधु माने देवने अदेव माने ने अदेवने देवमाने, मुक्ति ने अमुक्तिमाने ने अमुक्तिने मुक्तिमाने एम वीपरीत श्रद्धा वली पकड्युं तेने मेले नही खरा खोटानी परीक्षा नही खोटु जाणीने खरु करवानो हठ मत जीनव वचनमां संकाने अजाणपणुं इत्यादी मीथात्व सो महा पाप छे, एक ताजवामे सत्तर पापस्थान मुकी एने एक पल्लामे मीथात्व मुकीए तो मीथात्वनुं पल्लु उपडेज नहीं अती भारछे माटे अनंत पुद्गल परावर्त संसार स्थीतीनो मालीक वली उत्तकृष्टी स्थीतीए अशुभक कर्म बंध करवानो हेतु जीवने नर्कनी गोदना दुःखनो दातार रुद्र ध्याननो पक्षी मोहपल्लीनो वडो पुत्र संसार स्थीतीनो स्थंभ चारीत्ररायनो महा शत्रु सो मीथात्व महा पाप कहीए, तेनो नाश करवाने अपूर्वकरण सो कारण कहीए, ए करण कीधां ग्रंथी भेद थाय ने समकीत पामे त्यां ए पापनो नास व्यवहारे थायछे ने नीश्चेथी तो क्षायक समकीत पाम्यां थाय तेना अभावे तो एक रागने वीजो लोभ त्रीजु मान ए त्रण प्रकृतीज नजरे आवे छे तेनी पाछल सर्वे पापस्थान लागु थाय छे वली ए त्रण प्रकृतीमे जे मान छे ते पण पोताने वीषे उंडासने जोतां टले छे त्यारे बे प्रकृती रही एक रागने वीजो लोभ ए बेनुं रुप तो एकज छे तेनो नाश उनमुल न करवाने शुकल ध्याननो वीजो पायो एकत्व वीतर्क अपरविचार नामे दसमा

गुणगणा अंते सो छे, ए ज्ञान ध्यान जोगे सो पाम टले छे त्यारे पाप बंध पळती ञटे, क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए त्यांथी पापबंधनो अन्नाव थयो कहीए, वली क्षीणमोह बारमु गुण गणुं कहीए वीतराग न्नाव कहीए यथाख्यात चारीत्र कहीए, ए पोसह त्रीजुं शीक्षाव्रत कह्युं, हवे 'चोथुं अतीथी संवी न्नोगव्रत कहेछे तीहां वीचार करवो के अतीथी कोने कहीए त्यारे अतीथी नाम साधुनुंछे त्यां जीनेश्वर न्नगवाने साधु कोने कह्या छे, कह्यु छे द्रव्य गुणपर्यायना रासनी पहेली ढाले

एहनो जेणे पाम्युं ताग उघे एहनो जेहने राग ए बे विण त्रीजो नहि साध न्नाख्यो संमति अरथ अगाध.

अर्थः–हवे जे ज्ञान विना मात्र चारीत्रथीज संतुष्ट थाय छे तेहने शिक्षा कहे छे, एकतो ए द्रव्यानुंयोगनो जे ताग के० पारपामी संमति प्रमुख तर्क शास्त्र न्नणीने जे गीतार्थ थया ते तथा बीजा ओघे कहेतां सामान्य प्रकारे ए द्रव्यानुयोगनो जेने राग छे ते गीतार्थ निश्चित ए बेहुंविना त्रीजो साधु नही, एवो अगाध अर्थ संमती ग्रंथमां कह्यो छे ते माटे ज्ञान वीना चारीत्रजन होय.

उक्तंच गाथा–गीयछोयविहारो बीउ गीयछ निस्सिउ मणीउ इत्तोतइय विहारो नाणुणाउ जिणवरेहि ।१।

एक गीतारथने साधु कह्या ने बीजा गीतारथनी नीश्राए अगीतारथने साधु कह्या ए बेहुने अतीथी कहीए, तेमने व्रत धारी श्रावक पोसाना पारणे, अथवा सदा स-

वंदा जम्या पहेलां चारे दीशाए द्रष्टी करी अतीथी मुनीनी गोत करे आवता जोइ बोलावे अथवा उपासरे जइ विनंती करी बहु मान पूर्वक घेरे तेडी लावे भक्तिपुर्वक उत्साह पुर्वक सत्य भाषा बोलीये पर आकंक्षादिडुषणे वर्जीत थैने मोकळा मने अढळक दान सुजतु आपे अंगमां प्रमोद लावे गुरुना गुणनी भावना भावे, गुरु महाराजाने योग्ये वळावा जइ आवीने पोते जमे सो अतीथी संवीभाग कहीए, वली पोतीको आत्मा इंद्रीनो इंद्री संगे उपयोगी थैने चेतना पुद्गलमां परीणाम पामी छे,तेने पलटावीने स्वरुपे प्रणमावीए उपयोगी थैए त्यां आत्मा अविकारी अभीषयी थयो कहीए, वळी ज्ञानी कहीए स्वरुप रमणीजोगे चारीत्रीयो स्थीर उपयोगी कहीए, सो अतीथी छे, तेने स्व अपेक्षाए क्षय उपसम भावनी लब्धीनुं, दान देवु सो नीश्चेथी अतीथी संवीभाग कहीए, ए चोथुं शीक्षाव्रत कह्यु,वली पांच अणुव्रत त्रण गुणव्रत मली श्रावकनां बारव्रत कह्यां,हवे साधुनां पंच महाव्रत गेवखुं, जेने पन्नर प्रकृतीनो क्षय उपसम थयो छे सो पुरुसोतम बहुश्रुत गीतारथ गुरु महाराजनां स्वाधीन थैने सन्मुख द्रष्टीए आज्ञा मस्तके चढाववा पुर्वक बे हाथ जोडी मस्तके चढावी चतुरवीध संघनी साक्षी पुर्वक पोतीका आत्माने धन्य मानतो थको प्रमोदीत थैने रोम राजी वीकुश्वर थये छते गुणरागी पणे गुणने ओलखीने यथारथ श्रद्धा करीने सात धातु रंगाणी छे जेने सो रागने प्रसस्त राग कहीए, प्रसस्त एटले सारमे सारतो जगतमां

चींतामणी रत्न करतां पण अधीक फळदाता महा वीरतीपणु ठे, सो मागणुं गीतारथ गुरु पासे करे ठे, हे स्वामी हे नाथ हे दयाळु हे दीनबंधु करुणाना सागर हुं अनाथ मारा उपर पसाय करी पंच महाव्रत उचरावोजी गुरुराय दातार हीतवंठक तारवानी बुद्धिए पंच महाव्रत उचरावे, पापपंक सावद्य मळमे खुतेला, अशुद्ध असुची भरेला, जीवात्माने श्रुत ज्ञान गंगाजळे पखाळी ममत्व मळ उतारी अंगलुणे लुंठवा पूर्वक तेजोमय प्रकासीत पवीत्र करी अप्रमत्त इंद्रस्थान सीहासणे स्थापी धर्म ध्वज मुनी वेस पहेरावी सर्व वीरती सामायक चारीत्र दीक्षा आपी अखुट भंडार अक्षय नीधि भरेलो अनादी संबंधीत असंख्याता प्रदेश महेलमें कायाकोटनी अंदर संग्रह नयनु ज्ञान अंतर चक्षु प्रगट करी आपी आत्म सत्ताए देखाड्यो, जोतांज तृप्त थयो इच्छा वांछा भागी कारण के पोताना घरमें उठाशने देखे त्यां इच्छा वांच्छा प्रवेश करे ठे. पूर्णने घेर तो इच्छा वांच्छानो अवकासज नथी, उपर सर्व वीरती पणु कह्युं ते वीरती नामतो त्यागनुंठे.एटले संग्रहनयनुं ज्ञान थतांज. नीज पर वस्तुनो भेद पड्यो ठे. एटले जुदाइ थइ ठे, परवस्तु सो उपाधी जाणी ठे ने नीज वस्तु सो समाधी मानी ठे. माटे उपाधीनो सर्वथी त्याग सो सर्व वीरती कहीये ने समाधी सो नीज स्वभाव कहीये ते. तुज नाम सामायक चारित्र कहीये. उपर संग्रह नयनुं ज्ञान

१२ चक्षु लोचनपूर्वक दृष्टीपूर्वक सत्ताए शक्तिभावे देखाड्वा, वस्तुनो स्वभाव उंलखाववा कह्युं सो परिमल सुगंधिमय वा-

ससखेप परक्षेप जाणवो इहां सर्व विरतीपदे महावीरतीने कारक समकीतनी अपेक्षा ए नव कोटीनां पच्चखाण छे. सो गवेखुं छुं. प्रथम प्राणातीपात वीरमाण व्रत सो षटकाय जीवनी दया पाले. सर्व प्राण सर्व भूत, सर्व जीव सर्व सत्व न हणे एटले पोते हणे नही बीजा पासे हणावे नही. हणताने भलो जाणे नही. मनथी वचनथी ने कायाथी बीजुं मृषावाद वीरमाण व्रत सो असत्य वचन पोते बोले नही, बीजाने बोलावे नही, बोलताने भलो जाणे नही, मनथी वचनथी ने कायाथी त्रीजुं अदत्तादान वीरमाण व्रत सो अणदीधे दांत खोतरवा सळी जोइए वा, कारणे एक चपटी राख जोइए तो रस्तामां पडेली पण लीये नही. बीजाने लेवानी बुद्धि ना आपे वली लेताने भलो जाणे नही. मनथी वचनथी ने कायाथी चोथुं मैथुन वीरमाण व्रत सो पुरुषने स्त्रीनो त्याग ने स्त्रीने पुरुषनो त्याग पोते करे बीजा भाइउ वाइउने करावे, नेन करताने भलो जाणे नही मनथी, वचनथी, ने कायाथी पांचमुं परिग्रह वीरमाण व्रत सो कोंडी मात्र न राखे कुखी संबल जेनुं नाम छे. इच्छा वांच्छा तो प्रथमथीज त्यजी छे. सर्वथी परिगृहनो त्याग पोते करे बीजाने करावे नेन करताने भलो जाणे नही मनथी वचनथी कायाथीने ए पंच महाव्रत कह्यां, तेनी वृद्धि करता रक्षण करता, साधन जोगे. सुमति जोइए. सो वर्णवुंछुं, तेमां प्रथम इर्या समीति सो गमना गमन करतां धुंशरा प्रमाण साडात्रण हाथ द्रष्टी पसारीने मारगे जीव जतना करता छता पग मूके आडी त्रीछी द्रष्टी न करे

सो ईर्या समीती कहीए. बीजी भाषा समीती. सो नीरवद्य वचन बोले. नीरवद्य वचन ते कोने कहीए. के उपयोगे बोले सो नीरवद्य कहीए. वली नय गरभीत वचन सो नीरवद्य कहीए. वली सीद्धांतनी मर्यादाए बोलवुं पद संप्रदाये शुद्ध उचारण सो नीरवद्य कहीए कोइने अप्रीती वीना कारणे न उपजाववीने बोलवुं ए वचनने पण नीरवद्य कहीए नाम बीजी भाषा समीती कहीए हवे त्रीजी एसणा सोमुनी महाराजा अवसर जोइने आहार पाणीअर्थे गोचरी करे श्रावकने घरे धर्म लाभ-आशीर्वाद देता आवे द्रष्टी जुवे सचीत संगट वर्जीने दोष वर्जीने आपवावाळानो भाव उछरंग जोइने मोकले मने लीए. एटले देवावाळानो भक्ति भाव झाझो देखे तो एक ठेकाणेथी लेतां पण बाधकता नथी कारण के रीषभदेव स्वामीना जीवे धना सार्थ वाहना तेरमा भवमे घीनुं अढळक दान घणा प्रमोदे जंबुद्वीपना पश्चिम महाविदेह में आपु छे. त्यां धर्म घोष नामे आचार्य चार मासनी पूर्ण तपसा थए. आपवावाळानो भाव जोइने नाज पाडी नथी कारण के करुणा सागर एम वीचारे के हुं जो ना कहीश तो एनो भाव तुटी जशे ने लाभनुं मळवुं तेनी उदास थशे. कारण के भावनुं नीमीत कारण तो द्रव्य छे माटे एम अधिकताइ न होय तो घणा घरथी थोडुं थोडुं पण लीये एक रीत नथी वळी दोष वरजीने लेवुं कह्युं ते सोळ दोष तो देवावाळाथी लागे छे. ने सोळ दोष लेवावाळा मुनि महाराजा तेमना पोताथी लागे. वळी दस दोष लेवावाळा

देवावाला वेठनी नीश्राए लागेछे ते वरजीने वेतालीस दोष रहीत आहार पाणी लीये ने पांच दोष मांरुलाना त्यजीने वापरे एम सुडतालीस दोषेण वरजीत आहार पाणी लीए वापरे सो त्रीजी एसणा समीति कहीए.

हवे चोथी आदान नीखेपणा समीती एटले वस्त्रपात्र आदि उपगरण वली पोथी पानुं सांपडा, सुपडी, ठवणी कवली, आदे लेवुं मुकवु ते दृष्टी करी पुंजी परमारजीने लेवु मुकवु सो आदान नीखेपणा समीती कहीए, हवे पांचमी परीठवणीया समीती सो वडो, मात्रु सलेखम, वलखो, वमनादी कपडो धोयणादी, प्रठववुं सो नीरवद्य एटले वपराती जग्याए, जीवाकुल न होय तेवी जग्या जोइ पुजीने जीव जतना करता ठता प्रठवे, सो परीठवणीया समीती कहीए, ए पंच समीती द्रव्यथी, व्यवहारे कही, हवे त्रण गुप्ति कहुं छुं, तेमां प्रथम मन गुप्ति तेनो वीचार करवो के मनने साथी गोपववु त्यारे मनने प्रथम असुजमे न जवा देवुं जातां रोकवु, ते रोक्यु क्यारे रहेसे के आवता नवनो जय लागसे त्यारे रहेसे कारण के मन असुजमां पेसवा प्रणमवाथी एक अंतर महुर्तमें रुद्र ध्यान जोगे सातमी नरकनां दलीयां महामुनी प्रश्नचंद्रजीए प्रमाद गुणठाणे मेलव्यां छे एवी बाधकता जीवने असुजमे मनथी प्रवृती करतां संजतीपदे थाय छे, वली सुजमे प्रवृती करतां एक अंतर महुर्तमें एज महा मुनीराजे सातमी नर्कनां असुजदलीयां वीखेरी नांखी अप्रमत्त थइ अपुर्व वीर्य अनंतु

फोरवी, श्रेणी मांडी सुकल ध्याननो पहेलो पायो ध्यातां सर्वार्थ सीद्ध वीमानना सुखनी योग्यतानां सुभ दल मेल-व्यां छे वली सुद्ध प्रणतीमें प्रवेस करी एक क्षणमें सुभदल वीखेरी नाखी क्षायकभावे वीर्य फोरवी मोहनी आदे चार घाती कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान केवलदर्शन आदे अनंत चतुष्टी प्रगट करी छे, माटे वीवेकी पुरुसो तमने अवस्य मन जोगने थीर करो, सुभासुभथी रोकी स्वरुप रमणी उपयोगी थाउ. ए कृत्य सर्वोपरी उतकष्टामां उतकष्ठ दुकर छे, ए मन गुप्ति कही. हवे बीजी वचन गुप्ति कहुं छुं, तेनो चतुर पुरुसे विचार करवो, के वचन सो भाषा कहीए ते पांचमी भाषा वर्गणाना पुद्गल छे तेनो सामी पुद्गल छे, जीव नथी जीवने वचन भाषा अग्राह्य छे ते कारण मौन व्रतीए उंडा उतरी उपयोगी थै स्वरुप रमण अनुभव जोगे करीए, त्यां नीज स्वरुपनो प्रतीभाण थाय छे, ने वचन जोगनी गुप्ति थाय छे, ते कही हवे काय गुप्ति कहु छुं, ज्यां सुधी आत्मा पांच इंद्रीना वीषयनो भोगी छे त्यां सुधी कायानी गुप्ति करी न शके, कारण के पोते काया में ढंकाइ गयो छे, ज्यारे पांच इंद्रीना वीषयनो भोग न पामे त्यारे जडता जाय ने चेतनता प्रगटे, सो गवेखु छुं, कायाने विषे इंद्रीओ संगे उपयोगी थइने चेतना परीणाम पामी छे, ते प्रणमन तजीने एटले पलटावीने चेतना अंतहकरणे, स्वरुपे प्रणमावे त्यां स्वरुपने भजे, स्वरुपनो भोग उपभोग करे, त्यां कायानी गुप्ति कहीए, ए त्रण गुप्ति कही हवे पूनरपी भावथी सुद्ध-

नयनी मुख्यताए पांच समीती कहु छुं, तेमां प्रथम इर्या समीती सोभाव एटले स्वभाव में गमनागमन करवुं, ते उपर त्रण गुप्ति गवेखी ते जोगे उपाधीथी आत्मा जुदो थयो, विभाग वहेंचण थइ गइ स्वरुप में प्रवेस करवानो अवसर मल्यो स्वरुपना सन्मुख थयो, स्वस्वरुप चींतवीत ध्यान करे छे, परंतु स्वभावगत प्रवेस करवा में ज्ञान जोगनी मुख्यता छे, ने ज्ञान जोग ज्ञानावरणीना क्षय उपसम पूर्वक स्वभाव गत प्रकास करे छे पण ज्ञान जोगने स्थीर कर्ता मोहनीनो क्षय उपसम वा उपसम भाव छे, वली अंतरायनो क्षय उपसम थया वीना तो कोइ जोव समकीतादी आत्मीक गुण पामेज नही, वली दर्शनावरणीना क्षय उपसमना अभावे तो ज्ञानावरणी आदे कोइ कर्मनो क्षय उपसम थातोज नथी, माटे प्रथमथीतो चारे घाती कर्मनो क्षय उपसम भाव स्वभाव गत प्रवेस करवा में आत्माने हेतु छे, तेमां अंतरगत भावने पामवा में ज्ञाननो क्षय उपसम मुख्य छे, ने मोहनीनो उपसम भाव अधीक छे, परंतु आवरण भाव शत्रुने हणवामें तो एक ज्ञानज अधीक छे, ने चारीत्र वीर्य ज्ञान जोगने स्वभावगत प्रवेस करतां अनुकुल सहायकारी छे, ने स्वभावमें पेसवानुं द्वार सो समकीत चोथुं गुणठाणुं छे, ने स्वभावनी पुर्णता सो क्षायक भावनी पूर्णताए संयोगी केवली नामे तेरसुं गुणठाणु छे, तेमां उपसमभावनी योग्यताए चोथुं गुणठाणु पामे सो स्वभावगत अंसे प्रवेश करीने पाछा पडे छे, ने उपसम समकीत भावे उपसम श्रे-

णी मांकी उपसम न्नावनुं चारीत्र उपसांत मोह अगीयारमे गुणठाणे पामे, सो उपसम न्नावे वीतराग थैने एक अंतर मुहुर्त स्थीती करी पाठा पके, ते जावत उतकष्ट न्नांगे मीथ्यात्व गुणठाणे असंख्याती वा अनंती उत्सरपिणी अवसरपिणी, पण केइक जीव करे नीगोद सुधी पण पोचे परंतु ए जीव उत्तम ठे कारण के ग्रंथी नेद करेलो ठे, माटे सत्ताए द्रव्य समकीती ठे, अर्ध पुज्ञल परावर्तनी मांहेली कोरे सीकी वरसे, परंतु इहां तो कहेवानुं एटलुं ठे के उपसमन्नावे तदगत न्नावने पामी वीतरागता अनुज्ञवाय ठे हवे क्षय उपसम समकीतनी योग्यताए चोथु गुण ठाणु पामे, सो दर्शन मोहनीना क्षयउपसमथी पामे ने तेने चारीत्र मोहनीना क्षय उपसमनी अधीक साज मलतां सातमा गुणठाणा सुधी प्रवेस करे ठे, एकांत क्षय उपसमना वलथी उपरनां गुणस्थानकना न्नावनी स्फर्सना होती नथी, एटले क्षय उपसम समकीतने क्षायक न्नावनी सहाय ज्यारे मलसे त्यारे वेदक एटले मीथात्वना न्नागनुं सुज दळ जे समकीत मोहनी तेना उदयनो ठेलो ग्रास वेदक समकीत अवसरे सत्ताथी खपावी उच्छेद उनमुलन मीथात्वनुं करीने क्षायक समकीत एटले केइक जीव चोथे गुणठाणे क्षायक समकीत पामे ठे, अने केइक सातमा गुणठाणे पण पामेठे, परंतु क्षायक समकीत पामे ते मे केइक पुर्वे आवता नवनुं आयुष्य वांधीने पामेठे ने केइक नही वांध्यु ने पामे ठे, एटले नही वांध्युं ते अव क्षायक समकीती सोतदन्नवेज क्षपक श्रेणी मांकी

मोहनी आदि घाती अघाती कर्म हणी सीद्धी वरसे, एम वस्तुगत स्वभावमां गमनागमन करवु सो भावथी इर्या समीती पहेली कहीए, हवे बीजी भाषा समीती ते चोथा गुणठाणाथी कहेवाय परंतु व्यवहार में संजतीपदे भाषा समीती कहीए, पण इहां तो तदगत भावमे ज्ञान ज्योतीनो प्रकास जे उद्योत अजवाळु करता थाय छे तेने दृष्टांत पुर्वक गवेखुडुं,उपसम समकीतनो प्रकास चोथा गुणठाणे बीजना चंद्र तुल्य तदगत छे, ने उपसम श्रेणीए, पुनमना चंद्र सम तदगत छे, वळी क्षय उपसम समकीतनो प्रकास चोथा पांचमा गुणठाणे उगता सुर्य सरखो छे, ने सातमा गुणठाणे पाछला चोथा पहोरना सुर्य सरखो छे ने छठा गुणठाणे पांचमा गुणठाणानी अपेक्षाए विशेष अने सातमानी अपेक्षाए न्यून छे. वळी क्षायक समकीतनो प्रकास वरू आयुनो एक पहोर दीवस चढतां वादलांना आवरणे रहीत थको सुर्य प्रकास करे छे, तदवत्त तदगत जाणवो, ने अवरूायु क्षायक समकीतीने श्रेणीगते वादळा रहीत सुर्य मध्यानकाले ग्रीष्मरुतुए ते जे ज्यादे तपे छे तदवत तदगत प्रकास करे छे, ए प्रकास कह्यो तेनो उपनय कहुं छुं, उपसम समकीतनो बीजना चंद्र सम प्रकास कह्यो ते बीजनो चंद्र एक मुहुर्ते अस्त थवानो छे तेम उपसम समकीत पण अंतर मुहुर्ते स्थीतीकालनुं छे वली बीजनो चंद्र कृष्न पक्षनी अपेक्षाए घणोज उद्योत कर्ता कहेवाय, तेम मीथ्यात्वी अज्ञानी जम जीवनी अपेक्षाए उपसम समकीती आत्म स्वरुपने तद-

गत अनुभवे छे, माटे चेतन कहेवाय, वली अनुमोदवाने योग्य थया. जेम बीजनो चंद्र अल्पकाल रहेवानो छे, पण जोवाने सर्व इच्छे छे, तेम धर्मी पुरुसो ग्रंथी भेदी जीवनी अनुमोदना इच्छे छे, एम सरखापणुं छे, वली उपसम श्रेणीए पुनमना चंद्र सम प्रकास कह्यो ते पुनमना चंद्रनो यथा स्थीत पुर्ण प्रकास छे तेम उपसम श्रेणीए तदगत्त अरुपी आत्माने प्रत्यक्ष प्रमाणे यथास्थीत वीरागता अनुभवे छे, वली चंद्र छे ते परने अपरितापकारी छे परीताप न उपजावे तेम उपसम भाव छे ते मोहमहा शत्रु छे तेने पण पोताना आत्म प्रदेशे सत्ताए उपसमतां परीताप उपजावे नही, हणे नही, एम सरखापणु छे. वली क्षय उपसम भावे चोथा पांचमा गुण ठाणानो उगता सुर्य सम प्रकास कह्यो ते पांचमु गुणठाणुं देशे उणां पूर्व कोड परीअंत स्थीतीकालनुं छे. वली चोथु गुणठाणुं उतकृष्ट भांगे छासट सागरोपम जाजेरी स्थीतीनुं छे. ते अपेक्षाए उगतो सूर्य मलतो छे. कारण के आखो दीवस रहेवानो छे. माटे वली सूर्य परितापकारी छे. तेम क्षय उपसम भाव पण परितापकारी छे. कारण के प्रकृती उदय में आवे तेने खेरववा नीरजर्वाने क्षय उपसमभाव शक्तीवान छे. वली सातमा अप्रमत स्थानके पाछला चोथा पहोरना सूर्यसम प्रकाश कह्यो ते उगता सूर्य करतां घणोज अधिक प्रकास पाछला पहोरनो सूर्य करे छे. तेम अपरमते तद्गत उपयोग छे ने प्रमाद ठाणनो प्रकाश तो बहुधा प्रमाद बादलांना समूहे करीने छवराइ गयो छे. तेथी अशुद्ध छे.

ते कारणे न्यून कह्यो ठे. वली पाठला पोहोरनो सूर्य जलदी-
थी अस्त थवानो ठे. तेम सातमा गुणगणानो काल एक
अंतर महूर्तनो ठे एम सरखापणुं ठे. वली बध आयु क्षायक
समकीतनो एक पहोर दीवस चरुतां वादला रहीत सूर्य
सम प्रकाश कह्यो ते मीथ्यातत्वनी त्रण प्रकर्तीए रहीत
क्षायक समकीत अती नीरमल ठे तेम ए सूर्यनो प्रकाश
जादे चरुती कलाए ठे, ने त्रण पहोर केमे अस्त थवानो
ठे. तेम क्षायक समकीती बधआयुने त्रीजे जवे संसार स्थी-
ती अस्त थवानी ठे. ने चरुती कलाए अनंत चतुष्टी पामसे.
एम सरखापणुं ठे. वली अबध आयुक्षायक समकीतीने
वादला रहीत मध्यानकाले ग्रीसम रुतुना सूर्य सम प्रकास
कह्यो ते उतकृष्ट जांगे सूर्यनो प्रकाश ए अवसरेज लाधे ठे
तेम अबध आयुक्षायक समकीतीने उतकृष्ट जांगे क्षपक
श्रेणीए क्षय उपसम जावे ज्ञान जोतीनो प्रकाश लाधेठे एम
सरखापणुं मलतुं जोइने दृष्टांतो तद्गत प्रकाशने जाणवाने
आप्यां ठे ने ज्ञाननो तो अरुपी विषय ठे अरुपी वस्तुनो प्रती
जास थाय सो जावथी बीजी जापा समीती कहीए ने
केवल ज्ञाननी जोतीनो प्रकास तो अनंता सूर्य साथे
उदय पामे तदवत जाणवो. हवे त्रीजी ए सणा
समीती गवेखुंतुं एसणा एटले आत्माने चेतनगुणनो आहार
एटले जोग उपजोग करवो ते दुषणे करीने रहीत निरदोष
केवलीनी दृष्टीए कहीए ने असनपान खादीम स्वादीम
एसणी आहार निरदोष कहीए ते ठदमस्थनी दृष्टीए

नीरदोष छे. ने केवळीनी द्रष्टीए तो दोषीतज मान्यो छे.
ते इहां न कल्पे आतमा अणाहारी छे माटे इहां तो स्वरुपे
नीजगुण स्थीरता सो भोगने उपभोग कहीए तेनो भोगी
आतमा ते गुण नीस्पन समय भोग कहीए. पूनरपी वारंवार
उपभोग कहीए, सो गुण नीस्पन गुण स्थानक गवेखुं.
चोथे गुणठाणेथी सम्यक ज्ञान दर्शननो भोग उपभोग च-
ढती कळाए वृद्धि पामतो पामतो दसमा गुणस्थानकना अंत
सुधि कहीए. उपरांत वितराग पदे यथाख्यात चारित्रनो
भोग वध्यो ते संयुक्त भोग उपभोग कहीए तेना उपरांत ते
रमे गुणठाणे अरिहंत पदे केवळज्ञान केवळ दर्शन वली.
दानादीक क्षायक भावनी पांच लब्धी एम सात गुणना
भोगनी वृद्धि थइ एटले क्षायक भावनी नव लब्धी गुणना
भोग उपभोगनी पूरणता पाम्या. उपरांत चउदमा गुण-
ठाणा अंते अव्यावाध सुख अक्षय स्थीती-अरुपी अने अगुरु
लघु एम चार पर्यायनो भोग उपभोग वध्यो अटल अव-
गाहना सो सिद्ध थया. लोका अग्रभागे सादी अनंतोकाल
स्थीतीवंत अनंत गुण पर्याय नीरमळपणे.ते भोग भोगी उप
भोगी सो भावथी त्रीजी एसणा समीती कहीए हवे चोथी
आदान नीखेपणा समीती सो उपगरण कारणे लेवुं मुकवुं ते
इहां भावमां शुं लेवुं मुकवु छे. तेने गवेखुं हुं भावमां तो क्षय
उपसम भावज कारण छे. तेमां प्रथम ज्ञानावरणीनो क्षय उ-
पसम लेवो, वीजो दर्सनावरणीनो क्षय उपसम लेवो त्रीजो
[illegible] क्षय उपसम लेवोअनेचोथो अंतरायनो क्षय उपसम

लेवो हवे तेने मुकवो सो गवेखुं बुं एटले ए चारे कर्मनो क्षय उपसम ज्ञान जोगनी नीश्राए थयो त्यांथी कहीशुं. मोहनीनो क्षय उपसम तेमां दर्सन मोहनीनो क्षय उपसम आत्मा पामे तेन कारण कहीए ते कारण कार्यपणानी योगता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्तावी क्षायक समकीत प्रगट करी चोथे गुणठाणे वा सातमे गुणठाणे मुकीए ने चारित्र मोहनीनो क्षय उपसम लेइ कार्यपणानी योग्यता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्तावी यथाख्यात चारित्र प्रगट करी दसमे गुणठाणे अंते मूकीए ने ज्ञानावरणी दर्सणावरणीने अंतराय ए त्रण कर्मनो क्षय उपसम लेइ कार्यपणानी योग्यता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्तावी केवळज्ञान केवळ दर्सनने क्षायक भावनी पांच लब्धीदान लाभ जोग उपभोग ने वीर्य ए सात गुण प्रगट करी बारमे गुणठाणे अंते मूकीए तेनुंज नाम आदान नीखेपणा समीती कहीए तेमां कार्यपणानी योगता पूर्वक साधन जोगे प्रवर्ताववुं कह्युं ते चोथा गुणठाणाथी साधन योग्यता कही ए समकीतनी साधना सातमे गुणठाणे पूरण थइ कारण के चोथे गुणठाणे क्षय उपसम समकीत पामी क्षायक न करे तो छेवटे सातमा गुणठाणे क्षायक समकीत करे वली चारीत्र मोहनीनो क्षय उपसम चोथे गुणठाणेथी थयो परंतु व्यवहारमें पांचमा देश वीरती गुणठाणेथी चा० अपेक्षाए धर्म साधन योग्यता कहेवाय तेनी साधना दसमा गुणठाणाना अंत सुधीछे. हवे ज्ञानावरणीना क्षय उपसम जोगे ज्ञान सो विशेष उपयोग कहीए ने दर्सना वरणीना क्षय उपसमजोगे दर्सन

सो सामान्य उपयोग कहीए वळी अंतराय कर्मना क्षय उपसम जोगे क्षय उपसम भावनी दान लाभ भोग उपभोग ने वीर्य सो पांच लब्धी कहीए एम सामान्य विशेष उपयोग ने क्षय उपसमभावनी पांच लब्धी ए सात गुण चोथा गुणठाणेथी कर्मना क्षय उपसम पूर्वक आत्माना गुण आत्माने प्राप्त थयाछे तेनी साधना अनुक्रमे बारमा गुणठाणाना अंते पूर्ण थायछे. त्यां सूधी साधन योगता कहीए ए क्षय उपसम भाव क्षायक भाव नीस्पन थवाने प्राप्ती करवाने हीतवंच्छक कारण छे. एना अभावे सर्व अकारण जाणवु क्षय उपसम जेवो बीजो कोइ आत्माने हेतु नथी. ए भावथी आदान नीखेपणा समीती चोथी कही.हवे पांचमी परीठवणीआ समीती कहेछे इहांतो मळ परठववानोछे. तेनो वीचार करवो त्यारे आत्माने कर्म लाग्यां छे. एनेज भाव मळ कहीए तेमां जे चार घाती कर्म छे. तेनो अपेक्षाए कहीए छीए ते चोथुं गुणठाणु आत्मा पामे त्यारे मळ परठववानो वखत आवे छे. सो गवेखु छुं. चोथा गुणठाणे दर्सन मोहनीनी त्रण प्रकरतीने अनंतानुबंधी कसायनी चोकडी मळी सात प्रकरती परठवाय छे. पांचमा गुणठाणे अप्रत्याख्यानी चोकडी परठवाय छे. छठे गुणठाणे प्रत्याख्यानी चोकडी परठवाय छे. सातमा गुणठाणे पांचवा भाग प्रमाद परठवायछे. ने आठमा गुणठाणे आशादी षट परठवायछे. नवमा गुणठाणे प्रथम त्रण वेद ने अंते संजळना त्रण कसाये मळी छ प्रकरती परठवायछे.दसमा गुणठाणे संजलनो लोभ अणुं छे तेने अशुद्ध प्रणती सो राग तेने पर-

ठवाय छे बारमा गुणठाणे ज्ञानावरणी दर्सनावरणी ने अंत-
राय ए त्रण कर्म परठवाय छे. तेरमे गुणठाणे अघाती चार
कर्मनी वहोलता एटले सत्ताए पंचासी प्रकरती रही हूती
तेमांथी वहोतेर प्रकरती परठवाय छे. चउदमा गुणठाणे अंते
कार्मण कर्म वर्गणा अघाती तेर प्रकरती परठवी पवीत्र अ-
संख्यात प्रदेशे नीरमल थइ त्रीजा भागनी कायाना मानथी
अवगाहना घटाडी वे भाग परमाण आत्म प्रदेशनो नीव-
ड़घन करी एक समयकाल माने सम श्रेणीए बीजा आकाश
प्रदेशने अणफरसते लोक शीखरे एटले अग्रभागे सादी
अनंत भांगे स्थीती करे सो सिद्ध परमात्मा कहीए एम सिद्ध
पद दाता परीठवणी आ समीती पांचमी भावथी कहीए ए
द्रव्य भाव भेदे पंच समीती त्रण गुप्ती कही तेनो परमारथ
कहु छुं समीती सो प्रवर्ती कहीए ने गुप्ती सो निरव्रती कहीए
नीरवती सो त्यागनुं नाम छे. ने प्रवर्ति सो ग्रहणनु नाम छे त्यारे
आत्माने त्याग शु करवानुं छे. ने ग्रहण शुं करवानु छे तो उपाधि
त्याग करवानीछे. ने समाधी ग्रहण करवानीछे. त्यारे उपाधी
तो मनवचन ने काया तेज राग द्वेष ने तेज कर्म बंध हेतु
छे सो उपाधीस्थान कहीए तेना वे भेद एक असुभ
उपाधी अने बीजी सुभ उपाधी वळी समाधीना
वे भेद एक द्रव्य समाधी अने बीजी भाव समाधी द्रव्य
समाधी सो द्रव्यथी पंचसमीती गवेखी तेने कहीए ते में अ-
शुभ उपाधीनो त्याग थाय छे. ने भाव समाधी तो सहेज
समाधीनुज नामछे. तो भावथी पंच समीती गवेखी ते कहीए

ते में सुन्नासुन्न उपाधीनुं उन मुलन सो मुल साथे त्याग ठे तीहां आत्मानुं कारज कहीए एनीरवरती प्रवर्तिकही तेनुंज नाम व्यवहार सापेक्ष धर्म साधना कहीए वली पंच समीती ने त्रण गुप्ती सो अष्ट प्रवचन माता कहीए तेनो अर्थ कहुं ढुं. प्रवचन तो सीद्धांतनुज नाम ठे. तेना बे भेद एक द्रव्य सीद्धांत बीजो भाव सीद्धांत द्रव्य सीद्धांत तो पीस्तालीस आगम कहीए सो ठे. ने भाव सीद्धांत तो आत्माने कहीए एम शान्त रस नामें ग्रंथमें कह्युं ठे. तेनी एटले सीद्धांतनी कहेतां सीद्धांतना मालीक आचार्य उपाध्याय ने साधु तेमनी वली आत्मानी कहेतां समकीती देश वीरती ने सर्व वीरतीसो अंतर आत्मानी माता कहेतां पंच समीती ने त्रण गुप्ती सो माता कहीए एटले समीती गुप्तीएज नीत आचार्य उपाध्याय ने साधुपद कहीए वली श्रावक कहीए पुत्र माताने न पाले तो पुत्रने ऐब लागे तेम द्रव्यचारीत्री आ द्रव्य समीती गुप्ती न पाले तो द्रव्य चारित्रने एब लागे ने भाव चारीत्री आ भाव समीती गुप्ती न पाले तो भाव चारीत्रने एब लागे ने एब तो वीराधक भावनुज नाम ठे माटे आचार्य उपाध्याय ने साधु वीराधक यातां द्रव्य चारीत्र जोगे नवग्रीवेक न मीले अने भाव चारीत्र जोगे मुक्ती न मीले तेम अनुत्तर वीमान पण न मीले आराधक थयांज मीले वली समकीती देश वीरतीने वीराधक यतां देवलोक न मीले वली वीराधकनो तो नीमंजनथी जावत वीराधक यतां नरके पण जाय ठे. माटे घट में ज्ञान लावी अष्ट प्रवचन माताने

पाळी आराधक थवुं आराधक थयां संजती धर्म कहीए तेने दस भेदे वर्णवुं छुं तेमां प्रथम धर्म तो क्षीमा कहीए तेना वे भेद लोकीक क्षीमाने लोकोतर क्षीमा. लोकीक क्षीमाना त्रण भेद-उपचार क्षीमा,वीचार क्षीमा अने वीपाक क्षीमा. ए त्रण भेद कह्या. तेनो अर्थ कहुं छुं. कोइ सामो पुरुष बोल्यो तेना सामु न बोले, पोताना मनमां वीचारे के बंने सरखा बनशु एम जाणीने समताभावे रहे तेने उपचार क्षीमा कहीए वळी कोइए आपणुं अपमान कर्युं वा बगाड कर्यो तेना सामुं बोलतां वीचारे के महा क्रोधी छे जो कहेवा जइशुं तो तीखा थइने लडवा आवशे एम वीचारीने क्षीमा राखे तेने बीजी वीचार क्षीमा कहीए,त्रीजी क्षीमा आगलो जोरावर छतां तेना उपर आपणु बल पराक्रम कांइ चाले नहि. माटे मन मांहे तो क्रोध होय पण देखवाथी बाह्यपणे क्षमा आदरे तेने वीपाक क्षीमा कहीए एवी क्षीमाने लोकीक कहीए, हवे लोकोत्तर क्षीमा कहुं छुं एक वचन क्षीमा अने बीजी धर्म क्षीमा. तेमां वचन क्षीमा सो भेद ज्ञाननी अपेक्षाए जड चेतन नी वीभाग वहेचण पूर्वक वस्तुने वीषे वस्तुपणुं घटावीने हेतु दृष्टांत जुक्ती पूर्वक तर्क वीतर्कना खुलासा पूर्वक भवी जीवने बोधबीज पमाडवा हेते करुणा लावी उपदेश करे मीथ्यात्व मळ उतारी समकीत पमाडे वा पामेलाने नीरमळ करी आपे वा गुणगणे चडवाने आलंबनभुत थाय वा कोलताने थीर करे सो उपदेस ने वचन क्षीमा कहीए हवे बीजी धर्म क्षीमा तेना वे भेद एक व्यवहारने बीजो नीश्चे. व्यवहार

ते गुणठाणानी हद पूर्वक क्षय उपसम जोगे क्रोध ना आवे क्रोधमां व्यापकपणुं न करे ने समता जावे वर्ते सो व्यवहारे धर्म क्षीमा कहीए ने क्रोधनी सत्ताना उनमूळन जोगे क्षपकश्रेणीनी अपेक्षाए नवमा ठाण अंते एटले दसमा गुणठाणेथी नीश्चे क्षीमा कहीए ए वेहु भेदे लोकोत्तर क्षीमा कहीए ए संजती धर्मनो पहेलो भेद कह्यो.

हवे वीजो भेद सो मार्दव धर्म कहीए ते मानना एटले उन्माद सो मदना त्यागथी आवे मद करवाथी जीवने अंतराय कर्म वंधाय छे सो मदना आठ भेद तेमां प्रथम जाती मद एटले जाती कहेतां मातानो पक्ष एटले पोतानो मुसाळ पक्ष घणोज उत्तम होय एव रहीत होय वळी वीजो कुळमद सो पीतानो पक्ष, दादानो वडीलोनो पक्ष घणोज उत्तम होय एटले जावत चक्रवर्ति होय तीर्थंकर होय तेनो मद करवो एटले उन्मादी थावुं घणुं राचवुं माचवुं नाचवुं सो लघुता पामवाना अर्थे थाय छे ते देखाडुं छुं जातीनो मद हरीकेसीए पूर्वना भवमें कीधो ते चंडाळनी कुखे जन्म पाम्या वळी कुळनो मद वीरस्वामीना जीवे मरीचीना भवे भरतराय चक्रवर्तिना पुत्र थैने त्रीदंडी परीव्राजकनुं लींग ग्रहण करी कीधो ते छेवटे तीर्थंकरना भवमे चवीने भीक्षुक कुळे एटले ब्रामणीनी कुखे आव्या एथी वीजी शी लघुता कहीए एम मद करवाथी जीव लघुता पामे छे माटे वीवेकीने एम वीचार करवानुं छे के जगत्में उत्तम मध्यम आदे कहेवाय छे. सो पुर्वोपारजीत कर्म छे ते हुं नहीं. हुं तो अगुरु

लघु गुणे संयुक्त हुं एटले उत्तमे नही हुं ने मध्यमे नही तु उतम मध्यम कहेवुं एतो जरुना चांमा ठे. सो आरोपीत कहीए कारण के वीना शशील ठे. सदाय रहेवानुं नथी. तु अनादी संबधीत चतुरगती संसार भ्रमण करतां अनंतीवार उंच नीच थयो एम वीचार करी मद न करे तेने मारदव धर्ममें गणीए हवे त्रीजो बळमद ते कायानुं घणुं बळ पामीने एटले फोरवीने कांतो वाघने मारे ने कांतो शत्रुने हणे इत्यादी जीवनो वध करी हींसक थइने नरकनु आयुष बांधीने घणो राजीपो माने कारण के मारा जेवो कोण बळीउं ठे. कोनी माए सूंठ खाधी ठे ते हुं करु ए काम बीजो करे, वा मारा सामुं जुवे परंतु एम न वीचारे के राजानो नोकर आवीने मने केद करी पकमी जाय तो मारु कंइ पण चाले नही वली नवांतरे परमाधामी अनंतु ङःख आपशे त्यां पण कंइ चालशे नही. हुं शुं मद करुंतुं मारा करतां तो जगतमें घणा जोरावर जोद्धा ठे. वळी वीचारे के हे चेतन तुं करण वीर्यने जोइने शुं मद करे ठे. तुं तारुं अकरणवीर्यअदगत चींतव्यने स्वस्वरुपे सहेज नावे फोरव तारो अखूट खजानानो नंमार अमुलख रत्न शुं नरेलो सो अन्यंतर लक्ष्मी मोहएव्वी लूंटीने लेइ जाय ठे ते मोहने तुं हणे तो तारुं वळ खप लागे तुं वळीओ अनंत वीर्यनो धणी कहेवाय त्रण जगतने वखाणवा पूजवा ध्यान करवा स्तुती करवा योग्य थाय, परंतु अंतःहकरणे सहेज नावे वीर्य फोरववु ए शक्तीतो पोतामे देखाती नथी तेनो खप करु एम

वीचार करी छता वळे मद त्यजे सो मारदव धर्ममें गणीए हवे चोथो रुप मद सो मनोज्ञ सुंदर रुप कान्ती यथायोग्य आंगोपांग सुदर एटले जेवां जोइए तेवां वखाणवा लायक रस एटले जीभनी पढुता गंध एटले कमळना श्वासपूर्वक स्वासोस्वास महके छे जेने फरस एटले घणोज सुकुमाल नीरमळ,वली सुंवाळोने स्नीग्ध आदि तेजस्वीपणो चातुर्यपणो लायकीपणो इत्यादी पामीने मद करे नेबीजाभना सामु जोतो फरे वली मनमें आनंद माने के मारां जेवो कुण रुपवान छे. एम पोताना सरीर उपर मोह पामीने मद करे सो रुप मद कहीए परंतु वीवेकीने एम वीचारवानुं छे के सनंत कुमार चोथा चक्रवर्ति थया. तेमनी अमुलख कायाने एक क्षणमे वगरूतां वार न लागी असुचीमय दुर्गंध व्यापक पणे थइ तंबोळ थुंकीने जोतां कीडा दीठा. मोरछा उतरी गइ. समज्या के ए काया छे. सो क्षण भंगुर छे. वीनाश शील छे. सुभ कर्मना उदय जोगे जीव पामे छे. ने अशुभ कर्मना उदय जोगे तेनी हांणी थाय छे. ए पामवु ने हानीनु थावुं सो सुभासुभ पूर्वांपारजीत कर्म छे ते हु नही. मारु रुपतो अरुपी छे. वळी अचल अवीनाशी छे त्रण काळमे नाश थावानो नथी आ रुपी काया सो हु नही एम घटमें ज्ञान प्रगट होवाथी सनंत कुमारे चक्रवर्तीपणानी रीद्धीने पर वस्तु जाणी मोरछा उतारी त्याग करी एकाकीपणे चाली नीकल्या. संजती थया रत्न स्त्री आदे पहोलु टोलु छ मास तो पाछळ फर्युं छे परंतु तेमणे सामु पण जोयु नथी रोगनी

वृद्धी थवा लागी रोमे रोम नारां पड्यां छे. परंतु उदीकभाव भोगव्या वीना छुटे नही. एम जाणी उसड उपचार पण कर्यो नथी कारण के उसड उपचार करीने उपरथी रोगनी शांन्ती करीसु पण अंदरथी शांन्ती नही थाय ने ज्यारे त्यारे दुःख आपशे माटे आ वखते हुं समताए दुःख भोगववाने सहन करवाने शक्तिवंत छु एम तीक्षण उपयोगी थै सातसो वर्ष सुधी रोग परीसह सहन करी. अनंती व्याधी भोगववाना अवसरे समाधी चींतवी छे आयुषनो अंत आवे काळ करीने पांचमा ब्रह्म देवलोके गया.धन्य छे ए पुरुषोतमने.एम रुप पामीने मोरछा न पामे ने ए रुपथी पोतानुं अंतर रुप जुदु जुवे तेने मारदव धर्ममें गणीए हवे पांचमो तपमद ते केइकने तप करवानी रुची घणी होय कारण के कायानी शक्ती होय जीभा इंद्रीनुं लोलपी पणु उछु होय वळी जठराअग्नी पण थोडी पीडती होय वळी तप करवानो अंतराय तुट्यो होय त्यारे रुची उपजे. ते जोगे आकरो तप करे सो गवेखुं हुं जाव जीव आंबलनो तप करे अथवा छठ छठ पारणु करे वळी कनकावळी रत्नावळी मुक्तावळी आदे अनेक प्रकारे तप करे एम उतकष्टी तपसा जोगे महा पुरुष जांणीने पारणाना दीवसे घणा सेवको टोळे टोळां मळी घणो आग्रह भक्ती बहुमान आदर सतकार करे त्यारे कर्मनी वीचीत्र गती छे. तप छे सो तो कर्मनी निर्जरा करवानो हेतु छे. परंतु मद आवे के जगतमें मारा जेवा कोई तपस्वी नथी एम चींतवतां अंतराय कर्म बंधाय छे. तप उदय आवे नही क्षुधा भाजी पीडे आ-

हार घणो करवो पडे.तपनो मद करवाथी कुरकगुरु मूनीराय तपनो अंतराय पाम्या छे.माटे वीवेकी पुरुषोने तो एम वीचार, करवानुं छे के आहारकरवो ए पुद्गल जोगे छे ने आहारनो त्याग करवो ते पण पुद्गल जोगे छे. कारण के आत्मा तो अणहारी छे. आहारनो भोक्ता नही छे. ए तो ज्ञानादी नीजगुण भोगी छे. उपयोगी छे. सो तपे तपेसरी आत्मा कहेवाय त्यां कर्मनी अनंती नीर्जरा थाय छे. तेनुंज नाम तप कहीए एम समजीने तप करतां छतां मद न करे तेने मारदव धर्ममे गणीए हवे छगे ऐश्वर्य मद सो ठकुराइनो रीद्धीनो मद ते एकदा वीरस्वामी चोवीसमा तीर्थंकर समोसर्या, दसारण भद्रराये प्रभुना आगमननी वधामणी सांभळी घणा प्रमोदे वधामणी लावनारने घणो द्रव्य आपी पोतानी नगरीमें सर्व रैयतने जाहेराती आपी के वीर परमात्मा पधार्या छे, वांदवा जवुं छे, वस्त्र आभुषण दर दागीना वळी हाथी घोडा, रथ, सुखपाल, आदे जेने जे जोइए ते लेइ जाव, भंडार द्वार खुला मुक्या छे घणो वार्जीत्रनो ठाठ मेळव्यो छे अंगमां प्रमोद तो मातोज नथी, वहोळो समुदाय मळी अती हर्षवंत थे, नगरी बहार जातां समोसरण थोडुं छेटे रह्युं छे त्यां दसारण भद्रने सामैयानो अदभूत ठाठ जोइने मद आव्यो के आवी रीद्धीए मोटा आडंबरे मारा जेवुं सामैयु कोइए कर्युं नथी एम वीचार थातां इंद्र महाराजे अवधी ज्ञाने उपयोग करी जोयुं के क्यां हारी जाय छे, एम चींतवी मद उतारवा अर्थे देवताइ रीद्धी वीकुर्वी,तेरीद्धीनुं वर्णन

करतां ग्रंथ गोरव थइ जाय सो देवताइ रीद्धी दसारण भद्र समोसरण नजीक आवे छे एटलामां आकासथी नीची उतरतां जोइ दसारण भद्रनुं अभीमान रीद्धीनो मद गळी गयो, देवताइ रीद्धीना आगळ दसारण भद्रनी राजधानी तरणा प्राय मांनी जायछे, त्यांज घटमे ज्ञान आव्युं वीचारवा लाग्या के आबाह्यरीद्धी तो पुद्गलना घरनी सो वीनासिक छे, सदा मत्त रहेज नही, मारा आत्मामां ज्ञान चेतना आदे अनंती रीद्धीए हुं ऐश्वर्यवंत वु, ते रीद्धी प्रगट करवाने वीर स्वामी तीर्थंकर देव सो पुष्ट आलंबन मळ्युं छे, एम समजी भगवान वीरसांमी पासे जे त्रण प्रदक्षणा देइ वीनययुक्त वांदी बे हाथ जोडी स्तुती करी प्रमोदीत थै रोमांचीत उलसीत थये छते रुदय हर्षे भराणे छते पोताना आत्माने धन्य मानते छते द्वादस प्रर्षदानी साक्षी पूर्वक बोले छे के हे नाथ हे दीनबंधु करुणासागर हु अनाथ मारा उपर पसाय करी महावीरती पद आपो, एज अवसरे संजती थया इंद्र आवीने वांद्या वळी कहे छे के मांन तो मांनवने होजो मारामेंए शक्ति नथी एम परवस्तु वाह्यरीद्धी जाणीने ममता मुके तेने मार्दव धर्ममां गणीए, हवे सातमो वीद्यानो मद सो मतीश्रुत ज्ञानना क्षय उपसम जोगे वृद्धी पामतां सीद्धांत आचारंगादी, वली ग्रंथ प्रकरण,व्याकरणादी भणे, ज्ञानी कहेवाय वीद्याना वळे घणी वस्तुनुं जाणपणुं थाय इहां पण मद आवे के मारा जेवा कोई ज्ञानी नही छे, हु पारगांमी छुं, पुछयानो उत्तर आपवाने शक्तिवंत वु एम पोतानी मोटप मांने त्यांथी अ-

धीक थावु तो बंधज पडे छे त्यांतो वीवेक लावी एम वीचार करवानो छे के, हुं जे जाणयो छे ते तो वीद्या छे अजी मनें ज्ञानपणे प्रणमी नथी जो ज्ञानपणे प्रणमी होत तो, मद न ही आवत, मारा वयमा आगळ एटले पुंठे सुं छे तेने देखवाने तो हु शक्तिवान चक्षुवंत नथी हु शु मद करु छु, वळी हुं शब्दे मारी काया तेमां व्यापकपणे आत्मा रह्यो छे, सो परमात्मा सरखो शक्तिभावे जोइए तो यथारथ मळ आवरणे रहीत अनादी सीद्ध छे, तेने वक्तीमें क्षायक भावे प्रगट करु त्यारे मारु ज्ञान पद सावीत थाय तो हु पोते ज्ञानी लोक अलोकनोवळी रुपी अरुपीनो ने जीव अजीवनो उत्पात व्यय ध्रुव युक्त त्रणे काळनी वर्तनानो एक समये जाण थाउ, तेनुं नाम ज्ञान कहीए, एम समजी छती वीद्याए मद न करे तेने मार्दव धर्ममां गणीए, हवे आठमो लोभ मद सो संसारमें ग्रहस्थीना घरे मनुष्य संबधीमें एक चक्रवरती करतां तो कोइ रीद्धीए वा ठकुराइए अधीकज नथी सर्वोपरी चक्रवरतीपद छे तो ए पदनी पुर्णताए पण आठमा चक्रीनी लोभनी स्थीती अटकी नही छे एटली वीजी मेळववानो उन्माद थयो सो मद कहीए, इहां तो एम विचार करवानो छे के हे चेतन ए रीद्धीमें मोहीत थैने शुं लोभ सागरमें डुबी अधोगतीए नर्के जाय छे,ए रीद्धी तो पूर्वोपार्जीत कर्म संजोगे

में नीर्मळ कर ए रीद्धी प्रगट थातां अव्याबाध सुखना विभागी सादी अनंत भांगे थालो एम समजीने नीरलोभी थाय, तेने मार्दव धर्ममां गणीए, एम आठ मदना त्यागथी संजती धर्मनो बीजो भेद कह्यो, हवे त्रीजो भेद सो आर्यव धर्म कहीए, ते माया एटले कपटना त्यागथी आवे त्यां वीचार करवो के कपट ते सेनुं नाम छे, त्यारे कायाथी करवुं ते जुदु, ने मुखे बोलवुं ते जुदु, मन शुं चींतववुं ते जुदु एम तरणे योगीनी भीन्नता तेनुंज नाम कपट वृती कहीए, एटले कपट भाव तज्या वीना सरळता आवे नही ने सरळताना अभावे कोइजीवसमकीत पामे नही. तेसमकीत पामवा माटे वीवेकी पुरुसोने तो अवस्यवक्ता तजवी पडे ने त्रणे जोगनी वांकी चाल छोडी एकज सरळता मारगे लावी मनने थीर करीए, त्यां काया वचन थीरता पामे एटले त्रणे जोग थीर पड्या त्यां चेतना पुद्गलनो एटले इंद्रीनो इंद्रीनो वीकार न पामेने त्यांज अंतरमां व्यापकपणुंकरे वळी स्वरुपे उपयोगी थाय स्वरुप रमण करे तेनुंज नाम सरळता सो आर्यव धर्म कहीए, हवे चोथो भेद सो मुत्ती धर्म कहीए ते लोभना त्यागथी आवे ए लोभना वे भेद एक आ भव ने बीजो पर भवनों आ भवना लोभना वे भेद एक परीग्रहनो ने बीजो इंद्री पोपणनो तेमांजे परीग्रहनो लाभछे, ते कंचनकामनीना त्यागी थयां संजती पदे टळे छे, ने इंद्री पोपणनो लोभ तो प्रमाद छठुं गुणठाणुं छोड्यां सातमा अप्रमत गुणठाणेथी टळे कारण के प्रमाद गुणठाणे स्वरुप रमण उपयोगीपणुं

पांच प्रमाद प्रसंगे नही छे, नें स्वरुप रमणीपणानो ज्यां अन्नाव तीहां इंडी पोपणनो संन्नव छे माटे लोन्न कहीए, ते आ न्नव आश्रीने लोन्नना बे न्नेद कह्या हवे परन्नव आश्रीने लोन्न तो जेने पुन्यनी आकंक्षा छे तेने कहीए, परंतु कहेवानुं सार एटलुं छे के लोन्न छे ते नवमु पाप स्थानक छे एटले असुन्न प्रकरती छे, सो बहुधा तो पापने खेंचे छे माटे पुन्य मागतां पाप पण उपार्जे, ने नीरलोन्नीना घरे पून्यनी खपतो नथी पण घणुज पुन्य आवे छे, ते उपर द्दष्टांत कहुछुं, जेम बागमें उत्तम वृक्ष फळना अर्थीए वाव्युं छे, तेने गास तरणांनी खपतो नथी परंतु माटी पांणी जोगे घणुंज उगे छे परंतु नींदी उपाडी नांखे छे, तो पण उगे छे परंतु अर्थी नथी, अर्थी तो फळनो छे, तेम इहां उपनय जोडीए छीए, जेने संजती पद ग्रहण करतां पुन्यनी आकंक्षा राखी नथी फक्त आत्माने कर्मथी मुक्त करवानी आकंक्षा एटले सरागता करी छे तेने सरागता जोगे शुन्न आश्रव आवे छे तेम ज्ञान ध्यान जोगे नीर जरता जायछे परंतु आवे तेम नीरजरता जाय, कारण के जेम बागमें वृक्ष वाव्युं छे तीहां कचरानो संन्नव उपाडी नाखे नही तो वृक्ष वृधी न पांमे तेम इहां नीरजरतो न जाय तो बंध पधती वृधी पांमे त्यारे आत्माने कर्मथी मुक्त करवुं कह्युं ते वचन असत्त थाय परंतु केटलुं नीरजरे जेम जेम नीरजरता जायछे तेम तेम घणुज आवेछे, ए आववानो संन्नव जीहां सुधी क्षय उपसम न्नाव हृदये नथी त्यां सुधी बंधज होतो नथी, वळी प्रमाद गुणठाणेथी आगळ जेम जेम

गुणठाणु चढेछ तेम तेम अगीयारमा गुणगाणा सुधी घणु उ पुन्य अनुत्तर वीमाननी योग्यतानां सुत्र दळ उपार्जे छे, उ-पसम श्रेणीनी अपेक्षाए वळी कहेवानुं सार एटलु छे के जेने पुन्यनी आकंक्षा छे ने पुन्य उपार्जे ते वातनी एकांते नातो कहेवायज नही परंतु आकंक्षाए पुन्य ग्रहण थयुं ते पु-न्यानुंबंधी पुन्य नहीछे, पापानुबंधीछे, एम समजो आकंक्षातुं नामज नीयाणु, नीयाणु करेछे तेने पण मोटीछे, ने आकंक्षा-वाळाने पण मोटी छे एम समजीने वीवेक लावी पर आकंक्षा रहीत धर्म करवो सीधांतमे ग्रंथमे गांम गांम एज वचनछे, जेने आकंक्षा नथी तेने नीर्लोभी कहीए, वली तेने संजती धर्मनो चोथो भेद कहीए, हवे पांचमो भेद सो तप कहीए तेना बे भेद एक बाह्यतपछे, बीजो अभ्यंतर तप, बाह्य तपना खट भेद, इहां सकाम नीर्जरानी भजना तेमां प्रथम भेद सो अणसण तपछे, तेना बे भेद एक थोडा काळनो ने बीजो जाव जीवनो, थोडा काळनो ते नोकारसी, पोरसी, एकासणु आंबील उपवास, छठ, अठम, आदे अठाइ करे, पंन्नर करे वळी रत्नावळी, कनकावळी, मुक्तावळी आदे तपना घणा भेद छे, सो तप करे तेने थोडा काळनो अणसण तप कहीए ने जाव जीवनो एटले आयुष्यना अंत सुधीनो अणसण तप तेना बे भेद एक पादो उपगमण अणसण ने बीजो भत्त पच्च-खाण अणसण, तेमां पादो उपगमण अणसणना बे भेद एक तो सीह अग्नि प्रमुखनो उपसर्ग थाय तो पण त्यांथी डगे नही ने बीजो एवा उपसर्गना अभावे एटले नही प्रास थतां

जेम वृक्षनी म्हाळ कापेली पक्ती होय तेम हाले चाले नहीं, ए वे नेद कह्या हवे न्नत्त पच्चखाण अणसणना बे नेद एकतो सींह अग्नि आदे उपसर्ग उपन्या थका न्नत्त पच्चखाण करे, नेवीजा मुळथी अणसण कर्युं त्यारथी पच्चखाण करे ए बाह्य तपनो पहेलो नेद कह्यो, हवे वीजो नेद उंणोडी तप तेना वे नेद एक ड्रव्य उणोडी; वीजी न्नाव उणोडी ड्रव्य उणो- डीना वे न्नेद एक न्नात पांणीनीने वीजी उपगरणनी जात पांणीनी उणोडीते न्नात पाणी उंछुं वापरवुं वा एक न्नक्त करवु उपगरणनी उणोडीते नरम वस्तुउं ठीए चाले तो अ- पणी राखवानी जरुर नथी वळी वीगे आहारमें न्नेळी लेइए तो चेतनानी जरुर नथी वळी चोळपट्टो कपकोतो एकज राखवानो मुख्य मारग ठे कारणे अधीक होय तो वीना का- रणे एके चाले वळी कदाच कारणसर गृहस्थी थकु वनात साल आदे वस्त्र लाव्या होय तो वापरे परंतु कारणना अन्नावे पाछु आपतां पण उणोडीमां गणीए, ए ड्रव्य उणोंडी कही, हवे न्नाव उणोंडी कहु छु-ठ्ठा गुणठाणे पांचे प्रमाद सेवाय ठे तेनी गाथा.

मजं विसय कसाया निद्दाविकहाः पंचहान्नणीया
ए पंच पम्माया जीवं पामंति संसारे,

अर्थः—मजं कहेतां आठ मद तेने तजीए बीजुं वीषय कहेतां पांच इंद्री संगे चेतना वीषय न्नोगी ठे तेने अंतरमें प्रणमावीए, तहां तेवीस वीषयनो अन्नाव कहीए, त्रीजो

कषाय केहेतां क्रोध मान माया ने लोभ उदयागत प्राप्त थाय तेने क्षयउपसम वळे खेरवीए नींद्रा केहेतां आंखमां ऊंघ आवे तीहां ज्ञान भाव उपयोगे चेतना जागृती करीए, तीहां टळे छे. वीकहा केहेतां वीकथा, सो देश कथा राज कथा स्त्रीकथा ने भक्तकथा ए चार कथा वर्जीने सजायध्यान, धर्मध्यान करीए एम प्रमादनी ओछास करतां सात मुअप्रमत गुणस्थानक तेम्वा आवे छे. ए भाव छणोदी कही सो बीजो तपभेद कह्यो.हवे त्रिजो वर्तीसंक्षेप तप कहुंछुं आ तपमें संजतीरायने अभीग्रह करवानो छे, ते द्रव्यथी रोटलो रोटली वाळ भात साक आदे घीइ गोळ दही दुध चहापाणी आदे जे वापरवु होय तेनी धारणा करे ए धारणा सिवाय बीजु नही लेइए, खेतरथी जे गाम नग्रमे रह्या होय तीहां अमुक पोळ, पाम्रा, महल्लामांथी लेइ शु बीजेथी नही लेइए काळथी अमुक काळ वखते गोचरी जैशुं, भावथी पुरुष आपशे तो लेइशु स्त्री आपशे तो लेइशु तेमां कुवारी आपशे तो लेइशु वीधवा आपशे तो लेइशु, वा एक भाजन मांथी बीजा भाजनमें घालेलु आपशे तो लेइ सुवा अनेराने पीरसेलु वधेलु आपशे तो लेइ सुवा जे पहेली जणस आपशे तेज लेइसु वा हरकोइना त्यांथी आवलु आपसे तो लेइशु वा वधेलुं घाली मूकेलुं हशे ने ते आपशे तो लेइशुं, बहु मान साथे आपशे तो लेइशु अंतआहार, पंतआहार, नींदा ने स्तुती थाय एवो आहार आपशे तो लेइशु, अथवा लोकने वखाणवा योग्य प्रीयकारी मोदक प्रमुख आपशे तो

लेइशुं, दंतीनी संखाए आपशे तो लेइशुं वा दुःखणी कंगाल थइने आपशे तो लेइशुं, वा उंगादुवार आपशे तो लेइशुं वा आंखमां आंसु आव्यां हशे ने आपशे तो लेइशुं, एम भाव-थी अभीग्रह अनेक भेदे संजतीराय करे छे, परंतु कहेवानु-सार एटलुं छे के आहारना बे परवइ होय काया बळवान होय शक्ति पोचती होय ते आकरो अभीग्रह करे नही तो सामान्य प्रकारे पोतानी शक्ति जोइ, शक्तिना अनुसारे करे. हवे देश वीरती श्रावकने आतपमें चौद नीम धारवानां छे ते धारे ए त्रीजो तपभेद कह्यो हवे रसचाउतप कहुं छुं आ तपमें रसनो त्याग करवानो छे. ते सर्वथा रसनो त्याग तो आंबील करे त्यारे संभवे नहीतो घी आदे वीगेनो त्याग करे वळी अरूद चणा वाल आपशे तो लेइशु अथवा जुदु धांन खांण प्रमुख हशे ने ते आपशे तो लेइशुं इत्यादी चोथो तपभेद कह्यो हवे पांचमो काय कलेश तप कहुं छुं. उभा रहीने काउसग करवो साधुनी वार पडीमा वहेवी अथवा परिहार वीशुद्धी त्रीजुं चारीत्र ग्रहण करवुं उष्न काळे आ-तापना लेवी सीतकाळे टाढ सहेवी भूय संथारो करवो अ-रूवांणे पगे चालवुं लोच करवो शरीरे खाजखणवी नही व-लखो गळी जवो. परसेवो लुछवो नही. पलांठी वाळीने बे-सवुं दांडानी पेरे सुवु शरीरनी ससुरखा करवी नही प्रमाद सेववो नही. परीसह उपसर्ग उपजे. ते सहन करवो इत्यादी पांचमो तपभेद कह्यो हवे छठो सलीनता तप कहुं छुं ते ना त्रण भेद इंद्री सलीनता जोग सलीनता ने कषाय सलीनता इंद्री

सलीनता ते श्रोत इंद्री शब्द ञोगी ठे चक्षु इंद्री वर्ण ञोगी ठे. रस इंद्री रस ञोगी ठे. घ्राण इंद्री गंध ञोगीठे, फरस इंद्री फरस ञोगी ठे. तेना संगे इष्टा नीष्टपणु अनुकुळ प्रतीकुळ जोगे चेतना अनुञवेठे. सो वीषयने गोपववा तेनुज नाम सलीनता ठे. एटले इंद्रीसंगे चेतना परिणाम पामीठे. तेने पलटावी,अंतहःकरण स्वरुप गत प्रणमावीए त्यांवीषयना अञाव जोगे इंद्री सलीनता कहीए. हवे जोग सलीनता ते मन जोग दुरध्याने हणायो थको ञटकण थयो ठे. वचन जोग कषायनो कषाय जोगे वाचाळथयोठे. ने कायजोग अशुञ आचारणाए चपळ थयोठे. ते त्रण योगने थीर करीए तेनुंज नाम सलीनता ठे. एटले आत्मानो वीर्य गुणपर संगीपणाना ञुषण जोगे जरुता पामीने जोगना स्वाधीन बळ फरणाए थयोठे. तेने पटलावीने अंतहःकरण सरुपे नीजगुण वर्तिए रमणीपणे उपयोगीपणे स्फुरतो करीए त्यां त्रणे जोग थीर थाय सो जोग सलीनता कहीए हवे कषाय सलीनता ते क्रोध मान मायाने लोञ ए चार प्रकरती उदय आवतां रुंधवी अथवा आवीने प्राप्त थाय. तेने क्षय उपसम जोगे खेरवी नीष्फळ करवीने सो कषाय सलीनता कहीए ए सलीनतादी बाह्यतपना षट ञेद कह्या. हवे अञ्यंतर तप षट ञेदे कहुं छुं. इहां सकांम नीर्जरा संञवे.तेमां प्रथम प्रायठीत तप ते व्रत धारीने पोतानी वीरतीमे मनथी वचनथी ने कायाथी करवा करावबा.अनुमोदवापणे महा, वीरतीने स-

वेथी त्याग करेलो छे. ने देशवीरतीने अनुमोदना मोकळी छे. बाकीनो त्याग अणुमात्र छे. परंतु कहेवानुं एटलुं छे के जे जांगे पचखांण करीने वीरती परिणाम कर्योछे. ते मे जंग थवुं न जोइए परंतु जंग जोगे पाप प्रायछीत लागे छे. तेने टाळवाने अर्थे. वीशुरू होवानी बुद्धिए गीतारथ गुरुनी गोत करे गीतारथ समीपे जइने सजा समक्ष चतुरवीधी संघनी साक्षी पूर्वक सहुने सांजळते छते लोक लज्जा छोडीने सरळता ग्रहण करी सत्य जापा बोलीने यथास्थीत पापप्रायछीत लागेलुं प्रकासे कपट करे नही तीहां गीतारथ महामुनी द्रव्य खेत्रकाळ जावना जाण. द्रव्यथी प्रायछीत लेवा वाळानी गुणठाणानी स्थीती वीचारे खेत्रथी मन बळ बचन बळकाय बळ रोगी वा नीरोगी छे. तेवी चारे काळथी बाळ छे. वा तरुण छे, वा वृद्ध छे ते वीचारे जावथी तेनो बोध जाणपणु क्षयउपसम सो वीचारे तेवार पछी कायानुं बळ अधीक देखे तो तप करवानो दंड आपे तरुणवये नीरोगी देखे तो देश वीरतीने कांतो काउसग करावे ने कांतो जीवहिंसानो वेपार तेनो त्याग करावे अथवा धनाढ्य देखे तो सात खेत्रे धन वापरवानो बतावे महा, वीरतीने बोध जादे देखे. वीशेष उपयोगी छे स्यादवाद द्रष्टी छे नय नीक्षेपाना जाण छे तो तेने ग्रंथ रचवानी आज्ञाकरे इत्यादी आज्ञा करवाना प्रायछीत आपवा वडे मळ टाळवाना मुगतीआर गीतारथछे. जे आज्ञा करे ते प्रायछीत लेवावाळा कबुल करे तहेत सांमी तहेत

सांमी एम सतजाषा वोलीए सरळ थैने जेने प्रायठीत प-
सारु एटले ठांनु कपट ढांकणे ढांक्युं नहि तेनां पाप गयां
ठे कपट करीने प्रायठीत ले ठे तेने वाजय तपमें गणवो. अ-
जींतर शुं ठे तेने समजवु, सरळतापणुं ठे. अंतर व्यापकपणु
ठे. वीशेष उपयोगीपणुं ठे. तेने अज्यंतर कहीए. ए तपनो
प्रथम जेद कह्यो हवे वीजो तप तेना वीनीय सात जेद
ज्ञान वीनय दर्सण वीनय चारीत्र वीनय मनवीनय
वचन वीनय काय वीनयने लोक वीनय ए सात जेदे अज्यं-
तर अपेक्षाए वर्णवु ठुं अंतरजावे आत्माना स्वजावे उपयोग
चींतीत ध्यान ते ज्ञानवीनयने दर्सन ते अनंतगुण पर्यायमय
आत्मानी सत्ता अरुपी वस्तुनो नीरधार सो दर्शण वीनय
चारित्र ते सामान्य वीशेष उपयोगनुं स्थीरपणुं सो चारीत्र
वीनय मन वीनय ते अंतरवृतीए मनने ज्ञान खीले वांधीने
स्थीर करीए. ने वचन वीनयते कोइने वाधा पीडा न उपजा-
वतां उपयोगे वोलवुं. हवे कायवीनय ते अंतरवृतीए ध्यान
जोगे कायाने चउांमण करवी के; उदीक्षाने खेरववाने एटले
कर्मने नीर्जरवाने अर्थे अनुकुळ प्रतीकुळ परीसह उपसर्ग,
जपज ते तारे सहन करवा, कायर थावुं नहि एटले कायर
थावावाळी तो पोतानी उपयोग चेतना कायाना संगे ठे.
काया नहि ठे. माटे पोतानी उपयोग चेतना सहेज वीर्यने
तेरुवा मोकळी अंतहकरणे वोजाजी लेइ सहेज जावे प्रण-
मावीए एटले कायाने सहन करवुं घणुज शुलज पडे. ए
कायवीनय कह्यो. हवे लोक वीनय सो एक आकासना स-

मीपे वीजा द्रव्य पुद्गल आदे देखीए तेने लोक कहीए. तेमां वीनयना अन्नावे जीव पुद्गलमां प्रवेश करे ठे तेवीनय लावी अवीनय ठोमी पोते पोतामे रहीए सो लोक वीनय कहीए. ए वीजो तपन्नेद स्वअपेक्षाए कह्यो हवे त्रीजो न्नेद वयावच्च तप कहुं ठुं, ते वयावच्च कोनुं करवु के आचार्यनु १ वळी उपाध्यायनुं (२) साधुनु (३) नव दीक्षीत शीष्यनुं (४) रोगीनुं (५) तपसीनुं (६) स्थिवीरनुं (७) साधर्मीकनुं (८) चंद्रादीक कुळनुं (९) गण एटले गच्छनुं (१०) एम दश न्नेद गुणीजन परम पुज्य तेमनुं वैयावच्च करवुं, सो गवेखुं ठुं, वैयावच्च करवावाळा साधुने सर्व साधु महामुनीनो समुदाय तेमनी हाजरने हाजर रहेवुं एमना अन्नीप्राये वर्तवु, जे काम वतावे ते करवुं, वळी पुठवुं हे स्वामी आपने शी वस्तुनो खप ठे जेने जे वस्तुनी खप होय ते कहे एटले केइकतो नीर्वद्य उषध उपचारनुं कहे, केइक ग्रहस्थीना थकु वस्त्र शाल वनात आदे कारणसर वापरवा सारु लाववानुं कहे, केइक सीद्धांत ग्रंथ आदे पुस्तक प्रत वांचवा जोवा लाववानुं कहे, केइक तो काप काढवा साबु कयरोट आदे लाववानुं कहे, केइक चोमासाना काळे पाट पाटला वापरवा जोइए ते लाववानुं कहे, इत्यादी जे जे काम न्नळावे ते सर्व धारणामां राखे न्नूले नही जे जे मले ते लावीने हाजर करे, वळी फरीथी जइ न्नाकीनुं गोत करी लावीने आपे, एम वारंवार जे जे काम न्नळावे ते अंगमां प्रमोद लावी उच्छाह पूर्वक करे, वळी सर्व समुदाय महामुनीने साता पुठे असाता देखे ते

टाळवानो खप करे, पग चांपे केम्रो चांपे, मांथु दावे, संथारो करी आपे, पुस्तक पोथी जोइए ते लावी आपे पुंठे मुकवानुं पाटीयु लावीने मुके, मात्रु करवानी मरजी होय तो कुंम्री लावीने आपे, जीवयतना करीने परठवे, केइकने ठल्लानो कवजो न होय केइकने वमन थतुं होय तेमनुं अंग कपमा आदे स्वछ-पवीत्र करे, नीर्वद्य जग्या जोइने परठवे त्यां सुग लावे नही, जे जे वोलावे तेमनी समीप जाय, हे स्वामी शुं कहो छो जे जे काम जळावे ते करे, तेनुं फळ कहु छुं लोकोतर एटले मुक्तिदातार छे, कारण के बाहुवलजी रीषन्नदेव स्वामीना पुत्र तेमने पूर्वे त्रीजा जवे पांचसो साधुनुं वैयावच्च जंवुद्वीपना महा वीदेह क्षेत्रे पुष्कळावती वीजये कर्युं छे, तेथी घणी तो कर्मनी नीर्जरा करी परंतु शुन्न कर्म प्रकृती बांधी तेथी अनुत्तर वीमान पांचमुं सर्वार्थ सीद्ध तेनां सुख जोगवीने आ जवमें अनंतवळ पाम्या. वळी घणी रीद्धि संपदा पाम्या यावत जरत पोतानो न्नाइ तेथी युद्ध करतां जीत्या चक्रवरती नी रीद्धिना मालीक थइने एक तरणा प्राय अथीर वस्तु-कलह कारण जांणी त्रसना स्नेहलत्ता वेलीने छेदी त्यागी वैरागी यइ वाह्य अभ्यंतर तपे उत्कृष्ट स्थीती अही घाती अघाती कर्म हणी सीद्धी वर्या, ए लोकोत्तर फळदाता वैयावच्च तेने त्रीजो तप कह्यो, हवे चोथो तप सवाय पांच जेदे कहु छु, वाचना एटले गुरुमुखथी पाठ लेइने जणवुं अथवा सीद्धांत ग्रंथ आदे उपयोगी थैने वांचवुं, पुछना एटले शंका संदेहनुं गुरुरायने पुछवुं, संदेह टाळी नीःसंकीत थवुं, पर्यटना

एटले जणेलुं गुरुनी नीश्राए गोखी वाळवुं, अनुपेक्षा एटले एक एक शब्दना अनेक अर्थ थाय छे तेनी अपेक्षा समजवी धर्म कथा एटले चर्चा वार्ता करवी,अथवा वखाण वांची उपदेश करवो, ते जोगे ज्ञव्यजीव बोध बीज पामे, तेने धर्मकथा कहीए, ए तपनो चोथो जेद कह्यो, हवे पांचमो ध्यान तप कहुं छुं, ते ध्यान तो चार जेदे छे, परंतु आर्तध्यान, रुद्रध्यान ए बे ध्यान छे ते तपमें नथी एतो कर्मबंध हेतु छे, ने नीर्जरानो हेतु ते तप कहीए माटे नीर्जरा हेतु ध्यान तो धर्म ध्यान, शुकल ध्यान छे तेमां प्रथम धर्म ध्यानना चार पाया अनुक्रमे कहुं छुं, आज्ञावीचय,अप्पाय वीचय,वीपाक वीचयने,संस्थान वीचय, तेमां प्रथम पायामें आज्ञा कहेतां परमात्मानी शी आज्ञा छे तो " वच्थुं सहावो धम्मो " अर्थ–वस्तुनो जे मुळ सत्तागत पोतानो असंमीत अवीनासी, एवो जे स्वजाव छे तेने वस्तु स्वजाव कहीए, वळी तेनेज धर्म कहीए, ते वीवरीने कहुं छुं ते वस्तुना खट जेद छे,धर्मास्तीकाय.अधर्मास्तीकाय आकास्तीकाय, काळ, पुद्‌गलास्तीकायने, जीवास्तीकाय,ए पट द्रव्यनां नांम कह्यां हवे द्रव्य द्रव्य प्रत्ये अनंतागुणने अनंतापर्याय रह्या छे,तेमांथी द्रव्यना मुख्य धर्मगुणने गवेखु छुं,धर्मास्तीकायनो गती हेतु गुण छे, एटले जीव पुद्गलने गतीनो हेतु अधर्मास्ती कायनो स्थीती हेतु गुण छे, एटले जीव पुद्गलने स्थीतीनो हेतु आकास्तीकायनो अवगाहक गुण छे, एटले जीव पुद्गलने मार्ग आपवानो हेतु काळनो वर्तना लक्षण छे, एटले नवानु जुनु करवानो हेतु पुद्गलास्तीकायनो

समण, पमण, वर्ध्वंसण अथवा मीलण वीखरण गुण छे,एटले एक पुग्गल बीजा पुद्‌गल साथे अथवा संसारी जीव साथे केटलाएक मीले छे, केटलाएक वीखर छे, मीले छे सो बंधाय छे वीखरे छे सो छुटे छे, वळी समण एटले रोग व्यापकपणे समी जाय छे, पमण एटले पमी जाय छे, वीध्वंसण एटले स्वभावे नासथै जाय छे,अेम पुद्‌गल जीवने संसार स्थीतीए बंधनो हेतुःजीवनो ज्ञायक गुण छे एटले जीवनोने अजीवनो लोकानो ने अलोकनो,रुपीनो ने अरुपीनो अतीत अनागतने वर्तमान ए त्रणे काळनो उत्पात वय ने ध्रुव संयुक्त समकाळे एटले एक समयकाळे सर्वने जाणवावाळो जीवनो ज्ञान गुण छे जीव स्वअपेक्षाए पोते पोतानो हेतु छे, बीजा कोइनो हेतु नथी जीवने हेतु अहेतु कहीए ते पर अपेक्षाए उदी- कता जोगे कहीए, ए वस्तुनो मुख्य गुण रुप धर्म गवेख्यो. इत्यादी परमात्मानी आज्ञा तनमय चींतववी तेने धर्म ध्याननो पहेलो पायो कहीए, हवे बीजो पायो अप्पाय वीचय धर्म ध्यान ते अप्पाय कहेतां जीवमां अशुद्धपणे कर्म जोगे संसार अवस्यामां मीथात्व, अज्ञान कषाय नोकषाय आदे अनेक दुसणो छे, ते हुं नही, हुं ए थकी न्यारो छु अनंत ज्ञानमय, अनंत दर्शनमय, अनंत चारीत्रमय, अनंत वीर्यमय, अनंत अव्याबाध सुखमय, अनंत उपयोगमय, अटळ अवगाहना- मय, अरुपीमय, अगुरुलघुमय, नीरंजन, नीराकार, अलख अगोचर, अखंड, अज, अचळ, अगम, अकळ, अवीनासी अनादी अनंत, सीद्ध, बुद्ध, अक्षर, अनअक्षर, अमर, अना-

मी, अकामी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अनुद्रीकअजोगी, अन्नोगी, अरोगी, अरागी, अद्रेसी, अन्नेदी, अछेदीअवेदी, अखेदी, अवीषयी, अकषायी,असहाइ, अलेसी, असरीरी, अनाहारी, अतीद्रीं, अपर्याप्ति, अयोनी असंसारी, अमळ, अकंप अनाश्रीत, अव्यापी, अवीरुध, अनाश्रव, असंगी, अकींचनी, असोकी इत्यादी अनंता गुणपर्यायनो पुंज शुद्ध चीदानंदघन महारो आत्मा छे, ए गुण गवेख्या तेनो अर्थ कहुं छुं, अनंत ज्ञानमय आत्मा छे एटले द्रव्य कहेतां षट द्रव्यनो वळी गुण पर्याय कहेतां षट द्रव्यना गुण पर्यायनो स्वन्नाव कहेतां अस्ति स्वन्नाव, नास्ति स्वन्नाव, सामान्य स्वन्नाव, विशेष स्वन्नाव, नीत्य स्वन्नाव, अनीत्य स्वन्नाव, न्नेद स्वन्नाव, अन्नेद स्वन्नाव, न्नव्य स्वन्नाव, अन्नव्य स्वन्नाव, अन्नीलाप स्वन्नाव, अनअन्नीलाप स्वन्नाव, वक्तव्य स्वन्नाव, अवक्तव्य स्वन्नाव, इत्यादी अनंता स्वन्नाव वस्तु धर्मे रह्या छे, वळी लक्षण कहेतां उत्पात व्यय ने ध्रुव इत्यादी अनंतपणानु जाणवुं तेनु नाम ज्ञान, एटले वीशेष उपयोग ते आत्मामां स्वन्नावे रह्यो छे,माटे अनंत ज्ञानमय आत्मा वळी अनंत दर्शनमय आत्मा छे, एटले सामान्य उपयोग पण अनंती वस्तुने चीगे देखवापणु आत्मामां स्वन्नावे रह्युं छे, माटे अनंत दर्शनमय आत्मा, अनंत चारीत्रमय आत्मा छे, एटले ज्ञान दर्शननो स्थीर उपयोग स्व स्वरुप रमणीपणु तेआत्माना अनंता गुण छे तेमां प्रतेक नीजगुण नीजगुणमांज रमे, बीजा गुणमां न रमे, एटले ज्ञान जाणवारुप कार्य करे दर्शन देखवारुप

कार्य करे वीर्य स्फुरणारुप कार्य करे, परंतु एक गुण वीजा गुणनुं कार्य न करे, सो स्थीर उपयोग रमण कहीए, एम अनंतागुणनीज नीज गुणगत रमणीपणे नोंखी नोंखी क्रीयाना कर्ता छे माटे अनंत चारीत्रमय आत्मा अनंत वीर्यमय आत्मा छे एटले आत्माना अनंता गुणनीज गुण रमणीए वर्ते छे तेमां गुण गुण प्रत्ये वीर्य गुणस्फुरणा शक्ति नोंखी नोंखी रीते आपे छे माटे अनंता गुणमां अनंती वीर्य स्फुरणा थइ सो ते अनंत वीर्यमय आत्मा अनंत अव्यावाध सुखमय आत्मा छे एटले आत्माना अनंता गुणछे ते सर्वे गुणो आनंदोपेत सुखदायक छे,ने गुण गुणनो आनंद जुदो जुदो नोंखा नोंखा छे, माटे अनंता गुणनो अनंतो आनंद तेमां कसी बाधकता एटले व्याघात नही छे.माटे अव्यावाध आनंदरुप अनंत सुख आत्माने वीपे स्वज्ञावे रह्यु छे ते अनंत अव्यावाध सुखमय आत्मा अनंत उपयोगमय आत्मा छे एटले आत्माना अनंता गुण छे ते गुण गण प्रत्ये पोत पोतानो उपयोग पोत पोताना गुण गत स्वज्ञावमां नोंखो नोंखो प्रवर्ते छे, माटे अनंता गुणमां अनंत ज्ञेदे उपयोग आत्मामां स्वज्ञावे रह्यो छे,माटे अनंत उपयोगमय आत्मा, अटळ अवगाहनामय आत्मा छे एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश छे,तेज आत्मानी अवगाहना कहीए तेमांथी एक प्रदेश अधीक न्युन कोइ काळे थाय नही एटले खरे पके नही, ते अटळ अवगाहनामय आत्मा अरुपीमय आत्मा छे एटले रुपीपणु ते वरणतुज नाम छे, रातो,धोळो, लीलो, पीळो, ने श्याम ए पांचनु नाम वरण कहीए, तेने-

ज रुपी कहीए ते आत्मामां नही छे एतो पुद्गलमां लाधे तेथी रहीत आत्मा माटे अरुपीमय आत्मा अगुरुलघुमय आत्मा छे, एटले गुरुपणु ते मोटापणु ने लघुपणु ते छोटापणु वळी उत्तमपणुने मध्यमपणु ए सर्वे पुद्गल जोगे कहीए, ए गुण पुद्गलमां रह्यो छे आत्मामां नही छे, माटे अगुरुलघुमय आत्मा वळी नीरंजन आत्मा छे एटले कर्मरुप रजे करीने रहीत तेज नीरंजन आत्मा, नीराकार आत्मा छे एटले आकारतो जीहां संस्थान परीमंडळ देखीए तीहां आकार कहीए, ए गुण तो पुदगलमां रह्यो छे आत्मामां नही छे माटे नीराकार आत्मा अलख आत्मा छे एटले आत्मानुं स्वरुप छद्मस्थथी लख्युं जाण्युं जाय नही माटे अलख आत्मा अगोचर आत्मा छे एटले चरम चक्षुए गोचरदृष्टी प्रत्यक्ष ना आवे एतो अनुभव ज्ञान गोचर छे, माटे अगोचर आत्मा अखंड आत्मा छे, एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश छे अनंता गुण छे अनंता पर्याय छे तेमांथी एक प्रदेश वा एक गुण एक पर्याय कदापी ओछो थाय नही, शस्त्र प्रहार लागे नही खंडीत थाय नही माटे अखंड आत्मा अज आत्मा छे एटले बाळ, तरुणने, वृद्ध ए त्रण अवस्था पुदगल जोगे लाधे एथी आत्मा रहीत, माटे जन्म जराए रहीत आत्मा कहीए ते अज आत्मा अचळ आत्मा छे एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश छे ने एक एक प्रदेशे अनंता गुणपर्याय रह्या छे, तेमांथी एक प्रदेशे रहेला गुणपर्याय चळीने बीजा प्रदेशे न जायने बीजा प्रदेशना गुणपर्याय चळीने पहेला प्रदेशमां ना आवे, जीहां छे

त्यांने त्यांज रहे माटे अचल आत्मा अगम आत्मा छे एटले आत्माने यथारथ जाणवानी गमतो केवळ ज्ञानीने छे वाकी देशथी जाणवानी गम अनुभवीने छे, तेना अभावे अगम आत्मा अकळ आत्मा छे एटले छद्मस्थनी दृष्टी आत्मानुं स्वरुप जाणवाने कळवाने थाके छे माटे अकळ आत्मा अविनाशी आत्मा छे एटले सदासर्वदा त्रणे काळे आत्मा शास्वत भावे छे, द्रव्यास्तीक नयपक्षे विनाश नही छे माटे अवीनाशी आत्मा, अनादी अनंत सीद्ध, बुद्ध आत्मा छे एटले आत्मानी आदी छे नही के अमुक काळे आत्मानी उत्पत्ती थइ वळी अमूककाळे आत्मानो क्षय थाशे, एम आदे नथी ने अंते नथी, आत्मातो सदाय छे छे ने छे, वळी केवो छे के जेवा सीद्ध परमात्मा छे तेवोज पोतानो आत्मा नीर्मळ आवरण मळे रहीत नीर्लेप स्फटीक रत्ननी पेरे नीर्मळ, चंद्रनी पेरे सीतळ, समुद्रनी पेरे गंभीर, अनंत गुणपर्याय भरेलो सागर, सुर्यनी पेरे ज्ञान ज्योतीए प्रकाशीत मेरुनी पेरे अकंप, संग्रह नयनुं ज्ञान करीने शक्तिभावे जोइए तो अनादी अनंत भांगे सीद्ध छे, वळी बुद्ध कहेतां क्षायक भावे ज्ञानी सो पंडीत छे माटे अनादी अनंत सीद्ध बुद्ध आत्मा छे, वळी अक्षर आत्मा छे एटले अनंत पुद्गल परावर्त चतुरगती संसार परीभ्रमण करतां वीत्यां परंतु आत्माना प्रदेसे प्रदेसे अनंता अनंता गुणपर्याय रह्याछे तेमांथी गसारो लागी एकप्रदेस वा एकगुण एकपर्याय खरी पडे एम नही छे कारण के गसारो लागे तो भवरथी वाह्यमें पुद्गलने

लागे मांहीली कोरा घटंतरवर्तीए दुर्पीने
गसारो लागे पण नही ने गुणपर्याय ना प्रदेस खरी
नही एनो सहेज पर्यायमय सास्वतभावे
छे बाह्यना सुख दुःखनो वीभागी पण नही छे
अचेतन सत्ता नांखीज छे, अचेतन सत्तानी लाज
मालीक चेतन नही छे माटे अक्षर आत्मा अनअक्षर
एटले शब्द अक्षर उच्चारण करीए ते में आत्मानुसरुप
नही, आत्मा अक्षर उच्चारणमां प्रणमे नही
आत्माना स्वभावमेंज व्याकपणे प्रणमीने रह्यो छे,
नअक्षर आत्मा अम्मर आत्मा छे, एटले
प्राण रहीत भाव प्राणधारी छे वळी कर्म पर्याय कहेतां
यांय जे चार गतीना नरनर्कादी तेथी २८
ज्ञानमूर्ती सीद्धा अवस्था तद्रुप छे माटे मरवुं छे एतो द्रव्य
प्राण पांच इंद्री त्रण वळ, श्वासोश्वासने आयुष्य वळी ग-
तीपर्याय कहेतां काया ते मरे तो भले मरे परंतु भाव प्राण
ते ज्ञानदर्शन वळी तद्रुप सीद्धा अवस्था ते आत्म प्र-
देसनो घन ज्ञानमूर्ती सो अवीनासीपद छे माटे कदापी मरे
नही सो अमर आत्मा, अनामी आत्मा छे एटले जे जे नाम
संसारमें छे तेनो नास छे आत्मानो नासे नथी ने आत्मानु
संकर्नीक नाम नथी माटे अनामी आत्मा अकामी आत्मा
छे, एटले कामनो जे वीषय भोग सो काम कहीए तेथी
रहीत आत्मा माटे अकामी आत्मा, अकर्मा आत्मा छे ए-
टले द्रव्य कर्म सो ज्ञानावरणादीने भाव कर्म सो रागद्वेस

नेनो कर्म सो मन वचनने काया, एथी रहीत आत्माछे माटे अकर्मा आत्मा अबंधक आत्मा छे एटले रसबंध प्रदेसबंध, प्रकृतीबंध, ने स्थीतीबंध एतो पुदगलनो स्वाभाव छे, आत्मानो नही छे वळी ए बांधवा योग्य पुदगल परमाणु ते पण आत्माने वीषे नहीछे, आत्मातो कोइना बंधनमां आवतोज नथी सदाय मुक्ति रुप अबंधक छे-माटे अबंध आत्मा अनुदय आत्मा छे एटले कर्मबंधना अभावे उदय सेंनो होय आत्मा सदा सर्वदा शक्तिभावे अबंध अनुदय छे माटे अनुदय आत्मा, अनुडीक आत्मा छे एटले कर्म नही तीहां उदीरणानो असंभव कहीए सो अनुडीक आत्मा अजोगी आत्मा छे एटले मन जोग वचन जोगने काय जोग सो पुद्गलना घरनाछे ने आत्मा तेथी रहीतछे माटे अजोगी आत्मा अभोगी आत्मा छे एटले पांच इंडीना तेवीस वीषय सो आत्मामें नही छे, वळी इंडीउ पण आत्मामां नही छे एतो पुद्गलमां लाभे ने आत्मा तो पुद्गलथी सदा सर्वदा न्यारो छे माटे अभोगी आत्मा अरोगी आत्माछे एटले सरदी गरमीना अनेक रोग पीत्तज्वरादी पुद्गलमां लाभेछे ने आत्मामें पुद्गल छे नही तो रोग केम संभवे नही संभवे माटे अरोगी आत्मा, अरागी अद्वेषी आत्मा छे एटले राग द्वेष छे सो जड भाव छे वळी अज्ञान छे ते पुद्गल संगे लाधे एथी आत्मा रहीतछे माटे अरागी अद्वेषी आत्मा अभेदी अछेदी आत्मा छे एटले आत्माना असंख्याता प्रदेशछे तेमांथी कोइ देवता अथवा अती बळवंत मनुष्यने तीर्यंच तीखा सस्त्रे करीने थोडा प्रदेशने

नेदी ठेदी जुदा करे ए वात त्रण काळमें वने नही नेद्यो नेदाय नहीने ठेद्यो ठेदाय नही सस्त्र प्रहार लागे नही वळी अड्डीमां नही माटे अनेदी अठेदी आत्मा अवेदी अवीषयी आत्मा ठे एटले स्त्रीवेद पुरूषवेदने नपुसकवेद ए त्रणे वेद पुद्गलमें लाधेठे,आत्मामें ए वस्तुनुं चीन पण नही ठे, तो तेनो वीषय शेनो होय वेदरूप चीने करीने वळी तेना वीषयें करीने आत्मा सदा सर्वदा रहीत ठे, माटे अवेदी अवीषयी आत्मा अखेदी आत्मा ठे. एटले खेद नाम प्रयास जे गतागती कंठ सोस आवे संसारमें अनेक कामकाज करतां थाक लागे ठे तेने खेद कहीए ते काम सर्वेनो करता तो पुद्गल ठे आत्मा नहि ठे. आत्मा तो जाणवा देखवा रूप चेतन कार्यनो कर्ता ठे. ते में तो थाकनो असंन्नव ठे. माटे अखेदी आत्मा अकषायी आत्मा ठे. एटले क्रोध, मान, माया ने लोन्न ए चारने कषाय कहीए तेथी आत्मा रहीत ठे. माटे अकषायी आत्मा असखाइ आत्मा ठे. एटले अनादी संबंधे अखंड अकलंक अनेदी अठेदीपणुं सदा सर्वदा आत्माने वीषे लाधे ठे ते सो स्वपराक्रमें लाधे ठे नही, नही ठे कोइ एक जीवने वीजा जीवनी वा अजीव एटले चार अरूपीने पांचमो पुद्गल रूपी तेहनी साज सो सखाइ कहीए. जीव कोइनी साज करे नही तेम कोइनी साज वंछे नही माटे असखाइ आत्मा अलेशी आत्मा ठे. एटले कृष्न लेश्या, नील लेश्या, कापोत ला, तेजो लेश्या, पद्म लेश्या ने शुकल लेश्या ए ठ लेश्या जोगे लाधे तेथी रहीत आत्माठे माटे अलेशी आ-

त्मा अशरीरी आत्मा छे एटले उदारीक शरीर वैक्रीय शरीर आहारक शरीर तेजश शरीरने कार्मण शरीर ए पांच शरीर सो पुग्गल कहीए तेथी रहीत आत्मा माटे अशरीरी आत्मा अनाहारी आत्मा छे एटले कवल अहार, रोम अहारने होक अहार इत्यादीक अहारनो ग्राहक तो पुद्गल छे आत्मा नहि छे माटे अनाहारी आत्मा अती इंद्री आत्मा छे एटले फरस इंद्री, रस इंद्री, घ्राण इंद्री, चक्षू इंद्रीने श्रवण इंद्री ए पांचने इंद्री कहीए ने छठु मन सोनो इंद्री ए छेनु नामज पुद्गल छे. तेथी रहीत आत्मा माटे अती इंद्री आत्मा अपर्याप्ती आत्मा छे. एटले अहार पर्याप्ती, शरीर पर्याप्ती, इंद्री पर्याप्ती, श्वासोश्वास पर्याप्ती, भाषा पर्याप्ती ने मन पर्याप्ती ए छ पर्याप्ती पुद्गल छे तेथी रहीत आत्मा अपर्याप्ति आत्मा, अजोनि आत्मा छे एटले देवता नारकीनी उत्पात योनि, मनुष्य तीर्यंचनी आंबली पत्र इत्यादी बहु विध योनि समुर्छमनी अनेक जातनी योनि इत्यादी योनिनो संबंधी पुद्गल छे, आत्मा नही छे माटे अयोनि आत्मा असंसारी आत्मा छे एटले मनुष्य गती, तीर्यंच गती, देव गती ने नर्कगत ए चार गतीनुं भ्रमण करवुं उपजवुं विणसवु सो कर्मभावी पर्यायनी अपेक्षाए संसार कहीए, परंतु जीव तो द्रव्यास्तीक नयपक्षे सदाय स्वभाव पर्यायमय अनादी सीद्धछे, माटे असंसारी आत्मा अमळ आत्माछे एटले शुभाशुभ पुन्यपापनी प्रकृती सो द्रव्यमळ छे ने असुद्ध प्रणती जे रागद्वेस सो भावमळ छे. तेथी रहीत सदा सर्वदा

धर्म ध्यानथी भ्रस्ट थयो ने आरत रुद्र ध्याननो ध्याता थयो आरतध्यान ध्यातां तीर्यं चगती उपार्जी, ने रुद्रध्यान ध्यातां नर्कगती उपार्जी एम करतां बाह्यद्रष्टीनो प्रसार वधी गयो ने अंतरद्रष्टी पांम्यो नही, क्षय उपसमभावनी हांणी थावा लागी ते कारणे चेतनाहीण थइने जडता वृधी पांमी, घांचीनी घांणीना द्रष्टांते चउगती संसार भ्रमण करे छे,अनंतां कर्म वांधे छे अनंतां दुःख सहे छे, ने संसारथी छुटतो नथी, तेनु मुळ कारण सुं छे ते कहुंछुं, कर्म वांधवानुं ने संसारमें रहेवानुं कारण जोइए तो जडता छे जडता एटले अज्ञान भावे बाह्यद्रष्टीनो प्रसार मोहनो वीलास, दुर ध्यान वीध्वंस परणांम, कुडकपट, प्रपंचपासला, जळोजथा मारु तारु इत्यादी कर्मबंध हेतुपक्ष संसारवृधी कारण जाणवुं, हवे कर्मने नीजरवानुं ने संसारथी छुटवानुं कारण जोइए तो ज्ञान छे,ज्ञान एटले नीजपरनु वीभागीपणुं वहेचणपणुं परथी छुटवु ने नीज वस्तुनुं ग्रहण करवुं,सो वतावुं छुं, बाह्यरमण पांच इंद्रीने छट्ठु मननो इंद्री संगे रमण सो बाह्यरमण कर्म बंधहेतुं छे,एनुज नाम अज्ञान छे ते पोतापणो मनावे छे पण प्रवस्तु कहेवाय तेने तजवुं पडे एटले पांच इंद्रीने छट्ठु मन तेनी अंतर आत्मानी चेतना परीणाम पामीने जडताने अनुभवे छे ते चेतना अंतर रागी थैने पलटावी स्वरुपे अंतरगत प्रणमावी मनजोगने स्थीर अचळ करी स्वरुप रमणी उपयोगी थैए, त्यां पर वस्तुनो वीभाग थै गयो कारण के अंतर रमण स्वरुप रमणीपणे पोतीको आत्मा थयो

त्यां इंद्रीउना विषयनो जोगी नथी, वळी इंद्रीयो पण चेतना रहित थइ ते विषय ग्रहण करवाने अशक्त थइ, त्यांज बाह्य- द्रष्टिनो प्रसार टळी गयो. मोहविलास रूप मदिरानो छाक चढयो हतो, तेथी आत्मा विकल थइने दुर्ध्यान ध्यातो हतो, ते दशा गइ; उपाधि छुटी गइ. चेतना विचक्षणपणुं पामी आत्मानुं तत्व शुद्ध स्वरूप अनुजवे छे एटले आ- त्माना अनंता गुण, पर्याय, स्वजाव अने लक्षण (जेउज्ञात विस्तारीने) अनुजवे छे; अरुपी वस्तुनो निर्धार करे छे; दृष्टि प्रत्यक्ष निर्णय थाय छे. सूक्ष्म जाव चिंतवतां मुझातोज नथी. विशुद्धिमय अजेद पक्ष एकत्व जावनो ग्राहक थाय छे. त्यां जाव संवर अने सकाम निर्जरानो कर्ता पोतानो आत्मा छे. ए कर्मने निर्जरवानुं अने संसारथी छुटवानुं कारण कह्युं. कर्मने बांधवानुं अने संसारमां रहेवानुं कारण जोइए तो जडता छे. कर्मने निर्जरवानुं अने संसारथी छुटवानुं कारण जोइए तो चेतनता छे. जडता छे ते बाह्यजाव छे. चेतनता छे ते अंतर्गत सहज जाव छे, बाह्य जावनो प्रसार ते मोह छे अने अंतर्गत सहज जावनो प्रकाश ते ज्ञान छे माटे वि- वेकी पुरूषो ! तमारे मोह दशाथी विरक्त थइ, बाह्य जाव बाह्य रमण छोमी अंतर दृष्टि करी सहज जावे आत्मज्ञानी उपयोगी थवुं. शुद्ध आत्मानुं स्वरूप-जेद अजेद पक्ष-स्याद्- वाद दृष्टि पूर्वक अनुजववुं एवुं तन्मय स्वरूप रमणीपणुं तेने धर्मध्याननो त्रीजो पायो कहीए. हवे संस्थान विचय नामे धर्म ध्याननो चोथो पायो छे तेनो संबंध कहे छे. धर्म ध्या-

नना त्रीजा पायामां पूर्वकृत कर्मना योगे जीव शुभाशुभ विपाक अनुभवे छे ते विचार कह्यो, परंतु सुख दुखनुं भोगववुं जीवने कायाना योगे छे. ते कायाने बांधवानां एटले उपजवानां अने विणसवानां स्थानको विचारवां जोइए. आपणो पोतानो जीव चौद राजलोकमां लोकाकाशना असंख्याता प्रदेशे सर्व स्थानके अनंती वार जन्म मरण करी फरशी चुक्यो छे. सिद्धांतमां एवा पाठ छे के "अनंतखुतो जीवाणं." ए अपेक्षाए जन्म मरण कर्या सिवाय एक आकाश प्रदेश पण लोकमां बाकी रह्यो नथी माटे चौद राजलोकनुं स्वरुप विचारवुं जोइए, ते कहे छे. उंचपणे चौद राज प्रमाण लोक छे. तेनां त्रण भेद छे, तेनां नाम. अधोलोक, तीर्छालोक अने उर्द्धलोक एटले नीचेनो, वचलो. अने उपरनो भाग. तेमां प्रथम अधोलोक ते सात राजथी कंइक वधारे छे तेने विषे सात नरकनिवासी जीवोने उपजवानां रहेवानां स्थानको छे. ते सात नरक पृथ्वी छे. तेमां पहेली रत्नप्रभा नामे पृथ्वी ते एक राजप्रमाण लांबी पहोळी छे. तेनो एक लाख अने एंशी हजार जोजननो पिंड छे, तेमांथी एक हजार जोजन निचे मुकीए अने एक हजार उपर मुकीए त्यारे वचमां एक लाख अने इठोतेर हजार जोजननो पिंड रह्यो. तेना तेर भाग करीए तेमां पहेली नरकना तेर पाथडा छे. तेमां त्रीश लाख नरकावासा छे. तेर पाथडाना वचला गाळानां अंगीआर आंतरां रह्यां. तेमां दश आंतरांमां भुवनपति देवोनी दश निकायो छे, ने एक आंतरु खाली छे; हवे

एक हजार योजन उपरनो पिंड रह्यो- ते मध्ये सो योजन उपर मूकीए अने सो योजन नीचे मूकीए त्यारे वच्चे.आठसो योजननो, पिंड रह्यो, तेमां आठ व्यंतर देवोनी निकायो छे. उपरनो सो योजननो पिंड रह्यो तेमांथी दश योजन उपर मूकीए अने दश योजन नीचे मूकीए. त्यारे वच्चे एंशी योजननो पिंड रह्यो तेमां आठ वाणव्यंतर देवोनी निकायो छे ए पहेली रत्नप्रभा पृथ्वी कही.

प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वीथी एक राज प्रमाण नीचे आकाश छे, त्यां बीजी शर्कराप्रभा नामनी नरक आवे छे ते बे राज प्रमाण लांबी पहोळी छे, ते मध्ये एकादश पाथडा छे. ते बीजी नरकना नीचे एक राज प्रमाण गये छते त्रीजी वालुक प्रभा नामे नरक त्रणराज प्रमाण लांबी पहोळी छे. तेमां नव पाथडा छे, त्रीजी नरकना नीचे एक राज गये छते चोथी पंकप्रभा नामनी पृथ्वी चारराज प्रमाण लांबी पहोळी छे, तेमां सात पाथडा छे. ते चोथी नरकना नीचे एकराज गये छते धुमप्रभा नामनी पांचमी नरक आवे छे ते पांचराज प्रमाण लांबी पहोळी छे, ते मध्ये पांच पाथडा छे. पांचमी नरकना नीचे एकराज गये छते छठी तमप्रभा नामनी नरक आवे छे ते छ राज प्रमाण लांबी पहोळी छे. ते मध्ये त्रण पाथडा छे. ते छठी नरकना नीचे एकराज अधिक गये छते सातमी तमतमा प्रभा नामनी नरक पृथ्वी सातराज प्रमाण लांबी पहोळी आवे छे तेमां एक पाथडो छे ने तेमां पांच नरकावासा छे. साते नरकना पाथडा भेगा

करतां उंगणपञ्चाश थाय छे. सातमी नरकना नीचे एक राज गये छते अलोक आवे छे, ए प्रमाणे अधो लोकनो विचार कह्यो.

हवे तिर्छो लोकनो विचार दर्शावुं छुं. तिर्छो लोक अढारसो योजन उंचपणे ज्योतिषी पर्यंत जाणवो. तेमां प्रथम जंबुद्वीपथी मांडी एकराज प्रमाण लोक लांबो पहोळो छे, तेना मध्य भागमां एक लाख योजन ऊंचो अने दशहजार योजन लांबो पहोळो मेरुपर्वत आव्यो छे. ते जंबुद्वीपमां कर्मभूमीनां त्रण अने अकर्मभूमीनां छ एम नव क्षेत्र आव्यां छे. ते नीचे मुजब. १ एक भरतक्षेत्र. २ ऐरवत क्षेत्र. ३ महाविदेह क्षेत्र. तेम देवकुरु अने उत्तर कुरुआदि छ क्षेत्र जुगलीयानां छे. जंबुद्वीपने फरतो बे लाख योजन प्रमाणे लवण समुद्र छे तेने फरतो चार लाख योजन प्रमाण धातकीखंड छे. ते मध्ये कर्मभूमीनां छक्षेत्र पूर्वे कह्यां तेथी बमणां मोटां छे एकेक पूर्वमां अने एकेक पश्चिममां छे, एम बे भरत, बे ऐरवत क्षेत्र छे, बे महाविदेह छे; ए छ क्षेत्र कर्मभूमीनां वळी अकर्मभूमीनां बार क्षेत्र छे. हरिवर्ष, रम्यक् आदि पूर्वपश्चिम छ छ मळी बार जुगलीयांनां क्षेत्र छे ते पूर्वे कह्यां तेथी बमणां मोटां छे. ते धातकी खंडना फरतो आठ लाख योजन पहोळो कालोदधि नामे समुद्र छे तेनुं पाणी काळे वर्णे मीठुं छे तेने फरतो सोळ लाख जोजन प्रमाण पुष्करवर नामे द्वीप छे; तेना मध्य भागने विषे मनुष्योत्तर नामे पर्वत सत्तरशें अने एकवीश योजन ऊंचो सुवर्णमय वलयाकारे (चु-

मीना आकारे) रह्यो छे. आ पर्वतथी पुष्करवर द्वीपना वे भाग पड्या, एक अरधो आठ लाख योजन प्रमाणे मांहेनी वाजुए अने वीजो अरधो आठ लाख योजन प्रमाण वहारनी वाजुए रह्यो मांहेनी वाजुए रहेला अरधा पुष्करवर द्वीपमां कर्म भूमीनां छ क्षेत्र धातकी खंडमां कहेला क्षेत्रथी वमणां मोटां छे एक एक पूर्वमां अने एक एक पश्चिममां एम वे भरत, वे ऐरवत अने वे महाविदेह छे. वळी अकर्मभूमीनां छपूर्व अने छ पश्चिम एम वारक्षेत्र हेमवंतने अरण्यवास जुगली- यानां धातकी खंडमां कह्यां ते क्षेत्रथी वमणां मोटां छे. ए अढी द्वीपमां कर्मभूमीनां पन्नर क्षेत्र तेम अकर्मभूमीनां त्रीश क्षेत्र थयां.वन्नेनां मळी पीस्तालीस क्षेत्र थयां. वळी वच्चमां लवण समुद्र कह्यो छे. ते समुद्र उपर अरूर अंतराळे हि- मवंत तथा शिखरी ए वे पर्वतो शत शत योजन उच्चपणे छे. तेनी दाढाओ प्रत्येक पर्वते वे पूर्वमां अने वे पश्चिममां एम चार नीकळी छे. अने एकेकी दाढा उपर सात सात द्वीप छे. एक पर्वत उपर अठावीस अने वीजां पर्वत उपर अ- ठावीस मळी छप्पन्न अंतरद्वीप छे. ते द्वीपोमां जुगलीयां रहे छे. कर्म अने अकर्म भूमीनां मळी पीस्तालीस क्षेत्र तेमां छप्पन्न मेळवतां एकशो ने एक क्षेत्र थयां. त्यां मनुष्य स्थान छे. अढी द्वीपनी वहार मनुष्यनुं जन्म मरण नथी. अढी द्वीपनी वहार देवता तथा तिर्यंचनो रहेवास छे. म- नुष्योत्तर पर्वतनी वहारनी कोरे अरधो पुस्करवर द्वीप रह्यो छे. तेना फरतो वत्रीश लाख योजन प्रमाण द्वीपना नामेज

समुद्र छे. तेमज ते समुद्रनी पाछळ तेथी बमणो मोटो द्वीप छे, ने ते द्वीपथी बमणो मोटो समुद्र छे. एम द्वीपनी पाछळ गाम बमणो समुद्र अने समुद्रथी बमणो द्वीप एम असंख्याता द्वीप छे अने असंख्याता समुद्र छे. तेमां छेल्ला द्वीपनुं नाम स्वयंभूरमणद्वीप छे ते पा राजप्रमाण पहोळो छे. तेनी पाछळ छेल्लो स्वयंभूरमण समुद्र छे ते अर्धराज प्रमाण पहोळो छे

ए असंख्याता द्वीप समुद्र कह्या. तेनी संख्या सूक्ष उद्धार अढी सागरोपमना जेटला समय थाय एटला द्वीप समुद्रछे तेनी साख जीवाभिगम सूत्र तथा भगवती सूत्रना छठा सतकमांछे. अढी द्वीपमां सूर्य,चंद्र, ग्रह,नक्षत्र, ताराछे ते एक ध्रुवना ताराने वर्जीने सर्व फर्या करेछे. तेथी दीवस रात्रीनुं मान बंधायछे. माटे तेने समयक्षेत्र कहेवुं.अढी द्वीपनी बहार जे सूर्य,चंद्र,ग्रह नक्षत्र,तारा छे ते सर्व स्थिरछे. ज्यां सूर्य छे त्यां सदाय दीवस रहे छे. ज्यां चंद्र छे त्यां शुकल पक्षनी पुर्णिमा सरखी रात्री रहे छे. सूर्य अने चंद्रनुं श्रेणीबंध पचास हजार योजननुं अंतर रहे छे, एम असंख्याता सूर्य अने असंख्याता चंद्र छे. ए रीते तीर्छोलोकनो अधिकार जाणवो.

उर्ध्वलोकनो अधिकार.

उर्ध्वलोक कंइक उणो सात राज प्रमाणछे. तेमां प्रथम सूधर्म देवलोक दक्षिण दीशामांछे. अने तेनी बरोबर लगती आकारे द्वितीय इशान देवलोक उत्तर दिशामां छे, ए बे

देवलोकमां देवीउंनुं उपजवुं छे. त्रीजा देवलोकथी आरंजीने देवीउंनुं उपजवुं नथी. ते उपर त्रीजुं संनत्कुमार देवलोक दक्षीण दिशाए छे. चोथुं माहेंद्र देवलोक उत्तर दिशाए छे. पांचमुं ब्रह्मदेवलोक पांच राज लांबु पहोळुं छे. अत्र कृष्ण राजी छे. त्यां नव लोकांतिकदेवनां नव विमान छे. ते उपर छठुं लांतक नामे देवलोक छे. एम यावत् बार देवलोक छे. ते बार देवलोकना उपर नव ग्रैवेयकना त्रण त्रीक छे. एक प्रथम त्रीक तेना उपर बीजो त्रीक अने तेना उपर त्रीजो त्रीक एम छे अने तेना उपर पांच अनुत्तर विमान छे तेनी विगत. चार दिशाए चार विमान छे अने वचमां सर्वार्थ सिद्ध विमान छे. वचला विमानना धजाथी बार जोजन उंची सिद्धशिल्ला छे. ते सिद्धशिल्ला मध्यमां आठ योजननी जाम्री छे. अने छेडे मांखीनी पांख जेवी पातळी छे. ते सिद्धशिल्लानी उपर एक योजनना चोवीश जाग करीए तेमां तेवीस जाग मूकीने चोवीसमा जागमां सिद्ध परमात्मा अलोकने अम्रीने रह्या छे. एम उंचपणे चौद राज प्रमाण लोक छे. तेमां एक राज प्रमाण लांबा पहोळापणे चौद राज सुधी. त्रस नाम्री रही छे ते त्रस नाम्रीमां त्रस जीवो उपजे विणसे छे. बाकी सर्व लोकमां पांच थावर जर्या छे. चौद राज लोकमां पंचास्तिकायनुं अवस्थान परिणमन छे. पंचास्तिकायनां नाम अनुक्रमे निचे मुजब जाणवा. धर्मास्तिकाय. (२) अधर्मास्तिकाय (३) आकाशास्तिकाय. ते त्रण डव्य एकेक डव्य छे. चोथुं जीवडव्य

छे. अने जीव अनंता छे तेनी विगत कहे छे. संज्ञी मनुष्य संख्याता छे. असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे. नारकी असंख्याता छे, देवतां असंख्याता छे. तीर्यंच पंचेंद्रि असंख्याता छे. बेंइंद्रिय जीव असंख्याता छे, तेइंद्रिय जीव असंख्याता छे. चोरंद्रिय जीव असंख्याता छे. ते थकी पृथिवीकाय असंख्याता छे. तेथी अप्पकाय असंख्याता छे तेथी तेउकाय असंख्याता छे तेथी वायुकाय असंख्याता छे तेथी प्रत्येक वनस्पतिकाय जीव असंख्याता छे. तेथी सिद्ध परमात्मा अनंता छे. तेथी बादर निगोद अनंतगुणा छे तेथी सुक्ष्म निगोद अनंतगुणा छे तेमां एकेक जीवना असंख्यात प्रदेश छे. संसारी जीवना एकेक प्रदेशे अनंती कर्म वर्गणा लागी छे अने एकेक कर्म वर्गणामां अनंत पुद्गल परमाणुआ जीव साथे लाग्या छे तेथी अनंत पुद्गल परमाणु जीवथी रहित छूटा छे पांचमु पुद्गलास्तिकाय द्रव्य छे ते वर्ण, गंध रस अने स्पर्शगुण युक्त छे. पंचास्तिकायमां समयेर उत्पाद व्यय अने ध्रुवता व्यापि रही छे. दरेकमां षट् गुण हानि वृद्धि व्यापि रही छे. द्रव्यगुण अने पर्यायनुं अवस्थान द्रव्य क्षेत्र काल भावथी सर्व द्रव्यमां जाणवुं. ए पांच द्रव्यमां संसारी जीव ते पुद्गल द्रव्यमां कर्मयोगे ने उदय संयोगे परिणम्यो छे तेथी परनो कर्त्ता तथा भोक्ता विभावे वर्त्ते छे. ते थकी पोताना आत्माने न्यारो चिंतवी स्व स्वरूपनुं तनमय ध्यान करवुं ते संस्थान विचय नामनो चोथो पायो जाणवो. धर्म ध्यान चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी छे. अने आठमा गुणठाणाथी

शुक्ल ध्यान स्थिति छे. शुक्ल ध्यानना चार पाया छे. प्रथम प्रयक्त्व वितर्कसप्रविचार. (२) एकत्व वितर्कअप्रविचार. (३) सुक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति (४) उछिन्न क्रिया अनुवृति. प्रथम पायानो विचार कहे छे. शुक्ल कहेतां निर्मळ. आलंबन रहित निरालंबनपणे आत्म स्वरुपनुं पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाए तन्मयपणे ध्यान करवुं तेने शुक्ल ध्यान कहे छे. प्रथकत्व पर्यायने कहेतां कर्मभावी पर्यायथी स्वभावी पर्यायनो भेद उपयोगे भिन्नता करी आत्म ध्याननुं चिंतवन करे. कर्मभावी पर्यायनुं स्वरुप कहे छे. पूर्वोपार्जित कर्मयोगे मनादिक योग उपार्ज्या छे तेनो वेपार, करण, वीर्य, वळ अने स्फुरणा सर्व कायानी अंदर स्थापे (परिणमावे वळी कायानी अंदर आत्माना गुणपर्याय व्यापकपणे छे तेने सर्वथा प्रकारे पलटावी अंतर्गत स्वरुपे उपयोगीपणे परिणमावे, त्यां स्वभावनो अने विभावनो भेद जूदो पडे छे अने भेद जूदो पडतां पोतानो आत्मा पोताने स्वभावेज प्रकाश करे छे. आत्माना स्वभावे अनंत गुण, अनंत पर्याय, अनंत स्वभाव, अनंत लक्षण रह्यां छे तेनो भेद ज्ञान योगे प्रथक्त्व एटले जूदो जूदो वितर्क एटले श्रुतज्ञाने स्थित उपयोगे विचारतां ज्ञान दर्शन, चारित्र, वीर्य अने उपयोग इत्यादि अनंत गुणना भेदनो भिन्न भिन्नपणे विचार; वळी अकेक गुणना अनंत अविभाग ते पर्याय विचारे, एटले अनंत पर्याय मळीने जे जे कार्य करे तेनुं नाम गुण छे, वाकी गुणरुप वस्तु नथी. अनंता ज्ञानना

पर्याय मळीने जाणवारुप कार्य करे. अनंता दर्शनना पर्याय मळीने देखवारुप कार्य करे. अनंता चारित्रना पर्याय मळीने स्थिरतारुप कार्य करे. अनंता वीर्यना पर्याय मळीने स्फुरणा शक्ति आपे. एम अनंत पर्याय भिन्न भिन्न रीते अनंत गुणमां अनंती प्रवृत्ति करे छे. वळी स्वभाव पण अनंता रह्या छे. पोताना द्रव्यमां नित्यपणुं, एकत्वपणुं, अभेदपणुं, भव्यपणुं, अभव्यपणुं, इत्यादि विचारे, पर्यायमां उत्पाद अने व्ययनि अपेक्षाये, अनित, अनेक, भेद, अने भव्य, एम, द्रव्यगत, परिणमता, स्याद्वादपणुं विचारे. एम आठमे गुण ठाणेथि अपूर्व वीर्य स्फुरणानो तीक्ष्ण वेग भेद ज्ञान योग प्रवर्त्ते छे. नवमा दशमा गुणठाणे भेदाभेद ज्ञान छे. त्यां गुणने पर्यायमां संक्रमावे अने पर्यायने गुणमां संक्रमावे; गुण पर्यायने द्रव्यमां संक्रमावे. एवी रीते स्वधर्ममां धर्मांतर भेद ते प्रथकत्व कहीए, अने वितर्क ते श्रुतज्ञाने स्थित उपयोगने विचारे ते एक पछी बीजो, एम ध्यानुनी तन्मयपणे एकत्व परिणमन धारा ते प्रथकत्व वितर्कसप्रविचार नामनो शुक्ल ध्याननो पहेलो पायो जाणवो. हवे एकत्व वितर्क अप्रविचार नामनो बीजो पायो कहुं छुं. ते बीजो दसमा गुणठाणाने अंते आवे छे ते बारमा क्षीणमोह गुण ठाणे वीतराग भावे ध्यावनानो छे. एकत्व एटले गुणपर्याय मय आत्मा छे. आत्माथी गुणपर्याय जूदा नथी अने गुण पर्यायथी आत्मा भिन्न नथी. एकत्व छे. वळी जेवा सिद्ध परमात्मा छे तेवोज मारो आत्मा छे; वितर्क एटले श्रुतज्ञान अवलंबीपणे अप्रविचार एटले विकल्प रहित, निर्विकल्प

दर्शन ज्ञाननो समयांतरे कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समये कारण कार्यता पणे ध्यान, वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ते बीजो पायो जाणवो. ए पायो ध्यावतां ज्ञानावरणीय दर्शनावर्णीये अने अंतराय ए त्रण कर्मो क्षय करे अने पहेला पायाना ध्यान योगे दशमा गुणगणाना अंते मोहनीय कर्म क्षय करी यथाख्यात चारित्र पाम्या छे अने बारमाना अंते त्रण कर्मनो नाश होवाथी केवळज्ञान अने केवळदर्शन अने क्षायकभावनी पांच लब्धि पामी तेरमा गुणठाणे अरिहंत पदे ध्यानांतरिकपणे आयुष्यना छेडा सुधी क्षायकभावनी लब्धि भोगवता छता, पूर्वोपार्जीत औदयिक भावने खेरवता छतां, भव्य जीवने कल्पवृक्षनीपेठे बोधिबीज दान देता छता, वळी कर्मरोग टाळवाने धनवंतरी वैद्य सदृश मोक्ष नगरे पोहोचाडवा सार्थवाह समान, वळी जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टा आठ वर्ष उणी पूर्व कोडी वर्षपर्यंत केवळी तेरमे गुणठाणें स्थिति करे छे.

हवे त्रीजा पायानो विचार कहुं छुं.

सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाती एटले मनयोग वचनयोग सर्वथा प्रकारे रुंध्या छे अने कायायोग बादरथी रुंध्यो छे तेने शैलेशी करण कहीए. शैलेश केहेतां पर्वतनो स्वामी मेरुपर्वत तेनी पेठे अकंपावस्था अयोगी केवली शैलेशी करणनी प्राप्तिथी निःशकंपणे रहे, अयोगी थाय. अहीं सत्ताए अघाती कर्मनी ८५ प्रकृति रही हती तमांथी ७२ प्रकृति खपावे ए त्रीजो पायो जाणवो.

हवे चोथा पायानुं स्वरुप कहे छेः—

प्रथम कायजोग सूक्ष्मपणे रह्यो हतो तेने सर्वथा रुंधे एटले सर्वथा क्रियानो उच्छेद थयो.सत्ताए तेर प्रकृति अघाती कर्मनी रही हती ते खपावे अने कर्म रहित (अकर्मा) आत्मा थाय. अवगाहना (देहमान) मांथी त्रीजो भाग पोलाणनो छे ते घटाडे. वे भाग प्रमाण आत्म प्रदेशनो निबिड घन करी समश्रेणीए बीजा आकाश प्रदेशने अण फरसतो एक समयकाळे लोकाग्रभागे सिद्धमां सादि अनंत भांगे स्थिर रहे, ते सिद्ध परमात्मा कहीए. एवी रीते चोथो शुक्ल ध्याननो पायो कह्यो. ए अभ्यंतर तपनो ध्यानरुप पांचमो भेद जाणवो.

हवे तपनो काउसग्ग रुप छठो भेद कहे छे. काउसग्गना वे भेद छे. द्रव्य काउसग्ग, अने भाव काउसग्ग. मन, वचन अने कायाथी, नवकार अथवा लोगस गणवाते द्रव्य काउसग्ग छे. तेना वे भेद छे. एक विधिथी अने बीजो अविधिथी. त्रिकरण योगे स्थिरपणे मन वचन कायाने परिणमावे, श्वासोच्छवास विना अन्य अंग कंपावे नहीं ते द्रव्यथी विधि सहित काउसग्ग जाणवो. अविधिथी काउसग्ग करतां कायाने हलावे, होठ फफडावे, आंगळी फेरवे, चक्षुनी द्रष्टी फेरवे, अने मनमां दुर्ध्यान करे ते द्रव्यथी अविधि काउसग्ग जाणवो. हवे भाव काउसग्ग कहे छे. तेना वे भेद छे. एक परिणमन रुप अने बीजो रुंधन रुप. रुंधवापणे कायानो, मननो, वचननो त्याग तो

केवळी भगवानने शैलेशी करणे थाय छे. हवे परिणमन रुप भावथी काउसग्ग कहुं छुं. तेना बे भेद छे. १ कार्त्रिम अने २ अकार्त्रिम. अकार्त्रिम ते कर्या विना सहेज भावे करण वीर्य स्फुरणाना अभावे, सहज वीर्य स्फुरणायोगे अचानक कायाना भागनुं परिणमन जुदुं अने आत्माना भागनुं परिणमन जुदुं एम स्वभावें थइ जाय छे. तेना बे भेद छे, एक दृढ अने बीजो अति दृढ. उपशम समकित वा क्षयोपशम समकित वा वेदक समकित वा क्षायक समकित पामवाना अवसरे आत्मायी मन वचन कायानो त्याग थाय छे ते दृढ नामे प्रथम भेद जाणवो. श्रेणी मांडवाना अवसरे त्रणे योगनुं परिणमन जुदुं छे अने आत्मानुं जुदुं छे ए अतिदृढ काउसग्ग जाणवो. ए भावथी अकार्त्रिम काउसग्गना बे भेद कह्या. हवे भावथी कार्त्रिम काउसग्ग कहे छे. चोथाथी सातमा गुणठाणा सुधी जे पुरुष वर्ते छे ते पोताना लक्षपूर्वक अंतःकरणे प्रवेश करी उपयोग देइ तत्त्वातत्त्वनो विचार करे, वळी द्रव्य गुण पर्यायनो विचार करे, द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक नयनो विचार करे, वळी द्रव्य क्षेत्र काल भाव विचारे, वळी नामादिक चार निक्षेपानो विचार करे तेमज उपचरित अने अनुपचरितनो विचार करे; वळी सिद्धांतना वचननो परमार्थ चिंतवे अने तेउ अंतःकरणमां ऊंडा उतरे छे तेमां पचेंद्रियनो विषयवेदवारुप होतुं नथी. वळी मनयोग पण स्थिर छे अने स्वरुपमां उपयोग परिणामवी चिंतवन करे छे ते कार्त्रिम काउसग्ग भावथी जाण-

वो. चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणांना भावने जे पाम्या छे ते पुरुषोमां जेने ध्यान करवानो वक्त छे ते ध्यान करे छे. ध्यान अवसरे पण उपर कह्युं ते मुजब कृत्रिम काउसग्ग भावथी लागु छे. वळी, संयतिपदे तो, अंतर अंतर मुहूर्ते अप्रमत्त स्थानके जवुं छे त्यां, स्वस्वरुपे उपयोग भावेज अप्रमत्त स्थानक छे. कारण के ज्यां इंद्रिय संयोगे उपयोग छे त्यां विषय सेवन जाणवुं. अने विषय सेवन करवुं तेतो प्रमाद छे; माटे क्षण क्षण प्रति इंद्रियमां परिणमावेलो उपयोग पलटावी स्वस्वरुपमां जोडवो पडेछे. त्यां संयति पद संभवे छे. नहीं तो द्रव्य लिंगधारी साधु प्रथम गुणस्थानकना स्वामी जाणवा. ए रीते काउसग्ग तपनो छठो भेद कह्यो. बाह्य अने अभ्यंतरना मळी, बार भेदनुं वर्णन करी तपनी व्याख्या पूर्ण करी.

ए संयति धर्मनो पांचमो भेद कह्यो.

हवे संयम नामना छठा भेदनुं वर्णन करुं छुं.

संयम सत्तर भेदे छे. पंचाश्रवनो त्याग करी पंचमहाव्रत उच्चरवां, पंच इंद्रियोने संवरवी, चार कषायने टाळवा अने त्रण दंडथी विरमवुं, ए सत्तर भेद संयमना जाणवा. वळी पंचाचार मुनि पाळे ते कहुं छुं. जीवा जीव बे तत्त्वने जाणे ते ज्ञानाचार, एटले बे द्रव्यना गुण पर्याय भिन्न भिन्न गवेखे. जीव छे ते अरुपी छे, निराकार छे, तेना गुण ज्ञानादि छे, पर्याय अव्याबाधादि छे. पुद्गल द्रव्य छे, ते-

रूपी ठे. मूर्तिमान ठे. तेना गुण मिलण, विखरण, सरूण, पतन ठे. पर्याय वर्णादि ठे. एम वस्तुने वस्तु गते गवेखे ते ज्ञानाचार जाणवो. दर्शनाचारमां शंका न उठे, सद्दहणां यथार्थ थाय, ते दर्शनाचार जाणवो. चारित्राचारमां अजीवनो त्याग अने जीवनुं ग्रहण ठे. आत्माना गुण पर्यायने आत्मा ग्रहण करे अने परवस्तुनो त्याग करे ते चारित्राचार जाणवो. तपाचारथी पूर्व कर्म निर्जरे नवीन कर्म बांधे नहीं. ते तपाचार जाणवो. वीर्याचारनुं वर्णन करे ठे वस्तु स्वभावे अनंत धर्म आत्मामां रह्यो ठे ते कर्मावरणथी आछादित ठे. ते धर्मने सहज वीर्यथी व्यक्तिभावे प्रगट करे. ते वीर्याचार. एम पंचाचार पाळें, अष्ट प्रवचन माताने आराधे, चार विकथाने परिहरे. एम सतर सतर भेदे संयम कह्यो.

हवे सातमो सत्य धर्म (यतिनो) कहुं ठुं. एक जिन वचननी श्रद्धा एज सत्य. बाकी सर्वे असत्य मिथ्या ठे. पन्नवणा सूत्रमां गाथा लखी ठे ते दर्शावुं ठुं.

गाहा.

निश्थयमग्गो मुक्खो, ववहारो पुन्नकारणो वुत्तो ॥
पढमो संवर रूवो, आसवहेऊ तऊ बीऊ ॥१॥

भावार्थः-निश्चय नयनो मार्ग ज्ञान सत्ता रुप ते मोक्ष कारण ठे, व्यवहार क्रिया पुण्यनुं कारण ठे, मोक्षमार्ग निश्चय नयथी संवररुप ठे अने व्यवहार मार्ग आश्रवनो

हेतु छे. शुभ व्यवहारे पुण्यरुप शुभ कर्मनु ग्रहण थाय छे अने अशुभ व्यवहारे पापकर्म रुप आश्रव ग्रहण थाय छे; एम सिद्धांतकार स्पष्ट रीते कये छे. शुभ व्यवहार मोक्षनुं कारण जाणी आदरवो, ते सत्य तत्व प्राप्ति करावी आपतुं नथी. सत्य तत्वनो अपलाप करवो ते उत्सूत्र जाषण छे. वादी कहे छे के प्रभुए स्याद्वाद मार्ग कह्यो छे माटे व्यवहारे चालवुं जोइए. तेना उत्तरमां समजवुं के व्यवहारे चालवुं ते सत्य छे पण निश्चय नयनी प्राप्ति करावी आपनार शुद्ध व्यवहार छे अने शुद्ध व्यवहार शब्द नयनी अपेक्षाए जेद ज्ञाननुं नाम छे; अने ते जेद ज्ञाननो संवर जावमां संजव छे अने ते मोक्षनुं कारण छे. शुभ अने अशुभ ए बे व्यवहार अशुद्ध व्यवहारनाज जेद छे अने तेनो आश्रवमां अंतर्जाव थाय छे, तेने संवरमां कदाग्रहथी गणीए तो असत्य वचने मृषावाद लागे, अने तेम मृषावाद बोलवाथी समकीत संजवे नही माटे तत्व ज्ञाननो खप होय तो निश्चय दृष्टि हृदय धरी व्यवहार मार्गनुं आचरण करो, तो स्याद्वाद सत्य धर्म पामशो. अध्यात्मसार ग्रंथना पंचदश योगाधिकारमां कह्युं छे के

आवश्यकादिरागेण, वात्सल्याद्भगवद्गिरां ॥
प्राप्नोति स्वर्ग सौख्यानि, न याति परमं पदं ॥१॥

आवश्यक प्रतिलेखना आदि चरणसित्तरी करण-

सित्तरीनी क्रियाना रागे जिन वाणीनुं वात्सल्य छे तेथी स्वर्गनां सुखो मळे छे पण उत्कृष्ट एवुं परमात्म पद मळतुं नथी, कारण के जेवा प्रकारनी दृष्टि तेवुं फळ प्राप्त थाय. बाह्य दृष्टिथी बाह्य क्रियाने पुष्ट करी मोक्षनुं कारण मानीए अने ध्यानगत स्वभावरमणरूप अंतरक्रियाने अवगणीए तो तेथी कांइ मोक्षपदनी प्राप्ति थाय नहीं-आश्रवनुं कारण तेने संवर मानतां मोक्ष मार्गनो रोध थाय वळी उपाध्यायश्री जसविजयजी श्रीसीमंधरस्वामीना स्तवनमां पंदरमी ढाळे कहे छे के—

परपरिणति पोतानी माने, वरते आरत ध्याने ॥
बंध मोक्ष कारण न पीछाने, ते पहिले गुणठाणे ॥
धन्य ते मुनिवरारे, जे चाले समभावे ॥२३॥

अर्थः-परपरिणत्ति ते राग द्वेष अशुद्ध परिणति, अशुद्ध निमित्त काया संयोगे इंद्रि द्वारे, विषयने कर्त्तापणे भोक्तापणे, रमणपणे, ग्राहकपणे, व्यापकपणे, परिणमनपणे अनादि संबंधे आत्मा अनुभवे छे तेने पोतानी माने एटले काया ते जीव अने जीव ते काया एम एकता माने पण कायाथी जुदो कायानी मांहेलो कोरे जाणवावाळो अनुभववावाळो वेदवावाळो छे ते जीव छे अने इंद्रियो छे ते पुद्गल छे, एम जीवनीअने पुद्गलनी भिन्नता छे. वळी जीव अरूपी छे, चेतन छे, ने पुद्गल रूपी छे जड छे, ते अपेक्षा न राखतां एकांते आत्मानी माने; द्रव्य प्राणने जीव समजे इष्टानिष्टपणे आरत ध्याने वर्त्ते एज कर्म बंधनुं कारण

अने कर्मनो नाश करवानुं कारण रागद्वेषनो अन्नाव एटले समन्नाव ते शुन्नाशुन्नमांअव्यापकपणुं अपरिणमनपणुं एटले परथी उदासिनतापणुं ने अंतर्गतगुणवृत्तिए व्यापकपणुं परिणमनपणुंउपयोगीपणुंरूपातितध्याने रमणपणुं निर्विकल्पचिंतकपणुं वितराग न्नाव ते मुक्ति एटले कर्मथी मुक्त थवानुं ने सिद्धि वरवानुं कारण ए रीते बंध मोक्ष बन्ने कारणोने न पिठाने एटले जाणे नहीं ने मोह गर्न्नित वैरागे देवादिकरिद्धिना अन्निलापी थइ कंचनकामिनीआदि गृहवास ठंमी संयति नाम धरावी चरण करणानुयोगनी द्रव्य क्रियाथी चारित्र माने, रजोहरणादि लिंगने दर्शन माने,न्नणे तेने ज्ञान माने अने शुद्ध नयपक्षे रत्नत्रयीनी अपेक्षा न राखे; कारण कार्यन्नावने समजे नहीं ते मनुष्य मिथ्यात्वरूप पहेले गुणठाणे जाणवा; माटे हे न्नवन्निरु न्नाइओ! सिद्धांतना वचननो तथा पूर्वाचार्योना वचननो परमार्थ समजी शुन्नाशुन्न व्यवहारथी दूर थइ बाह्यद्रष्टि टाळी जरूता निवारी शुद्ध व्यवहारने ग्रहण करो एटले निश्चयनयथी कथित परमात्म पदनी प्राप्ति थशे, ए सातमो सत्य धर्म कथन कर्यो. हवे आठमो शौचधर्म कहे ठे. शौच एटले पवित्रपणुं निर्मलपणुं तो न्नेद ज्ञान घटमां आव्यां कायानो अने आत्मानो न्नेद जुदो पमे वस्तुगते वस्तुपणुं न्नासे, एटले अनादि संबंधे आत्मा पुद्गल मिश्रित लोळीन्नूत क्षीरनीर द्रष्टांते मिलीत ठे परंतु वस्तुगते न्निन्न ठे एटले जीवथी पुद्गल जुदो ठे अने पुद्गलथी आत्मा त्रिकाळवृत्तिए जुदो ठे. शुद्ध द्रव्यास्तिक न-

यपके निर्लेप अनादि सिद्ध छे ते आत्मानुं स्वरूप श्रद्धा भासन रमणमां अनुभव रीते आवे, उदीक भावमां अव्यापकपणे वर्ते, उदीकभावने क्षय उपशम वळे निर्जरे, पुनरपि कर्म न बांधे एवा उपयोगी महात्माने पवित्र कहीये, वळी ज्ञानी कहीये, मुनि कहीयेः पण ज्यां सुधी चेतन सत्ताथी अचेतन सत्ता भिन्न भासी नथी, जाणी नथी, त्यां सुधी व्यवहारमां संयति नाम धरावे अने यथार्थ द्रव्य चारित्रनी क्रिया करे, मांखीनी पांखने दुहवे नहि तोपण असंयति छे, एम उत्तराध्यनजीमां कह्युं छे.

नाणेण य मुणी होइ, न मुणी अरण्णवासेण

वळी आनंदघनजी कृत चौविशीमां बारमा वासुपूज्यजीना स्तवनमां कह्युं छे.

आतम ज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्य लिंगी रे ॥
वस्तुगते जे वस्तु प्रकाशे, आनंदघन मति संगीरे ॥
वासुपूज्य जीन त्रीभुवन स्वामी ॥ ६ ॥

वळी यशोविजय उपाध्यायजी अध्यात्म सारग्रंथे योगाधिकारे कहे छे. ॥

पापाकरणमात्राद्धि, न मौनं विचिकित्सया,
अनन्य परमात्मा स्यात्, ज्ञानयोगी भवेन्मुनिः॥२६॥

समाधिशतके दुहा.

केवल आतम बोध हे, परमारथ शिवपंथ,
तामें जीनकूं मगनता, सोइ भाव निर्ग्रंथ ॥ २ ॥
ज्ञानविना व्यवहारको, कहा बनावत नाच,

रत्न कहोको काचकूं, अंत काच सो काच ॥ ५ ॥

द्रव्य गुणपर्यायना रासमां पहेली ढाले.

विना द्रव्य अनुयोग विचार, चरण करणनो नहि को सार,
संमति ग्रंथे भाष्युं इस्युं, तेतो बुद्धजन मनमां वस्युं ॥१॥
शुद्धाहारादिक तनुयोग, मोटो कहीयो द्रव्य अनुयोग,
ए उपदेश पदादिक ग्रंथे, सांख लही चालो शुभपंथे ॥२॥
ए योगे जो लागे रंग, आधाकर्मादिक नहि भंग;
पंचकल्प भाष्ये इम भएयुं. सद्गुरु पासे इस्युं में सुएयुं ॥३॥
बाह्य क्रिया छे बाहिरयोग, अंतरक्रिया द्रव्य अनुयोग;
बाह्य हिन पण ज्ञान विशाल, भलो कह्यो मुनि उपदेश माल ॥४॥
द्रव्यादिक चिंताये सार, शुक्लध्यान पण लहिये पार,
ते माटे एहिज आदरो, सद्गुरु विण मत भूला फिरो ॥६॥
एहनो जेणे पाम्युं ताग, उंघे एहनो जेहने राग;
ए वे विण त्रीजो नहि साध, भाष्यो संमति अरथ अगाध ॥७॥

ए शौच धर्म कह्यो. हवे नवमो अकिंचनता धर्म कहे छे ते किंचनना अभावे संपजे तेना वे भेद. एक बाह्य, बीजो अभ्यंतर बाह्य कींचन ते नव भेदे परिग्रह कंचन कामनी आदे तेने तजवाथी ने पंच महाव्रत उचरवाथी छट्ठुं सातमुं गुणठाणुं व्यवहारे कहेवाय वळी निर्ग्रंथ कहेवाय ए पहेलो भेद कह्यो हवे बीजो भेद अभ्यंतर किंचननो तेना वे भेद. एक मूर्छारुप ने बीजो बंधनपणारुप; तेमां मूर्छा ते पर वस्तुने विषे पोतापणानो ममत्व अने वळी अभिलाषा,

पर वस्तुने विषे लागी छे तेने मूर्छा किंचन कहीये; तेनो संभव सातमा अप्रमत स्थानकथी छठा प्रमत स्थानके आवे जाय त्यां सुधी संभवे, अने सातमाथी आठमा अपूर्व गुणठाणे जइ श्रेणी मांडे त्यां नियमा मूर्छानो अभाव थाय वळी केटलाकने चोथा अविरती समकित गुणठाणाथी पण मूर्छानो अभाव थाय, कारण के क्षायकसमकितनी प्राप्ति चोथा गुणठाणाथी कही छे; त्यां मूर्छा केम संभवे अर्थात् न संभवे. ए अभ्यंतर किंचननो प्रथम भेद कह्यो. हवे बीजो भेद बंधनपणानो ते ज्यां सुधी मोहनीय कर्मनी प्रकृति आत्म सत्ताए रही छे त्यां सुधी आत्मा संसारमां बंधनपणे रह्यो छे एटले आठ कर्म छे तेमां राजा मोह छे अने जे राजा होय तेज केद करी शके एटले उपशम श्रेणी मांडी अग्यारमे गुणठाणे उपशम भावनुं यथाख्यात चारित्र वितराग भावे पामे तो पण संसारनो अभाव न थयो अने जन्म मरण टळ्यां नहि तेनुं कारण एज के मोहनी कर्मनी प्रकृति आत्म सत्ताये सावीत रही छे, विपाके उदयनो एक अंतर मूहुर्त मात्र अभाव थयो छे पण सत्ताये अभाव थयो नथी ते कारणे उपशम भावनी अंतर मूहुर्तनी स्थिति छे. तेनी पूर्णताए सत्तामां रहेली प्रकृति उदयागत प्राप्त थइ तेज समे अग्यारमा उपशांतमोह गुणठाणाथी पडे छे ए मोहनो पराभव जाणवो.तेनो अभाव बारमा क्षीणमोह गुणठाणे क्षपकश्रेणीनी अपेक्षाये थाय तिहां निश्चयनयथी अकिंचन संयति धर्मनो नवमो भेद पामे ते कह्यो.

हवे यति धर्मनो दसमो भेद ब्रह्मचर्य वर्णवे छे. ब्रह्मचर्यना चार भेद तेमां प्रथम वेद विषयभोग सेवे नहीं. बीजो विषय चिन्हनी विकृतिने टाळे. त्रीजो वेदने बांधवानां स्थानकोने त्यजे. चोथो वेदना बंधनी सत्तानी योग्यतानां स्थानकने त्यजे ते ब्रह्मचर्य व्रत जाणवुं. हवे ए चार भेदनुं विवेचन करे छे. वेद विषय भोग नहीं करे तो पंचम गुणठाणा सुधी बार व्रतधारी श्रावकने प्रमाण पूर्वक स्वदारा साथे वेद विषय भोगनो संभव छे परंतु कोइ सोय दोराना आकारे सर्वथी त्याग करे तेने आलाप संलाप स्पर्श आदि रह्युं, तेनो त्याग छठा सातमा गुणठाणे संयति पद ग्रहण करतां संभवे. हवे बीजो भेद वेद चिन्ह विकस्वर पामे तेने टाळवानो यत्न करवो. तेना बे भेद एक व्यवहारथी अने बीजो निश्चयथी. व्यवहारथी टाळवानो विचार करीए तो नववाडमां वसीए. वाडने भागी ठींडु पाडीए नहीं. ठींडुं पाडतां वळी वाडने उलंघन करतां वेद विकस्वर थाय, ते टाळवाने नव वाड कहेछे. पहेली वाडे स्त्री, नपुंसक पशु ज्यां रहे त्यां ब्रह्मचारीए रहेवुं नही. बीजी वाडे स्त्री साथे कामनी कथा करवी नहीं. त्रीजी वाडे स्त्री ज्यां बेठी होय त्यां पुरुषने बे घडी सुधी बेसवुं नहीं. स्त्रीने पुरुष बेठो होय तेना पर त्रण पहोर सुधी बेसवुं नहीं. चोथी वाडे स्त्रीनुं रूप अंगनी कांति जोवा नजर मांडे नहीं. पांचमी वाडे स्त्री पुरुष भींतने अंतरे रमतां होय त्यां ब्रह्मचारीए रहेवुं नही. छठी वाडे पूर्वना भोग विलासने संभारे नहीं.

सातमी वाडे कामोद्दीपक आहार करे नहीं. आठमी वाडे मर्यादा बहार जोजन करे नहीं. नवमी वाडे देहने शणगारे नहीं. ए वेदनुं विकस्वरपणुं टाळवाने. व्यवहारे प्रथम जेद जाणवो. बीजो जेद तो निश्चयथी वेद विकृति टाळवाने अंतरमां विचार करवानो छे. संयति पदे वेद विकृति पामवानुं मूळ कारण जोइए तो समकित मोहनीय छे. वळी चारित्र मोहनीयनी त्रण चोकडीओनो तो क्षयोपशम थएलो छे, परंतु उदयतानी अधिकताइ योगे उठाला करे ते पराजव छे. वळी संज्वलनना कषायनो पराजव पण प्रमाद प्रसंगे विशेष छे. वळी नोकषाय तेमां हास्यादिक षट् (६)नो अने वेदनो क्षयोपशम तो बहुधा थयो नथी तेनो पराजव छे. इत्यादि मोहनीय कर्मनी प्रकृतिउनो पराजव प्रमाद गुणठाणे प्रमाद प्रसंगे अधिक होवाथी वेदनी विकृति थाय तेने टाळवाने अर्थे घटमां सहज जावे जेदज्ञान जाग्रतिपणुं पामे अने सहज वीर्यनी स्फुरणा थाय, वळी अप्रमत्त गुणठाण मित्रनी मित्रता दृढता पामे अने तेना योगे उपर कहेलो उपाधि योग तेने निर्जरे अने उदयागत प्राप्त न थयो तेने उपशमावे त्यां प्रमाद गुणठाणे आववुं बंध थाय त्यारे आतमा अपूर्व गुणठाणे प्रयाण करे, त्यां वेद विकृतिनो संजव नथी ए निश्चयथी बीजो जेद कह्यो. ज्यारे आत्मा बळीउं थाय त्यारे ते वात बने. हवे त्रीजा जेदमां वेद बांधवानां स्थानकने त्यजवां जोइए त्यारे त्रण वेदनो बंध प्रथम गुणठाणे कह्यो

छे. तेमांथी नपुंसक वेदनो वंध वीजा सास्वादन गुणठाणे टळे अने स्त्री वेदनो वंध त्रिजा मिश्र गुणठाणे टळे. समकित चोथा गुणठाणानी सावीतीए एक पुरुषवेदनो वंध छे ते नवमा अनिवृत्ति गुणठाणाने अंते श्रेणीये टळे. दसमा सूक्ष्म संपराय गुणठाणे चढीए त्यां वेदनुं अवंधपणुं छे.

हवे चोथो भेद वेदना वंधनी सत्तानी योग्यताना स्थानकने तजवुं ते अग्यारमा उपशांत मोह गुणठाणा सुधी आत्मप्रदेशे वेदना वंधनां कर्मदल सत्ताए उपशम श्रेणीनी अपेक्षाए होय माटे वेदना वंधनी सत्तानो अभाव तो वारमा क्षीणमोह गुणठाणे वितराग भावे संभवे ए दश भेदे यति धर्म कह्यो. हवे क्षायक समकित कहे छे; परंतु क्षायिक समकित पामवुं ते जीवने कांइ सहेज नथी. घणुं दुर्लभ छे. ते किंचित् वर्णवे छे. समकितादि धर्म पामवानी योग्यता शुक्ल पक्षिया जीवने योवन अवस्था प्राये शास्त्रनी मर्यादा व्यवहार पूर्वक संसार अर्ध पुदगल परावर्त वाकी रहे त्यांथी कहीए पण समकित धर्मनी प्राप्ती संज्ञि पंचेन्द्रिमां छे.अने संज्ञि पंचेन्द्रीपणु पामवु पुनः पुनः दुर्लभ छे.महा पुण्ययोगे संपजे अने तेमां पण मनुष्य पंचेन्द्रि पणुं श्रेष्ट छे ते पाम्या; तेमां कदाच क्षयोपशम भावनी हानि थइ तो पांच इंद्रियोनी चेतना हणाइ जाय त्यारे श्रवण चेतनाना अभावे सदगुरुनो उपदेश पमाय नहीं अने चक्षु चेतनना अभावे जिन प्रतिमा तथा मुनिवरनां दर्शन थाय नहीं, अने मन पण अवढ कुवाना

पाणीनी पेठे दुर्ध्यान वासनाए वासित रहे तो समकित धर्म शी रीते पामी शकाय. धारो के पांच इंद्रियो पाम्या पण अनार्य क्षेत्रमां जन्म थयो तो त्यां देवगुरुनी जोगवाई मळवी दुर्लन्न थई पडे. कदाच आर्य क्षेत्र पाम्या पण जन्मथी रोगी थया तो ए रोग टाळवानी चिंतामां तथा दुःखमां काळ जाय पण धर्म पामवानो वखत आवे नहीं. निरोगीपणुं अने इंद्रियो संपूर्ण पाम्या पण आर्य क्षेत्र अने श्रावकना कुळमां जन्म थयो नहीं तो केवळी कथित धर्म मळे नहीं. पूर्वोक्त योगवाइथी श्रावक कुलमां जन्म्या तो पण सद्गुरुनो उपदेश मळवो दुर्लन्न कारण के समकित धर्म छे ते तो अरूपी आत्मानो गुण छे अने तेथी वस्तुनो निर्णय करवानो छे अने वस्तु गते वस्तु धर्म रह्यो छे तेनी श्रद्धा करवी छे; अने पुद्गलादि वस्तु आत्माथी ज्ञिन्न छे तेने विषे त्याग बुद्धि करवी छे ए तत्वनी वात ज्यां त्यां पामी शकाय नहीं. ए तत्वने तो स्वस्वरुप रमणी, सहज भाव विलासी, आत्मज्ञानी जग भावथी उपरांठ थई उजागर दशाने पामेला, नय निक्षेपाना जाण, स्याद्वाद वादी, करुणासागर इत्यादि गुणगण युक्त बहु श्रुत गीतार्थ जे सद्गुरु, तेमनो उपदेश पामीए, त्यारे समकित पामवानो वखत आवे. एवा गुरु मळवानो योग चोथे आरे पण सर्व क्षेत्रे सदा होतो नथी, तो दुषम काळे क्यांथी पामीए. ए सद्गुरु पुण्योदय जोगे मळ्या ते छतां पण गुरु महाराज पासे जतां आलस्य आवे. आलस्य

काठीओ गुरु पासे जतां रोके. संसारनुं काम वगेरे छे ते करीने जजो. ते कामनो पार आवे नहीं अने गुरु पासे जवाय नहीं, तो धर्म शी रीते पामे. एम करतां जोरावर थाय तो आलस त्यागी संसारना कामने पुंठ देइ गुरु पासे आवे त्यां बीजो मोह काठीयो आवीने उभो रहे. गुरु संसारी जीवने प्रथम वैराग्योपदेश करे कंचन कामिनी विषयादिना त्यागनो उपदेश थाय त्यां मोह पामेला प्राणीनी रुची तेना उपरथी न उठे त्यारे मोह काठीओ त्रीजा अवज्ञा काठीआने बोलावे; ते आवीने खभो थाय. त्यां गुरु महाराजना दोषो जोतो फरे. एक सरसव जेटलो दोष होय तो तेने मेरु समान मोटो करीने कहे अर्थात् निंदा करे, एवो जीव बोध शी रीते पामे; तोपण करुणाना सागर हित वांछक गुरुराज तेने उपदेश करे त्यारे अवज्ञा काठीओ चोथा मान काठीआने बोलावे. ते आवे त्यां पोतानी मोटप आवे तेथी गुरुरायने यथास्थित नम्रता पुर्वक वंदन पण करे नहीं. वळी गुरुराय उपदेश करता होय अथवा सज्झाय ध्यान करता होय ते वखते गुरुने धर्मलाभ देवानी तथा समजुने मुख्यताए वांदवानी मर्यादा पण नथी. कारण के धर्म लाभने इछे तेने ते वखते गुरुराय उपयोग चुकावीने बहुधा तो धर्मलाभ दे नहीं त्यां जेने मान काठीयो नड्यो छे ते पुरुष गुरुने अभिमानी ठरावे. अवज्ञा काठीआने आगळ करी लोकोने मोहे बोलतो फरे के शुं गुरु पासे जइए! गुरुने वांदीए तो पण

धर्मलाभ दे नहीं. ते मोटपना लीधे देता नथी, एम गुरुने माथे प्रथम तो अठता दोषनो आरोप कर्यो हतो. वळी बीजो मान मोटपनो आरोप करे, वळी अवज्ञाए पाछळ बोले के हवे तो हुं वांदतो पण नथी. एम तेथी ते जीव बोध शी रीते पामे. त्यार पछी मान काठीओ पांचमा क्रोध काठीआने बोलावे. क्रोध आवे त्यारे बीजा भाइओना वार्या छतां पण वळे नहीं. क्रोधना भजावे तो गुरु महाराजना पाछळ खवरी निंदा करतो हतो, हवे तो गुरु महाराजना सामोज तीखो थइने कडवां वचन कुयुक्तिथी बोले परंतु गुरुराज क्षमाना समुद्र छे तेथी सर्व सहन करे. वली सुबुद्धिना प्रेर्या थका गुरुराज पश्चात् उपदेश करे. त्यां क्रोध काठीओ छठा प्रमाद काठीआने बोलावे. ते काठीओ आव्यो एटले कांतो उंहींगण लेइने उंघे के एक बीजानी साथे संसार कथनीनी वातो करे, तेथी तेने उपदेश संभळाय नही ए बोध शी रीते पामे. त्यारे गुरुराय तो ज्ञानी छे तेथी विचारे के ए उंघे छे अथवा विकथा करे छे. ते पोताना घरनुं काम पडयुं मुकी अहीं आव्यो छे. अने अहींथी लाभ लेइ जशे नहीं माटे ए जीवने वारुं. एम करुणा लावीने गुरु कहे के तमे कां तो उंघो छो के कां तो विकथा करो छो माटे प्रमाद छोडी सावधान थइ उपदेश सांभळो. आवो अवसर फरीने नहीं आवे त्यारे प्रमाद काठीआये सातमा कृपण काठीआने बोलाव्यो. ते आव्यो त्यारे ते अवसरे ज्ञान पूजवानो वखत छे ते काम मारे करवुं पडे अ-

थवा प्रशस्त मार्गनी टीप चालती होय अने पोतानामां शक्ति छे माटे छती शक्तिवाळाने सौ कहे छे ते अवसरे कृपणताने लीधे वात काढतां पहेलां आगळथी उठी जाय अने उपदेश श्रवणनी दरकार न राखे एवो जीव बोध शी रीते पामे.

वळी प्रथमथी आलस काठीआने पुंठ देइ उपदेश सांजळवानो रागी थयो छे ते बीजा दिवसे आवे त्यारे कृपण काठीओ आठमा जय काठीयाने प्रेरणा करे अने ते आवे. गुरुराय उपदेश करे. अने त्यां ज्जव्य जीवो सांजळे के आ संसारना प्रवर्तनमां बहुधा जीवो आर्तध्यान अने रौद्र ध्यानना ध्याता छे तेथी केटलाक तिर्यंच गति उपार्जे अने केटलाक नरक गति उपार्जे अने नरकना डुःखनो विपाक तो अति कटुक, तेनो जोगदारी ते थाय, माटे विवेकी मनुष्यने संसार त्यजवा योग्य छे. एम सांजळतां जय काठीओ चिंतवे छे के गुरुराज तो नरकनां डुःख संसार कारणे देखाडे छे अने जीवने जयत्रांत करे छे माटे मारे अणगार पदमां परिषह उपसर्गादि डुःख देखाडी संसारमां स्थिर करवो. वळी गुरुराज उपदेश करे त्यां जय काठीओ नवमा शोक काठीआने बोलावे. एटले मातपिता, जाइ, जोजाइ, पुत्रादिक मरी गयां होय तेथी देवदर्शन करवा जिनमंदिरे तथा उपदेश सांजळवा उपाश्रये जतां शोक काठीओ आवीने रोके अने बोले के आवो केर थइ गयो माटे त्यां तो जवाय नहीं. जो जइए तो

सारु न कहेवाय. परंतु मा बाप मरी जाय अने दीकरो दिकरी परणे ए तो संसारनी रीति छे पण गुरु पासे जतां अरुचण आवे ते शोक काठीओ जवा दे नहीं तो बोध शी रीते पामे. तेमां वळी कोइक वळीओ थइ शोक क.ठीआने जीती गुरु उपदेश सांभळवा आवे त्यां शोक काठीओ दसमा कुतुहल काठीआने बोलावे, एटले क तो पर्युषणनो मोटो दिवस होय अथवा चौदशादि मोटी तिथि होय त्यारे सभानी मध्ये महाजन वर्ग मळी नातनी पंचात आदि विकथा करी वखाणने अटकावे, तेथी तत्वनी वात सांभळी शकाय नही अने श्रोताओ उद्वेगनी कथा करीने वेराइ जाय. वळी अवसरे गुरु महाराज उपदेश करे, श्रोता सांभळे त्यां कुतुहळ काठीओ अग्यारमा रमण काठीआने बोलावे एटले श्रोताजनो गुरुराजनी सामी दृष्टि न करे अने आकुंअवळुं जोयां करे अने कां तो स्त्री वर्गनुं सामु जुए अने कांतो चंदरवा पुंठीयाना सामु जुए एम चोतरफ दृष्टि फेरवे अने गुरुना मुखनुं वचन सांभळे नहीं अने मनमां घरनुं काम चिंतव्या करे एवो जीव बोध शी रीते पामे ? वळी गुरुराज उपदेश करे त्यां रमण काठीओ बारमा अज्ञान काठीयाने बोलावे त्यारे विचारे के गुरुराज एक जलना बिंदुमां पण असंख्याता जीव प्ररुपे छे. वळी अग्निना एक तणखामां असंख्याता जीव छे अने अढी द्विपनो अंदर रहेला सर्व अग्निमां पण असंख्याता जीव कहे छे. वळी कंदमूळमां सोयना

अंगभाग प्रमाणमां अनंता जीव कहे छे, ए वचनमां अज्ञान काठीउं शंका संदेहने आगळ करे अने ते वचन सदहे नहीं त्यारे गुरुराज सूक्ष्म युक्ति करी असंख्याताना असंख्याता भेद छे ते बतावे, अनंताना अनंता भेद छे ते समजावे तो पण तुच्छ बुद्धिथी समजी शके नही. वळी गुरुराय प्ररुपे के पाप करवाथी जीव नरकनां दुःख भोगवे, अने पुण्य करवाथी जीव देवलोकनां सुख भोगवे. आश्रव पापबंध हेतु अने संवर धर्महेतु वळी तपश्चर्या योगे संयम पाळतां क्षमादि दश प्रकारनो यति धर्म ग्रहतां संवर थाय. पांच इंद्रियोना विषय भोगवतां वळी पापस्थानक सेवतां आश्रव थाय, इत्यादि उपदेश करे पण अज्ञान काठीउं जेने नड्यो छे तेनी श्रद्धामां ते वात आवे नहीं, त्यारे बोले के जगतमां उपदेश कुशळ तो घणा छे, कोण स्वर्ग अने नरक जोइ आव्युं छे. पुण्य अने पाप ते शुं छे? जाणे तेने पाप लागे अजाण्याने पाप लागतुं नथी एम बोले. ए अज्ञान काठीउं महा बळवान अति दुष्ट छे. हवे गुरुराय अज्ञानने दशे दिशाथी नसाडवाने सूर्य सरखा छे ते कहे छे के हे भाइ! तुं स्वर्ग अने नरक मानतो नथी एटले परभव न मान्यो. परंतु आ मनुष्यना भवमां एक पालखीए बेसे अने बीजा उपाडे एक रोगी अने बीजो निरोगी छे. कोइ अंध छे, कोइ मूगो छे कोइ पांगळो छे, कोइ बहेरो छे, कोइ बळवान छे कोइ निरबळ छे; एकना मनोरथ पूर्ण थाय छे अने बीजाना

थता नथी, ए सर्व पुण्य पापनां फळ छे ते तुं विचारी जो. वळी तने शंका उठे तो बोल. त्यारे ते विचार करवा लाग्यो. अज्ञान काठीआने बोलवाने मार्ग न जड्यो; त्यारे अज्ञान काठीआए तेरमा व्याक्षेप काठीआने बोलाव्यो. हवे गुरुराय अध्यात्मनो उपदेश करे छे. आत्मिक भावनी प्ररुपणा थाय छे. त्यां ज्ञान ते आत्मा दर्शन ते आत्मा, चारित्र ते आत्मा. आत्मा आत्मा थकी ज्ञान, दर्शन, चारित्र पामे. पुद्गलथी करेलो धर्म आत्माने खप लागतो नथी. त्यां व्याक्षेप काठीउ बोले छे के, सामायक, पोसह, पडिकमण आदे क्रिया करीए छीए ते आत्माजे करे छे. तेने गुरु कहे छे के हे भाइ! तें कह्युं ते व्यवहारना न्याये उपचारे आत्मा करे ते एम कहीए; पण आत्मा तो कायाथी जुदो अंतर व्यापकपणे रह्यो तेने उळखो, जाणपणुं करो, पछी तेमां रमण करो, एथी आत्मिक धर्म पामशो. पुद्गल योगे क्रिया करीए अने एकांते पोते कर्तापणुं मानीए तेनुं नाम मिथ्यात्व छे. तुं हजु सुधी आत्माने जाणतो नथी अने धर्मने उलखतो नथी तेथी हुं तने दृष्टांत साथे नयपक्ष युक्त आत्मधर्मनुं जाणपणुं करावुंछुं तारुं मन व्याक्षेपे करी मलीन छे, दुर्ध्याने करीने हणायुं छे ते मनरुप जलने स्थिर चित्त ध्यानरुप घटमां भर एटले निर्मल थशे अने अनादिनो व्याक्षेप काठीउ तारी केडे लाग्यो छे ते एनी मेळे रीसाइ जशे. तुं एने चपल मन करी बोलावे त्यारे ते तारी पासे आवे छे. एम गुरुरायनुं हित वचन सांभळी श्रोताये व्याक्षेप काठीआने दूर करी

स्थिर मने सन्मुख दृष्टिए जेम सोयना नाकामां दोरो परोवे तेम दृष्टी करी गुरुमहाराजनां नय गर्भित वचनो वरसे छे ते वचनरुप मेघवृष्टिने मन, पात्रमां झीले गुरुराय प्रथम दृष्टांत पूर्वक सात नये घट गवेषे छे. नैगमनय माटीने घट माने एटले माटीमां घटपणानो आरोप करे. संग्रहनय माटीनी सत्ताए घट होवानी योग्यता रही छे ते माटीने घट माने; एटले तेणे वेळुं आदि ग्रहण करी नहीं, कारण के वेळुमां घट होवानी योग्यता नथी तेने उवेखी दीधी. व्यवहार नय माटीने घट न माने, घट ने घट माने; चित्रना घटने घट माने. काचा वा कांणा घटने घट माने. ऋजुसुत्र नय चित्रना घटने वा कांणा घटने तथा काचा घटने घट माने नहीं. ए नये त्रण घट न मान्या; कारण के चित्रना घटमां पाणी रहेवानुं स्थानक नथी; वळी काचो घट ते पाणी भरतां गळी जाय अने कांणा घटमां पाणी न रहे; माटे ए त्रणने उवेखीने अखंडित पाको घट मान्यो. शब्द नय एवा घटने घट मानतो नथी कारण के तेना धर्मे वर्ततो नथी एटले अंदर जळ नथी माटे जे घटमां जळ भर्युं छे ते घट तेणे ग्रहण कर्यो. समभिरुढ नय परिपूर्ण भरेलो किंचित् पण उणो नथी तेने घट माने. एवंभूत नय परिपूर्ण जल भरेला घटने घट माने पण स्त्रीना मांथे चढेलो जल धारण क्रियाने करतो छतो वर्ते ते घट. ए सात नय पक्षे घट गवेष्यो, हवे दृष्टांत पूर्वक सात नय पक्षे जीवनुं अने धर्मनुं जाणपणुं कहे छे.

चाहे छे. अहीं नाम मात्र आरोपणे धर्म कह्युं. हवे संग्रह-नय कहे छे, जे असंख्यात प्रदेशी ते जीव. अहींआं एक आकाशास्तिकायना प्रदेश टळ्या, बीजा द्रव्य भेगा गणाया. अने बोले के जे वडेराए आदर्युं ते धर्म, एणे अनाचार छोड्यो परंतु कुळाचारने धर्म कह्यो. व्यवहारनय चर्मचक्षुए देखे तेने माने, एटले चर्मचक्षुए नर नरकादि गति पर्याय ते काया दीठामां आवे तेने जीव माने, तेमां तिर्यंच गतिए जेने एक स्पर्शेंद्रि छे तेने एकेंद्रि माने, मुख वधे तेने बेइंद्रि माने, नासिका वधे तेने तेइंद्रि माने, चक्षु वधे तेने चौरिंद्रि माने, कान वधे तेने पंचेंद्रि माने, मन वधे तेने सन्नि माने, मनुष्यने मनुष्य माने, देवने देव माने, नारकीने नारकी माने, एम चार गति उदिक भावमां कही छे; तेना भेद भेदांतर करतां जीवना पांचसेने त्रेसठ भेद गवेषे. तेमां जीवनुं स्वरूप तो हाथमां आवे नहीं, कारण के जीव स्वरूप तो सहज भावे उपयोगादि लब्धियोगे अंतरगत स्वभावे रह्युं, तेनुं ग्रहण न थयुं, अने पूर्वोपार्जित शुभाशुभ कर्मना उदययोगे प्राप्त थया जे गति पर्याय ते जीवे ग्रहण कर्या तेने जीव मान्यो. हवे मन वचन अने काया ए त्रणे योग पाम्या छे तेथी शुभ व्यवहार ग्रहण करी आवश्यक, पडिलेहणादिक क्रिया करे तेने चारित्र माने, उपवासादि करे तेने तप माने, नवकार मंत्रादि भणे तेने ज्ञान माने, देवगुरुने धर्म ए त्रण तत्त्वनी श्रद्धा तेने समकित माने. ए व्यवहारनय पक्षे जीव अने जीवनो धर्म कह्यो.

हवे ऋजुसूत्रनय कहे छे. तेना बे भेद. एक स्थूल अने बीजो सूक्ष्म. स्थूल ऋजुसूत्र ते शुभ क्रिया करे तेनी अंदर मन योगनी यथास्थित रमणता छे, ते जीव पुन्यनो ग्राहक थाय. यावत् देवगतिए नव ग्रैवेयक सुधीनुं पुन्य उपार्जे, परंतु संज्वलन कषायनो उदय होय अमायी होय अने प्रथम संघयणनो धणी होय तो बने. एटले कोइक जीवने पेहेला गुणठाणे पण संज्वलन कषायनो उदय होय छे. हवे बीजो भेद सूक्ष्म ऋजुसूत्र ते शुभाशुभ क्रियाथी रहित थइ यथाप्रवृत्तिकरण करी बीजु अपूर्वादिकरण करे त्यां तत्वातत्वनी यथास्थित गवेषणा करता सूक्ष्म भावनो ग्राहक आत्मा छे. सहज वीर्यनी स्फुरणा थाय छे. उपयोगीक भावछे. उत्तरोत्तर अध्यवसायनां असंख्याता स्थानके चढतो चढतो वर्त्ते छे, ते भावमां स्थिरपणे सूक्ष्म मनयोग सहचारी छे, ते सूक्ष्मऋजुसूत्रनय एम बेउ भेदने पामे तेने जीव माने, अने भाव गवेष्यो तेने धर्म माने. हवे शब्दनय पामे एटले सर्वथा प्रकारे मनयोग स्थिर थाय, त्यां ग्रंथिभेद करी समकित पामे, तेनुं कारण सूक्ष्मऋजुसूत्रनय छे, त्यां आत्माना सहज भावे गुणपर्यायनी प्रवृत्ति उपयोगी भाव सहज वीर्यनी स्फुरणाए शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट कर्यो. ग्रंथिभेद अवसरे ए समकित बीजना चंद्रनी रेखा पूर्वक अंशे अविनाशी आत्मा कहीए; गुणठाणुं चोथुं कहीए; मतिश्रुतज्ञान कहीए. हवे चोथा गुणठाणाथी चढवुं ते शुद्ध व्यवहारे उद्यम करतां चढे ते छठा

सातमा गुणठाणा सुधी चढे, यावत् वृद्धिये अगियारमा सुधी पण उपशम श्रेणीये चढे. हवे आखो भव स्थीतिमां जीव उपशम समकित अने सास्वादन समकित पामे तो पांचवार पामे अने क्षयोपशम समकित तो असंख्यातीवार आवे ने जाय, एटले जेम चंद्र उगीने आथमी जाय तेम समकित पण आवे ने जाय. परंतु आत्म सत्ताये ग्रंथिभेद थयो ते जतो नथी, पण मिथ्यात्वनुं दळ फरी वळे छे एम करतां करतां ज्यारे संसार स्थीति घटी जाय एटले उत्कृष्ट सात आठ भव संसार छे, अधिक नथी. वळी काळ आश्रीने छासठ सागरोपम फाझेरो संसार वाकी रहे. ने क्षय उपशम समकित पामे तो कोइकने जाय नहीं. वळी क्षायक समकित तो उत्कृष्ट भांगे जेने तेत्रीस सागरोपम फाझेरो संसार स्थीति काळ वाकी रह्यो होय अने भव आश्री त्रण चार भव होय ते पामे, बीजा न पामे अने क्षायक समकित पाम्या ते फरीने जाय नहीं. एटले उपशम अने क्षय उपशम समकित, सादि सांत भांगे छे, अने क्षायक समकित सादि अनंत भांगे छे. हवे क्षायक समकित पामवानो प्रथम समय अने समकित मोहनीना चर्मग्रासने खपाववानो छेल्लो समय तेने वेदक समकित कहीए, ते समकित एक समयनी काळ स्थीतिनुं जीव एकवार पामीने क्षायक समकितवंत थाय. तेना बे भेद (१) शुद्ध क्षायक (२) अशुद्धक्षायक, अशुद्धक्षायकः–ते पामता पेहेलां आवता भवनुं आयुष्य बांधीने क्षायक समकित पामे,

तेने अशुद्धक्षायक कहीए. बीजुं शुद्धक्षायक ते मनुष्यना भवमां छेल्ले भवे चोथे गुणठाणे अथवा सातमे गुणठाणे पामे, अने तद्भव सिद्धि वरे, ते शुद्ध क्षायक समकित कहीए अने क्षपक श्रेणी पण ते मांडे. शुद्धक्षायक विना क्षपकश्रेणी संभाय नहीं. अने उपशम श्रेणी तो शुद्धक्षायक समकिती, अशुद्धक्षायक समकिती अने उपशम समकिती ए त्रणे मांडे. क्षय उपशम समकित योगे उपशम श्रेणी न मांडे. कारण के समकित मोहनीनो पराभव छे. हवे शुद्धक्षायक समकिती प्रथम संघयणी उपशम श्रेणी कदाच मांडे, तो अगीआरमा गुणठाणे उपशम भावनुं यथाख्यात चारित्र पामी पाछा पडे ते आठमा गुणठाणेथी पुनरपि क्षपक श्रेणी मांडी घाती अघाती कर्म हणी सिद्धि वरे, अने अशुद्धक्षायक समकिती तथा उपशम समकिती उपशम श्रेणी मांडे ते अगीआरमा गुणठाणे चढी वीतराग भावने पामे त्यां अंतर्मुहूर्त्तनी स्थीति छे, तेमां आयुषनो अंत (छेडो) ए गुणठाणे आवे तो एकावतारी थइ सर्वार्थ सिद्ध विमाने जाय. ए पण प्रथम संघयणी जाणवा अने त्यांथी मनुष्यनो भव करी सिद्धि वरे. कदाचए गुणठाणे आउखानो छेडो न आव्यो तो पाछा पडे. हवे उपशम समकिति प्रथम संघयणी उपशम श्रेणी मांडी अगीआरमा गुणठाणे काळ करे तो अनुत्तर विमाने अपर्याप्ता अवस्थाए उपशम समकिती छे, ने पर्याप्तिनी पूर्णताए क्षय उपशम

समकितवंत थाय. उपशम श्रेणीए प्रथमना त्रण संघयणी जाणवा; एम चोथा गुणठाणाथी अगीआरमा गुणठाणा सुधी जे जीवो वर्त्तेछे तेने शब्द नय जीव माने अने जीवनो धर्म माने.

हवे समभिरुढनय क्षीणमोह बारमा वीतराग गुणठाणेथी अयोगी चौदमा गुणठाणाना अंत सुधी केवळज्ञान, केवळ दर्शन आदि क्षायक लब्धिवंतने जीव, ने तेना धर्मने धर्म कहे छे, अने एवंभूतनय आत्माना असंख्यात प्रदेशनो निविरूघन एक समय काळे सम श्रेणीए बीजा आकाश प्रदेशने अणस्पर्शते लोकाग्र भागे सिद्ध क्षेत्रे एक योजनना त्रेवीस भाग नीचे मुकीने चोवीसमा भागे उपर अलोकने अडीने सादि अनंत भांगे स्थिर रहे, ते सिद्ध भगवानने जीव अने धर्मी माने ए सात नय पक्षे जीवनुं अने धर्मनुं स्वरूप कह्युं तेनुं नाम जीवने तेजधर्म आत्मा आत्म शक्तिये प्रगट करे, पुद्गलना कृत्रिम बळे गुणठाणे चढातुं नथी; आत्म बळे अने क्षयोपशम योगे जीव गुणठाणे चडे. वळी पुद्गलनुं बळ सहचारी गणीएतो अपेक्षा कारणमां छे ने अपेक्षा कारण ते कांइ साधनमां गणातुं नथी. ए तो पूर्वोपार्जित कर्मना उदययोगे प्राप्त थयुं तेनो विभाग भेद ज्ञाने वहेंची भिन्न भिन्न परिणमावी चेतन पोते पोताना द्रव्य माने, पोताना गुणगत स्वभावमां रमणता करे, त्यां ज्ञान, दर्शन, चारित्र धर्म शब्दनय प्राप्तिथी आत्मिक कहीए. हवे पांच कारण मळ्यां मोक्षरूप कार्य नीपजे, ए पांच कारणने माने,

सर्दहे ते जीव समकितीछे अने पांचमांथी एक पण न माने एटले उथापे ते मिथ्यात्वी जाणवो. हवे पांच कारणनां नाम कहेछे(१)काळ(२)स्वभाव(३)नियत(४)पूर्वकृत(५)अनेपुरुषाकार, ए पांच भेद कह्या, तेनो अर्थ कहे छे. प्रथम काळ कारण छे ते पांच भरतने पांच ऐरवत ए दशक्षेत्रनी अपेक्षाये अवसर्पिणी काळे चोथो आरो अने उत्सर्पिणी काळे त्रीजो आरो ए काळे जीव मोक्षनुं साधन करी कार्य करे ते काळने कारण कहीए. वळी पांच महाविदेह क्षेत्रेतो सदाकाळ जैन तीर्थ प्रवर्ते छे, शासननो विरह काळ न आवे, माटे त्यां सदा सर्वदा काळ कारण छे. अहीं कोइ पूछे के काळ कारण कह्यो तो ए काळे अभवी जीव केम सिद्धता कार्यने पामता नथी ? तेनो उत्तर हे भाइ! काळ तो मळ्यो परंतु अभवी जीवोमां सिद्धता कार्य नीपजाववानो स्वभाव नथी तेथी न पामे; केमके काळ स्वभाव बे कारण मळ्यां जोइए. तेवारे फरी पुछे, के भवीजीवोमांतो मोक्षे जवानो स्वभाव छे तो सर्व भवी केम मोक्षे जता नथी ? तेनो उत्तर; हे भाइ, काळ स्वभाव ए बे कारण मळ्यां परंतु नियत कहेतां निश्चय समकित पामे त्यारे मोक्ष कार्य नीपजे, एटले काळ, स्वभाव अने नियत ए त्रण कारण मळ्यां जोइए. तेवारे पुछे के समकितादि कारण तो आणंद कामदेव आदि श्रावकोने हतां, तो मोक्ष कार्य केम न पाम्या ? तेनो उत्तर हे भाइ ! ए श्रावको समकिती छे परंतु पांचमा: गुणठाणे बार व्रत धारी श्रावकने रोचक समकित कह्युं छे. वळी छठा

सातमा गुणठाणे संयति पदे नवेकोटिनां पच्चरकाण पाळनार साधुने कारक समकित कह्युं छे. ए बे भेद क्षयोपशम समकितना छे. ए समकित निश्चयना पक्षनुं छे, परंतु समळ छे, कारणके समकित मोहनीनो उदय तेनुं नाम क्षय उपशमभावनुं समकित कहीए छीए अने समकित मोहनी ते मिथ्यात्वनुं शुभदळ पुद्गल छे, परंतु सत्ताए अशुभ छे; दृष्टांत जेम खसखस छे तेम समकित मोहनी छे एटले सत्ताए जोतां खसखसनो एक दाणो ते झेरनो पटारो छे, एटले विषनुं बीज छे, तेम समकित मोहनीनो उदय छे तेमां विपाके भाव मदिरानो छाक नथी, परंतु सत्ताये छे, ते कारणे मोक्ष कार्य न करी शक्या. त्यारे फरी पुछे के श्रेणीक राजा तो क्षायक समकिती छे तेमणे मोक्ष कार्य केम न कर्युं ? तेनो उत्तर हे भाइ श्रेणीक राजा क्षायकसमकिती छे, परंतु चोथुं कारण पूर्वकृत कर्म एटले ज्ञानावरणी आदि आठ कर्म तेमां चार घाती अने चार अघाती छे. घातीमां बळीउं मिथ्यात्व अने अघातीमां बळीउं आयुष्य छे. मिथ्यात्व ते ते अनंत पुद्गल परावर्त्त संसार स्थीति पर्यंत मोक्ष कार्य करवामां विघ्न कर्त्ता छे, ते विघ्ननो क्षायक समकित पाम्यां अभाव थयो अने आयुष्य कर्म छे ते उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम छाकेरुं मोक्ष कार्य करवामां घात कर्त्ता छे. ते घात कर्त्ता आयुष्य कर्म बांधीने श्रेणीक राजा क्षायकसमकित पाम्या, ते कारणे मोक्ष कार्य करी शक्या नहीं, जो क्षायक समकित पाम्या पहेलां आयुष्य कर्म न बांध्युं होत तो

तद्भवे मोक्ष कार्य थात. त्यारे पूछे के मरुदेवा माताने चार कारण मल्यां पण पांचमो पुरुषाकार उद्यम कांइ कीधो नथी अने मोक्ष कार्य तो कर्यु. तेनो उत्तर हे भाइ क्षपकश्रेणीए चढवानो शुक्ल ध्यान ध्यावारूप उद्यम कर्यो छे. माटे पांच कारण मळे जीव मोक्ष कार्यने पामे ए वात यथार्थ सत्य छे.

हवे समकितने जाणवा माटे निरधार करवा माटे छ बोल विवरीने कहे छे. तेमां प्रथम भेद तत्वार्थे निर्देश एटले उपदेश जीवादि नव तत्व छे, तेमां तत्व तो बे छे, एक जीव ने बीजो अजीव ए बे वस्तु छे. एटले संवर निर्जराने मोक्ष ए त्रण तो जीवना गुण छे, ते जीवथी अभेद छे, ने पुन्य, पाप, आश्रव अने बंध ए चार तो शुभाशुभ प्रकृति वस्तुगते पुद्गल छे. पुद्गल पुद्गलने मळे छे, बंधाय छे, विखरे छे. ए धर्म पुद्गलनुं पुद्गल संबंधी छे. वळी धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति ने काळ ए चार द्रव्यने अजीव कहीए तो ए कंइ संबंधी नथी, अनादि संबंधे ए चार द्रव्यथी जीव पुदगलनुं परिणमन भिन्न छे अने जीव पुद्गलथी ए चार द्रव्यने प्रत्येके प्रत्येके पोतानुं पोतामां परिणमन छे माटे ए चार द्रव्य शुद्ध छे, ते कारणे संबंधी नथी निमित्त मात्र जीव पुद्गलने गति स्थीति अवकाशादि हेतु छे. अने जीव पुद्गळ बे द्रव्यनुं संसार स्थीतिए अनादि संबंधे एकपणुं मीलितभे पण वस्तुगते एकपणुं नथी.

द्रव्यास्तिक नयपक्षे भिन्न परिणमन पोतानुं पोतामां छे, एम वस्तुगते वस्तुने ओळखी विभाग वहेंचण करवारूप निरधार करवो, यथास्थित श्रद्धा करवी, बाह्य दृष्टि टाळी अंतर दृष्टि करवी तेने निर्देश कहीए; ए प्रथम भेद कह्यो. हवे बीजो भेद स्वामित्व, ते समकित पामवाने अधिकारी देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक ए चार गतिमां संज्ञि पंचेंद्रि जीवो छे, तेमां जेनी संसार स्थीति अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनी अंदर रही छे ते जीवो वीर्य फोरवीने समकित गुण प्रगट करे तो थाय, माटे तेमने समकितना स्वामी कहीए. ए बीजो भेद कह्यो. हवे त्रीजो भेद समकित पामवानुं साधन एटले कारण ते बे प्रकारे छे. एक अंतरथी ने बीजुं बाह्यथी. अंतरथी तो चारघाती कर्मनी प्रकृतिओनो क्षय उपशम; वळी मोहनीनो उपशमभाव, जाति स्मरण ज्ञाननी प्राप्ति, तेने अंतर कारण कहीए;अने बाह्य कारण तो उदिक भावनी अपेक्षाए शाता अशाता, मान अपमान ऋद्धिनी हानी वृद्धि गुरु आदि सत समागमनुं मळवुं इत्यादि अनेक कारण चारे गतिमां रह्यां छे, ते कारण योगे अंतर कारणनो प्राप्तिना अभावे तो जीवो मिथ्यात्व मोहनीआदि कर्म बंधना कर्त्ता थाय छे अने अंतर करणनी प्राप्ति थइ त्यां जीव बाह्य कारणनी अपेक्षाए समकितादि गुण निपजाव करे छे ते उपशम क्षयउपशमादि भेदे चारे गतिमां समकित पामवानो संभव छे, ए त्रीजो भेद कह्यो. हवे चोथो भेद अधिकरण एटले आत्मिक शक्तिए समकित गुण प्र-

गट थयो, अने प्रगट थइने आत्मामां अन्नेद संबंधे रह्यो छे, जेम साकरमां मीठाश अन्नेदपणे छे, तद्वत्, परंतु आत्मा ते द्रव्य छे अने समकित ते गुण छे, ए चोथो न्नेद कह्यो. हवे पांचमो न्नेद उपशम, क्षयउपशम अने क्षायक ए त्रण न्नेदे समकित प्राप्त थयुं, तेनी जघन्य उत्कृष्टी स्थीति एटले काळनुं प्रमाण ते उपशम समकितनी समकित न्नावे जघन्य उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त्तनी अने संसार न्नावे अर्द्धपुद्गळ परावर्त्तनी अने क्षयोपशम समकितनी समकित न्नावे जघन्य अंतर मुहूर्त्तनी ने उत्कृष्ट छासठ सागरोपम जाझेरी अने संसार न्नावे न्नव आश्रीने सात आठ भवनी; परंतु पाछा न पडे तो, अने पडे तो अर्द्ध पुद्गल परावर्तनी संसार स्थीति जाणवी. हवे क्षायक समकितनी समकित न्नावे सादि अनंत न्नांगे, अने संसार न्नावे बद्धायु क्षायक समकितीनी जघन्य त्रीजो न्नव अने उत्कृष्ट चार न्नवनी अने काळ आश्रीने तेत्रीस सागरोपम जाझेरी जाणवी. अबद्धायु क्षायक समकितीनी संसार स्थीति तद्न्नवनी ने काळ आश्रीने जघन्य अंतर मुहूर्त्तनी ने उत्कृष्टी देशे उणां पूर्व क्रोडनी स्थीति जाणवी; ए पांचमो न्नेद कह्यो. हवे छठ्ठो न्नेद ते विधान, तेना बे न्नेद, एक निसर्ग एटले पोते पोताथी समकित गुण प्रगट करे, गुरु उपदेश विना; अने बीजो गुरु उपदेशथी समकित पामे, तेने विधान कहीए. ए छठ्ठो न्नेद कह्यो.

हवे पुनरपि ग्रंथि न्नेद पूर्वक जीवो चौदे गुणगाणे

साधे, सिद्धि उपार्जन अंते करे ते आश्रीने आठ बोल कहे छे, तेमां प्रथम भेद ते सत्यजीवमिथ्यादृष्टि एटले ग्रंथि भेद करी समकित पामीने पाछा पडी मिथ्यात्व गुणठाणे यावत् निगोद सुधी गया तो पण ए जीव आतम सत्ताए द्रव्यसमकिती छे. माटे ते जीवने सत्य कहीए कारण के ज्यारे त्यारे ए जलदीथी ऊंचा आवशे अने समकित भावे अप्रमत्तादि गुणस्थानक पामीने सिद्धि वरशे. माटे ग्रंथिभेदी मिथ्यात्वीने पण सत्य कहीए, ए पेहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो भेद ग्रंथिभेदी समकिती जीवोनी संख्या ते देवगतिअने नरकगति ए बे गतिमां चोथुं गुणठाणुं अने तिर्यंच पंचेंद्रि संज्ञीमां पांचमा गुणठाणा सुधी अने मनुष्य गतिमां चौदमा सुधी ते ग्रंथिभेद पूर्वक पेहेला गुणठाणेथी ते चौदमा गुणठाणा पर्यंत चौदे गुणठाणाना मलीने असंख्याता जीवो जाणवा; अने प्रत्येक गुणठाणानी अपेक्षाए चोथा पांचमा गुणठाणाना जीवो असंख्याता. ए उपरांत छठ्ठा गुणठाणाथी चौदमा सुधी संख्याता कहीए, परंतु कोइ आचार्य परूवाइ मिथ्यात्व गुणठाणे गएला अनंता पण कहे छे तत्व केवलि गम्य. ए बीजो भेद कह्यो. हवे त्रीजो भेद ग्रंथिभेदी जीवोने वसवानुं उपजवानुं क्षेत्र ते मिथ्यात्व गुणठाणे, चौद राज्य लोक प्रमाण क्षेत्र छे, एटले सूक्ष्म पांचे स्थावर चौद राज्य लोकमां भर्यां छे, अने सास्वादन गुणठाणाना जीवो विकलेंद्रिथी नीची गतिमां नथी अने समकित गुणठाणाना जीवो संज्ञिपंचेंद्रि ते चारे गतिमां

लाधे, अने पांचमा गुणठाणाना जीवो मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गतिमां लाधे अने छठ्ठा गुणठाणाथी चौदमा गुणठाणा पर्यंत जीवो एक मनुष्यगतिमां लाधे, एटले सास्वादन बीजा गुणठाणाथी चौदमा पर्यंत सर्वे जीवो पृथ्वीना आधारे रह्या ते क्षेत्र लोकना असंख्यातमा भागे कहेवाय, ए त्रीजो भेद कह्यो. हवे चोथो भेद ग्रंथि भेदी जीवोए क्षेत्रनी स्पर्शना करवामां आवे ते मिथ्यात्व गुणठाणे रहेला तेमणे आखो चौद राज्यलोक सर्वे स्पर्श्यो छे, ने उपरना गुणठाणावाळाए पोतानां उपजवानां स्थानको कह्यां एटलो लोकना असंख्यातमे भागे स्पर्श्यो छे, परंतु केवळी भगवान समुद्घात करे त्यारे, चौद राज्य प्रमाण सर्वलोक स्पर्शे छे एटलुं विशेष, ए चोथो भेद कह्यो. हवे पांचमो भेद ग्रंथि भेदी जीवोने चौदे गुणठाणे वसवानो काळ ते सादि सांतभांगे छे. एटले मिथ्यात्व गुणठाणे जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त अने उत्कृष्ट भांगे अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी लगे अनंतां काळचक्र, अने सास्वादन गुणठाणे जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ आवलीनो काळ अने समकित चोथा गुणठाणेजघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तने उत्कृष्ट छासठ सागरोपम झाझेरो काळ जाणवो. हवे एक पांचमा गुणठाणानो, बीजो छठ्ठा सातमा बे गुणठाणानो भेगो अपेक्षामां लेतां अने त्रीजो तेरमा गुणठाणानो जघन्यथी अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्ट देशे उणां पूर्वकोडनो स्थीति काल छे, बाकीनां सर्व गुणठाणे अंतर अंतर मूहूर्त्तनो काळ जाणवो. ए पांचमो

भेद कह्यो. हवे छठ्ठो भेद ते चोथा गुणठाणाथी मांडीने जे जीवो वर्त्ते छे तेमने उपरना गुणठाणे चढवानो आतुरता एटले कामना छे. यावत् दशमा गुणठाणा लगे तो सरागता माटे अभिलापानो संभव पण कहीए. अने उपरांत अभिलाषाना अभावे अयोगी गुणठाणा पर्यंत सहज प्रयोजन जाणवुं ए छठो भेद कह्यो.

हवे सातमो भेद गुणठाणा आश्रीने भाव कहे छे. त्यां मिथ्यात्व गुणठाणे उदयिक भावना एकवीश भेद परिपूर्ण लाधे छे, उपरना गुणठाणे ओछा वत्ता लाधे. उपशम भाव ते जीवने उपशम समकित अवसरे चोथा गुणठाणे अने उपशम श्रेणी अवसरे अगीआरमे गुणठाणे लाधे क्षयोपशम भाव समकित आश्री चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी अने ज्ञान आश्री वा लब्धि आश्री बारमा गुणठाणा सुधी अने चारित्र आश्री दशमा गुणठाणा सुधी लाधे, क्षायकभाव समकित आश्री चोथा गुणठाणे अथवा सातमा आठमा गुणठाणेथी लाधे. चारित्र आश्री बारमा गुणठाणेथी लाधे. बाकी तेरमा गुणठाणे परिपूर्ण क्षायक भाव लाधे; अने वळी उपशमने क्षयोपशम भाव किंचित् बीजा सास्वादन गुणठाणे लाधे. अने परिणामिकभाव तो सर्व जीवने लाधे; परंतु चोथा गुणठाणेथी भव्यत्वपणानी प्रवृत्ति छे बाकी योग्यता छे. ए पांच भावनो सातमो भेद कह्यो. हवे आठमो भेद अल्प बहुत्व कहे छे. ते सर्वथी थोडा जीव बीजा गुणठाणाना सास्वादन समकिती छे, ते

थी विशेष उपशम जावना ठे. तेथी असंख्यातगणा क्षयोपशम जावना ठे, तेथी असंख्यातगणा ग्रंथिनेदी मिथ्यात्वी ठे, तेथी अनंतगणा सिद्धने जेगा गणतां क्षायक जावना ठे अने सर्वथी अनंतगणा अग्रंथि नेदी मिथ्यात्वी ठे, ए आठमो नेद कह्यो. ए बोल कह्या ते जाणी वस्तुगते वस्तु उलखीने श्रद्धा करवी ए समकित पामवानुं लक्षण ठे. वळी पामेलाने निर्मळ करवानुं वा उपरना गुणठाणे चढवानुं कारण ठे ते कह्युं.

हवे नयज्ञान अधिकार कहे ठे. त्यां मूळ नयना बे नेद ठे, एक द्रव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक. तेमां उत्पाद्व्यय पर्याय गौणपणे अने प्रधानपणे द्रव्यनी सत्ताना गुणने ग्रहे तेने द्रव्यार्थिक नय कहीए. तेना दस नेद ठे ते नीचे प्रमाणे.

(१) सर्व द्रव्य नित्य ते, ध्रुवपणानी मुख्यताए सदा सर्वदा अनादि अनंत जांगे अविनाशी ठे ते नित्य द्रव्यार्थिक नामे पहेलो नेद, (२) अगुरु लघु पर्यायनी स्वक्षेत्रे अपेक्षा न करे, एक मूळ गुणने पिंडपणे ग्रहे ते एकद्रव्यार्थिक नामे बीजो नेद, (३) जीव अजीवादि द्रव्यना समुदायनी पृथकत्व द्रव्य द्रव्य प्रत्ये स्वद्रव्यादि चतुष्टयीने ग्रहे ते सत्य द्रव्यार्थिक नामे त्रीजो नेद. (४) द्रव्यना अनंता गुण ठे. तेमां जे गुणनी वक्तव्यता वचनयोगे ग्रहवामां आवे ते वक्तव्यद्रव्यार्थिक नामे चोथो नेद, (५) आत्माने अज्ञानी कहेवो, समोही, सकषायी कहेवो ते अशुद्ध द्रव्या-

र्थिक नामे पांचमो भेद, (६) सर्व वस्तु जीव अजीवादि पोतपोताना गुण पर्याये सहित छे, परगुणने न ग्रहे एम कहेवुं ते अन्वय द्रव्यार्थिक नामे छठो भेद,(७)सर्व जीवनी मूळ सत्ता एक छे, सिद्धनी वा संसारीनी सरखी छे, ते परम द्रव्यार्थिक नामे सातमो भेद; (८) सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निरावर्ण निर्लिप्त स्थिर भावे अनादि अनंत भांगे छे, ते शुद्ध द्रव्यार्थिक नामे आठमो भेद; (९) सर्व जीवना असंख्याता प्रदेश, वळी ज्ञानादि अनंता गुण, अव्याबाधादि अनंता पर्याय सत्ताए एक सरखा छे ते सत्ताद्रव्यार्थिक नामे नवमो भेद; (१०) गुणगुणी द्रव्य ते एक छे, भिन्न नथी अभिन्न छे, ते परमभावग्राहकद्रव्यार्थिक नामे दसमो भेद, ए द्रव्यार्थिकना दस भेद कह्या·

हवे पर्यायार्थिक नयना छ भेद कहे छे (१) द्रव्य पर्याय ते संसारी मिथ्यात्वी जीवने भव्यपणुं कहेवुं· सिद्धपणुं कहेवुं. ते द्रव्य पर्याय, वळी द्रव्य पयार्य ते जीवादि द्रव्यमां एकत्वपणे रह्यो जे प्रदेशनो समुदाय, ते जीवना असंख्याता, धर्मास्तिकायना असंख्याता, अधर्मास्तिकायना असंख्याता अने आकाशास्तिकायना अनंता, ते द्रव्यपर्यायनामे प्रथमभेद, (२) बीजो भेद द्रव्य व्यंजन पर्याय ते जीवनो चेतना लक्षण, धर्मास्तिकायनो चलण सहायी, अधर्मास्तिकायनो स्थिरसहायी, आकाशास्तिकायनो अवगाहना दान पुद्गलनो पूर्णगलनरूप, काळनो वर्त्तना एम सर्व द्रव्य पोतपोताना विशेष गुणे करीने पोताना द्रव्यनी

हवे जीवादि एक द्रव्यमां अनंता धर्म छे तेमांथी एक धर्म गवेख्यो तो पण बीजा अनंता धर्म ते वस्तुमां रह्या, तेनो उच्छेद नहीं अने ग्रहण पण नहीं, एक धर्मनी मुख्यता करवी तेने नय कहीए, ते द्रव्यार्थिकना नैगमादि चार भेद अने पर्यायार्थिकना शब्दादि त्रण भेद ते बे मळीने सामान्ये सात भेद थाय ते कहे छे. नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजु सूत्र, शब्द, समभिरुढ अने एवंभूत, ए सात नयनां नाम कह्यां तेमां प्रथम नैगमनय ते, नथी एक गमो अभिप्राय ते जेनो तेने नैगमनय कहीए, एटले अनेक आशयी छे, तेना त्रण भेद कहे छे आरोप, अंश अने संकल्प. हवे आरोपना चार भेद. द्रव्यारोप, गुणारोप, कळारोप, अने कारणारोप ए चार भेद कह्या तेनो अर्थ कहे छे द्रव्यारोप ते काळ द्रव्य रूप भिन्न वस्तु नथी, पंचास्तिकायनो परिणमन धर्म छे, ते पंचास्तिकायनां परिणामने रह्यो छे, परंतु छठो काळ द्रव्य उपचार कहीए छीए, ते अवर्तानो छतापणे आरोप थयो ते द्रव्यारोप, हवे गुणारोप ते ज्ञान गुण छे, परंतु ज्ञान ते आत्मा ए सत्र अपेक्षाए गुणनो द्रव्यपणे आरोप थयो. वळी लायकी, चतुराइ, यशकीर्त्ति, बळ आदि पुन्य योगे पामीए, अने मूर्खता, अपयश, निंदा, निर्बळपणुं आदि पाप जोगे पामीए. ए दुर्गुणो सद्गुणो पुद्गल द्रव्यना वस्तुगते नामादि कर्मनी प्रकृतिओ छे, ए गुणो जीवना नथी, तेनुं जग दृष्टिए जीवनां आरोपण करो,

जीवना गुण कहीए ते पर अपेक्षाए गुणोनो द्रव्यपणे आरोप थयो, ए गुणारोप कह्यो. हवे काळारोप, तेना त्रण भेद अतित, अनागत अने वर्त्तमान, अतित ते गयाकाळे ऋषभदेव स्वामीने निर्वाण थयां घणो काळ वीत्यो परंतु आज मेर तेरसे ऋषभदेव स्वामीनुं निर्वाण कल्याणक छे, अने आज दिवाळीने दिवसे वीरस्वामीनुं निर्वाण कल्याणक छे. एम कहीए ते अतित काळनुं आरोपण वर्त्तमान काळे थयुं. वळी अनागत काळ ते आवते काळे तीर्थंकरोनां कल्याणक थशे तेनो आरोप वर्त्तमानमां करीए वळी एज प्रमाणे वर्त्तमाननो आरोप अतितमां तथा अनागतमां थाय, तेने काळारोप कहीए. हवे कारणाध्यारोप ते बाह्यद्रव्य क्रिया साध्य सापेक्षवाळाने धर्मनुं निमित्त कारण छे तेने धर्म करणी कहीए छीए. वळी तीर्थंकर देव मोक्षनुं कारण छे. तेमने तार्या कह्या ते कारणने विषे कर्त्तापणानो आरोप थयो एम अनेक प्रकारे आरोपण थाय ते कारणाध्यारोप. ए आरोप नैगमना चार भेद कह्या. हवे अंश नैगमना बे भेद कहे छे. एक भिन्नांश ते जूदो अंश स्कंधादिकनो अने बीजो अभिन्नांश ते आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविभाग ए बे भेद कह्या. वळी अंश एटले निगोदीआ आदि संसारी जीवोना आठ रुचक प्रदेश निर्मळ, निर्लेप, अचळ सिद्धरूप छे तेथी एक अंशे सिद्ध छे. तेने सिद्ध कहीए छीए. वळी अयोगी केवली चौदमा गुणठाणे वर्त्ते छे, ते सिद्धथी अंशे उंण छे. तेमने संसारी कहीए छीए, ए अंशनैगम कह्यो. हवे संक-

ल्प नैगमना बे भेद कहे छे. संकल्प जे स्वपरिणामरूप वीर्य चेतनानो जे नवो नवो क्षयोपशम ते लेवो, अने बीजो कार्यांतरे नवे नवे कार्ये नवो नवो उपयोग थाय ते, ए बे भेद कह्या. एटले नैगमनय कह्यो. हवे संग्रह नय कहे छे. सामान्ये मूळ सर्व द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्या जे धर्म तेनो जे संग्रह करे तेने संग्रहनय कहीए, तेना बे भेद, एक सामान्य संग्रह बीजो विशेष संग्रह. सामान्य संग्रह ते द्रव्य कहेतां छ द्रव्यनो समुदाय ग्रहण थाय, एक वचने सर्वनुं ग्रहण थयुं. ए पेहेलो भेद, अने जीवद्रव्य अजीवद्रव्य एम कही अजीवने जीवथी जुदो पाडवो तेने विशेष संग्रह कहीए. वळी रूपीथी अरूपीने जूदो पाडवो ए पण विशेषसंग्रह कहीए. वळी सामान्य संग्रहना बे भेद. मूळ सामान्य अने उत्तर सामान्य. मूळ सामान्यना छ भेद अस्तित्वादिक छे. ते आगळ कहीशुं. उत्तर सामान्यना बे भेद जाति सामान्य अने समुदाय सामान्य. जाति सामान्य ते " एगे आया एगे पुग्गले " इत्यादि वस्तु अनंती छे पण एक वचनमां ग्रहेवाय छे ते. जाति सामान्यना चार भेद, मनुष्य, तिर्यंच, देवता, अने नारकी ए जाति सामान्य कहीए. हवे बीजो भेद समुदाय सामान्य ते गायना समुदायमां गोत्वरूप जाति छे तथा घट समुदायमां घटत्वपणु अने वनस्पतिने विषे वनस्पतिपणुं ते जाति सामान्य कह्यो. अने आंबाना समूहने आम्रवन कहे तथा मनुष्यना समूहमां मनुष्य ग्रहण थाय एम एक वचनमां अनेकनुं ग्रहण थाय, तेने समुदाय

सामान्य कहीए. एटले त्रण जुवनमां एवी वस्तु कोइ नथी जे संग्रहनयना ग्रहणमां न आवे. जे जे वस्तु ढे ते सर्व संग्रहनयमां ग्रहेवाणी ढे; तेने समजवा दृष्टांत कहेढे. जेम कोइ मनुष्य प्रज्ञाते चाकरने कहे ढे के दातण लाव एम कहेवाथी चाकर पाणीनो लोटो, दातण, रुमाल, मसी आदि सर्व वस्तु लइने आवे, जुर्ज के चाकर पासे तो एक दातण नाम लइने माग्युं हतुं पण सर्वनो संग्रह करी लइने आव्यो तेम द्रव्य एवुं नाम कह्युं एटले द्रव्यनों गुण, पर्याय, स्वज्ञाव लक्षण सर्वे जेगा आव्या. ए उत्तर सामान्य, ते चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शनने ग्राह्य ढे, अने मूळ सामान्य ते अवधिदर्शन तथा केवलदर्शनथी ग्रहेवाय ढे. ए संग्रह नय कह्यो. हवे व्यवहार नय कहे ढे, तेना वे जेद, एक वहेंचणरूप व्यवहार अने वीजो प्रवर्त्तन व्यवहार. वहेंचणरूप व्यवहार ते संग्रह नय ग्रहीत वस्तु तेने जेद जेदांतरे वहेंचवुं एटले जीवना वे जेद. एक सिद्ध अने वीजा संसारी. सिद्धना वे जेद. एक आदि सिद्ध अने वीजा अनादि सिद्ध. अनादि सिद्ध ते सिद्ध गतिनीआदि खोळीए तो केवळीना वचने ते नहीं, कारण के काळनी आदि नथी तो सिद्धगतिनी आदि क्यांथी आवे ? अनादि अपेक्षाए सिद्धगति ढे, माटे अनादि सिद्ध. हवे आदि सिद्ध ते आ अवसर्प्पिणी काळे दिवाळीना दिवसे स्वाति नक्षत्रे वीरस्वामीनुं निर्वाण थयुं एटले सिद्धि वर्या, इत्यादि प्रत्येक अपेक्षाए आदि सिद्ध कहीए. अनंतर सिद्ध ते समय मात्र आंतरा रहित

सिद्ध थया तेने अनंतर सिद्ध कहीए परंपर सिद्ध ते वच्चे विरह काळ सिद्ध गतिए आवी पके त्यारे मोक्षनो मार्ग छ मास आदि बंध रहे छे अने पछी सिद्धि वरे ते परंपर सिद्ध कहीए, एक सिद्ध ते एक समये एक सिद्धि वरे ते एक सिद्ध कहीए, अनेक सिद्ध ते एक समये जघन्यथी बे अने उत्कृष्टा एकसोने आठ सिद्धि वरे ते अनेक सिद्ध कहीए. लघु अवगाहना सिद्ध ते बत्रीश आंगळनी अवगाहना सिद्धमां छे तेने लघु अवगाहना सिद्ध कहीए. गुरु अवगाहना सिद्ध ते मोटी अवगाहना त्रणसोने तेत्रीस धनुष्य अने बत्रीस आंगळनी सिद्धमां छे. तेने गुरु अवगाहना सिद्ध कहीए. मध्यस्थ अवगाहना सिद्ध ते जघन्य बत्रीश आंगळथी अधिक अने गुरु त्रणसेंने तेत्रीस धनुष्य अने बत्रीस आंगळथी न्यून अवगाहनाउ असंख्यात भेदे सिद्धमां छे; ते मध्यस्थ अवगाहना सिद्ध कहीए, तेमां कोइ अवगाहना सिद्धमां उभी छे. कोइ आडी छे, कोइ तिर्छि छे; कोइ पासाभर छे, कोइ पद्मासने छे इत्यादि अवगाहनाउ उपर अलोकने अडीने पीस्तालीसलाख योजन प्रमाण सिद्धक्षेत्रमा सिद्धपणे स्थिर रही छे. नीचेना भागमां कोइनी ओछी छे, कोइनी अधिक छे. सुक्ष्म बादर पुद्गल रहित अरूपी आत्माना असंख्यात प्रदेशना घनरूप अवगाहनाओ एकमां अनेक अने अनेकमां एक एम रही छे. ए सिद्ध परमात्माना भेद कह्या. हवे संसारी जीवना कहे छे. संसारी जीवना बे भेद. अयोगी अने सयोगी. अयोगी ते मनयोग, वचनयोग, अने

कायथोग रुंध्या छे जेमणे एवा अयोगी केवली ते चौदमा गुणठाणाना, बाकीना सयोगी. ते सयोगीना बे भेद, एक सयोगी केवळी ते तेरमा गुणठाणाना अनंत चतुष्टयीवंत अने बीजा सयोगी छद्मस्थ. हवे सयोगी छद्मस्थना बे भेद. क्षीणमोही अने समोही. क्षीणमोही ते वीतराग यथाख्यातसंयमी बारमा गुणठाणाना मोहनी कर्मनो क्षयकर्यो छे जेणे ते क्षीणमोही. बाकीना समोही, समोहीना बे भेद. अकषायी अने सकषायी, अकषायी ते कषायना उदयनो पराभव नथी जेने एवा अगिआरमा उपशांतमोह वीतराग गुणठाणाना, बाकीना सकषायी. सकषायीना बे भेद सूक्ष्म कषायी अने बादर कषायी. सूक्ष्मकषायी ते लोभनो अणु उदयमां छे जेने ते सूक्ष्म संपराय चारित्रवंत दशमा गुणठाणाना, बाकीना बादर कषायी. बादर कषायीना बे भेद, अवेदी अने सवेदी. अवेदी ते नवमा गुणठाणाना, बाकीना सवेदी. सवेदीना बे भेद, श्रेणिवंत अने श्रेणि रहित, श्रेणिवंत ते आठमा गुणठाणाना, बाकीना श्रेणी रहित. श्रेणी रहितना बे भेद, अप्रमत्त अने प्रमत, अप्रमत्त ते स्वरूपोपयोगी सातमा गुणठाणाना, बाकीना प्रमत्त, प्रमत्तना बे भेद, विरति अने अविरति, विरतिना बे भेद, सर्व विरति अने देश विरति, सर्व विरति ते सर्व थकी संसार त्याग कर्यो छे जेणे एवा छठा गुणठाणे साधु जाणवा बाकीना देश विरति. ते पांचमा गुणठाणे श्रावक जाणवा. हवे अविरतिना बे भेद. अविरति समकि-

तो अने अविरति मिथ्यात्वी. अविरति समकिती ते चोथा गुणठाणाना वाकीना मिथ्यात्वी. मिथ्यात्वीना वे भेद भवि अने अभवी. भविना, वे भेद, एक ग्रंथि भेदी अने वीजा ग्रंथि अभेदि. ग्रंथि भेदी ते समकित पामीने मिथ्यात्व गुणठाणे पाछा आव्या, तेमणे ग्रंथिभेद करेलो छे, ते ग्रंथिभेदी. वीजा ग्रंथि अभेदी तेना वे भेद, शुक्ल पक्षीया अने कृष्ण पक्षीया. शुक्ल पक्षीया ते जेने एक पुद्गल परावर्त्त संसार स्थिति वाकी छे अधिक नथी तेने शुक्ल पक्षीया कहीए वाकीना कृष्ण पक्षीया, ए संसारी जीवना भेद कह्या. हवे अजीवना भेद कहे छे. एक रूपी अने वीजो अरूपी. अरूपीना चार भेद धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने काळ. ए चार भेदमां धर्मास्ति अने अधर्मास्ति ए वे द्रव्य चौद राज्य लोक प्रमाण असंख्यात प्रदेशी एक एक द्रव्य छे, आकाशास्तिकाय लोकालोक प्रमाण अनंत प्रदेशी एक द्रव्य छे, अने काळ समय मात्र वर्त्ते छे, वर्त्तमान समय अतित थाय छे अने अनागत वर्त्तमान थाय छे, एम काळनी परंपरा चाले छे एक समय वीजा समयने मळतो नथी तेथी काळनुं छतापणुं नथी, माटे काळने उपचारे द्रव्य मान्यो छे, ए अरूपी अजीवना भेद कह्या. हवे रूपी अजीवतो पुद्गल द्रव्य छे. तेना वे भेद, एक परमाणुं अने वीजो खंध. खंधना वे भेद, एक तो जीवने लाग्या ते जीव सहित अने वीजा जीव रहित छुटा छे, पर्यायना वे भेद, कर्मभावी अने स्वभावी इत्यादि वहेंचण रूप व्यवहारनो

पहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो प्रवर्त्तन व्यवहार तेना बे भेद, एक शुद्ध प्रवर्त्तन अने बीजो अशुद्ध प्रवर्त्तन. शुद्ध प्रवर्त्तनना बे भेद, एक वस्तुगत शुद्ध प्रवर्त्तन अने बीजो साधन शुद्ध प्रवर्त्तन, वस्तुगत शुद्ध प्रवर्त्तन ते धर्मास्तिकायनो चलण सहायता, अधर्मास्तिकायनो स्थिर सहायता तथा आकाशास्तिकायनो अवगाहकता, काळनो वर्त्तना, पुद्गलनो मिलण विखरणता अने जीवनो ज्ञायकता;वस्तुगत कहेतां ए छ द्रव्यमां पोतपोतानी प्रवृत्ति पोतानामां रही छे, तेने वस्तुगत शुद्ध प्रवर्त्तन व्यवहार कहीए. हवे साधन शुद्ध प्रवर्त्तन व्यवहार ते चोथा समकित गुणठाणाथी भेद ज्ञानी अपेक्षाए उपादान कारणने कार्यपणे करतां, हेय, ज्ञेय अने उपादेय आज्ञाए वर्त्ततां अशुद्धताने छेदी विशुद्धतारूप उपरनुं गुणठाणुं ग्रहतां ग्रहतां यावत् अप्रमत्त गुणठाणाने दृढपणे ग्रही गुणश्रेणी आरोहण करी मोहनो, वळी रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनो दशमा गुणठाणाने अंते ध्वंस करी वीतराग थइ ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रण कर्मनो वीतराग भावे बारमा गुणठाणाने अंते क्षय करी केवळज्ञान, केवळ दर्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामी तेरमा गुणठाणे अरिहंत परमात्मा थाय त्यां सुधी साधन शुद्ध पवर्त्तन व्यवहार कहीए;ए शुद्ध व्यवहारना बे भेद कह्या. हवे अशुद्ध प्रवर्त्तन व्यवहार ते जीवमां राग, द्वेष, कषाय नोकषाय अने मोह लाग्या छे तेना उदय योगे.जीवने पराभवता बाधकता छे तेटलो कर्म-

वंध थाय ठे अने जीव चोथुं गुणठाणुं पाम्यो त्यांथी शुद्ध व्यवहारनी सहाय मली. ते जोगे पोतानी वाधकता टाळी पराजवताने ठेदे ठे, एटली सकाम निर्जरा ठे. ते सकाम निर्जरानो कर्त्ता शुद्ध व्यवहार ठे अने वंधनो कर्त्ता अशुद्ध व्यवहार ठे, शुद्ध व्यवहार तेरमा गुणठाणा सुधी वळावो ठे अने दशमा गुणठाणाना अंत सुधी अशुद्ध व्यवहार लुटारानो संजव ठे, उपरांत नथी. तेमां ठठा सातमा गुणठाणा सुधी अशुद्ध व्यवहार लुटारा मोह चारनो पराजव घणो ठे. उपरांत योग्यता ठे पण क्षपक श्रेणीवालाने जय नथी. ते अशुद्ध व्यवहारना वे जेद कहे ठे. एक शुज अने बीजो अशुज. अशुज व्यवहार ते सत्तर अढार पापस्थानकनुं सेववुं, पन्नर कर्मादाननुं आचरवुं, रात्री जोजननुं करवुं, अजक्ष अनंतकायनुं आरोगवुं इत्यादि पापवंधनो हेतु तेने अशुज व्यवहार कहीए. हवे बीजो शुज व्यवहार ते पांच आश्रवनुं तजवुं ने सामायक पोसह प्रतिक्रमण आदे देवदर्शन, गुरुवंदन विनय युक्त अने वहुमानयुक्त करवुं, देश विरतिपणुं अने सर्व विरतिपणुं ग्रहवुं, गुरु कुळवासे वसवुं, अष्ट प्रवचन मातानुं पाळवुं इत्यादि साध्य सापेक्ष दृष्टिए शुज व्यवहार कहीए, ए पुन्यवंधनो हेतु ठे, ते कह्यो. हवे उपचरित अने अनुपचरित व्यवहार कहे ठे. उपचरित व्यवहार ते धन, धान्य आदि घर कुटुंव परिवार एक पोतानी काया विना जे वीजुं, ते प्रत्यक्ष आपणाथी जुदुं ठे, तेने अज्ञानपणे मोहित थइने जीव पोतानुं माने

तेने उपचरित व्यवहार कहीए. हवे अनुपचरित व्यवहार ते, जे पोतानी काया मन वचन आदि परवस्तु यद्यपि जीवथी जूदी छे, अने जीव छे ते पांच इंद्रि, त्रण बळ. अने श्वासोश्वासथी जूदो छे तोपण परिणामिक भावे लोळीपणे एकठा मळी रह्या छे, भवपर्यंत छोड्युं छुटे नही तेने पोतानी कहीए, पण पोतानी नथी एम अपेक्षा समजीने बोलीए ते अनुपचरित व्यवहार कहीए. हवे सद्भूत व्यवहार कहे छे, तेना बे भेद, एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध, शुद्ध सद्भूत ते केवळज्ञानने आत्मानुं कहीए, ते आत्माथीज प्रगट थयुं छे माटे सद्भूत, अने आवरण उपाधि नथी माटे शुद्ध. ए पेहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो भेद अशुद्ध सद्भूत ते मतिश्रुत ज्ञानने आत्मानुं कहीए एटले ज्ञान छे ए तो आत्मानो सद्भाव छे, माटे सद्भूत, परंतु इंद्रि नोइंद्रिथी प्रगट थयुं छे तेथी अशुद्ध, ए बीजो भेद कह्यो. हवे असद्भूत व्यवहार कहे छे एटले हुं क्रोधी, हुं मानी, हुं मायी, हुं लोभी वळी हुं मनुष्य, हुं तिर्यंच, हुं देवता, हुं नारकी इत्यादि हुं शब्दे जीव छुं एम कहेवुं ते विकळता छे कारण के मनुष्य तिर्यंचनी काया ते पेहेली औदारिक वर्गणा छे, वळी देवता नारकीनी काया ते बीजी वैक्रिय वर्गणा छे, वळी कायानी अंदर आहारने पाचन करवानो हेतु तथा सजीवनपणानो हेतु ते चोथी तेजस वर्गणा छे. वळी भाषा श्वासोश्वास अने मन ए पांचमी, छठी, अने सातमी पोतपोतानी वर्गणा छे, अने क्रोधादि

कषायनी प्रकृतिओ कही ते, आठमी कार्मण वर्गणा छे, ए सर्वे पुद्गळ दळ छे तेने जडजाति कहीए, ते जीव नथी, जीवनी वस्तु पण नथी, तेनो मालिक जीव पोते थाय छे तेने मिथ्यात्वी कहीए ए परवस्तुने पोतानी कहेवी ते असद्भूत. तेना वे भेद, एक संश्लेषित अने वीजो असंश्लेषित ए वे भेद कह्या; तेनो अर्थ कहे छे. पांच इंद्रि, त्रण बळ, श्वासोश्वास अने आयुष्य ए दश द्रव्यप्राण जीवना छे, अने तेमां अंतर व्यापकपणे भाव प्राणधारी चेतन रह्यो छे, तेने भेद ज्ञाने शुन्य जीव जाणतो नथी, उळखतो नथी, पोतानी काया एज जीव एम बोले छे, जाणे छे, तेने संश्लेषित असद्भूत व्यवहार कहीए. अने पुत्र, माता, पीता, भाइ, वेन आदि मारां छे वळी धन कंचनादि देश, नगर, खेत्र मारुं छे एम कहे छे, जाणे छे, तेने असंश्लेषित असद्भूत व्यवहार कहीए, ए व्यवहार नय कह्यो, हवे ऋजु सूत्र नय कहे छे ऋजु कहेतां सरळ एटले अवक्र वा पांसरो अने सूत्र कहेतां बोध एटले ज्ञान ते ऋजुसूत्र कहीए, एटले वर्त्तमानपणे उपन्यो जे तद्गत परिणाम तेने ग्रहण कर्त्ता ते ऋजुसूत्र, अने जे अतित अनागत ते ऋजुसूत्रनी अपेक्षाए अछतो छे केमके अतित तो विणसी गयो अने अनागत आव्यो नथी, तेवारे अतित अनागत ए वे वस्तु वर्त्तमान पर्याये अवस्तु छे, अने वर्त्तमान पर्याये वर्त्ते ते वस्तुपणे छे. पूर्वकाळ पश्चात् काळनी अपेक्षाए वस्तु कहेवी ते आरोपरूप नैगमनय छे, अने तात्कालिक तद्गत वस्तु-

पणुं तेने ऋजुसूत्र कहीए, तेना वे भेद, सूक्ष्म ऋजुसूत्र अने स्थूल ऋजुसूत्र जे वर्त्तमानकाळनो एक समय तेने सूक्ष्म ऋजुसूत्र कहीए. अने जे बहुकाळी तेने स्थूल ऋजुसूत्र कहीए, ए चोथो नय कह्यो- हवे शब्द नय कहे छे शब्द ते वस्तुपणे बोलावीए ते शब्दे जे वाच्य अर्थ ग्रहे एवुं छे प्रधानपणुं जे नयमां, तेने शब्द नय कहीए. जेम कृतक नाम जे कर्यो तेनो हेतु जे धर्म ते जे वस्तुमां होय ते बोलाय एटले शब्दनुं कारण तो वस्तुनो धर्म थयो. जेम जळाहरण धर्म जेमां छे, तेने घट कहीए छीए एम अहीं पण शब्दे वाच्य अर्थ ग्रहे तेनुं नाम पण शब्दनय कहेवाय- जेम ऋजुसूत्र नयने वर्त्तमान काळना धर्म इष्ट छे तेम शब्दादिक नयने वर्त्तमानताना धर्म इष्ट छे एटले ऋजु सूत्रनय चार निक्षेपा संयुक्तने सामान्यपणे ग्रही वस्तु माने अने शब्दनय भाव निक्षेपाने मुख्य करी सहजना चार निक्षेपाने ग्रही वस्तु माने. एटले सद्भाव जे अस्ति धर्म तथा असद् भाव जे नास्ति धर्म सर्व संयुक्त वस्तुने वस्तु-पणे उपयोगे ग्रहे एटले वस्तुने शब्दे बोलावतां सात भांगे बोलाववी माटे ए सप्तभंगी जेटला शब्दनयना भेद जा-णवा. ते सप्तभंगीनी व्याख्या कहे छे (१) स्यात् अस्ति, (२) स्यात् नास्ति, (३) स्यात् अस्ति नास्ति, (४) स्यात् अवक्तव्य (५) स्यात् अस्ति अवक्तव्य, (६) स्यात् नास्ति अवक्तव्य (७) स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य, ए सात भांगा कह्या. हवे अर्थ कहे छे. आ सात भांगानो जाण

जे आत्मा एम चिंतवे छे के मारो आत्मा छे, तेना घरमां वस्तुगते छती शी छे? जे छती छे तेने अस्ति कहीए. ते स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वभावपणे चिंतवीए. त्यां स्वद्रव्यपिंड ते ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्य आदि अनंता गुण, अने पर्याय ते एक एक गुणना अनंता अविभाग, वळी अरूपी, अमूर्त्ति, अव्याबाध, अनवगाह आदि अनंता पर्यायनो समुदाय तेनुं आधारपणुं ते स्वद्रव्य, असंख्यात प्रदेशे ज्ञानादि गुणनुं अवस्थान, अगुरु लघुतानी हानी वृद्धिनु मान ते स्वक्षेत्र, अनंतगुणनी अनंती वर्त्तनामां उत्पाद अने व्ययनी परिणमनतानुं समये समये अभिनवपणे परिणमवुं ते स्वकाळ, अने अनंत ज्ञेयनुं ज्ञायकपणुं, विवेचनपणुं, देखवापणुं, निजगुणनी स्थिरतापणुं, दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्यनुं अनंता गुणमां अनंत भेदे दानादि लब्धिनो स्फुरता भाव ते स्वभाव, वळी त्रणे काळे अविनाशीपणुं माटे नित्य, वळी समये समये अभिनवपणे उत्पाद व्यय परिणमे तेथी अनित्य, वळी अनंता गुणपर्यायनुं असंख्यात प्रदेशे दृढ ऐक्यतापणुं, अभिन्नतापणुं, सदा सर्वदा छे माटे एक अने वळी अभेद, अनंता गुण अनंता पर्याय ते पोतपोतानुंज कार्य करे, एक गुण बीजा गुणे न प्रवर्त्ते, नीज नीज गुणेज प्रवर्त्ते ते अनेक, अने वळी भेद-त्रणकाळमां एक गुण एक पर्याय वा एक प्रदेश द्रव्यथी अळगो न थाय माटे अभव्य, वळी पोताना गुणनी आविर्भावे व्यक्तिनो कर्त्ता ते भव्य, एम स्यादवाद लक्षणो-

पेत द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावे करीने आत्मा छे, वळी नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव ए चार निक्षेपा संयुक्त जीव द्रव्य छतो छे, परंतु अन्य छ भांगा पण छे, ए सापेक्ष पणाए करीने स्यात् पद दइने बोलाववो, ते स्यात् अस्ति, ए प्रथम भांगो कह्यो. हवे स्यात् नास्ति नामे बीजो भांगो कहे छे, जे मारा आत्माथी अन्य ते अनंता पुद्गल परमाणुं छूटा छे, वळी द्व्यणुकादि संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी, अनंत प्रदेशी, ते सर्व उपचलित स्कंध, औदारिक, वैक्रिय, आहारक अने तेजस ए चार बादर वर्गणाना, वळी भाषा, श्वासोश्वास, मन अने कार्मण ए चार सूक्ष्म वर्गणाना, इत्यादि प्रत्येके प्रत्येके अनंता अनंता पुद्गलना खंध चौद राजलोकमां रह्या छे, वळी धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्यना बे खंध असंख्यात प्रदेशी चौदराजप्रमाण लोकमां रह्या छे, वळी आकाशास्तिकायनो एक खंध अनंत प्रदेशी लोकालोकमां रह्यो छे, काळ तो समय मात्र वर्त्ते छे वळी अढीद्वीपमां ज्योतिष चक्रना आकारे दिवस रात्रीनुं मान छे एम उपर कह्या ते रूपी अने अरूपी मळी पांचे अजीव अने मारा आत्माथी बीजा एटले नोखा अनंता सिद्ध परमात्मा लोकाग्र भागे रह्या छे, वळी चारगतिना अनंता संसारी जीवो चौदराज्यलोकमां रह्या छे, ते सिद्ध अने संसारी जीवोमां अस्तिपणुं तो सौमां सरखुं छे परंतु तेमनुं अस्तिपणुं तेमनामां छे अने मारुं अस्तिपणुं मारामां छे. माटे भिन्न छे, ए उपर कह्यां ते छ द्रव्य मारा विवक्षित

आत्म द्रव्यमां नास्तिजावे ठे. वळी पांच अजीवना जरू-
तादि गुण ते, गतिनो हेतु, स्थितिनो हेतु, अवगाहक हेतु,
वर्त्तनानो हेतु, मळवा वीखरवानो हेतु, वर्ण, रस, गंध स्प-
र्शनो परावर्त्तन धर्म, वार जेदे हानि वृद्धिरूप, ए प्रमाणे सर्वे
द्रव्यमां द्रव्य द्रव्य प्रत्ये, प्रत्येके प्रत्येके विना कारणे पो-
ताना स्वजावे समये समये अजिनवपणे परिणमी रह्युं
ठे; वळी मारा जीवात्माथी अन्य सिद्ध संसारी जीवोमां
चेतनताना अस्तित्वादि गुणपर्याय, स्वजाव लक्षण ते परि-
पूर्ण सिद्धना व्यक्तिरूप ठे, अने संसारीना शक्तिरूप ठे. तेमां
समकित चोथा गुणठाणाथी अंशे व्यक्तिरूप ठे, बारमा
आदिमां अंशे व्यक्ति ओठी ठे, एम पांच अजीव द्रव्यना
अने अन्य सिद्ध अने संसारी जीवोना जे गुण, पर्याय, स्वजाव
अने लक्षण ते मारा विवक्षित आत्माना गुण, पर्याय स्व-
जाव लक्षणमां नास्ति जावे ठे, एटले मारा आत्माना
द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने जावमां परद्रव्यनो परक्षेत्रनो, पर-
काळनो, अने परजावनो नास्तिजाव ठे, परंतु नास्तिजाव
ठे ते पोतानामां अस्तिजावे ठे तेनी सापेक्षता माटे स्यात्
पदे बोलतां सर्व धर्मनुं जासन थयुं माटे स्यात्नास्ति ए
बीजो जांगो कह्यो. हवे स्यात् अस्ति नास्ति नामे त्रीजो
जांगो कहे ठे. जे विवक्षित आत्मा द्रव्यमां अन्य जीव स्व-
जाति अने पांच अजीव परजाति तेना द्रव्य, क्षेत्र, काळ
अने जावनी नास्ति ठतीरूपे बीजा जांगामां कही तेनी
अठती रूपे पोतानामां अस्ति रही ठे. तेने जणाववा माटे

समकाळे भांगा ग्रह्या छे. परंतु शब्दे बोलतां अनुक्रमे बोलाय छे एटले पोताना विवक्षित आत्माना द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावे पेहेला भांगामां अस्तिपणे कह्यो, ते पोतामां छतापणे रह्यो छे, अने बीजा भांगामां परनो नास्तिभाव कह्यो ते पोतामां अछतापणे रह्यो छे. एम छता अछतापणे बे भांगा पोतामां समकाळे अस्तिपणे रह्या छे. अहीं कोइ कहेशे के जे वस्तु पोतामां नथी, तेने अछतापणे पोतामां छती कहेवानी शी जरुर छे? तेनो उत्तर हे भाइ! एम न कहीए तो संसारमां चतुर्गति भ्रमण करतां अनंतां पुद्गल परावर्त्त संसारी जीवोए कर्यां अने वळी करशे, परंतु जीवनुं यथास्तित ध्रुवपणुं त्रणे काळे भासे छे, ते परपणानो पोतामां छतापणे अभाव छे, तेथी जो एम न होय तो जीव अजीवपणुं पामे अने अजीव जीवपणुं पामे, वस्तुपणे वस्तु रहे नहीं, माटे पोतपोतानुं छतापणुं पोतानामां रह्युं छे, तेथी त्रणे काळे अचळ अविनाशीपणे वर्त्ते छे, अने परनुं अछतापणुं छे तेथी कोइ काळे परपणुं पामे नही, पोतानुं अवस्थितपणुं सदासर्वदा पोतापणे रहे एवो जीव अजीव सर्वे द्रव्यनो धर्म छे. वळी जे छतापणे होय तेज स्फुरणा पामे, एटले जीवनुं मोक्षरूप कार्य ते पोताना छतापणाने स्फुरतां नीपजे, माटे पोतानुं छतापणुं अने परनुं अछतापणुं अस्ति छे परंतु नास्तिनी अपेक्षाए. वळी बीजा भांगानी सापेक्षता माटे स्यात्पद युक्त बोलवो. ए स्यात् अस्तिनास्ति नामे त्रीजो भांगो कह्यो. हवे स्यात् अवक्तव्यनामे चोथो भांगो कहे छे. अवक्तव्य

एटले केवळज्ञानीने जाणवामां तो एक समयकाळे सर्व वक्तव्य छे, परंतु वचने बोलतां अनुक्रमे बोलाय छे, अने वस्तुमां तो अस्ति नास्ति (छता अछता) पणे समकाळे भांगा रह्या छे. माटे केवळज्ञानीने शब्दे बोलतां अवक्तव्य छे. वळी समकितीने जाणवामां समकाळे छे, परंतु छद्मस्थनो उपयोग असंख्यात समयी छे माटे अवक्तव्य, वळी समकाळनी अपेक्षा न करीए, तो पण वस्तुमां अनंता धर्म रह्या छे, तेमां अभिलाप्य स्वभाव धर्म तो वचनगोचर बोलवामां आवे, अने अनभिलाप्य स्वभाव न आवे, माटे स्यात् पद अपेक्षाए बोलीए ते स्यात् अवक्तव्यनामे चोथो भांगो कह्यो. हवे स्यात् अस्ति अवक्तव्य नामे पांचमो भांगो कहे छे. एटले अस्ति धर्म छे तेमां पण अनंतो धर्म तो अनभिलाप्य स्वभाव छे, ते तो केवळी भगवानूना वचन गोचर पण थतो नथी. बोलवामां आवे नहीं ते अवक्तव्य कहेवाय, परंतु अभिलाप्य स्वभाव वचने बोलवामां आवे छे, ते पण क्रोड पूर्वना आयुष्यवाळा पुरुषो होय अने आठ वर्षनी उमरे केवळज्ञान पाम्या होय अने आउखाना छेडा सुधी अस्ति धर्मनी प्ररुपणा करे तो पण अभिलाप्य स्वभाव धर्मनो अनंतमो भाग कहेवामां आवे, अधिक न आवे ते माटे अस्ति अवक्तव्य, परंतु नास्तिभाव कहेवो छे ते अपेक्षाए स्यात्पदे युक्त बोलीये, ते स्यात् अस्ति अवक्तव्य ए पांचमो भांगो कह्यो. एज प्रमाणे नास्ति भांगानी गवेपणा करीने स्यात् नास्ति अवक्तव्य छट्ठो भांगो कहीए

हवे स्यात् अस्तिनास्ति युगपत् अव्यक्तव्य नामे सातमो जांगो कहे छे, एटले अस्ति जाव पण वक्तव्य छे तेम नास्ति जाव पण वक्तव्य छे, अने बेमां अवक्तव्य पण छे ए सर्व धर्म एक वस्तु मध्ये एक एक गुणमां अने दरेक पर्यायमां समकाळे परिणमे छे, माटे अस्तिनास्ति वक्तव्य अने अवक्तव्य, अहीं अस्ति ते नास्ति न थाय अने नास्ति ते अस्ति न थाय, वळी वक्तव्य ते अवक्तव्य न थाय अने अवक्तव्य ते वक्तव्य न थाय, ते जणाववा माटे स्यात्पद ग्रह्यो छे. ए स्यात् अस्तिनास्ति युगपत् अवक्तव्य नामे सातमो जांगो कह्यो. ए सप्तजंगी कही तेनुंज नाम स्याद्वाद धर्म छे, अने स्याद्वाद धर्मनुं ज्ञान ते समकित छे अने समकित छे त्यां शब्द नय छे, एटले शब्दादिक नय वस्तुना पर्यायने अवलंबी वस्तुना जाव धर्मना ग्राहक छे ते माटे वस्तुना जाव निक्षेपा छे ते शब्द नये मुख्य छे, अने प्रथमना चार नयमां नामादिक त्रण निक्षेपा मुख्य छे. ए शब्द नयनुं स्वरूप कह्युं, हवे समजिरूढ नयनी व्याख्या करे छे, जे शब्द नय कह्यो तेथी समजिरूढ नयमां घणो अंतर छे, आत्माना अनंता गुणपर्याय छे. तेमां एक समकित गुण प्रगट थवाथी चोथा गुणठाणे शब्द नय प्राप्त थाय छे अने समजिरूढ नय तो वीतराग गुणठाणे अंशे ओछी स्थितिए प्राप्त थाय छे, माटे घणो अंतर छे, एटले एक पर्यायने प्रगटवे अने शेष पर्यायने तिरोजाविपणे एटले अणप्रगटवे शब्दनय बोलावे, पण समजिरूढ नय न बोलावे. हवे जे चो

लाववुं कह्युं तेनो परमार्थ कहे छे. समकित गुण प्रकट करी हेय उपादेय बुद्धि पामी सर्वविरति थइने साध्य सापेक्ष दृष्टिए वर्त्ते, तेने शब्दनय संयति कहीने बोलावे, पण समभिरूढ नय संयति न कहे. समभिरूढ नय तो क्षपक श्रेणी मांडी दशमा गुणठाणा अंते मोहनी कर्म क्षय करी अशुद्ध परिणति छेदी शुद्ध परिणतिवंत थइ बारमा क्षीण मोह गुणठाणे यथाख्यात चारित्रवंतने संयति कही बोलावे, वळी वीतरागभावे ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रण कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान, केवलदर्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामे तेमने ज्ञानी कही बोलावे ए शब्द नय अने समभिरूढ नयनो अंतर कह्यो. हवे एवंभूत नय कहे छे. समभिरूढ नय पक्षे तेरमा गुणठाणे अरिहंत परमात्माने स्नातक कहीए छीए. ते एवंभूतनय स्नातक न कहे. एवंभूत नय तो लोकाग्र भागे सादि अनंत भांगे स्थितिवंत सिद्ध परमात्माने स्नातक कहे छे,कारण के तेरमा गुणठाणे घाति कर्मनो मळ. आत्म प्रदेशथी अळगो थयो छे, पण अघाति कर्मनो मळ रह्यो छे ते मळ अयोगी गुणठाणाने अंते उतरशे एटले एक समये लोकाग्र भागे सिद्ध क्षेत्रमां सिद्धपणे विराजमान थशे, तेमने एवंभूत नय स्नातक कहे छे ए स्नातकमां नयपक्ष कह्यो. हवे अरिहंत पदमां कहे छे. क्षायक लब्धिए तो तेरमे गुणठाणे अरिहंतपदे जे जे वर्त्ते छे, ते सौ सरखा छे. कोइ अधिक न्यून नथी. समभिरूढ नय तो सौने अरिहंत कहे, परंतु एवंभूत नय तो जेने इंद्रादिक

पूजे ठे एटले तीर्थंकरने समोसमरणनी रचना थाय ठे अष्टप्रातिहार्यादि ऋद्धिए पूजनीक ठे, वळी असंख्यात कोमी देवो सेवे ठे. तथा सामान्य केवळीमां केटलाएक केवळी ज्ञगवानने कमळनी रचना थाय ठे. देवदेवेंद्र जेमने पूजे ठे तेमनेज एवंज्ञूत नय अरिहंत कहे ठे बीजाने न कहे अहीं वाह्य: ऋद्धिनी अधिकता ठे. अंतर ऋद्धिए तो सौ सरखा ठे. परंतु एवंज्ञूत नय ते नामे न बोलावे एटलो अंतर ठे, ए एवंज्ञूत नय कह्यो. ए रीते साते नय कह्या. ए सात नयमां पेहेला चार नय ठे, ते अविशुद्ध ठे, केमके द्रव्यने सामान्यपणे कहेवाना अधिकारी ठे, अने शब्दादिक त्रण नय ते शुद्ध नय ठे, केमके तेमां शब्दना अर्थनी मुख्यता ठे माटे ए नयो शब्द तथा अर्थने अज्ञेदपणुं माने ठे अने अर्थथी शुन्य शब्द ते ए नये प्रमाण नथी. वळी शब्दादिक नय ते पेहेला (नाम, थापना, अने द्रव्य ए) त्रण निक्षेपाने अवस्तु माने ठे, अने चोथा ज्ञाव निक्षेपा संयुक्त वस्तुने वस्तु माने ठे. ए सात नयमां पेहेलो नैगमनय ते सामान्य विशेष बेने माने ठे, संग्रहनय ते सामान्यने माने ठे, व्यवहार नय विशेषने माने ठे. अने द्रव्यार्थावलंबी ठे ते इहां द्रव्य शब्दे क्रिया लेवी तथा ऋजुसूत्र तो विशेषनो ग्राहक ठे ए चार नय ते द्रव्य नय ठे. अने पाठला शब्दादि त्रण नय ते पर्यायार्थिक विशेषावलंबी ज्ञाव नय ठे, ए सात नयमां सामान्य विशेष पक्षनुं मानवुं कह्युं.वळी द्रव्य अने ज्ञावनुं ग्राहकपणुं या अवलंबनपणुं कह्युं, तेने वि-

स्तारीने कहे छे. सामान्य ते शक्ति, तेना वे भेद ओघ शक्ति अने समुचित शक्ति, विशेष ते व्यक्ति; शक्तिथीज व्यक्ति पामीए, ओघ शक्ति ते घासना तरणामां घृतनी शक्ति रही छे, एम कहीए तेनुं नाम ओघ शक्ति. हवे प्रथमना त्रण नयमां द्रव्यार्थावलंवीपणुं कह्युं, ते जिनपूजादि तथा सामायक पोसह प्रतिक्रमणादि श्रावकनी करणी छे, यतिने चरणकरणानुयोगनी क्रिया करवी तेने द्रव्यार्थावलंवीपणुं कहीए. ते श्रावक, साधु पोतपोतानी क्रिया करे तेमां जेने समकितनी स्पर्शना निश्चय पक्षथी ग्रंथिभेद पूर्वक थइ छे, अने क्रिया उपर कही ते मुजव करे तेने तो दूधरूप व्यक्ति ते अप्रमत्तादि गुणस्थानके जाव, संवर अने सकाम निर्जरायोगे, क्षयोपशम भावनी लब्धि प्राप्त थाय, वीजाने थाय नही, कारण के जे दूभणां गाय भेंस, वकरां घेटां घास तरणांनुं भक्षण करे, ते तो दूध आपे कंइ हरायां प्रमुख वीजां अनेक जातिनां जानवरो छे ते घास भक्षण करे छे तेथी दूध मळतुं नथी, तेम वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धाना अभावे साध्य शून्य एवा अज्ञानी मिथ्यात्वीने श्रावक साधुनी क्रिया करतां समकितादि गुणस्थानकनो दूधरूप धर्म ते न मळे, भाव संवर अने सकाम निर्जराना अभावे क्षयोपशम भावनी लब्धि न मळे, समकितनी स्पर्शना थयां मळे. हवे ओघ शक्तिनी अपेक्षाए दूधने व्यक्तिपणुं कह्युं तेनुंज नाम समुचित शक्ति कहीए. हवे दूधमांथी घी काढवुं छे, ते दूधने जमाववुं त्यारे घी

नीकळे, जमाववुं ते अप्रमत्त गुणठाणुं न ठोके त्यारे दूध जाम्युं कहीए, ते क्यारे न ठोके के वेदक समकितरूप मेळवण पडे तो ए दूध तरत जामी जाय एटले प्रमत्त गुणठाणे आववुं वहुधा तो आंतरारहित अनंतर टळे, कारण के समकित मोहनीनो परान्नव हतो ते वेदक समकिते टाळ्यो, त्यां अप्रमत्त राजधानी निर्भय थइ, वळी अवझायु अखंड श्रेणी क्षायक समकितनी ठापनो चांद मळ्यो छे, तेना न्नागनुं तेज वृद्धि पाम्युं त्यारे आत्म गुणनी अखंड श्रेणीनुं तेडुं आव्युं, ते कहे छे के, अपूर्व गुणठाणुं तमने परोणा तेडे छे, त्यां जवानी तैयारी करीने तेज वखते गया, जइने क्षपक श्रेणी मांडी. दहींनी गोरशीमां अप्रमत्त स्तंन्न ते वांस न्नो कर्यो, परंतु वांसे गोरसने मथवा माटे फूलडां होय छे, ते अहीं अप्रमत्तादि गुणठाणाए ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार ए पंचाचाररूप तो अप्रमत्तस्तंन्ने फूलडां जाणवां. हवे वलोणुं वलोववाना दृष्टांते न्नेद ज्ञान अने न्नेदान्नेद ज्ञाने शुक्ल ध्यानगत शुद्धोपयोग ते अनोपम दोरीए शुद्धात्मानुं नित्यानित्यादि स्याद्वाद अनेकांत स्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाण अनुन्नवरमणे शुद्ध परिणामिक न्नावमां न्नत्पाद व्ययनी शक्तिए समये समये अन्निनवपणे विशुद्धिए परिणमतां परिणमता यावत् मूळ स्वरूपमां क्षायकन्नावे अति शुद्ध परिणामीक न्नाव परिणमे, त्यां मांखणना पिंडरूप क्षायकन्नावनी अनंति लब्धि केवळज्ञान, केवळदर्शनादि तेरमा गुणठाणे आविर्न्नावे प्रगटे, ते लब्धिनुं

आश्री ते गतिओनो संबंध नवीने अनादि सांत नांगो लागे अने अनवीने अनादि अनंत नांगो लागे. सिद्ध गतिनो संबंध गति आश्रीने अनादि अनंत नांगो लागे, अने प्रवर्त्तन आश्रीने सादि अनंत नांगो लागे. सूक्ष्म निगोद गतिनो संबंध नव्यानव्यी जीवने अनादि अनंत नांगो लागे अने नवी अनवीने अनादि अनंत, अने अनादि सांत वळी सादि सांत ए त्रणे नांगा लागे. बाकी संसार गतिओनुं भ्रमण पुनरपि पुनरपि सादि सांत नांगे छे. ए सांकेतिक नामना बे नेद कह्या. एटले नाम निक्षेपो कह्यो. हवे स्थापना निक्षेपो नाम सहित होय ते कहे छे, तेना बे नेद. एक सहज स्थापना, बीजी सांकेतिक स्थापना. सहज स्थापना ते जेने, अनादि अनंत नांगो लागे तेने सहज स्थापना कहीए. ते आत्मानी असंख्यात प्रदेश रूप, पुद्गलनी परमाणु रूप, धर्मास्तिकायनी तथा अधर्मास्तिकायनी असंख्यात प्रदेश रूप चौद राज्य लोक प्रमाण, अने आकाशास्तिकायनी अनंत प्रदेश रूप लोकालोक प्रमाण ते सहज स्थापना कहीए. हवे बीजी सांकेतिक स्थापना तेना बे नेद, एक कृत्रिम अने बीजी अकृत्रिम. कृत्रिम ते नींत वगेरेमां चित्रामण काढे छे, अथवा काष्ट पाषाणमां कोरीने घोडा हाथी वगेरेनो आकार करे छे वळी जिन प्रतिमा करवामां आवे छे, तेने दीठे जिनेंद्र देवना केवळ ज्ञानादि गुण, अव्याबाधादि पर्याय, नित्यत्वादि स्वनाव अने स्व लक्षण ए सर्व यादीमां लावीने नवी जीवने ध्यान

करवानुं निमित्त कारण थाय छे. वळी जैन मुनि महाराजानी स्थापना जे छत्री अथवा पगलां तेने दीठे ए मुनि महाराजा स्मरणमां आवे छे अने तेमना महाव्रतीपणाना गुण यादिमां आवे छे. वळी तेमना उपदेशनी वाणी ग्रंथ प्रकरणमां रचना करेली होय ते शंका अने अज्ञान रूप अंधकार टाळवाने सूर्य समान, मिथ्यात्व रूप मोटा पर्वतने छेदवाने वज्र समान, भव्य जीवने संसार सागरथी तारवाने नाव समान, मनोवांछित पूरवाने कल्पवृक्ष समान, बोधि बीज रूप धर्म दाननी देनारी थाय छे. माटे तेमना गुणनुं स्मरण करवाने गीतारथ गुरुरायनी स्थापना ते निमित्त कारण छे. ए कृत्रिम स्थापनाओ कही, ते करवाथी थइ माटे कृत्रिम; अने साकेतिक ते कर्त्तानो संकेत. हवे अकृत्रिम सांकेतिक स्थापना ते चार गतिए जीवो चोवीस दंडकमां मिश्र भावे उपजे छे त्यां गतिना अनुसारे कायानी अवगाहनाओ अनेक भेदे पामे छे, ते कायानो कर्त्ता कोइ नथी, कोइनी करी थइ नथी माटे अकृत्रिम अने सांकेत ते, पूर्व भवना कृत्य कर्म बंधनो छे, माटे तेने सांकेतिक अकृत्रिम स्थापनाओ कहीए, ते ते काया प्रमाणे पुद्गल खंधनो चय उपचय छे, ते पुद्गलनी स्थापनाउ अने काया प्रमाण क्षेत्रे अंतरव्यापकपणे आत्माना प्रदेशनुं कर्म संयोगथी संकोच विकस्वरपणुं छे, ते आत्मानी स्थापनाउ. एम जीवनुं अने पुदगळनुं एक परिणमन छे तथापी वस्तु भिन्न छे, एक द्रव्य बीजा द्रव्यथी मिले नही ए सि-

ક્ષાંત વચન ઠે તે અપેક્ષાયે જીવની અને પુદ્ગલની ભેદ જ્ઞાને વિભાગ વહેંચણ દ્વારા કરીને જૂદી જૂદી અકૃત્રિમ સ્થાપનાઉ કહી તે તથા ઉપર કૃત્રિમ સ્થાપનાઉ કહી તે સર્વે સાદિ સાંત ભાંગે ઠે તેમાં જે મનુષ્યના ભવમાં અયોગી કેવળી ચૌદમા ગુણઠાણા અંતે વર્ત્તે ઠે તેમની કાયાની અવગાહના જે ઠે તેમાં ત્રીજો ભાગ પોલાણનો ઠે, તેનું સંકોચન કરીને બે ભાગ પ્રમાણ અવગાહના માને આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશનો નિબિડ઼ ઘન થયો, તે લોકાગ્ર ભાગે રહ્યો ઠે, તે નિરંજન સિદ્ધની સ્થાપના સાદિ અનંત ભાંગે કહીએ. એ અકૃત્રિમ સ્થાપનાનું સાંકેતિક પૂર્વ કર્મ બંધનો અયોગી ચૌદમા ગુણઠાણા અંતે અભાવ થયો તે ઠે, એ અકૃત્રિમ સાંકેતિક સ્થાપનાઉ કહી એટલે સ્થાપના નિક્ષેપો કહ્યો. હવે દ્રવ્ય નિક્ષેપો કહે ઠે. દ્રવ્ય નિક્ષેપો નામ આકાર અને ગુણ સહિત હોય, પણ આત્મોપયોગ ન મળે તે દ્રવ્ય નિક્ષેપો કહીએ. એટલે દ્રવ્ય નિક્ષેપો જીવ અને પુદ્ગલના મિશ્ર ભાવનું નામ ઠે, અને જ્યાં મિશ્ર ભાવ હોય ત્યાં અજ્ઞાન કહીએ, એટલે ચેતન સત્તા અને અચેતન સત્તા ભિન્ન ભાસી નથી, વસ્તુગતે વસ્તુ ઉળખી નથી, અને સિદ્ધાંત આચારાંગાદિ ગુરુ વાંચે ઠે તેના અર્થની પૃચ્છા શ્રોતા કરે ઠે. ગુરુરાય પદ અક્ષર માત્રા શુદ્ધ અર્થ કરી સમજાવે ઠે, ગુરુમુખે શ્રોતા સદ્દહે ઠે તોપણ દ્રવ્ય નિક્ષેપામાં ઠે, એટલે અનુયોગ દ્વાર સૂત્રનું એ વચન ઠે કે અણુવઉગોદવ્વો એટલે સ્વસ્વરૂપ ઉપયોગ રહિત તે દ્રવ્ય નિક્ષેપો જાણવો અને ભાવ

निक्षेपा विना जे द्रव्यपणुं छे ते पुन्य बंधनुं कारण छे पण मोक्षनुं कारण नथी एटले जे करणी रूप कष्ट तपस्या करे छे, अने जीव अजीवनी सत्ता उंळखी नथी तेने जगवतीजीमां अव्रती अने अपच्चरकाणी कह्या छे, वळी जे एकली बाह्य करणी करे छे तेने चारित्र माने छे ते मृषावादी छे, एम उत्तराध्ययन कहे छे, न मुणी रन्नवासेणं त्यां तो ज्ञानीनेज मुनि कह्या छे, नाणेण य मुणी होइ ए वचनथी जे ज्ञानवान ते मुनि छे अने जे अज्ञानी ते मिथ्यात्वी छे. वळी कोइक नरक देवलोकादिना ज्ञाता थाय अथवा यतिनो श्रावकनो आचार जाणे अने कहे के अमे ज्ञानी छीए ते पण ज्ञानी नथी, ज्ञानीतो जे द्रव्य गुण पर्यायने जाणे ते छे, एम उत्तराध्ययन सूत्रना मोक्ष मार्ग अध्ययने कह्युं छे. ते गाथाः

एयं पंचविह णानां, दव्वाण य गुणाण य ॥
पज्जवाणं य सव्वेसिं, नाणं नाणीहि दंसियं ॥ १ ॥

माटे वस्तु सत्ता जाण्या विना ज्ञानी समजवो नहीं, वळी नव तत्वने जाणे, तेमां अजीव, आश्रव, पुन्य, पाप, अने बंध तेने हेय एटले तजवा योग्य जाणे अने जीव, संवर, निर्जरा अने मोक्ष तेने उपादेय कहेतां आदरवा योग्य जाणे छे एम ज्ञान पूर्वक श्रद्धा ते जेने, तेने समकिती जाणवा. एवा ज्ञान दर्शन विना आज बाह्य क्रियानो आमंबर देखाडे छे ते ठग छे, तेनो संग करवो नहीं. बाह्य करणी उपर

राचवुं नहीं, कारण के श्री उत्तराध्ययन सूत्रे कह्युं ठे के,

नाणं दंसणनाणं नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा

ए वचन ठे माटे आत्मानुं स्वरूप ओळख्या विना सामायक, प्रतिक्रमण, व्रत, पच्चरकाण, दान, शीयळ, तप, पूजा आदि शुभ क्रिया करवी ते सर्व द्रव्य निक्षेपामां ठे, ते पुन्यबंध हेतु शुभ आश्रव ठे पण संवर नथी, एटले देवताना भवनुं कारण ठे एम श्री भगवतीजीमां कहेलुं ठे.

पुव्वत्तवेणं पुव्वसंयमेणं देवा देवलोए ।
उववज्जंति नो चेवणं आयत्ताभाववत्तवयाए

माटे शुभ आश्रवनुं कारण कहीए वळी संवरनुं कारण तो एज भगवती सूत्रे कह्युं ठे. आयाखलु सामाइयं अर्थः-आया कहेतां आत्मा भेद ज्ञानयोगे अनात्म सत्तानो विभाग वहेंचण करीने उपाधिथी अळगो थाय, स्वस्वरूप रमण करे, इंद्रि नोइंद्रि विकार न पामे एवो समाधि योग ते खलु कहेतां निश्चयथी सामाइयं कहेतां सामायक कहीए, तेने संवर कहीए, अने करणीरूप सामायक करवुं ते शुभ आश्रवनुं कारण जाणवुं. वळी जेओ क्रिया अने ज्ञानथी हीण ठे अने मूळ पंच महाव्रत पण अखंडित नथी अने पोते गछनी लाजे सिद्धांत भणे ठे वांचे ठे, व्रत पचरकाण करे ठे तेथी आचार्य, उपाध्याय अने साधु कहेवरावे ठे, ते तो परमात्मानी आज्ञाथी बहार ठे, तेमां जे ज्योतिष जुए ठे, वैदक करे ठे तेने उत्तराध्ययनजी पापश्रमण कहे ठे,

घणा नव न्नमशे माटे अवंदनीक ढे. वळी नय, निक्षेप, पक्ष अने प्रमाण जाण्या विना निश्चयथी आत्मानुं स्वरूप ओळख्या विना जे उपदेश करे ढे, ते पोते तो संसारमां रुल्या ढे अने तेमनी पासे जे सांजळे ढे तेमने रुलावे ढे एम सिद्धांत कहे ढे, माटे बहुश्रुत गीतार्थ पासे उपदेश सांजळवो एज बोधी बीज पामवानुं अथवा मोक्षनुं कारण कहीए ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो ते सादिसांत नांगे ढे अने जे षट् द्रव्य ढे ते जीव अजीवादि सर्वमां अस्तित्वादिक ढ नेदे मूळ सामान्य स्वनाव रह्यो ढे, तेमां द्रव्य द्रव्य प्रत्ये पोतपोताना गुणपर्यायनो अस्तित्वादिक धर्म रह्यो ढे अजीवमां अचेतनपणानो ढे, अने जीवमां केवळज्ञानादि अनंता गुण, अव्याबाधादि अनंता पर्याय, नित्यत्वादि अनंता स्वनाव, उत्पाद व्यय, ध्रुव आदि अनंतां लक्षण रह्यां ढे, परंतु संसारी जीवनां कर्मे आवरित ढे, तेथी नाव निक्षेपे शून्य. निश्चे समकितनां अनावे द्रव्य निक्षेपो तादृश वर्त्ते ढे, अने चोथा समकित गुणठाणाथी चौदमा अयोगी गुणठाणा पर्यंत जे जीवो वर्त्ते ढे, तेमनो साधक दशा नाव निक्षेपा युक्त कहेवाय, तेमां जेटलुं आवरण आत्म सत्ताथी गयुं एटलो नाव निक्षेपो ढे बाकीनो द्रव्य निक्षेपो ढे, सिद्ध परमात्मा तो निरावरण नाव निक्षेपेज विशेष स्वनाव-धर्म मयी ढे परंतु ते विशेषमां सामान्य स्वनाव पिंडपणे तथा आधारपणे अस्तित्वरूप द्रव्य पर्यायनी ऐक्यताए अनादि संबंधे रहेलो ते द्रव्य निक्षेपो ढे पण अप्रगट नावे; एम

सिद्धमां नथी, ए द्रव्य निक्षेपो वस्तुगते कह्यो तेने अनादि अनंत जांगो लागे. हवे जाव निक्षेपो ते नाम, आकार अने नपयोगादि गुणे करीने सहित होय ते कहे ठे, जाव निक्षेपो ग्रंथि जेद थतां चोथा गुणठाणानी सात्रितीए कहेवाय ठे. अहीं कोइ कहेशे के दान, शियळ, तप, पूजा, क्रिया ज्ञान आदि दृढ चित्ते त्रिकरणयोगे करीए तेने जाव कहीए, तो ते जाव नथी, जाव तो सूत्रनी साखे अने वीतरागनी आज्ञाए हेय उपादेयनी परीक्षा करी मनवचन कायादिने हेय जाणी तेनो वेपार अहंपणे तजीने अने आत्मानो उपयोग चेतना जाणवा देखवा रूपठे तेने उपादेय जाणी स्वस्वरूपे प्रणमावी अनुजव रमण करीए तेने भाव निक्षेपो कहीए. एटले रूपी गुण ते द्रव्य निक्षेपो अने अरूपी गुण ते जाव निक्षेपो ठे. मन, वचन, काया, लेश्या आदि द्रव्य निक्षेपामां ठे. एटले उवउंगो जावो ए अनुयोग द्वार सूत्रनुं वचन ठे, अने ज्यां पुद्गल संगे इंद्रि द्वारे उपयोग ठे त्यां स्वस्वरूपे उपयोग नथी एम जाणवुं, ए जाव निक्षेपो कह्यो. तेमां जे उपशम, क्षयोपशम जाव ठे ते सादि सांत जांगे ठे, अने क्षायक जाव ठे ते सादि अनंत जांगे ठे ए जाव निक्षेपो जीवमां कह्यो. हवे अजीवमां कहे ठे. धर्मास्तिकाय जीव पुद्गलने गतिनो हेतु, अधर्मास्तिकाय स्थीतिनो हेतु, आकाश अवकाश आपवानो हेतु, काळ वर्त्तनानो हेतु, पुद्गल मलवा विखरवानो वा वर्णादि पर्यायना परावर्त्तन धर्मनो हेतु ए जाव निक्षेपो अजीवमां कह्यो एटले नाम, स्थापना,

द्रव्य अने भाव ए रीते चार निक्षेपा कह्या, ते वस्तुना स्वपर्याय छे. विशेषावश्यकनी भाष्य मध्ये कह्युं छे "चत्वारो वत्थु पज्जाया" माटे वस्तुना जे सहज भावे चार निक्षेपा छे, ते वस्तुमां अभिन्न रूपे वर्त्ते छे तेने स्वपर्याय कहोये, ते अनादि अनंत भांगे छे, अने भिन्न वस्तुमां उपचारे निक्षेप कल्पीए ते नैगमादिक नयनो पक्ष छे, ते मध्ये प्रथमना त्रण निक्षेपा ते कारण रूप छे अने चोथो भाव निक्षेपो छे ते कार्यरूप छे, भावनिक्षेपाने अणनीपजते प्रथमना त्रण निक्षेपा निष्फळ छे, जेम चक्र, दंड, दोरो अने कुंभकार छे पण माटीना पिंड विना घट थाय नहीं, तेम शुभ क्रियाने निमित्त कारण कहीए. तेना दृष्टांते मृत्तिका पिंडरूप उपादान कारण ते आत्मानुं तथा अनात्मानुं जाणपणुं थयुं होय, जड चेतननो विभाग करता ज्ञान घटमां प्रगटयुं होय, तेने तो समकितादि गुण निष्पन्न करवानुं कारण कहीए ते विना तो शुभ क्रिया ते निमित्त कारण कहेवाय नहीं जेम मृत्तिका पिंड चाक उपर नथी त्यां सुधी चक्रादि कारण वृथा छे, तद्वत् जाणवुं.

हवे मूळ सामान्य स्वभावना छ भेद कहे छे (१) अस्तित्व, (२) वस्तुत्व, (३) द्रव्यत्व, (४) प्रमेयत्व, (५) सतत्व अने (६) अगुरुलघुत्व ए छ मूल स्वभाव छे, ते सर्व द्रव्य मध्ये परिणामिकपणे परिणमे छे, ए धर्मने कोइनो सहाय नथी. ते षट् द्रव्यने विषे उत्तर सामान्य स्वभाव, नित्यत्व, अनित्यत्वादिक, तथा विशेष स्वभाव ते परिणा-

मिकत्वादिक, तेनो आधार भूत धर्म, ते धर्मने तीर्थंकर देवे सामान्य स्वभाव अस्तित्वरूप कह्यो छे, ए पेहेलो भेद तथा गुण पर्यायनो आधारवंत पदार्थ तेने वस्तुत्व कहीए ए बीजो भेद, अने अर्थ जे द्रव्य तेनी जे क्रिया, जेम धर्मास्तिकायनी चलणसहाय क्रिया, अधर्मास्तिकायनी स्थिर सहाय क्रिया, आकाशास्तिकायनी अवगाहक रूप क्रिया, जीवनी उपयोग लक्षण क्रिया, अने पुद्गलनी मळवा विखरवारूप क्रिया तेनुं करवापणुं एटले जे पंचास्तिकायमां पर्यायनो प्रवृत्ति ते अर्थ क्रिया, अने ते अर्थ क्रियानो आधारभूत धर्म तेने सर्वज्ञ देवे द्रव्यत्वपणुं कह्युं छे, वळी द्रव्यत्वपणानुं बीजुं लक्षण कहे छे. उत्पादपर्यायनी जे प्रसवशक्ति एटले आविर्भाव लक्षण जे शक्ति तेना व्ययीभूत पर्यायनो तिरोभाव थयो, अथवा अभाव थवारूप शक्तिनो जे आधारभूत धर्म तेने द्रव्यत्व कहीए, ए त्रीजो भेद कह्यो. हवे स्व कहेतां पोते आत्मा अने पर कहेतां अन्य जीवाजीवादि सर्व द्रव्यने यथार्थपणे जेथी जाणवामां आवे तेने ज्ञान कहीए; तेना पांच भेद छे, ते ज्ञानना उपयोगमां आवे एवी जे शक्ति तेने प्रमेयत्वपणुं कहीए. ते प्रमेयपणुं सर्व द्रव्यनो मूळ धर्म छे. प्रमाणमां वसावी जे वस्तु तेने प्रमेयपणुं कहीए, ते सर्व द्रव्य, सर्व गुणपर्याय प्रमेय छे अने आत्मानो ज्ञान गुण तेमां प्रमाण तथा प्रमेयपणुं ए बे धर्म छे. पोतानुं प्रमाण ते पोतेज करे छे, दर्शन गुणनुं प्रमाण ज्ञान गुण करे छे, एटले दर्शन गुण ते सा-

मान्य धर्मनो ग्राहक छे, ते पण प्रमाण कहेवाय; पण प्रमाणना भेद कह्या छे त्यां ज्ञानज ग्रह्युं छे तेनुं कारण जे दर्शनोपयोग ते स्फुट पमतो नथी, ते माटे प्रमाणमां गवेख्यो-नथी, ते प्रमाणना मूल वे भेद छे. एक प्रत्यक्ष अने वीजो परोक्षस्पष्ट ज्ञान ते प्रत्यक्ष अने अस्पष्ट ज्ञान ते परोक्ष; अथवा आत्माना उपयोगथी, इंद्रि नोइंद्रिनी प्रवृत्ति विना जे ज्ञान ते प्रत्यक्ष कहीए. तेना वे भेद एक देश प्रत्यक्ष वीजो सर्व प्रत्यक्ष, तेमां अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान ते देश प्रत्यक्ष छे, अने केवलज्ञान ते सर्व प्रत्यक्ष छे ए प्रत्यक्ष प्रमाणनो पेहेलो भेद कह्यो. हवे वीजो भेद परोक्ष प्रमाण, ते मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञान ए वे ज्ञान ते अस्पष्ट ज्ञान छे तेने परोक्ष कहीए, ते परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद कहे छे, आगम प्रमाण, अनुमान प्रमाण, अने उपमान प्रमाण आगम प्रमाण ते यथार्थ भावना उपदेशक सर्वज्ञ तीर्थंकर देव, वळी द्वादशांगीना रचनावाळा गणधरदेव तेमना प्रकाशेला अर्थ तथा सूत्र ते आगम प्रमाण कहीए, ते सिद्धांतनी निश्राए पूर्वापर अविरोधीपणे भ्रांति विना स्याद्वाद युक्त जे वचन, साधक ते साधक, वाधक ते वाधक, हेय ते हेय, उपादेय ते उपादेय, इत्यादि वहेंचण सहित जे वचन होय तेने पण प्रमाण करवुं, ए आगमनी अनुयायीए मतिश्रुत ज्ञानना उपयोगे नरकनुं, स्वर्गनुं, निगोदादि, तिर्यंचनुं, मनुष्यनुं, गतिनुं, आगतिनुं, द्वीपनुं, समुद्रनुं, धर्मास्तिकाय आदि षट् द्रव्यनुं, नयोनुं, निक्षे-

पानुं, गुणनुं, पर्यायनुं, स्वन्नावनुं, विन्नावनुं, अपवादनुं अने उत्सर्गादिनुं जाणपणुं करीए, आगमथी उपरांठा न थइए, पोताना क्षयोपशम पूर्वक सिद्धांतनुं वा पूर्वाचार्यकृत ग्रंथोनुं अनुयायीपणुं ग्रही हठवाद ममत्व, कदाग्रह दूर करीने मतिकल्पना संकोची चालीए, अहंपणुं मूकीने लघुता करीए ए रीते जाणपणुं करवानो हेतु आगम छे, अने आगमने रचवावाळा गणधरदेव छे, अने गणधर देवने उपदेश करवावाळा तीर्थंकर देव सर्वज्ञ छे, तेमना उपकारीपणानुं बहुमान करवुं, ध्यान स्मरण करवुं, क्षणवार पण विसारवा नहीं, तेमना गुणनी स्तुति करवी, ए आगम प्रमाण कह्युं. हवे अनुमान प्रमाण कहे छे, अनुमान ते लिंग अथवा चिह्नथी यथार्थ वस्तु जाणवामां आवे, जेम दूर थका धुमाडानी रेखा उंची जती आकाशे पहोचती जोइने विचारीए के अग्नि प्रज्वलित छे ए अनुमान प्रमाण कह्युं. हवे उपमान प्रमाण ते जेम कोइ पुरुषनुं मुख गोळाश पकडतुं होय तेने कहीए के पूनमना चंद्र समान गोळ मुख छे, इत्यादि घटती उपमा लागु करवी तेने उपमान प्रमाण कहीए, ए परोक्ष प्रमाणना त्रण न्नेद थया ए प्रमाणनुं स्वरूप कह्युं, एटले मूळ सामान्य स्वन्नावनो चोथो न्नेद कह्यो. हवे पांचमो न्नेद सत्यपणुं ते उत्पाद कहेतां उपजवुं, व्यय कहेतां वीणसवुं अने ध्रुव कहेतां नित्यपणुं वा अचळपणुं वस्तुना एक एक गुणमां समये समये त्रणे परिणमने सदा परिणमे छे, एवो जे परिणमन धर्म ते सत्वपणुं कहीए तेमां

जेनुं उत्पाद व्ययरूप सत्यपणुं एक छे, ते द्रव्य एक छे, अने जेनुं उत्पाद् व्ययपणुं जूदुं छे ते द्रव्य पण जूदो छे ए पांचमो भेद कह्यो. हवे छठो अगुरु लघु तेमां छ प्रकारनी हानि तथा छ प्रकारनी वृद्धि ते अनंत भाग हानि, असंख्यात भाग हानि, संख्यात भाग हानि, संख्यात गुणहानि, असंख्यात गुणहानि, अने अनंत गुणहानि ए छ भेदे हानि कही. अनंत भागवृद्धि, असंख्यात भागवृद्धि संख्यात भागवृद्धि, संख्यात गुणवृद्धि, असंख्यात गुणवृद्धि, अने अनंत गुणवृद्धि एम छ छ भेदे हानिवृद्धि मलीने बार भेदे अगुरुलघु पर्यायनी सर्व द्रव्यने सर्व प्रदेशे परिणमे छे, तेमां कोइक प्रदेशे कोइक समये अनंत भाग हानिपणे परिणमे अने कोइ समये कोइ प्रदेशे अनंत भाग वृद्धिपणे परिणमे एम बार भेदे परिणमे छे, ते अगुरु लघुपर्यायनी परिणमन शक्ति ते अगुरुलघुत्व नामनो छठो भेद कह्यो. एम ए छ स्वभाव सर्व द्रव्यमां परिणमे ए षट् द्रव्यनो मूळ स्वभाव छे. द्रव्यनुं भिन्नपणुं प्रदेशनुं भिन्नपणुं ते अगुरु लघुना भेदपणे थाय छे, ते माटे ए छ मूळ सामान्य स्वभाव ए द्रव्यास्तिक धर्म छे, तेमां पर्यायनुं परिणमन पिंडपणे अभेद स्वभावे अवक्तव्य द्रव्य द्रव्यने विषे तिरोभावीपणे रह्युं, ते धर्मने आवरण लागतुं नथी; वळी आत्मा मध्ये जे अगुरु लघु गुण छे ते क्षायकभाव थये आत्माना सर्व प्रदेशे सर्व गुणमां सामान्यपणे परिणमे पण अधिका ओछापणे परिणमे नहीं. अहीं कोइ शंका करे के

अगुरुलघु पर्याय आत्माना प्रदेश प्रदेश प्रत्ये भिन्नपणे वर्त्ते छे, ते सर्व प्रदेशे सरखापणुं संभवे नहीं. तेनो उत्तर, हे भाइ! आत्माना असंख्यात प्रदेशथी घातिकर्मनां आवरण दूर थयां त्यां आत्माना प्रदेश तथा प्रदेशे प्रदेशे रहेला अनंता ज्ञानादि गुण अने एकएक गुणना अनंता पर्याय सर्व निरावरण थया ते निरावरण गुणमां अधिका उंछापणुं संभवे नही. आत्माना असंख्यात प्रदेश छे अने प्रदेशे प्रदेशे अनंता गुणपर्याय छे. तेमां सर्व प्रदेशे रहेला ज्ञान गुणना पर्यायनी जाणवापणे एकत्र सरखी प्रकाश शक्ति आविर्भावे प्रगटे तेनुं नाम केवळज्ञान छे; अने सर्व प्रदेशे रहेला दर्शनगुणना पर्यायनी एकत्र शक्तिए देखवापणे प्रकाश शक्ति आविर्भावे प्रगटे तेनुं नाम केवळ दर्शन छे; तथा सर्व प्रदेशे रहेला चारित्रगुणना पर्यायनी अनंती अनंती स्थिरता आविर्भावे प्रगटे तेनुं नाम यथाख्यात चारित्र छे; वळी सर्व प्रदेशे रहेला वीर्य गुणना पर्यायनी एकत्र शक्तिए आत्माना अनंता गुणमां प्रत्येके प्रत्येके गुणगुणगत भिन्न भिन्न स्वभावमा स्फुरणा आपवानुं सामर्थ्य आविर्भावे प्रगटे तेनुं नाम अनंत वीर्य छे. आ चार गुणो कह्या ते आदि अनंता गुणपर्याय छे ते सर्व प्रदेशथी पोतपोताना गुण पर्यायनु एकत्र सरखी रीते परिणमनपणुं करे, पण कोइ प्रदेशे कोइ गुणना पर्यायमां उंछा वत्तापणे परिणमनपणुं करे नहीं. वळी अणप्रवर्त्यो पण रहे नहीं ए क्षायकभावनुं लक्षण छे ते कह्युं, अहीं वळी चोले के अगुरु लघु पर्यायनी परि-

णमन शक्तिए एक द्रव्यना अनंता गुणमां समये समये अभिनवपणे उत्पाद् व्यय प्रवर्त्ते छे ते सरखापणे परिणमतां केम संभवे? तेनो उत्तर, हे भाइ! अभिनवपणे समये समये एक द्रव्यना अनंता गुणमां उत्पाद्व्यय प्रवर्त्ते एतो जिनेंद्र देवनी देशना छे ते वचन तो अमारे प्रमाण छे, ते वातनी कांइ अमे ना पाडता नथी. अहीं तो कहेवानुं एटलुं छे के, सर्व प्रदेशे रहेला जाणवा देखवादिक गुणोना पर्यायनी गुण गुण प्रत्ये एकत्र सरखी प्रवृत्ति थवी जोइए एटले प्रदेश प्रदेश प्रत्ये भिन्नता क्षायकभाव थयां संभवे नही, तेनी साक्षी जोइए तो देवचंदजी कृत आगमसार ग्रंथे द्रव्यना अस्तित्वादिक ७ सामान्य गुणनुं वर्णन कर्युं छे त्यांथी जोइ लेजो. ए अगुरुलघुगुणनुं प्रवर्त्तन कह्युं, ते अगुरुलघु गुणने गोत्र कर्म रोके छे, ए अगुरु लघु स्वभाव ते सर्व द्रव्यमां पोतपोतानो छे अहीं केटलाक वादी एम कहे छे जे पर्यायनो पिंड ते द्रव्य छे पण द्रव्यपणुं भिन्न नथी; जेम धरी, पइडां, कागमो, झागळी, धुंसरी प्रमुख समुदायने गाडुं कहीए पण सर्व अवयवथी भिन्न गाडापणुं देखातुं नथी, तेमज ज्ञानादि गुणथी भिन्नपणे आत्मा देखातो नथी. तेने कहीए जे, ज्ञानादि अनंता गुणने विषे छतीपणे रहेली एक पिंड समुदायता तेनुं सदासर्वदा अवस्थितपणुं अने अनंता गुणपर्याय द्रव्यथी निरपेक्षपणे मळी न जाय तथा स्वक्रियावंतपणुं इत्यादि सामान्य धर्म छे, एटले छतीपणुं ते अस्तित्व, एक पिंडपणुं ते वस्तुत्व, अर्थ क्रियावंतपणुं ते द्रव्यत्व, इ-

त्यादिक ते सर्व द्रव्यपणुं छे. एटले द्रव्यास्तिक अने पर्याया-स्तिक ए बे नय मळीने द्रव्यपणुं छे. ए मूळ सामान्य स्वभावना छ भेद कह्या.

हवे त्रिभंगी अने तेनी व्याख्या कहे छे. बाधक, साधक अने सिद्ध. बाधक तो समकित चोथा गुणठाणानी प्राप्ति न थइ, ग्रंथिभेदना अभावे वा ग्रंथिभेद करीने श्रद्धा विपर्यासने लीधे पाछा मिथ्यात्व पेहेले गुणठाणे गया ते वेहुने मिथ्यात्व छते, च्हाय तो शुभ करणी करो अने च्हाय तो अशुभ करणी करो पण बाधकभाव छे ए पेहेलो भांगो; अने चोथा समकित गुणठाणाथी चौदमा अयोगी गुणठाणा पर्यंत जे जीवो वर्त्ते छे तेमने साधक भाव कहीए, ए बीजो भांगो; अने आठ कर्म रहित थइ अनंत अष्टगुण निष्पन्न लोकाग्रभागे सिद्ध क्षेत्रमां सादि अनंत भांगे स्थिर रह्या तेमने सिद्ध कहीए ए त्रीजो भांगो पेहेली त्रिभंगीनो कह्यो. हवे कर्मबंध चेतन, कर्मफळ चेतन, अने ज्ञान चेतन, ए त्रिभंगीनो अर्थ कहे छे. कर्मबंध चेतन तो ए छे के, जे शुभाशुभ क्रिया करे छे अने अहंकर्त्तापणुं पोते माने छे, ते जीव कर्मबंधनो कर्त्ता छे. ए पेहेलो भांगो. अने बीजो भांगो कर्मफळ चेतन ते जे शुभाशुभ कर्म पोतानां पूर्वे बांधेलां ते कर्मनो उदय प्राप्त थयो एटले अशुभ ते पापनो अने शुभ ते पुन्यनो; पापनो ते अशातारूप अने पुन्यनो ते शातारूप प्राप्त थये छते अशातानो उद्वेग नथी अने शातानी रीझ नथी बंनेने सरखां जाण्यां छे, जेणे, ए पूर्वकृत कर्मनां फळ

छे, एम जाणी समता भावे अंतर व्यापक उपयोगी थइ उदासिनवृत्तिये भोगवीने खेरवे तेने कर्मफळ चेतन बीजो भांगो कहीए, अने त्रीजो भांगो ज्ञान चेतन, ते स्वरूपे चेतनानो उपयोग स्थिरभावे परिणमावी अनुभव रमण करे समभावे वर्त्ते एटले शुभाशुभमां प्रवेश न करे ते ज्ञान चेतन, ए त्रीजो भांगो बीजी त्रिभंगीनो कह्यो. हवे बहिरात्मा, अंतर आत्मा अने परमात्मा ए त्रिभंगी; तेमां प्रथम बहिरात्मानुं स्वरूप कहे छे.जे जीव अज्ञानी मिथ्यात्वी छे, तेने पोतानी काया तेमां पांच इंद्रि,त्रण योग बळ आदि दस द्रव्य प्राण छे, ते यद्यपि पर वस्तु छे, तेने पोतापणुं जीवपणुं एकांते माने अने जीवनुं अतींद्रिय स्वरूप जाणे नही, ते बहिरात्मा, ए पेहेलो भांगो;अने बीजो भांगो अंतरआत्मा ते काया सहित छे परंतु आत्माने कायाथी भिन्न माने छे, घटमां ज्ञान ज्योति जगमगे छे,डुफारा ज्ञान छे, परवस्तुनी विभाग वहेंचण करीने पोताना आत्माने सर्व देवनो देव करी परमात्मपदे स्थापी तेना गुणनुं ध्यान स्मरण करतां कर्मने निर्जरे छे; यावत् श्रेणी मांमी वीतराग थइ क्षीणमोह बारमुं गुणठाणुं पामे त्यां सुधी अंतरआत्मा कहीए, ए बीजो भांगो; अने त्रीजो भांगो परमात्मा ते तेरमा गुणठाणे अरिहंतपदे अनंत चतुष्टयीवंत ते सजोगी परमात्मा अने योगनो रोध करी अयोगी थइ अघाति कर्म हणीने सिद्धि वरे ते सिद्ध परमात्मा; ए त्रीजो भांगो त्रीजी त्रिभंगीनो कह्यो. हवे गुण, ज्ञाता अने ज्ञेय, ए त्रिभंगीनो अर्थ कहे छे. गु-

ण तो षट् द्रव्य छे तेमां आत्मा एज चेतनपणाना अनंता गुणनी खाण छे, ते गुणे गुणीपणुं होय तो, तेने गुण कहीए. ए पेहेलो भांगो; अने बीजो भांगो ज्ञाता ते, जे आत्माने जाणे ते ज्ञाता, बाकी सर्व जाणे पण एक पोताना आत्माने न जाणे ते अज्ञाता एटले अज्ञानी, अने पोताना आत्माने जाणे ते ज्ञानी, तेने ज्ञाता कहीए, ए बीजो भांगो; अने त्रीजो भांगो ज्ञेय ते पोताना आत्मा सिवाय बीजा सिद्ध, संसारी सर्व जीवो वा पुद्गळ रूपी, अने धर्मास्तिकायआदि अरूपी ए पांचे अजीव, अने अन्य जीव मली षट् द्रव्य ते ज्ञेय कहेतां पोताना आत्माने जाणवा योग्य छे, अने पोताना आत्मानुं अतींद्रिय स्वरूप छे ते अनुभव वा योग्य, स्पर्श करवा योग्य, आस्वादन करवा योग्य छे, ए चोथी त्रिभंगी कही. हवे ध्याता, ध्येय अने ध्यान ए त्रिभंगी, तेमां प्रथम भंग तो ध्याता एटले उपयोगीक तरंगनी श्रेणीये आत्मा पोते ध्याननो कर्त्ता, ए पेहेलो भांगो; अने ध्येय ते ध्यानगत पोताना आत्मानुं परमात्म स्वरूप ते ध्येय, ए बीजो भांगो; अने ध्यान ते धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान गत प्रवृत्ति ए त्रीजो भांगो जाणवो; ए पांचमी त्रिभंगी कही. हवे करुणा, तिक्ष्णता अने उदासिनता ए त्रिभंगी, तेमां प्रथम भंग तो करुणा छे, ते परजीवनी दया चिंतववी; तेना बे भेद एक द्रव्य दया अने बीजी भावदया, द्रव्यदया ते जीवना द्रव्य प्राणनुं रखोपुं करवुं, अने भाव दया तो संज्ञि पंचेंद्रि योग्य जीवने उपदेश करी बोधी बीज पमाडवुं, शंका संदेहनुं

टाळवुं तेने भावदया कहीए. ए बे भेद कह्या. तेनुं नाम करुणा छे, ए पेहेलो भांगो; अने बीजो भांगो तिक्ष्णता ते पोताना आत्मानी दया करवा माटे पोताना सहज वीर्यने फोरवी तिक्ष्ण ज्ञान वाणे ग्रंथिभेद करीने समकित गुण प्रगट करे तेने पण तिक्ष्णता कहीए, वळी मोहनी कर्म आदि घातीकर्मने श्रेणीगते ध्यानगत उपयोगे ज्ञाननी, वीर्यनी ऐक्यता करी हणीने वीतराग परमात्मा थइये ते सहज वीर्य शक्तिने तिक्ष्णता कहीए, ए बीजो भांगो, अने त्रीजो भांगो उदासिनता छे, ते ज्यां पोते पोताना स्वरूपे थइए त्यां उदासिनता कहीए, एटले परने तजवुं, ग्रहवुं नथी, संबंधज नथी पोतानुं नथी ए दशाने उदासिनता कहीए, ए छठी त्रिभंगी कही. एम प्रत्येक त्रिभंगीना त्रणे भांगा केटलाएक तो समकाळे लागे छे अने केटलाएक पूर्व पश्चात् लागे. इत्यादि अनेक त्रिभंगीना स्वरूपने विचारी जोवुं. हवे परिणतिए समकित भाव गवेखे छे, ते आत्मानी रागद्वेषरूप अशुद्ध परिणति अनादि संबंधे चाली आवे छे, तेने अपूर्व करणे, अपूर्व वीर्य योगे, अपूर्व मोगर प्रहारे भेदी अने अंशे छेदी, तेथी शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट थयो त्यांथी परिणतिए चोथा गुणठाणानी हदने न छोडे, त्यां बे धारा चाले छे, एक कर्मधारा अने बीजी ज्ञानधारा, कर्मधारा तो परिणतिए राग छे ते कहीए, अने ज्ञानधारा तो जेटलो समभाव एटलुं ज्ञान एम भेदज्ञाने अंतर स्थान वृत्ति करी इंद्रि नोइंद्रि संगे उपयोग छे, तेने पलटावी

स्वस्वरूपे जोमीए एटले परिणमावीए, त्यां जोइए तो स्व-स्वरूपनो यथार्थ भेद समजाय छे, तेने व्यक्तिमां लाववुं अने ए भावे सदा रहेवुं एज वल्लभ लागे, तेथी तेनो आदर करे, अनुभव करे अने निश्चय करे के एज मारुं स्वरूप छे तेनुं नाम प्रशस्त राग छे, तेने कर्मधारा कहीए छीए, अने पोताना स्वरूपथी जे अन्य छे ते पण ज्ञानरूप आरिसामां प्रतिबिंबित हेयरूपे भेदपणे शुभाशुभ सर्वे थाय छे, तेनो राग तूटी जाय छे, छोरूवायोग्य समजाय छे, तेना उपर इष्टताए नथी अने अनिष्टताए नथी, मारुं नथी, पर छे, ए दशाने समभाव कहीए छीए तेनुं नाम ज्ञानधारा छे. परवस्तु उपर समभाव अने स्वस्वरूपनो राग एम परिणति-ए बे धारा कही; ए गुण ग्रंथीभेद कर्या विना कोइ जीव पामे नहि, तेनुं नाम समकित छे. अहीं कोइ कहेशे के स्व-स्वरूपनो राग तेने तमे कर्मधारा केम कहो छो? तेनो उत्तर, हे भाइ! प्रश्न तो घणुं रुडुं कर्युं छे. पण स्वस्वरूपनो राग छे ते शुभ प्रकृतिउने आश्रवरूपे खेंचीने आत्म प्रदेशे एकत्वपणे बांधे छे, तेनुं विवरण नीचे मुजब; एक जिननामकर्म, बीजुं आहारक शरीर अने त्रीजुं आहारक अंगोपांग ए त्रण प्रकृतिउ सर्वोत्तम छे, ते नामकर्मनी प्रकृतिओ चोथा गुणठाणाथी ते सातमा गुणठाणा सुधी स्वस्वरूपे वर्ततां कदाच सरागताए पोते परिणमि जाय त्यां बंधाय छे; वळी बीजी ओगणचालीस प्रकृतिओ पुन्यनी रही तेमां तरतमता घणी छे परंतु ते कहेवा बेसीए तो ग्रंथ

मोटो थइ जाय. पण परमार्थ ए छे के देवगतिमां वैमानिकथी नीचे नहीं अने मनुष्यमां निर्धन नहीं, यावत् चक्रवर्ति पण थाय, वेदनीमां शाता बांधे, गोत्रमां ऊंच गोत्र बांधे अने वज्रऋषभनाराच संघयण तथा समचतुरस्र संस्थान, शुभवर्णादि चतुष्क, सुस्वर, पुरुषवेद अने आदेय नामकर्म इत्यादि नामकर्मनी प्रकृतिओ, एम अघातिकर्मनी जे शुभ प्रकृतिओ छे ते स्वस्वरूपना राग योगे, विना प्रयत्ने बंधाय छे कारण के कर्मने ग्रहवानो स्वभाव रागमां छे अने स्वस्वरूप विना अन्य कोइ पण वस्तु प्रशस्त नथी. शुद्ध व्यवहार नय पक्षे तो स्वस्वरूपनो राग तेज प्रशस्त छे, अने स्वस्वरूपना राग योगे शुभ आश्रव आवे छे, बंधाय छे, तेनुं नाम पुन्यानुबंधि पुन्य छे, माटे अमे प्रशस्त रागने कर्मधारा कहीए छीए, अने शुभाशुभ ऊपर इष्टानिष्टपणाना अभाव योगे समभाव कहीए छीए. जेटलो समभाव एटलुं ज्ञान, अने जेटलो राग एटलुं कर्म, एम बे धारा भेगी चाले छे. दृष्टांत—जेम छाशमां पराशनी धारा जूदी पडे छे अने पराशमां छाशनी धारा जूदी पडे छे, पराशनो भाग वधारे होय त्यां छाश धारा कृष छे, अने छाशनो भाग वधारे होय त्यां पराशधारा कृष छे, जेनो भाग वधारे तेनी धारा पुष्ट छे, एम अहीं पण चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी ज्ञानधारा कृष छे, अने कर्मधारा पुष्ट छे; वळी आठमा गुणठाणाथी क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए, दशमा गुणठाणाना अंत सुधी ज्ञानधारा वृद्धि पामती पा-

मती छेवटे कर्मधारानो अभाव थाय छे, उपरांत क्षीणमोह बारमा गुणठाणे परिपूर्ण ज्ञानधारा एकज छे, तेनुं नाम शुद्ध परिणति कहीए छीए, तेने एवंभूत नये समकित कहीए, अने चोथे गुणठाणे, ग्रंथिभेद अवसरे, अंशे शुद्ध परिणति थइ, ते शब्दनये समकित छे; ए चोथा गुणठाणानुं समकित, प्रकृति-मिथ्यात्वना नाशथी पामीए, अने शुद्ध परिणतिए-समकित गवेखीने कह्युं ते, परिणती - मिथ्यात्वना नाशथी पामीए. प्रकृति मिथ्यात्वनी स्थीति उत्कृष्टी सितेर कोडाकोडी सागरोपमनी छे, अने परिणति मिथ्यात्वनी स्थीति अनादि सांत भागे भवि जीवने छे; वळी शुद्ध परिणतिए समकित क्षीणमोह बारमा गुणठाणे कह्युं तेने सादि अनंत भांगो लागे छे, ते अति शुद्ध क्षायक समकित, वळी यथाख्यात चारित्र, अने वीतराग भाव, ए त्रणेनी प्राप्ति समकाळे साथे छे, ते मोहपल्लीनो ध्वंस थयां पामीए. क्षीणमोह बारमा गुणठाणेथी जे जे गुणनी प्रगटता थाय तेनुं नाम आविर्भाव छे. जे गुणो क्षीणमोह गुणठाणेथी प्राप्त थया तेने हवे पलटाववा नथी. सिद्धमां एज गुण खप लागशे, माटे क्षीणमोह गुणठाणेथी निश्चय नयनी मुख्यता छे, अने चोथा गुणठाणाथी दशमा गुणठाणाना अंत सुधी शुद्ध व्यवहार नयनी मुख्यता छे. शुद्ध व्यवहारना अभावे मिथ्यात्व कहीए, ए परिणतिए भाव समकित कह्युं.

हवे, दानादि पांच लब्धि कहे छे., एटले, आत्मिक-भावनी गुणनिष्पन्नलब्धि चेतनने बे भेदे प्राप्त थाय छे. एक

क्षयोपशम भावनी लब्धि, अने बीजी क्षायक भावनी लब्धि, तेमां प्रथम क्षयोपशम भावनी कहे छे. क्षयोपशम भावनी सम्यक् ज्ञानादि गुणलब्धि ग्रंथि भेद थयां चोथा गुणठाणाथी वृद्धिये बारमा गुणठाणाना अंत पर्यंत प्राप्ति छे, तेमां चोथा गुणठाणाथी सातमा सुधी किंचित् छे, अने आठमा गुणठाणाथी विशेष छे; परंतु उपशम श्रेणीए जे लब्धि छे ते प्रतिपाति छे, अने क्षपक श्रेणीए जे लब्धि छे ते अप्रतिपाति छे, परंतु अगियारमे बारमे गुणठाणे अति विशेष छे. अहीं कोइ कहेशे के तमे क्षयोपशम भावनी लब्धि अप्रतिपाति कही, अने क्षयोपशम भावने तो हणीने क्षायक भावनी लब्धि प्रगट करे छे, माटे क्षयोपशम भाव छे तेज प्रतिपाति छे, तेने अप्रतिपाति केम कहो छो? एम पूछे तेनो उत्तर, हे भाइ तमे कह्युं ते वात खरी छे, पण अपेक्षा समजवी जोइए, प्रतिपातिपणुं शेनुं नाम छे? के जे गुण निष्पन्न थयो, तेनो नाश थाय अने चेतन जडताने अनुभवे ते प्रतिपाति कहेवाय; परंतु अहींयां तो आत्माना गुण सावरण हता ते निरावरण थया, वळी अस्पष्ट परोक्ष भावे हता ते स्पष्ट प्रत्यक्ष भावे थया. विनाशी विघ्नसंभवयुक्त हता ते निरविघ्नपणे अविनाशी रूपे थया; माटे अधिकताइ देखीए न्यूनतानो ज्यां संभव नथी तेने अप्रतिपाति कहीए, माटे क्षपकश्रेणीयोगे आठमा गुणठाणाथी आत्मिकभावनी गुण निष्पन्न लब्धि वर्द्धमानपणे अप्रतिपाति छे, परंतु क्षयोपशम भावनी लब्धि प्राये आत्माना सर्व प्रदेशे

देवावाळो ग्रहवावाळो अभेद संबंधे आत्मा स्वस्वरूपभूत तद्गत छे, तेने अनंतदानलब्धि कहीए, अने ए अनंत चतुष्टयी गुण व्यक्तिभावे न हता, ते स्पष्ट प्रगट भावे कार्य रूपे थया ते लाभ आत्माने संप्राप्त थयो, तेने अनंत लाभ लब्धि कहीए. वळी केवळज्ञान, केवळदर्शन आदि अनंता गुण जे समये प्रगट थया तेज समये जाणवा देखवा आदि अनंता गुणनो गुण गुण गत भिन्न भिन्न स्वभाव वृत्तिये परमानंदपणे पोतेज भोगवे छे, आस्वादे छे, तेमां किंचित मात्र पण वियोगनुं, व्याघातनुं अने उच्छेदनुं कारण आवरणनो अभाव थतां रह्युं नथी. परिपूर्णता छे माटे अनंत भोग लब्धि कहीए. वळी केवळज्ञान केवळदर्शन आदि अनंता गुणनो वारंवार चीरकाळपर्यंत सादि अनंत भांगे पोताना गुण समुदायनो अनंतो भोग पोतेज भोगवशे आस्वादन करशे, तेमां वच्चे एक समय मात्र पण अंतर पडे नहीं, भोगनो विरहकाळ आवे नहीं, उपसर्ग आदि विघ्न नडे नहीं, निज गुण भोगपणुं रोकाय नही, सदा सर्वदा चिरकाळ लगे भोग उपभोग परमानंदपणे अनुभवे तेने अनंत उपभोग लब्धि कहीए. वली केवळज्ञान केवळ दर्शनआदि अनंता गुणनी अनंती प्रवृत्ति समये समये अभिनवपणे परिणमवारूप परमानंदपणे अव्याबाधपणे थवारूप चिरकाळपर्यंतगुणगुणगतजेगुणगुणनी भिन्नवृत्तितेमांस्फुरणा शक्तिआपवानो तिक्षण वेग विघ्नना अभावेनिरविघ्नपणेसादि अनंतभांगे जे सामर्थ्य तेने अनंत वीर्य लब्धि कहीए; ए

क्षायक भावनी पांच लब्धि कही, ते लब्धि तेरमे गुणठाणे अरिहंतपदे तीर्थंकरकेवळीतथा सामान्यकेवळीबंनेनेसरखी स्थीतिए सरखा भावेछे, कोइने अधिक नथी अने कोइने न्यून पण नथी;वळी ए क्षायकभावनीलब्धि कही ते अमूल्य छे, वली अविनाशी भावनीछे, ते पामीने तीर्थंकर केवली तथा सामान्य केवली बहु भव्य जीव प्रत्ये उपदेश करीने बोधिबीज पमाडे छे. तेमां तीर्थंकरनुं उपकारीपणुं विशेष छे. पोते तर्या छे अने बीजाने तारे छे, मोक्ष नगरे पहोंचाडे छे, कर्म रोगने टाले छे, आधि व्याधि रहित करे छे, ते यथार्थ वात छे; परंतु पोते जे क्षायकभावनी लब्धि प्रगट करी छे तेने तो पोतेज भोगवे छे, अने पूर्वकृत् कर्म योगे जे भाषावर्गणाना पुद्गल खेरववाना होय ते पूर्वक आत्म सत्ताए अघाति कर्मदल रह्यां छे, ते दळने वचन भाषा प्रयुंजीने खेरवे छे, पोते कर्मदळना भारथी मुक्त थाय छे, अने पोताना वचनना अनुयायीपणे भव्य जीवने बोधिबीज पमाडी केटलाकने श्रावक श्रावीका करे छे, केटलाकने साधु साध्वी करे छे, अनुक्रमे पोताना बराबरीआ करी मोक्षनगरे पहोंचाडे छे, तेमां केवळ ज्ञानीने पोतानी लब्धिरूप निधानमांथी किंचित् पण व्यय करवो पडतो नथी परंतु अनंतो उपकार करता छता वर्त्ते छे. तेज आयुष्यने अंते योगरोध करी अयोगी थइ सिद्धि वरे, ते सिद्धनुं भाव लिंग तो एक छे परंतु द्रव्यलिंगे पंदर भेद छे, ते वर्णवे छे (१) तीर्थ सिद्ध, (२) अतीर्थ सिद्ध,

(३) तीर्थंकर सिद्ध, (४) अतीर्थंकर सिद्ध, (५) स्वयंबुद्ध सिद्ध, (६) प्रत्येकबुद्ध सिद्ध, (७) बुद्धबोधित सिद्ध, (८) स्त्रीलिंग सिद्ध, (९) पुरूषलिंग सिद्ध, (१०) नपुंसकलिंग सिद्ध, (११) स्वलिंग सिद्ध, (१२) अन्यलिंग सिद्ध, (१३) गृहस्थलिंग सिद्ध, (१४) एक सिद्ध अने (१५) अनेक सिद्ध ए पंदर भेद कह्या.हवे तेनो अर्थ अनुक्रमे कहे छे. तीर्थ सिद्ध ते चतुर्विध संघ साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका ए चारनुं नाम संघ कहीए, तथा गणधरादि व्यवहार प्रवर्त्तन उत्पाद, व्यय, ध्रुव, देशना निरुपण, द्वादशांगी सिद्धांतनी रचना इत्यादि तीर्थनुं स्थापन थया पछी जे सिद्धि वरे तेने तीर्थ सिद्ध कहीए, ए पहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो भेद अतीर्थ सिद्ध कहेतां चतुर्विध संघरूप तीर्थनी स्थापना थया पहेलां जे सिद्धि वर्या तेने अतीर्थ सिद्ध कहीए, ते मरुदेवा प्रमुख जाणवा, ए बीजो भेद कह्यो. हवे त्रीजो भेद तीर्थंकर सिद्ध ते जे तीर्थंकरनी पदवी पामीने एटले तीर्थंकरने घाति कर्मनो क्षय थवाथी अतिशयना खेंच्या चोसठ इंद्र तथा चार निकायना देवोनो समुदाय ज्यां केवळ ऊपन्युं होय त्यां आवीने समवसरणनी रचना अशोक वृक्ष आदि अष्ट प्रातिहार्यादि ऋद्धिये युक्त करे, तेमने असंख्यात कोडी देवो तथा मनुष्यो तिर्यंचो सर्वे सेवे. बार पर्षदाना समुदाय पूर्वक चोत्रीस अतिशय अने पांत्रीस वाणीना गुणे युक्त, बार गुणे विराजमान अने अढार दूषणोये रहित थका त्रिपदी.देशना देइ अनेक भव्य जीवोने बोधिबीज पमाडी

चतुर्विध संघनुं स्थापन करी आज्ञाए प्रवर्तावी अनेक जीवने संसार निस्तार करी मोक्ष गतिए पहोंचामीने पोते सिद्धि वरे तेमने तीर्थंकर सिद्ध कहीए, ए त्रीजो नेद कह्यो. हवे अतीर्थंकर सिद्ध ते तीर्थंकरनी पदवी पाम्या विना सामान्य केवळी थइने सिद्धि वरे तेमने अतीर्थंकर सिद्ध कहीए. ए चोथो नेद कह्यो. हवे पांचमो नेद स्वयंबुद्ध सिद्ध ते स्वयंबुद्धना वे नेद.एक तो तीर्थंकर जे थया थायछे अने थशे ते सर्व स्वयंबुद्ध जाणवा;अने बीजा तीर्थंकर विनाना,स्वयंबुद्ध तेना वे नेद. एक तो पूर्व नवनुं बोधिबीज लइने आवे छे एटले कोइ अप्रतिपाति क्षयोपशम नावनुं समकित लइने आवे अने कोइ क्षायक नावनुं समकित लइने पण आवे, ते बेउने मतिश्रुत ज्ञान तो नियमा होय अने कोइ अवधि ज्ञान पण पूर्व नवनुं लइने आवे छे. वळी तेओ पूर्वना त्रीजा नवे अगिआर अंग सूत्र आदि नणेला होय तो तेनुं स्मरण आ वर्त्तमान नवे पण कोइने होय, ए पहेलो नेद कह्यो. हवे बीजो नेद पूर्व नवनुं बोधिबीज लइने आव्या नथी, वळी आ वर्त्तमान नवे आचार्य उपाध्याय अने साधु आदि ज्ञाता पुरुषनो उपदेश पामीने पण बोध पाम्या नथी, वळी कोइ पर प्रत्यय कारणथी पण बोध पाम्या नथी. स्वप्रत्ययथी जेओ बोध पाम्या ते कपिल ब्राह्मण लाजना कारणथी,अने अनाथि मुनि रोगना कारणथी.वळी कोइ जाति स्मरण ज्ञान पामवाथी, इत्यादी कारणे पोताना स्वनावने प्रगट करे, ए बीजो नेद. एम पोते पोताथी

वोध पामीने सिद्धि वरे तेने स्वयंबुद्ध सिद्ध कहीए. ए पांचमो जेद कह्यो. हवे ठठो जेद प्रत्येक बुद्ध सिद्ध ते कोइ प्रत्यय देखीने वोध पाम्या. जेम करकंडु मुनि वृषजने जराकुळ देखीने तथा नमीराजा चुमीना खळजळाटथी इत्यादि कारणे वोध पामीने सिद्धि वर्या, तेमने प्रत्येक बुद्ध सिद्ध कहीए,ए ठठो जेद कह्यो. हवे बुद्ध वोधित सिद्ध ते सर्वज्ञनो, वळी गणधरादि गीतार्थ, आचार्य, उपाध्याय अने साधु आदि बुद्ध कहेतां पंमित पुरुषोना मुखथी उपदेश सांजळीने वोध पामी सिद्धि वर्या तेमने बुद्धवोधित सिद्ध कहीए, ए सातमो जेद कह्यो. हवे स्त्रीलिंगसिद्ध ते स्त्रीना वेदनुं चिन्ह जे आकार,तेने लिंग कहीए, तेना वेद विषयनो क्षपकश्रेणीए नवमा गुणठाणे क्षय करी आकाररूप लिंग ठते केवळ पामी सिद्धि वरे. अहीं कोइ दिगम्बर मति एम कहे ठे के स्त्री केवळज्ञान पामे नहीं अने सिद्धि वरे नहि, कारण के स्त्रीनी जाति अशुद्ध ठे तेथी शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र न लाधे, तेनो उत्तर हे जाइ ! स्त्री पुरुष अने नपुंसक ए त्रणे वेद मोक्षे जता नथी. वेदना विषयनो नाश करी अवेदी थइ आकार मात्र रह्यो, तेमां अशुद्धपणुं कहेवाय नहि; परंतु अशुद्धपणुं गणीए तो त्रणे वेदमां रह्युं ठे, कारण के पूर्वक्त कर्मजनित त्रणे वेद ठे, अने कर्मना वळे विषयरूप अशुद्धता ठे, ते विषयनो मूळथी उच्छेद नवमा गुणठाणे करी यावत् सर्वज्ञ थइने सिद्धि वरे. त्यारे दिगम्बर कहे ठे के स्त्री ज्ञान दर्शन पामे, पण शुद्ध चारित्र न पामे

कारण के एने वस्त्रनो परिग्रह होय ठे माटे निर्ग्रंथ पद न साधे. तेनो उत्तर, हे न्नाइ, परिग्रह तो मूर्छाने कहीए ठीए. ज्यां मूर्छा नथी त्यां परिग्रह मान्यो नथी अने जो आपणे वस्त्रने परिग्रह मानीए तो सिद्धांतथी विरुद्धता थाय,अने गृहस्थ लिंग सिद्ध आदि न्नेद जुठा पके, कारण के नरतराय चक्रवर्तिपणानी ऋद्धिना आरंन्नमां रह्या थका आरिसा न्नुवनमां केवळज्ञान पाम्या. मूर्छानो अन्नाव थयो त्यां चक्रवर्तिपणानी ऋद्धिनो महा परिग्रह ते पण केवळज्ञान पामतां नमयो नहि. तो शुं वस्त्रनो परिग्रह चारित्र पामतां वा केवळज्ञान पामतां आमो पमदो करशे? माटे विचारी जुर्ज के मूर्छा एज परिग्रह ठे. वळी तमारा मतनो न्नगवती सार नामे ग्रंथ ठे, तेने विषे साधुने वस्त्र राखवानी हा पामी ठे; माटे जे वस्त्र ठे, ते तो चारित्रनां उपगरण ठे ते परिग्रह कहेवाय नहि. एम करतां जो वस्त्रने परिग्रह मानशो तो तमो चमरी गायना केशनी पीठी वा मोरपीठी आदि राखो ठो तेने परिग्रह मानवो पमशे. दिगम्बर उवाच–पुरुष सातमी नरके जाय ठे पण स्त्री जती नथी, एटलुं स्त्रीनुं वीर्य ठंछुं ठे,तो ठंछुं वीर्य ठतां मोक्ष शीरीते जशे? तेनो उत्तर हे न्नाइ! स्त्री सातमी नरके जाय नहि एम तमे कह्युं ए वात खरी ठे पण तेनुं कारण समजो के तेने संग्राममां युद्धादि विपरित काम करवानुं नथी, वळी खेती कर्म, जमीन फोमवानुं नथी, इत्यादि अति आकरुं विपरीत कर्त्तव्य स्त्रीने नथी, ए विपरीतनो कर्त्ता तो पुरुष ठे, तेथी पुरुष सातमी नरके

जाय अने स्त्री जाय नहि, पण छठी नरक सुधी तो जाय छे; परंतु कंइ एवो नियम नथी के जे सातमी नरके जाय एज सिद्धि वरे. जो एम होय तो जळचर मच्छ सातमी नरके जाय छे तेनी मुक्ति थवी जोइए, पण अण काळमां मच्छ जातिनी मुक्ति थती नथी; वळी काइ एवो नियम नथी के अधोगतिए जे अधिक छे ते उर्द्ध गतिए अधिक होय, अने अधोगतिए न्यून होय ते उर्द्ध गतिए न्यून होय. एम अधोगतिनुं अने उर्द्ध गतिनुं सरखापणुं शी रीते मेळवी आपशो ? जुओ के भुजपरिसर्प घो नोळीआ आदि बीजी नरक सुधी जाय छे, अने खेचर पंखी, सींचाणा समळी आदि मासाहारी त्रीजी नरक सुधी जाय छे अने थलचर जे चोपगां वाघ, सिंह, चित्रा, कुतरां, बिलाडां आदि चोथी नरक सुधी जाय छे,अने उरपरि सर्प ते काळा, धोळा अने कावरा नाग अने वळी अजगर आदि पांचमी नरक सुधी जाय छे,अने जळचर मच्छादि सातमी नरक सुधी जाय छे. एम अधोगतिए तिर्यंच पंचेंद्रिनी पांचे जातिमां अधिक न्यूनपणे भिन्नता छे अने उर्द्ध गतिए तो ए पांचे जातिवाळा आठमा सहस्रार देवलोक सुधी जाय छे ते वातने विचारी जूओ के भूजपरिसर्प आदिने अधोगतिए जवानुं वीर्य ओछु छे तो उर्द्धगतिए जवानी अधिकताइ तेनामां क्यांथी आवी? वळी जळचर मछादिमा अधोगतिए जवानुं वीर्य अधिक छे तो उर्द्धगतिए जतां तेनामां न्यूनता क्यांथी आवी. अधोगतिए जवानुं विपरीत कृत्य अने उर्द्धगति-

ए जवानुं सुकृत कृत्य करवावाळा तो एना एज जीवनी जाति अने तेमनुं वीर्य पण एनुं एज छे ते विचारी जुओ, अने हठ कदाग्रह छोडी दो के अधोगतिए जवानी शक्ति ओछी होय तेनामां ऊर्द्ध गतिए जवानी शक्ति अधिक पण होय छे; ए अपेक्षाये स्त्री सातमी नरके जाय नहीं पण मोक्षे तो जाय छे. दिगम्बर उवाच--जुओ के स्त्रीने वासुदेवनी, प्रतिवासुदेवनी, बळदेवनी चक्रवर्तिनी इत्यादि पदवी नथी; वळी पूर्वधरपणानुं श्रुत पण होतुं नथी, वळी जंघाचारण विद्याचारणपणानी लब्धि पण पामे नहीं, इत्यादि कारणे स्त्री हीण छे ते छतां यथाख्यात चारित्र, वळी केवळज्ञान, केवळ दर्शन आदि क्षायकभावनी लब्धि ए हीणने केम प्राप्त थशे के ते सिद्धि वरे? माटे स्त्रीनी मुक्ति थाय नहीं.तेनो उत्तर---हे भाइ वासुदेवादिक पदवीनुं पामवुं स्त्रीने नथी, तमे कह्युं ते वात खरी छे तेथी कांइ सिद्धि वरवुं बंध थाय नहीं; कारण के ए पदवीनुं पामवुं ते तो पूर्वकृत कर्मनां फळ छे, जेणे उपार्ज्युं होय ते पामे छे, अने मुक्तिनुं पामवुं ते कर्म बंधमां नथी. मुक्ति तो कर्मनो नाश करवाथी मळे छे अने कर्मनो नाश तो अकरण वीर्य जे आत्मानी सहज शक्ति, तेने फोरवतां थाय छे.ए शक्ति तो मनुष्यना जन्ममां स्त्रीने होय तेथी सिद्धि वरे ए वात सत्य छे. वळी तमे पूर्वधरपणाना श्रुतनुं कह्युं ते स्त्रीने होतुं नथी ते वात खरी छे; तेथी कंइ सिद्धि वरवुं बंध थाय नहीं कारण के चौद पूर्वधरपणानुं श्रुत छे तेनुं नाम द्रव्य ज्ञान छे; वळी

पूर्वना ज्ञाननो उपयोग पण सातमा गुणठाणा सुधी खप लागे छे. पूर्वधरपणाना श्रुत बळे त्रण काळमां कोइए श्रेणी मांडी नथी, तो आगळ ए पूर्वधरपणाना बळथी अपूर्वादि गुणठाणे शी रीते जशे? श्रेणीगते तो अंतरगत सहज भावनो उपयोग खप लागे छे. मोहपल्लीनो ध्वंस करवा माटे पूर्वना श्रुतनो पाठ खपमां आवतो नथी, अने द्रव्यश्रुत पण खप लागतुं नथी, त्यां तो अरूपी आत्माने तादृश देखाडवा वाळी एकत्व भावनी तीक्ष्ण उपयोगरूप अनुभव खड्ग धारा खप लागे छे, ए वीर्य तो स्त्रीमां होय छे, माटे सिद्धि वरे. वळी तमे कह्युं के चारणादि लब्धि स्त्रीने होती नथी, ए वात खरी छे तेथी कांइ स्त्री मोक्षे न जाय एम कहेवाय नहीं; कारण के ए शक्ति तो तेमना करतां देवगतिए बारमा देवलोक पर्यंत देवताओने सर्व वाते घणी अधिक छे, माटे तेमनी मुक्ति थवी जोइए, पण ए देवताओ तो अधिक शक्ति छतां त्रण काळमां पांचमुं गुणठाणुं पामी शकता नथी; परंतु बिचारा वगडामां रहेनारा घास तरणां आदिनुं भक्षण करवावाळा पशु तिर्यंच सन्नि पंचेंद्रि ते पांचमुं गुणठाणुं पामे छे तेमने अगिआर व्रत सुधी विरति परिणामी कह्या छे, तेओ आयुष्य खुटे काळ करीने हीण शक्ति छतां पण स्वर्गे आठमा देवलोक सुधी जइ शके छे अने अधिक शक्ति छतां देव देवेंद्रने काळ करवाथी स्वर्ग गति बीजा भवे मळती नथी. वळी तमे जंघाचारण विद्याचारण कह्या, ते मुनि लब्धिने फोरवतां छता तो छठुं गुणठाणुं उलंघीने सातमा गुणठाणे

जइ शकता नथी. एटले लब्धि फोरवे छे ते वखते अप्रमत्त सातमुं गुणठाणुं ए मुनिराजना सामी पुंठ करे छे, अने सन्मुख दृष्टि करी आदर सत्कारे बोलावतुं पण नथी. ज्यारे ए मुनिराज ए लब्धिने पुंठ आपे छे एटले फोरवता नथी त्यारे अप्रमत्त स्थानक, आदरथी तेडुं मोकली ए मुनिराजने बोलावी ले छे;तो ए लब्धि फोरवता छता उपर शी रीते जशे ? कारण के उपरनां तो जे जे गुणठाणां छे ते सर्वे अप्रमत्त छे, माटे सिद्धि वरवामां ए लब्धिनी अपेक्षा काममां आवती नथी. एक आत्मिक शक्ति काम लागे छे. ए शक्ति तो स्त्रीमां होय माटे स्त्री मोक्षे जाय ए सत्य वचन छे, ते कबुल करो. एम करतां जो अमारुं कह्युं.न मानो तो तमारा मतनो गोमटसार नामे ग्रंथ छे तेमां स्त्रीने सिद्धि वरवानुं कह्युं छे ते गाथा.

अडयाल पुवेया, इत्थि वेयाय हुंति चालीसा
वीस नपुंसग वेया, समयेगेण सिज्झंति ॥ १॥

ए स्त्री लिंग सिद्धनो आठमो भेद कह्यो. हवे पुरुष लिंग सिद्ध ते पुरुषवेदना विषयने छेदी उच्छेदी लिंग आकारे सर्वज्ञ थइ सिद्धि वरे, तेने पुरुष लिंग सिद्ध कहीए.ए नवमो भेद कह्यो. हवे नपुंसकलिंग सिद्ध ते नपुंसकना बे भेद, एक जन्म नपुंसक अने बीजो कृत्रिम नपुंसक, तेमां जन्मनपुंसकनी सिद्धि थाय नहीं अने कृत्रिम नपुंसक सिद्धि वरे तेने नपुंसकलिंग सिद्ध कहीए, ते गांगेय प्रमुख सिद्धि वर्या.

ए दशमो भेद कह्यो. हवे स्वलिंग सिद्ध ते जैनलिंग ग्रहीने क्षायक लब्धि पामी सिद्धि वरया ते जैन लिंगने स्वलिंग सिद्ध कहीए, ए अगियारमो भेद कह्यो. हवे अन्य लिंग सिद्ध ते जैन लिंग वर्जीने बाकी अनेक दर्शनवाळा पोतपोताना लिंग छते पोतीका स्वभावने प्रगट करी विभावने उछेदी सिद्ध थया तेने अन्य लिंग सिद्ध कहीए. ए वल्कल चिरि आदि आर्य अनार्य क्षेत्रथी सिद्ध थया. ए बारमो भेद कह्यो. हवे गृहस्थलिंग सिद्ध ते गृहवासमां रह्या थका संसार त्याग नाम नहीं धरावतां पोतानुं तत्व प्रगट करीने सिद्ध थया, ते मरुदेवा प्रमुखने गृहस्थलिंग सिद्ध कहीए. ए तेरमो भेद कह्यो. हवे एक सिद्ध ते एक समये एक सिद्धि वरे तेने एक सिद्ध कहीए. ते गजसुकमाल आदि जाणवा. ए चौदमो भेद कह्यो. हवे अनेक सिद्ध ते एक समये जघन्यथी एकसो ने त्रण अने उत्कृष्टा एकसो ने आठ सिद्धि वरे, त्यां सिद्धि वरवानो सिद्धगति आश्रीने छ मासनो विरह काळ पडे; वळी जघन्यथी सत्ताणुं अने उत्कृष्टा एकसो ने बे एम बे समय लागट सिद्धि वरे तो छ मासनो विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी पंच्यासी अने उत्कृष्टा छन्नु एम त्रण समय लागट सिद्ध वरे तो छ मासनो विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी त्होतेर अने उत्कृष्टा चोरासी एम चार समय लागट सिद्धि वरे तो छ मासनो विरहकाळ पडे, वळी जघन्यथी एकसठ अने उत्कृष्टा बोतेर एम पांच समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो छ मासनो

विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी ओगणपचास अने उत्कृ-
ष्टा साठ एम छ समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो छमास-
नो विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी तेत्रीस अने उत्कृष्टा
अडताळीस एम सात समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो छ
मासनो विरह काळ पडे, वळी जघन्यथी बे अने उत्कृष्टा
बत्रीस एम आठ समय सुधी लागट सिद्धि वरे तो छ मा-
सनो विरह काळ पडे. एम सिद्ध गति आश्रीने छ मासना
विरह काळनो अधिकार कह्यो, वळी तेथी ओछो अधिको
विरह काळ सिद्ध गतिये सिद्धि वरवानो पडे छे, ते अधि-
कार घणा प्रकारे छे, ते सिद्धांतथी वा बहुश्रुत गीतारथना
मुखथी निर्णय करजो. ए अनेक सिद्धनो पंदरमो भेद कह्यो.
हवे सिद्धपदनी साधना करवा माटे खेतरमां वृक्षनो दृष्टांत
कहे छे. जेम जमीन छे तेम संसारी जीवो छे, ते जमीनमां
जेम खारो पाट छे तेमां बीज वावीए ते वृथा जाय अंकु-
रो फुटे नहीं; तेम अभवी जीवो छे, ते धर्म करणी तो करे
परंतु समकित पामे नहीं, बोधिबीजरूप अंकुरो न फुटे,
तेनुं धर्म साधन, समकितादि गुण निष्पन्न करवानी अपे-
क्षाए वृथा छे. हवे खारा पाटना अभावे बीजी पृथ्वी घणी
छे तेम भवी जीवो पण घणा छे, त्यां सत्य उपदेश रूप बीज
वावीए तो अंकुरो फुटे, परंतु ते क्षेत्रनी जमीनने अवश्य
वाड करवी जोइए, ते अहींआं भवी जीवने कायादियोगथी
अशुभ कृत्यनुं संकोचन करी शुभ प्रवृत्ति करवी, एटले अ-
विरति परिणामने टाळीने विरति परिणामनुं आदरवुं;

तेने वाम समजवी. हवे क्षेत्रमां बीज वाववुं छे ते बीज तो जे सद्गुरुनो सप्त नयाश्रित स्याद्वाद गर्भित द्रव्य पर्याय नी वर्णनारूप उपदेश वाणी तेनुं श्रवण करवाथी मननकरवाथी अने परिणाम पामवाथी, जो हेय उपादेय बुद्धि घटमां प्रगट थाय, तो त्यां निजपरनो भेद पडे छे, घटमां ज्ञान आवे छे, कायाथी आत्मा जूदो भासे छे, अने आत्माथी काया जूदी भासे छे. मन वचन अने कायाने हेय एटले तजवा योग्य छोडवा योग्य जाणे छे, अने ए त्रण योगना वेपारमां अहंकर्त्तापणुं पोते माने नहीं. जडनो कर्त्ता जड छे अने आत्मा तो जाणवा देखवा रूप चेतन कार्यनो कर्त्ता छे, एम बीजा अपूर्वकरणने भावतो थको वर्त्ते, त्यां बाह्यदृष्टि टळी जाय अने अंतर दृष्टिये प्रवृति करे, स्वस्वरूप रमण करे, अनुभव करे त्यां वस्तुगते वस्तुपणुं समजे, विभाग वहेंचण करी जाणे, तेथी जीव बीज फाटीने बे फाड पोताना सहज वीर्यनी स्फुरणाये ऋजुसूत्रनये वर्ततां थाय, तेने भेद ज्ञान कहीए छीए. त्यां हवे अंकुरो फुटवानो संभव छे, परंतु अंकुरो फुटवामां यथास्थित मनजोगनी स्थिर वृत्ति जोइए, त्यारे परिणतिए अंकुरो फुटे, परंतु छोड थयो नथी, तेम पत्र पण आव्यां नथी. ए तो क्यारे आवे? के ग्रंथि भेद शब्द नयप्राप्तिये करे त्यां शुद्ध परिणतिनो अंश प्रगट थाय, तेनुं नाम समकितनो छोड छे, तेने सम्यक्ज्ञानअने सम्यक्दर्शन रूप तो बे पत्र आवे, ते छोडने वृद्धि करवी त्यां दृढ वाडनी मजबुती जोइए, नहीं तो व्याघात लागवाथी ए वृक्षनी हानि थवानो.

संन्नव आवे, तेम करतां अनुक्रमे वृक्ष वृद्धि पामतुं पामतुं व्याघातना अजावे वाफीआ वहार नीकळी जाय त्यारे विघ्ननो अजाव थाय, ते क्षायक समकित ज्यारे आत्मा पासे, त्यारे वृक्ष वाफीआ वहार नीकळ्युं एम कहीए; परंतु हजी फळ्युं नथी, ते फळ तो क्यारे आवे? के ज्यां सुधी ए वृक्ष क्षयोपशम जावरूप पृथ्वीनो रस खेंचीने पोताना थडपणे, शाखापणे, प्रतिशाखापणे, पत्रपणे इत्यादि पणे परिणमावे ठे त्यां सुधी तो फळ आववानुं नथी; परंतु फळनी योग्यतापणे ए रस परिणमे ठे, ते परिणमन ओलुं करीने प्रथम तो फूलरूपे परिणमावे. एटले आठमा गुणठाणे जइने श्रेणी मांमे तेने फूल समजवुं, ते श्रेणी बे प्रकारनी ठे; एक उपशम श्रेणी अने बीजी क्षपक श्रेणी, ए बन्ने श्रेणीए परिपूर्ण पुष्पनी घटा फुली विकस्वरपणाने पामे ठे; परंतु उपशम श्रेणीवाळाने मोहनीय कर्मनी सर्व प्रकृति आत्मसत्ताए साबित रही ठे, ते प्रकृतिओनो, उपशम जावनी स्थितिनी पूर्णताए उदय थाय, ते जोगे कवानो पवन लागे ठे, तेथी फूलमां मगीओ थइने खरी पके ठे, ए फळ बेठुं पण वृद्धि पामतुं नथी; अने क्षपक श्रेणीवाळाने तो व्याघात विघ्ननो संन्नव नथी, माटे फळ बेसे ठे अने वृद्धि पामे ठे, ते फळ बेठुं एम क्यारे जाणीए के दसमा गुणठाणा अंते मोहनीयकर्मनो ध्वंस करी आत्मप्रदेशथी मोहनीय कर्मनी प्रकृतिना परमाणुदलनो घेरो जते त्यां फळ बेठुं एम कहीए. ते फळ ए शुं ठे तो वीतराग जाव क्षीणमोह बारमुं गुणठाणुं-

पणुं थयुं, ते आरोपित विपर्यासपणुं छे, कारण के श्रद्धा भ्रष्ट थइ छे पण कंइ ग्रंथि भेद कीधो छे तेथी तो भ्रष्ट थयो नथी; ए तो द्रव्य समकितपणे भावित छे, तेने तो ज्यारे त्यारे विशुद्ध भावनी योग्यताए उपरनुं दळ कार्मणवर्गणानुं मिथ्यात्वना पुद्गलनुं अळगुं थशे, त्यारे पोते भाव समकिति छे; परंतु मिथ्यात्वना भावे परिणाम पाम्यो तेथी तेने आरोपित भाव जीव कहीए. हवे अनारोपित भाव जीवने गवेखे छे. चोथा समकित गुणठाणाथी मांडीने गुणवृद्धिपणे उपरना गुणठाणाने ग्रहतो अने हेठळना गुणठाणाने छोडतो यावत् श्रेणिगत् बारमुं, तेरमुं अने चौदमुं गुणठाणुं पामी अंते सिद्धि वरे. ए चोथा गुणठाणाथी सिद्ध पर्यंत सर्व जीवमे अनारोपित भाव जीव कहीए; ए द्रव्य भावे जीवतत्व ओळखाव्यो, हवे द्रव्यभाव भेदे संवर तत्वनी ओळखाण कहे छे. प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पांच आश्रवने तजे तेने द्रव्य संवर कहीए, अने विभावने तजी स्वभावने प्रगट करे तेने भाव संवर कहीए. अहींयां कोइ कहेशे के क्रोधादि कषायथी रहीतपणुं ओछाशपणुं थाय, तेने भाव संवर कहीए; ए वात पण वृथा छे, तेनुं नाम भाव संवर नथी. कषायनी ओछाश तो मिथ्यात्व पेहेला गुणठाणे पण थाय, अने उपरना गुणठाणे तो छेज; परंतु कषायनी ओछाश थनां कांइ भाव संवर एकांते कहेवाय नहीं, कारण के मिथ्यात्वी पेहेला गुणठाणाना धणी द्रव्य चारित्र भोगे नवमा ग्रैवेयक पर्यंत देवगतिये जाय छे,

तेमने संज्वलना कषायनो उदय होय तेथी नवमा ग्रैवेयकनी योग्यतानुं पुन्य उपार्जे;परंतु स्वभाव तो तेमने प्रगटयो नथी, माटे कषायनी ओछाश थवाथी निश्चय न थयो के भाव संवर पाम्या, तेनी साक्षी माटे गाथाः—

विरया सावज्जाउ, कसाय हिणा महाव्वय धराविं ॥
सम्मद्दिठि विहुणा, कयावि मुक्कं न पावंति ॥

वळी कर्मग्रंथे पण पेहेले मिथ्यात्व गुणठाणे संज्वलन कषायनो उदय होय एम कह्युं छे. अहीं वळी कोइ कहेशे के रागद्वेषनी ओछाशे भाव संवर कहीए, ते वातनुं पण अनुमान छे. निश्चय नथी, कारण के रागद्वेषनुं ओळखाण करवुं ए तो घणुं कठण छे, एटले रागद्वेषनुं बाह्यथी तो उत्थान कषायपूर्वक उदय परमाणे समजवामां आवे, ए तो कषायना जेवुं समाधान थयुं अने जे परिणतिए रागद्वेष छे, तेना उत्थानने तो जे ज्ञानी पुरुषो अनुभवी होय ते जाणेछे,बीजा न जाणे.ए परिणतिए रागद्वेष जेटलो ओछोथाय, एटलो स्वभाव आत्मानो गुण निष्पन्नपणे प्रगट थाय, तेने भाव संवर कहीए. ते भाव संवर चोथा समकित गुणठाणाथी वृद्धिपणे चौदमा अयोगी गुणठाणा पर्यंत भाव संवर कहीए. ए द्रव्यभाव भेदे संवर तत्व कह्यो. हवे सकाम अने अकाम बे भेदे निर्जरा तत्त्व ओळखावे छे. अकाम निर्जरा तो ग्रंथिभेदना अभावे अनादि संबंधे जीव करतो आव्यो छे, एटले विपाके भोगवीने कर्मथी छुटवुं. वैरागादि

कारणे तथा अशुभना त्यागथी कर्मबंधथी छुटवुं, अने पुनरपि नवो नवो कर्मबंध करवो ए तो अनादि प्रवृत्ति चाली आवे छे; परंतु ग्रंथिभेदनो अवसर पाम्यो नथी अने कर्मथी छुटे छे, बंधाय छे, ए अकाम निर्जरानो पेहेलो भेद कह्यो. हवे सकाम निर्जरा तो ग्रंथिभेद कर्यो त्यांथी जीवने सकाम निर्जरानो कर्त्ता कहीए. ते सकाम निर्जराना बे भेद. एक तो ग्रंथिभेद करी उपशमादि समकित पामीने पाछा मिथ्यात्व गुणठाणे गया, त्यां मिथ्यात्व गुणठाणे रह्या थका निर्जरा करे, ते निर्जराने आरोपित सकाम निर्जरा कहीए. कारण के ग्रंथिभेद कर्या पछी कोइक जीव अनंतो काळ, अनंती उत्सर्पिणि अवसर्पिणि लगे संसार स्थितिए मिथ्यात्व भावे रहे छे. अनंतां कर्मबंधनो कर्त्ता छे, निगोद सुधी पण जइ आवे छे; परंतु एक कोडाकोडि सागरोपम उपरांत अधिक स्थितिनो कर्मबंध कर्त्ता नथी. ए गुण ग्रंथिभेद पूर्वक समकित गुण पाम्या त्यांथी निष्पन्न थयो छे. जेटली स्थिति समकित पामती वखते रही छे, एटली ने एटली स्थितिनां अनंतां कर्मदळ वांधे. मिथ्यात्व गुणठाणे पण स्थिति अधिक न बांधे. वळी ए जीवने जेटलो काळ जाय जेटला भव जाय, ते गणतरीमांथी ओछा थाय छे. कारण के उत्कृष्ट भांगे अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तनी मर्यादामां आव्यो छे, मर्यादा विनानो नथी. जेम सरोवर भरेलुं तो छे पण मर्यादा पाळे करीने बांधेली, ते सरोवरनुं जळ खुटे पण पाळ मर्यादा रहित समुद्र छे तेनुं जळ न खुटे,

तेम अग्रंथि नेदी जीवने कांइ संसार खुटयो एम कहेवाय नहीं, अने ग्रंथिन्नेद करेलो ठे, तेने तो जेटलो काळ जाय एटलो ओठो थाय, अने मुक्ति नजीक थती जाय; परंतु मिथ्यात्व गुणठाणे रह्यो थको कर्मबंधे करी मलीन थाय, माटे तेने सकाम निर्जरा आरोपित कहीए. ए पेहेलो न्नेद कह्यो. हवे वीजो नेद अनारोपित सकाम निर्जरानो, ते चोथा गुणठाणाथी वृद्धि पामतां पामतां यावत् अयोगी गुणठाणाना अंत सुधी अनंती कर्मनी निर्जरा थाय, अने कर्म बंध तो करे नही तेने सकाम निर्जरा अनारोपित कहीए. अहीं कोइ कहेशे के कर्मबंध तो तेरमा गुणठाणा सुधी कर्मग्रंथे कह्यो ठे, एक अयोगी चौदसुं गुणठाणुं अबंधक ठे, अने तमे चोथा गुणठाणाथी अबंधक केम कह्यो ठो? तेनो उत्तर, हे न्नाइ तेरमा गुणठाणा सुधी कर्मबंध कर्मग्रंथे कह्यो ठे. अने सिद्धांतना मते तो दशमा गुणठाणा सुधीज कर्मबंध मान्यो ठे, ए व्यवहार नयना पक्षनुं वचन ठे, अने अध्यात्म पक्षे शब्द नयनी अपेक्षाए तो चोथा गुणठाणाथी अपुनर्बंध कह्यो ठे. एम नय पक्षे सर्व वचन सत्य ठे. नय नय प्रते न्निन्न न्निन्न अपेक्षा ठे. व्यवहार नय ठे ते जोग ग्राही ठे, अने शब्द नय ठे ते उपयोग ग्राही ठे. जोग ठे ते उपाधिन्नेद ठे, अने उपयोग ठे ते समाधि न्नेद ठे, उपाधिने ग्रहण कर्त्ता व्यवहार नय ठे, त्यां कर्मबंध संन्नवे अने समाधिने ग्रहण कर्त्ता शब्द नय ठे, त्यां कर्मबंध न संन्नवे, वळी सारुं जोइए तो अध्यात्म गीताए

आठमी गाथाना उत्तरार्द्धमां कह्युं छे के

शब्द नयै निज सत्ता जोतो इहतो धर्म,
शुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नव कर्म ॥ ८ ॥

अर्थः-शब्द नय जीव पामे त्यारे सप्रविभाग वहेंचे, एटले जीवने स्व शुं छे अने पर शुं छे? तो प्रथम मन वचन अने काया ए त्रण जोग, वळी कायाने विषे पांच इंद्रि, ते जीवने पर छे, अने तेमां व्यापकपणे जाणग गुण लक्षणे चेतना परिणाम पामीने रही छे, ते स्व छे, एटले जाणग चेतना गुण ते जीव पोते छे परंतु संगांगीपणे परने भजे छे, ते विभाग व्हेंचण थतां परने भजवुं बंध थाय, अने त्रणे जोगथी, वळी पांच इंद्रिथी पोतानी चेतनाने पलटावी तद्गत परिणमावतां स्व स्वरूपने भजे अने समाधि पामे त्यां उपाधि अळगी थाय. निज सत्ता जोतो कहेतां त्यां पोतानी आत्मसत्ताने जोतो एटले वस्तुगत भावनो उपयोग करे त्यां वस्तुगते ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्यादि लब्धि अनंती अनंती अनादि संबंधे सत्तागत कारणरूपे पिंडपणे रहेली, ते नजरे आवी, उपयोगे निहाळी, दृष्टि प्रत्यक्ष करी, त्यारे इहतो कहेतां ए वीर्यादि लब्धिने व्यक्तिभावे प्रगट करी दान, लाभ, भोग, उपभोग करवाने रसीक थयो थको चाहना करे छे, इच्छे छे. ए लब्धिनुं पामवुं एज धर्म कहेतां मारो धर्म छे, वळी हुं केवो छुं तो शुद्ध कहेतां निर्मळ, एटले कर्मरूप मळ थकी रहित. वळी अरुपी कहेतां वर्णादि पुद्गलदशाना रुप थकी रहित, अने चेतन कहेतां ज्ञानादि

चेतनारूप लक्षणे करीने सहित, एम अतींद्रिय स्वरूपने अनुभवतो थको, समभावे वर्त्ते त्यां अणग्रहतो नवकर्म कहेतां चेतन कर्मदळ परमाणुंने लेवापणे अणग्रहतो कहेतां शुभाशुभ आश्रवरूपे पण ग्रहे नहीं, एम कह्युं त्यां कर्मबंध केम संभवे, अर्थात् न संभवे, पण अनंती निर्जरा थाय, ए वात सत्य छे. गाथा ॥ ८ ॥

इण परें शुद्ध सिद्धात्मरूपी, मुक्त परशक्त व्यक्तअरूपी ॥ समकिती देशविरति सर्वविरति, धरे साध्यरूपे सदातत्व प्रीति ॥ ९ ॥

अर्थः—इण परें कहेतां पूर्वे गवेख्यो तेवो, वळी केवो छे तो शुद्ध कहेतां कर्म आवरण लेपथकी रहित, वळी केवो छे तो सिद्धात्मरूपी कहेतां द्रव्यास्तिक नय पक्षे जीव, सत्ताए सिद्ध समान अरूपी छे ते पर्यायास्तिक नये उपयोग करतां अनुभवरूप भासनमां आवे छे, स्वस्वरूप रमणीपणे अनुभवाय छे. अनुभव भुवने भावसूर्य ज्ञानभानु उदय पाम्यो छे, अनंतो प्रकाश तेजोमय खुल्लो आकाश, प्रयुक्त सपाट बगीचो छे, आमो पडदो पण नथी, समाधि स्थान छे, अहीं पोतानो आत्मा शिव स्वरूप छे. मुक्तपर कहेतां पर एटले अनंती कर्मनी वर्गणाओ आत्म प्रदेशे लागेली, तेथी मुक्त कहेतां आत्मा मुकाय छे, एटले छुटे छे, निर्जरे छे. त्यां शक्तव्यक्त अरूपी कहेतां अनंता गुणपर्याय पोतानी आत्म सत्ताने विषे अनादि संबंधे शक्तिभावे तिरोभावि-

पणे रहेला ते, व्यक्त कहेतां व्यक्ति जावे अरुपीपणे प्रगट थता जाय छे, एम ज्ञासन रमण कोण करे छे ? तो समकिती ते चोथा गुणठाणाना जीवो ने देशविरति ते पांचमा गुणठाणाना जीवो, अने सर्व विरति ते छठा गुणठाणाथी मांडीने उपरना स्थानके वर्त्तवावाळा ते महात्मा सर्वे. धरे साध्यरुपे कहेतां शब्द नयना ग्राहक थइने छती पर्याये रहेलो धर्म तेने साध्यरुपे एटले उपयोगे करीने ध्यानगत सदा कहेतां आंतरा रहितपणे चिंतवे, अनुजवे, तत्वप्रीति कहेतां शुद्धात्म तत्वने न्नेद अन्नेदरुपे चिंतवी अनुजवीने सामर्थ्य पर्यायरुपे अन्नेदता करे त्यां कर्मबंध न संजवे. वळी जसविजयजी उपाध्याय कृत अध्यात्म सार ग्रंथे बीजा अधिकारे श्लोक

अपुनर्बंधकाद्याव, गुणस्थानं चतुर्दशं ॥
क्रमशुद्धि मति स्तावत्, क्रियाऽध्यात्म मयी मता॥४॥

ए श्लोकमां पण चोथा गुणठाणाथी अपुनर्बंध कह्यो छे परंतु शब्द नयनी प्राप्तिना अन्नावे मिथ्यात्वी थको जीव कर्म प्रत्ये बांधे, ते अधिकार हवे अध्यात्म गीतानी साक्षीये कहे छे.

काळ अनादि अतित अनंते जे पररक्त ॥
संगांगि परिणामे वर्त्ते मोहाशक्त ॥
पुद्गल न्नोगे रिझ्यो धारे पुद्गल खंध ।
परकर्त्ता परिणामे बांधे कर्मना बंध ॥ १२ ॥

अर्थः—"काळ अनादि अतित अनंते जे पररक्त" कहेतां, अतित एटले गयो काळ, तेपण ठेआरहित ठे केवळीना वचने काळनी आदि नथी, माटे अनादि संबंधे जीवने पर पुद्गलादि विज्ञाव दशाने विषे रक्त परिणाम वर्त्ते ठे, ते अनादि संबंधे जीवने निगोद गति जाणवी. त्यां जीवे अनंतां पुद्गल परावर्त्त कर्यां, अनंतां फुःखःसह्यां, ते शेणे करीने ? तो कहे ठे के संगांगी परिणामे वर्त्ते, मोहासक्त कहेतां संगांगी एटले जीवे कर्यो अन्य संग, त्यां मोहे आप्युं निज अंग तेथी करीने जीव पोतानुं अंग अतींद्रिय स्वरूप तेने जूल्यो अने पर वस्तु ते नदारिकादि काया तेने मोह वशे आसक्तिये पोतानी मानी अने तेना स्पर्शआदि जोगमां रीज्यो, एटले जेम जेम पुद्गलना विषय ज्ञोग मिले तेम तेम जीवने अधिक रीक नपजे, वल्लज लागे एज परिणतिए सरागता ठे, तेने अशुद्ध परिणति कहीए ठीए, तेथी एटले रागद्वेषनी चीकाशे करीने; "धारे पुद्गल खंध" कहेतां पुद्गलना खंध ते कार्मण वर्गणाना, अनंत प्रदेशी खंध प्रत्ये आकर्षिने एटले आश्रवरूपे खेंचीने मेळववा मांड्या, अने तेनी वांछारूप परिणाम वृत्तिए चेतन परनो कर्त्ता थयो थको ज्ञानावर्णादि आठे कर्मनी वर्गणाउ ते आत्माना प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, ऐक्यतापणे बांधे. एम निगोदादि स्थावर गतिमां अव्यक्तपणे जाणवुं. ॥१२॥

बंधक वीर्यकरणे नदेरे

विपाकी प्रकृति ज्ञोगवे दल विखेरे ॥

कर्म उदयागता स्वगुण रोके
गुण विना जीव भवोभव ढोके ॥१३॥

अर्थ—"वंधक वीर्य करणे उदेरे" कहेतां जे बळ वीर्य शक्तिये नवा नवा कर्मनो वंध करवापणे प्रवर्त्ते,ते वीर्यने वंधक वीर्य कहीए, अने करणे कहेतां स्थावर गतिमां एक स्पर्श इंद्रि अने विकल त्रिकमां वीजी रस, त्रीजी गंध अने चोथी चक्षु साथे चार इंद्रि; अने पंचेंद्रि असन्निमां श्रोत इंद्रि साथे पांचे इंद्रि, अने सन्नि पंचेंद्रिमां नोइंद्रि जे मन तेना साथे इंद्रि नोइंद्रि मळी ए छने करण कहीए. अने उदेरे एटले ते इंद्रि नोइंद्रिनी प्रेरणाए करीने "विपाकी प्रकृति भोगवे दळ विखेरे," कहेतां शुभाशुभ विपाकने आपनारी पूर्व वंधनी कर्म प्रकृति आत्म सत्ताए रहेली उदय काळ पामीने वा उदिरणा करवे करीने उदय आवे तेने भोगवीने, 'विखेरे' एटले ते कर्मप्रकृति दळने आत्म सत्ताथी खेरवे, अने भोगववुं कह्युं तेमां जे इष्टानिष्टपणुं अनुकुळ प्रतिकुळपणे रागद्वेषपनुं परिणमवुं होय, ते रसे करीने पुनरपि नवा नवा कर्मनो वंध करे एम समये समये चेतन सात आठ कर्म वांधे छे. अने ए, "कर्म उदयागता स्वगुण रोके," कहेतां उदयमां आवे, एटले ज्ञानावरणीना उदय थकी ज्ञान गुण रोकाय; दर्शनावरणीना उदय थकी दर्शन गुण रोकाय, वेदनी कर्मना उदय थकी अव्यावाध सुख रोकाय, मोहनी कर्मना उदय थकी समकित तथा चारित्र ए वे गुण रोकाय, आयुष्य कर्मना उदय थकी अक्षय स्थिति रोकाय, नाम

कर्मना उदय थकी अरूपी गुण रोकाय, गोत्र कर्मना उदय थकी अगुरुलघुगुण रोकाय, अने अंतराय कर्मना उदय थकी व्यवहारे क्षयोपशम भावनी तथा घातिकर्म प्रकृतिनी सत्ताथी निश्चय क्षायकभावनी दानादि पांच लब्धि गुण रोकाय. एटले आत्माना उपर कह्या ते अष्ट गुण ढंकाय, त्यारे व्यक्तिभावनी अपेक्षाए, "गुण विना जीव भवोभव ढोके" केहेतां गुण विनानो जीव एटले वस्तुगत भावना बोधने अभावे जड जेवो, अने समकितना अभावे अहं ममत्वी, वळी चारित्रना अभावे चपळ चित्तवाळो, कर्मतिनो प्रेर्यो थको आ इष्ट दोहट चित वृत्तिये आर्त्त रौद्र ध्याननो कर्त्ता एम दुर्गुणग्राही अने सद्गुण रहित थयो, ते जीव 'भवोभव ढोके' एटले चार गतिरूप अघोर वनमां जन्म मरणनी अटुट परंपरा पामे, तेनुं कारण आगली गाथाए कहे छे. ॥ १३ ॥

आतम गुण आवर्णे न ग्रहे आतम धर्म,
ग्राहक शक्ति प्रयोगे जोडे पुद्गल सर्म्म ॥
परलाभे परभोगने योगे थाये परकर्त्तार,
एह अनादि प्रवर्त्ते वाधे पर विस्तार ॥ १४ ॥

अर्थ—"आतम गुण आवर्णे न ग्रहे आतमधर्म" केहेतां आत्माना रत्नत्रयादि अनंता गुण छे, ते गुणो कर्म आवरणे करीने आच्छादित थया, गुण गुण प्रत्ये आवरण लाग्यां, ए आवरणनुं ज्यां सुधी आत्म प्रदेशे अस्तिपणुं छे, त्यां सुधी गुण प्रगट करवामां विघ्न छे, तेथी आत्मानी ग्राहक शक्तिए

पोताना ज्ञान दर्शनआदि गुणरूप धर्मने पोते ग्रही शकतो नथी, निजःगुणे गुणी थतो नथी. त्यारे आत्मा पोतानी ग्राहकता शक्ति प्रयोगे शुं करे छे? तो "जोमे पुद्गलसम्मं" कहेतां सुखनुं कारण धन धान्यादि पुद्गलिक ऋद्धिने उद्यमे करीने उदय प्रमाणे जोमे एटले मेळवे, "परलाभे" कहेतां एम धन धान्यादि पर वस्तुना लाभे, एटले मळवाथी लाभ मान्यो, "पर भोगने योगे" कहेतां ए परवस्तु धन धान्यादि, तेना भोग संयोगे निजपरने शुभाशुभ दान देइने दान मान्युं, वळी काया संयोगे पांच इंद्रिना उदय प्रमाणे अनुकुळ वा प्रतिकुळ जे विषय सेववामां आवे तेने भोग मान्यो अने उपभोग ते जे विषयने वारंवार भोगवीए तेने उपभोग मान्यो, अने ए दानादि चार लब्धि कही तेने विषे बळवीर्य जे आत्मानी उपयोगादि शक्ति तेने वापरी एटले फोरवी, ते कारणे ए दानादि पांचे लब्धिनुं वस्तुगते स्वस्वरूप अनुयायीपणुं तेथी जमतापणेजीव भुल्यो, एटले पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थयो त्यारे पर अनुयायीपणे अवळी रीते उपरकही तेम पांचे लब्धिने फोरवतो थको, "थाये परकत्तार" कहेतां जीव पोते परनो कर्त्ता थायछे अहींआं कोइ पूछे के जीव परनुं कर्त्तापणुं कये काळे पाम्यो? तेना उत्तरमां कहे छे के, "एह अनादि प्रवर्ते" कहेता जीवने परनुं कर्त्तापणुं अनादि संबंधे प्रवर्त्ते छे, एवी रीते अवळी प्रवृत्ति थइ तेथी, "बाधे पर विस्तार" कहेतां आत्माना असंख्याता प्रदेशछे, अने एक एक प्रदेश प्रत्ये अनंती अनंती ज्ञानावर-

णादि आठे कर्मनी विस्तारे वर्गणाउं लागी छे तेथी करीने संसार खुटतो नथी उंगे थतो नथी. ॥ १४ ॥

एम उपयोग वीर्यादि लब्धि ।
परभाव रंगी करे कर्म वृध्धि ॥
परदयादिक यदा सुह विकल्पे ।
तदा पुन्यकर्म्म तणो बंध कल्पे ॥ १५ ॥

अर्थ--"एम उपयोग वीर्यादि लब्धि कहेतां," उपर पांच लब्धि अवळी प्रवृत्तिये कुक्षयोपशम योगे जडभावमां विभाव प्रवृत्तिये कही, तेवी रीते प्रवृत्ति करतां, "परभाव रंगी" कहेतां आत्माने पुद्गल परवस्तु छे, तेने विषे रागद्वेष परिणमवारूप विभाव रंग दढपणे बेठो. ते कारणे, "करे कर्म वृध्धि" कहेतां एक शुभ कर्मनो बंध करे, अने बीजो अशुभ कर्मनो बंध करे, एम शुभाशुभ बे भेदे कर्मबंध करवानो कह्यो. हवे तेना हेतु देखाडे छे."परदयादिक यदासुह विकल्पे" कहेतां जे समये जीवोने त्रस अने स्थावर परजीवनी दयाना परिणाम उपजे, वळी आदि शब्दे सत्य वचन बोले, चोरी करे नहीं, स्त्रीनो त्याग करे, परिग्रहनो त्याग करे, अने रात्रिभोजन न करे; एम पांचे द्रव्य आश्रवने तजी अने द्रव्य संवरने भजी विरक्त चित्ते वर्त्ते, तदा कहेतां ते समये, पुन्य कर्म तणो कहेतां अघाति कर्मनी शुभ प्रकृति तणो, बंध कल्पे कहेतां कर्मबंध करवो कल्पे, ॥ १५ ॥

तेहीज हिंसादिक द्रव्याश्रव करतो चंचल चित ॥
कटुक विपाकी चेतन मेळे कर्म विचित्त॥

आतम गुणने हणतो हिंसक भावे थाय ॥
आतम धर्मनो रक्षक भाव अहिंस कहाय ॥ १६ ॥

अर्थः—"तेहीज हिंसादिक द्रव्याश्रव करतो चंचळ चित्त" कहेतां, उपरनी गाथाए कह्युं तेथी अवळी रीते एटले मननी चळाचळ वृत्तिये, दुर्ध्यानगत माठा अध्यवसाये. मिथ्यात्व भावे, अनाउपयोगे, हिंसादि कारणे वर्त्ततो ज्ञानावरणादि द्रव्य आश्रवने मेळवतो थको अने रागद्वेष भाव आश्रव वृत्तिये कर्म बांधतो थको, कटुक विपाकी कहेतां जे कर्मबंध कीधो, ते उदयकाळ पामीने चेतन कहेतां आत्माने केवा विपाक आपशे ? तो कहे छे के अति कटुक दुःखे परवशपणे भोगव्या जाय, पण स्ववश वृत्तिये व्यक्तपणे तो भोगवाय नहीं तेवा, वळी केवा ? "के मेळे कर्म विचित्त" कहेतां विचित्र प्रकारनी वेदनानो हेतु जे कर्मप्रकृति दळ ते प्रत्ये आत्म सत्ताये वृद्धिपणे मेळवे; त्यां, "आत्मगुणने हणतो हिंसक भावे थाय" कहेतां एम अशुभ कर्म प्रकृतिनी आत्म सत्ताये वृद्धि थाय त्यां नियमा आत्माना क्षयोपशम भावे चक्षु अचक्षु दर्शन, उपयोग वीर्यादि लब्धि गुण चेतना, ते हणाइ जाय, अने चेतन स्थावर गतिए यावत् साधारण पणुं पामीने अव्यक्तपणे जडताने अनुभवे, तेने भाव हिंसा कहीए. माटे हे भवभीरू भाइओ ! तमारे जो मोक्षना सुखनी अभिलाषा होय, अने संसारथी भय पाम्या हो, तो सद्गुरुनो विनय करी वस्तुगते वस्तुपणाना शोधनी तेमनी पासे याचना करो. ए गुरु महाराजा कृपाळु

होय, ते दया लावीने आपणने बोधि बीजरूप समकित रत्न पमाडशे, अने हेय उपादेय बुद्धि प्रगट करावी आपशे. पछी तमारे हेय वस्तु ते योग प्रवृत्तिथी अळगा थतां एटले पांच इंद्रिना विषयनुं तथा चपळ मनोवृत्तिनुं अवलंबन पणुं तजी देइने अंतर्वृत्तिये स्थिरपणे वर्त्ततां स्वस्वरूप उपयोग भावे उपादेय जाणी तेमां रमण करो, अनुभव करो, आस्वादन करो, समभावे वर्त्तो त्यां आत्म गुण रक्षण योगे अनंती निर्जरा थाय. ए गुणरूप धर्म आत्मानो छे; एम आत्म धर्मनो रक्षक तेज " भाव अहिंसकहाय " कहेतां तेने भाव दयावंत कहीए ॥१६॥

आत्मगुण रक्षणा तेह धर्म।
स्वगुण विध्वंसणा ते अधर्म॥
भाव अध्यातम अनुगत प्रवृत्ति।
तेहथी होय संसार छिति॥१७॥

अर्थ-"आत्म गुण रक्षणा तेह धर्म" कहेतां, धर्म ते शेने कहीए ? तो के उपरनी गाथाना छेला पदना अर्थमां हेय उपादेय बुद्धि कही, तेने पाम्यां आत्म गुणनुं रखोपुं थाय; एटले आत्माना ज्ञानादि गुणनी घात कर्त्ता अशुद्ध निमित्त पुद्गल संयोग छे; अने अशुद्ध उपादान, अशुद्ध चेतना, परपुद्गलनी ग्राहकता शक्तिये ममत्व भावनो कर्त्ता आत्मा, तेज पोताना गुणनो घात कर्त्ता थाय; तेने तजावनार तो ज्यारे सद्गुरु पुन्योदय जोगे मळे अने तेमने करु-

णा आवे, तो ए निमित्त कारणमां गणीए, अने तेमनो जे स्याद्वाद गर्भित द्रव्य पर्यायनी ठणनारूप उपदेश आपणे श्रोताजनो श्रवण करी, मनन करीने, परमार्थपणे परिणमावी शकीए, एटली क्षयोपशम भावनी सहायता भव्यत्वता योगे पोतानामां बनेली होय तो, तेने उपादान कारणमां गणीए, तेथी अंतर्गत गुण पर्यायादि आत्म सत्ताये शक्ति भावे कारणरूपे अनादि संबंधे पिंडरूपणे रहेली जे गुण संपदा तेने सहज वीर्य शक्तिनी स्फुरणाए शुभाशुभ क्रिया आश्रव बंधनुं कारण जाणी तेने तजी, अने सहज संवरने भजी व्यक्ति भावे शुद्ध परिणामिक भावनी परिणमन शक्तिये कार्यरूपे परिणमावी शकीए. तेना बे भेद, एक देशथी अने बीजो सर्वथी. देशथीकार्य ते ग्रंथिभेद करीने समकित पामे, अने सर्वथीकार्य ते मोहनी आदि घाति कर्मने हणीने केवळ ज्ञान पामे, तेमां जे देशथी कार्य करे तेने स्वानुभव बळे घटअंतर वृत्तिये यथास्थित वस्तुनुं स्वरूप उपयोग गोचर अशंकितपणे थाय. श्रद्धा स्थिर थाय अने त्यां हेय उपादेय बुद्धि प्रगट थाय. उपादेय स्वरूप ते पोताना आत्मानुं परमात्म स्वरुप तेज अनुभववा आदरवा योग्य, बाकी सर्व वस्तु हेय केहेतां छांडवा योग्य एम जाणी पोते पोताना गुणगत उपयोग भावे लीनयको वर्ते, त्यां पोताना गुणनुं रक्षण थाय, तेनुं नाम स्वदया अने तेज सम्यकत्व धर्म छे. हवे "स्वगुण विध्वंसणाते अधर्म", कहेतां आत्माना सम्यक्त्व ज्ञानादि गुणोनुं घात कर्त्ता एक मिथ्यात्व छे ए·

टले अनंत पुद्गल परावर्त्त संसार स्थितिनो हेतु, वळी उत्कृष्ट स्थितिए कर्मबंध करवानुं कारण, वळी अजाणपणे पर वस्तुनुं ग्रहण थयुं होय तेने रोके नहीं, खराखोटानी परीक्षा नहीं, जाणीने खोटानुं खरुं करवानो दृढ ममत्व, जिन वचनमां शंका, अने अजाणपणे विपरीत श्रद्धा, पर वस्तुने विषे पोतापणानी बुद्धिये अहंममत्वनो कर्त्ता, निध्वंस परिणाम वृत्ति, कूडकपटनुं स्थान, सम्यक्त्व रत्नादि गुणोनो चोर, विषय भोगमां आसक्त, परिग्रहमां अतृप्त, संसार भ्रमणनो स्थंभ, चारित्ररायनो महा शत्रु, इत्यादि दुर्गुणोनो पटारो, ते अनादि मिथ्यात्व छे. तेना छतां धर्म कर्यो धर्म थाय नहीं. एटले कंचन कामनी आदिनो त्याग करीने दिक्षा ले, तो पण संयम गुण न आवे. सम्यक्त्व गुणना अभावे असंयमी थको संसारनी अतिवृद्धि कर्त्ता थाय. कदाच नव पूर्व भणे तो पण मिथ्यात्व छतां अज्ञानी कहेवाय. आत्माना सर्व गुणोनो घाती एक मिथ्यात्वशल्य छे, तेने अधर्म कहीए. हवे "भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति" केहेतां शब्द नय पक्षे चोथा समकित गुण स्थानकनी प्राप्ति थइ त्यांथी आत्मा विषम भावने विषे समदृष्टिये जोनारो ज्ञानी थयो. उदयिक भावे जे वस्तुनी प्राप्ति थइ होय, तेने एकांते वस्तुपणुं माने नहीं, वस्तुना स्वभावने वस्तु माने, विषयथी विरक्तपणे उदासी भावे वर्त्ते, पर वस्तु परपणे भासे, पर वस्तुने विषे अहंकर्त्तापणुं जीवनुं न माने, जीव पोताना स्वभावे जाणवा देखवादिक स्वगु-

णनो कर्त्ता एम समजे; वळी आत्मा केवो ठे ? तो स्फटिक रत्न समान निर्मळ, कर्म लेप थकी रहित निर्लिप्त शक्ति नावने आवरण न लागे ते अपेक्षाए पोतानो आत्मा अनादि सिद्ध ठे, वळी केवो ठे तो अरूपी ठे, एटले रातो, धोळो, लीलो, पीळो अने श्याम ए पांच वर्ण, कडवो, कषायलो, तीखो, खाटो, अने मधुरो ए पांच रस, सुरजी अने डुरजी ए बेगंध, सुकोमळ, वरसट स्निग्ध, रुक्ष, हळवो, जारे, शीत, अने उष्ण ए आठ स्पर्श एम ए वीश गुणे करीने रहित ठे, माटे आत्माने अरूपी कहीए. वळी केवो ठे ? तो सामान्य विशेष उपयोग लब्धिए करीने सहित, घटनी अंतर वृत्तिये प्रकाशनो कर्त्ता, ज्ञानानंदी, स्वस्वरूप रमणी, स्वानुजवी, सहज विलासी, पोतानी ऋद्धियेज तृप्त, धर्म ध्यान शुक्ल ध्याननो ध्याता, इत्यादि "जाव अध्यात्म" कहेतां अद्वैतजाव एटले द्वैत जे शुजाशुज पुद्गलिक जाव ते थकी रहित, एक शुद्धात्म जाव तेज "जाव, अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति" कहेता शुद्धात्म जाव तद्गत सहज वीर्य शक्ति स्फुरणाये प्रवृत्ति एटले शुद्धात्म जावमां रमण करवुं, अनुजववुं. आस्वादन करवुं, परिणाम पामवुं. "तेहथी होय संसारछित्ति" कहेतां शुद्धात्म स्वरूप ते संग्रह नय पक्षे कारण रूपे अनादि संबंधे गुण पर्यायादिना पिंडरूप आत्म सत्ताये रहेलु परंतु ते स्वरूपने चेतन मिथ्यात्व जावे परिणमतां चूकयो अने पुद्गल परमाणुथी बनेली उदयिक जावे इंद्रिय स्थानरूप जे काया तेने जोत मा-

न्यो, ए नूल पण अनादि चाली आवे छे, ते काळ लब्धि पामीने नव्यत्वता योगे क्षयोपशम नावनी सहायता मळवा थकी अने उदयिक नावनी अपेक्षाये सद्गुरु आदि हरकोइ कारणनी मुख्यताए जीव शब्द नये पोतिका शुद्धात्म स्वरूपने पाम्यो, त्यां ए नूल टळतां वाह्य दृष्टि टळी गइ तेनी साथे अज्ञान दशा रीसाणी थकी नाठी, अने अंतर दृष्टिए ज्ञान लोचन प्रगट थयां, त्यां सद्बोध मित्रनो समागम थयो, तेणे करीने आत्मा उपयोग नावे अनुनव मंदिरमां पेठो. पोतानुं शुद्ध स्वरूप अनिवृत्तिये प्रमुदितपणे अनुनवे परमानंद पामे, तल्लालीन थाय, त्यां रमणिक नूमी, खुल्लो आकाश, प्रथुल सपाट बगीचो, उद्योतमय, जाणे अनेक सूर्य साथे उदय पाम्या होय अने तेथी जेम उद्योतनो पुंज प्रगटे ते दृष्टांते अनुनव नुवन प्रकाशित छे, हाथमां चौधारुं खड्ग छे, अपूर्व खेल खेले, तेनुं नाम स्वस्वरूप रमण; ते अनुपचरित व्यवहार नयथी परिणामिक नावनी प्रसव शक्तिये उपयोगनी विशुद्धिपणे परिणमतां परिणमतां यावत् ते क्षायक नावे परिणाम पामे, त्यां आत्माना प्रदेश प्रदेश प्रत्ये अनंती अनंती घातिकर्म आदिनी वर्गणार्ड रहेली तेनो क्षय थइ जाय. दृष्टांत-जेम काष्टने उधेइ लागे, तेम जीवने कर्म लाग्यां छे, ते काष्टमां काष्ट सत्ताए रहेली दाहक स्वनावमयी अग्नि ते ज्यारे प्रगट थाय त्यारे उधेइनो अनाव थाय, तेम आत्म सत्ताये रहेली क्षायक नावे ज्ञानादि गुण ऋद्धि ज्यारे प्रगट थाय त्यारे मोहनी

आदि कर्मनो अज्ञाव थाय अने कर्मनो अज्ञाव थयो ए-
टले "संसारछित्ति" कहेतां संसार जे चार गतिनुं ज्रमण तेनो
अंत ठेको मनुष्यज्ञवे ज्ञाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति ज्ञान
क्रिया योगे संवर निर्जरा करतां यावत् अयोगि चउदमा
गुणठाणाना ठेला समये कर्म पुद्गल परमाणुदलनो आत्म
सत्ताये अज्ञाव थतां आव्यो त्यां मुक्ति थइ चुकी ए वात
यथास्थित ठे ॥ १७ ॥

इत्यादि अध्यात्मना अनेक ग्रंथो ठे, तेमां जोजो. सर्व
पंक्तितोनी एज बोली ठे के चोथा गुणठाणाथी अध्यात्म
शैलिये कर्म बंध न करे अने अनंती निर्जरा करतां करतां
क्षायक ज्ञावनी लब्धीने पामी अयोगी गुणठाणाना अंते
कार्मण वर्गणा आदिना बंधनथी ठुटे, एटले सिद्धिवरे, त्यां
निर्जरानी पूर्णता कहीए. संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए त्रणे
जीवना गुण ठे, ते जीवथी अज्ञिन्न ठे, जुदा नथी; तेम
कृत्रिम रीते प्रगटता पण नथी. स्वज्ञावे प्रगट थाय माटे
स्वज्ञावनी खप करवी. बाह्य दृष्टिने टाळवी, अंतर दृष्टि
करवी, चळाचळने टाळी स्थिर थइ जवुं. घटनी अंतर वृत्तिये
जागृति करवी, अनुज्ञव करवो; ए स्वज्ञावने प्रगट करवानुं
कारण ते जोगे मोक्ष कार्यने पामीए; एटले चोथा अ-
थवा सातमा गुणठाणाथी तेरमा गुणठाणा सुधी जतां एक
अंतमुहूर्त्त थाय अने आयुष्य जेनुं अधिक नथी. तेतो एक
अंतमुहूर्त्तमा अंतगम केवली थइने सिद्धिवरे ते कर्मबंधतो
न करे, अने अनंती निर्जरा करे; अथवा चोथा गुणठाणेथी

समजाव वृत्तिये शुजाशुजमां नहीं प्रवेश करतां चेतन, चेतन जावमां लीन थइ स्वस्वरूपने जजे, एटले स्वस्वरूप रमणमां अने परस्वरूप अरमणमां वर्त्ते, तीहां कर्मबंध न संजवे, पण अनंती निर्जरा करे ए वचन निश्चयनयनुं यथास्थित छे. पण एम चढता जावे चोथा गुणठाणाथी सातमे आवीने आठमा गुणठाणे जइ क्षपक श्रेणीमांही घाति अघाति कर्म हणीने एक अंतर्मुहूर्त्तमां सिद्धिवरे.एवा तीक्ष्ण उपयोगी जीवो कोइ वीरला होय.सर्वने एवो जाव आवे नही. एवो अपलटण जाव तो जे चरम शरीरी होय तेने आवे, नही तो अंतर्अंतर्मुहूर्त्ते अध्यवसाय पलटाय, ते व्यवहार नयनी अपेक्षाए कर्मबंध संभवे, एटले समजाव वृत्तिए चेतन वर्त्ते, ते अवसरे कर्मबंध न मान्यो, अने सरागताये वर्त्ते त्यां कर्म बंध संजवे, ए अपेक्षाए कर्मनो बंध ज्यां सुधी रागद्वेष..अने मोहने हण्यो नथी, अने शुद्ध परिणति पूर्ण थइ नथी, एटले वीतराग परिणतिनी पूर्णता पाम्या नथी, त्यां सुधी कर्मबंध व्यवहार नय पक्षे मान्यो, ते रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनुं अने मोहनुं उन्मूलन क्षपक श्रेणीनी अपेक्षाए आत्म सत्ताथी दशमा गुणठाणाना अंते थाय त्यांथी सिद्धांतना मते कर्मबंधनो अजाव थयो कहीए, एम नय नय पक्षे जिन्न जिन्न अपेक्षा समजवी, हठ कदाग्रहने तजवो, सरळ वृत्ति राखीने अंतःकरणमां शोध करवो, तदगत परिणाम पामवुं, उपयोग जावे साध्य साधननी अजेदता करवी, त्यां साधननी पूर्णता कहीए, ए हित उपदेश कह्यो.

ग्रंथनी पूर्णताना दोहरा.

आतम सो परमातमा, परमातम सो सिद्ध;
वीचको द्विधा जब टळे, प्रगट लहे निज ऋद्ध. ॥१॥
द्विधा जकता जब टळे, टळे मिथ्या दुखदाइ;
समकित गुण प्रगटे तीहां, लहे ते सुख सवाइ ॥२॥
निज परभेद जिहां तिहां, कहीए ज्ञान विज्ञान;
चेतनता वृद्धि जिहां, क्षय उपशम परधान ॥३॥
किंचित् क्षय उपशम थकी, ग्रंथ रच्यो गुणखाण;
जैन तीरथ निर्णय भलो, ज्ञान पंचमी जाण ॥४॥
जिन आज्ञा रुचि आदर्यो, बहु विध नही एकांत;
नय ज्ञाने रुचि संपजे, स्याद्वाद नही भ्रांत ॥५॥
स्याद्वाद वस्तु धर्ममां, नहीं शुभाशुभ मांहि;
हित अर्थे भवि खप करो, सेवो ज्ञानि उछांहि ॥६॥
जाणो द्रव्य पर्यायने, जाणो जीव अजीव;
उपाधि अलगी करी, निरुपाधि ग्रहो शीव ॥७॥
बाळबोधने कारणे, गुर्जर भाषारूप;
सहज समाधि हेतुए, ग्रहो ज्ञान अनुप ॥८॥
अनुपम अनुभव ज्ञान छे, अरूपि विषय प्रकाश;
स्वरूप रमण घट अंतरे, स्थिर उपयोगे खास . ॥९॥
तत्त्व ज्ञानमय ग्रंथ यह, स्थिर थइ भणशे जेह;
निजपर सत्ता उळखी, समकित लहशे तेह ॥१०॥

ओगणीसत अट्ठावने, त्रयोदशी शनिवार;
फागुण शुक्ल पक्षमां, पूर्ण मनोरथ सार ॥११॥
चार मास दिन आठमे, पूर्ण ग्रंथ परमाण;
अल्प बुद्धि रचना करी, तजशो दोष सुजाण ॥१२॥
मीले जाणने जाण ज्यां, तिहां अधिक प्रमोद;
ज्ञान शीतळ भावे रमे, सहज स्वरूप विनोद ॥१३॥

श्लोक संख्या ३६००,

॥ इति श्री जैनतीर्थ निर्णय ॥

ग्रंथ समाप्त.



श्री

अथ श्री उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल माहात्म्य ग्रंथ लिख्यते.



दुहा.

प्रणमुं पार्श्व जिणंदने, शुद्धातम पद मांहि;
प्रणमतां घट अंतरे, लहो भवि ज्ञान उगांहि ॥१॥
भागे तिमिर पटल तीहां, अनुभव भुवन प्रकाश:
स्वरूप रमण स्थिर भावमां, परमानंद विलास ॥२॥
ग्रंथि भेद करे इहां, लहे समकित महंत;
ए सम अवर दुजो नहीं. इम भाखे सवि संत ॥३॥
ए गुण आवे जीहां तीहां, स्थिर श्रद्धा कहेवाय;
भाव यथारथ जाणवा, मळयो अवसर सुखदाय. ॥४॥
मीलीने क्षेत्र समासनो, बाळ बोध विस्तार;
जोतां अनुभव उल्लस्यो, काल माहात्म्य सार.॥५॥
उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि, काल माहात्म्य नाम;
ग्रंथ रचुं व्यवहारमां, बाळ बोध हित काम ॥६॥
आत्मज्ञान ते बोध छे, जाणे वस्तु स्वभाव;
त्याग कदाग्रह ते करे, हठमतनो नही दाव ॥७॥
हठमत ते मिथ्यात्व छे, जरू दृष्टि शठ भाव;
ज्ञानी एह ग्रहे नहि, ग्रहे वस्तुगत भाव ॥८॥
तदगत आतम ध्यावतां, परमातम सम थाय;
शुक्ल ध्यान ध्यातां थकां, अष्ट करम क्षय जाय ॥९॥

अहीं उत्सर्पिणि अवसर्पिणि काळ माहात्म्यने किंचित् गवेखे छे. उत्सर्पिणि काळे शरीरमान, आयुष्यमान, तथा शाता वेदनी सुखादि वृद्धिपणे चढती स्थितिए होय, अने अवसर्पिणि काळे तेनी हानि एटले पडती स्थितिए होय. ए बेउना प्रत्येके छ छ आरा छे अने तेनुं दश दश कोडाकोडी सागरोपमना काळनुं प्रमाण छे. ते दरेकमां एक एक मळी बे चोवीसीउं थाय छे. ए बे चोवीसीउंना काळने उत्सर्पिणि अवसर्पिणि कहीए. तेनां काळ आश्रीने वीस कोडाकोडी सागरोपम थयां तेने काळचक्र पण कहीए. काळचक्र एटले वखतनुं पैडुं, ते हानि वृद्धि पणे बार आराए करीने अनादि अनंत भांगे फर्या करे छे, ते कारणें तेनुं काळचक्र नाम छे, तेमां प्रथम आ वर्त्तमान अवसर्पिणि काळ गयो अने वळी जाय छे, तेना छ आरानी स्थिती वर्णवे छे. पेहेलो आरो सुषम सुषम नामे चार कोडाकोडी सागरोपमनो, बीजो आरो सुषम नामे त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, त्रीजो आरो सुषम दुषम नामे बे कोडाकोडी सागरोपमनो, चोथो आरो, दुषम सुषम नामे एक कोडाकोडी सागरोपममां बेतालीस हजार वर्ष उणांनो, पांचमो आरो दुषम नामे एकवीस हजार वर्षनो, अने छठो आरो दुषम दुषम नामे एकवीस हजार वर्षनो, ए छ आरा मळी दसकोडाकोडी सागरोपम थाय ते कह्यां. हवे तेनो भाव कहे छे. पेहेलो बीजो अने त्रीजो ए त्रणे आरा मनुष्य अने तिर्यंचपंचेंद्रि ए बे-

उना समुदायने पांच जरत अने पांच ऐरवत ए दश क्षेत्रमां जुगलीआपणे जाय छे. एटले सदाकाळ त्रीस क्षेत्र अकर्मनूमिनां अने छप्पन क्षेत्र अंतरद्वीपनां मळी गाशी क्षेत्र, तेमां तो जुगलीयां छे परंतु अष्ट काळे छन्नु क्षेत्र जुगलीयांनां थाय छे.

सदासर्वदा पांच महाविदेह क्षेत्रनी एकसोने साठ विजयमां जुगलीया पणानो अजाव छे. हवे पेहेलो आरो चार कोमा कोमी सागरोपमनो सुषम सुषम नामे कह्यो, ते काळे मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रिनी आजीविका (निर्वाह) विनाउद्यमे अने विना प्रयत्ने सुखमां ने सुखमां थाय छे, कल्पवृक्ष मनोरथ पूर्वक इच्छा पूर्ण करे छे, वळी इच्छा करतां अधिक पण आपे छे, ते कल्पवृक्ष दश प्रकारनां खेत्र समास प्रकरणमां नीचे प्रमाणे कह्या छे—

तेसिं मत्तंग जिंगा ॥ तुम्यिंगा जोइदीव चित्तंगा ॥
चित्तरसा मणियंगा ॥ गेहागारा अणियगका ॥ए६॥
पाणं जायण पित्तण ॥ रविपद दीवपद कुसुम माहारो
जुसण गिह वज्ञासण ॥ कप्पदुमा दसविहा दिंति॥ए७॥

जावार्थः—तेसिं कहेतां ते कल्पवृक्षोमां मत्तंग के० मत्तरसांग नामे पेहेलो, जिंगा के० भृंगार नामे बीजो, तुम्यिंगा के० तुर्यांग नामे त्रीजो, जोई के० ज्योतिरंग नामे चोथो, दीव के० दीपांग नामे पांचमो, चित्तंगा के० चित्रांग अथवा कुसुमांग नामे छठो, चित्तरसा के० चित्ररसा नामे

सातमो. मणियंगा के० मणितांग नामे आठमो, गेहागारा के० गेहाकार नामे नवमो, अणियग्रका के० अणितांग नामे दशमो ए कल्पवृक्षनां नाम कह्यां ॥ ९६ ॥

हवे ए प्रत्येक कल्पवृक्ष युगलियां प्रत्ये शातावेदनी सुखनी हेतु वस्तु आपे ते कहे छे. पहेलो मत्तरसांग नामे कल्पवृक्ष ते पाणं के० द्राक्ष, खारेक, साकर प्रमुखना मीठ रसे युक्त जळ आपे. बीजो भृंगार नामे कल्पवृक्ष ते नायण के० वासणो आपे. त्रीजो तुर्यांग नामे कल्पवृक्ष ते पीछ्रण के० प्रेक्षण एटले वाजित्र अने वाजित्रोउ सहित नाटक आपे. चोथो ज्योतिरंग नामे कल्पवृक्ष ते रविपह के० ग्रीष्मकाळे वादळ रहित सूर्य तेजे तपे तेथी अधिक प्रकाश आपे, पांचमो दीपांग नामे कल्पवृक्ष ते दीवपह के० चंद्र अने सूर्य करतां अधिक तेजे प्रकाशितपणे ऊगऊगायमान ज्योतिए करी अंधकारने टाळे. छठो कुसुमांग अथवा चित्रांग नामे कल्पवृक्ष ते कुसुम केहेतां पंच वर्णनां ताजां सुगंधीमय पुष्प तथा पुष्पनी माळाउ अने गुच्छाउ आपे. सातमो चित्ररसा नामे कल्पवृक्ष ते आहारो के० मिष्ट भोजन स्वादिष्ट खटरस युक्त आहार आपे. आठमो मणितांग नामे कल्पवृक्ष ते भूसण के० जडित घरेणां एटले दागीना आपे, नवमो गेहागारा नामे कल्पवृक्ष ते गिह के० रहेवानां घर आपे. दसमो वस्त्रांग अथवा अनितांग नामे कल्पवृक्ष ते वथ्थासण के० देवदुष्यादि अमुल्य वस्त्र आपे, कप्पदुमा दसविहा दिंति के० उपर कथा प्रमाणे दश प्र-

कारना कल्पवृक्ष ते पोतपोतानामां उत्पन्न थती वस्तु युगलिया मनुष्यादि प्रत्ये आपे ते संक्षेपे कह्युं. हवे ते वस्तुनुं विशेष प्रकारे स्वरूप दश गाथाए करीने कहे छे. ॥ ९७ ॥

सरस सुगंध मनोहर, विसिठ वलवीरिय कंतिचयहेउ
मत्तरसंग डुमेसु, उपज्जइ विविह मज्जारसो ॥१॥

भावार्थः—मत्तरसांग नामे पहेला कल्पवृक्षोमां सरस सुगंधीदार मनोहर एवो अने विशिष्ट, बळ, वीर्य अने कान्तिना समूहने उपजावनारो विविध प्रकारनो मादक रस उत्पन्न थाय छे ॥ १ ॥

भिंगाल थाल वट्टय । कच्चोलय वध्धमाण माईणि ॥
कंचणरयण मयाइं । जायंति य भायणंगेसु ॥ २ ॥

भावार्थः—भाजनांग नामे बीजा कल्पवृक्षोने विषे भृंगार, (कळश) थाळ, वाटका, कचोळां अने चरु वगेरे रत्न जडित सुवर्णनां वासणो उत्पन्न थाय छे. ॥ २ ॥

सजल घण गुहिर कलरव । चउभेय विभत्त पवर आउजं । जुयलं मिय नराणं तुडियंग नरा पमाणंति।३।

भावार्थः—तुर्यांग नामे त्रीजा कल्पवृक्षोमांथी युगलिया माणसोने रंजन करवाने अर्थे सजळ मेघना गंभीर गर्जारव जेवो प्रियकारी शब्द अने चार प्रकारनां जुदां जुदां सुंदर वाजित्रो सहित बत्रीस बद्ध नाटक उत्पन्न थाय छे ॥ ३ ॥

जोई ङुम्मणा मुवरि । ससि सूरा जन्न वच्चमाणावि
ताण पहावो पहया । नियर्य छायं विमुंचंति ॥४॥

भावार्थः—ज्योतिरंग नामे चोथो कल्पवृक्ष छे ते एटलुं वधुं तेज आपे छे के तेना उपर थइने चंद्र अने सूर्य जाय छे ते अवसरे ते कल्पवृक्षना प्रभावथी उपहत थयेला एवा चंद्र अने सूर्य ते पोतानी कांतिने छोडी दे छे, एटले तेज रहित थइ जाय छे ॥ ४ ॥

ससि सूर सरिस तेया।निच्चं चिय जगजगंति वहु विडवा॥
विविहा य दीवियंगा । नासंति तमंधयारंति ॥५॥

भावार्थः—चंद्र अने सूर्यना जेवां तेजवाळां प्रकाशित घणां झाडो खरेखर झगझगे छे, अने तेउ विविध प्रकारना दीपांग नामे कल्पवृक्ष कहेवाय छे ते वृक्षो युगलिआने अंधारानो नाश करी उद्योत आपे छे ॥ ५ ॥

वर वउल तिलय चंपय, असोग पुन्नाग नाग माईण
कुसुमाइ वहुविहाइं ॥ कुसुमंग दुमा प्पमाणंति ॥६॥

भावार्थः—कुसुमांग नामे छठा कल्पवृक्षोमांथी वकुल तिलक चंपक (चंपो), अशोक (आसोपालव), पुन्नाग अने नाग आदि वृक्षोनां विविध प्रकारनां सुंदर फूलो उत्पन्न थाय छे ॥ ६ ॥

अठसय खजगजुत्त । चउसठी तहय वंजण वियप्पो॥
उपज्जइ आहारो । भोयणरुक्खेसु रसकलिउ ॥ ७ ॥

भावार्थः—चित्ररसा नामे सातमो कल्पवृक्ष एटले भोजन आपनार, ते वृक्षोमां आठसें खावाना पदार्थ अने चोसठ प्रकारनां वघारेलां शाक तथा अथाणां वगेरे युक्त रसे करीने सहित एवो आहार उत्पन्न थाय छे ॥ ७ ॥

वरहार कमयकुंडल। मउमालंकारनेउराईणं ॥
निययंपि भूसणाइ ॥ आभरणदुमेसु जायंति॥८॥

भावार्थः—मनोहर सुंदर हार, कर्ण, कुंडल अने मुकुट अलंकार अने झांझर विगेरे कंचननां मणिरत्ने जमेलां आभूपणो ते मणितांग नामे आठमा कल्पवृक्षोमां उत्पन्न थाय छे ॥ ८ ॥

बहुरयण विनिम्माया, भवण उमा अठभूमिया दिव्वा॥
सयणासण सन्निहिया, तेएण निदाह रविसरिसा॥९।

भावार्थः—गेहाकार नामे नवमा कल्पवृक्षमांथी घणां रत्न वडे बनावायेलां एवां, शय्याउ अने आसनो जेने विषे मूकेलां छे एवां अने तेजे करी चकचकित उष्णकाळे सूर्यना प्रकाश जेवा दीपतां एवां, यावत् आठ भूमिनां दिव्य भवनो उत्पन्न थाय छे ॥ ९ ॥

खोम दुगल्लय वालय ॥ चीणी सुयपट्टमाइआयं च॥
वत्थाइ बहु विहाइं। वत्थंग दुमा पमाणंति ॥ १०॥

भावार्थः—अनितांग एटले वस्त्रांग नामे दसमा कल्पवृक्षमांथी वस्त्र युगल एटले धोती अने खेस, पटकुळ,

विषे दीर्घ काळ सुधी विषय सुखने भोगवे छे ते पूर्वकृत दाननुं फळ जाणवुं ॥ १५ ॥

युगलीयां मनुष्यनुं ते काळे उत्कृष्टुं त्रण पल्योपमनुं आयुष्य छे, अने त्रण गाउनी उंची एटले छ हजार धनुष्यनी तो काया छे, वळी ते काळे पृथ्वी पण बहुधा सपाट रळियामणी होय छे पृथ्वीमां रसपण मधुरो होय छे, वळी ए युगलीया मनुष्यने प्रथम आराना काले तुवरीना दाणा प्राय आहारनी इच्छा त्रीजे चोथे दीवसे थाय, एवा तो संतोषी छे: वळी जोमले जन्मे छे, अने जोमलानुं अपत्तपालणा एटले युगलने प्रसव्या पछी ओगणपचास दिवस सुधी गेरु युगलनुं प्रतिपालन करीने माता पिता साथे मरण पामी पोताना आयुष्य पूर्वक वा ओछा आयुष्ये बीजा देवलोक सुधी देवगतिये जाय छे, तेना उपर युगलियां जाय नहीं. वळी ते काळे तिर्यंच (गर्भज अने समूर्छिम पर्याप्ता) सर्वे युगलियां छे ते तिर्यंच पंचेंद्रि गर्भजनुं ते काळे एटले सुषम सुषम काळे जे आयुष्य छे ते उत्कृष्ट स्थीतिए कहे छे.

थलचर तिर्यंच चतुष्पद जे गाय, भेंस, उंट, हाथी, घोमा, सिंह प्रमुखनुं मनुष्यना प्रमाणे त्रण पल्योपमनुं होय खेचर तिर्यंच जे चकली, चास, सारस, मोर प्रमुखनुं एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग होय.

उरपरि सर्प ते सर्प, अने भूजपरि सर्प ते घो नोळियादिकनुं अने जळचर ते मत्स्यादिक ए त्रणनुं क्रोम पूर्वनुं

आयुष्य होय ए संज्ञि तिर्यंच पंचेंद्रिना आयुष्यनी स्थिति कही.

हवे समूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिनुं आयुष्य कहे छे.

जळचरनुं पूर्व क्रोडनुं, अने थळचरनुं चोरासी हजार वर्षनुं, खेचर पंखीनुं बोतेर हजार वरसनुं, उरपरि सर्पनुं त्रेपन हजार वरसनुं अने भूजपरि सर्पनुं बेतालीस हजार वर्षनुं, ए समूर्छिम तिर्यंचना आयुष्यनी उत्कृष्टपणे स्थिति कही.

ए समूर्छिम तिर्यंच युगलियां सर्वे पोताना आयुष्य प्रमाणे वा ओछा आयुष्ये देवगतिए भुवनपति अने व्यंतर ए बे निकायमां जाय, तेथी उपर जाय नहीं, अने गर्भज तिर्यंच युगलियां तो उत्कृष्ट भांगे बीजा देवलोक सुधी जाय. युगलियां देवगति सिवाय बीजी गतिये जाय नहीं. ए तिर्यंच पंचेंद्रि युगलियांनी आजीविका पण कल्पवृक्षथीज चाले छे, ए श्रेष्ठ काळे एटलो मोहपल्लीने पाछो हठाव्यो छे. तेथी जीवने अल्प इच्छाए वळी अल्प कषायनी योग्यताए, लांबे आयुष्ये, मनुष्यना भवमां अने तिर्यंच पंचेंद्रिना भवमां शाता वेदनीये देवताइ सुख भोगवीने पुनर्पि पुन्य उपार्जी देवगतिये जाय छे, ते त्यां पण लांबे आयुष्ये अनुकुळ भोग भोगवशे. ए अवसर्पिणी काळे सुषम सुषम नामे पेहेला आरानो भाव संक्षेपे कह्यो, एज प्रमाणे उत्सार्पिणि काळे छठ्ठा आरानो भाव जाणवो.

हवे बीजो आरो सुषम नामे छे तेना भाव कहे छे.

तेमनी कायानुं मान नवसो धनुषनुं ऊंचपणे छे, अने आयुष्य एक पल्योपमनो दसमो जाग सुदर्शना चरित्रमां कह्युं छे. तेमणे अपराधीना दंम माटे हकार कहेवानी नीति स्थापी, ए नीति तेमना पुत्र बीजा कुलगर चक्षुमंत थया त्यां सुधी चाली. तेमनी कायानुं मान आठसो धनुष ऊंचपणे हतुं, अने आयुष्य असंख्यातापूर्वनुं. त्यारपछी तेमना पुत्र त्रीजा कुलगर यशस्वी थया, तेमनी कायानुं मान सातसो धनुष ऊंचपणे, अने आयुष्य असंख्यतापूर्व न्यून हतुं. तेमणे अल्प अपराधे हकार अने मोटे अपराधे मकार कहेवानी दंमनीति स्थापी, ते नीति तेमना पुत्र चोथा कुलगर अभिचंद्र थया त्यां सुधी चाली. तेमनी कायानुं मान साडा छसें धनुष्य अने आयुष्य संख्याता पूर्वनुं हतुं. त्यार पछी पांचमा कुलगर तेमना पुत्र प्रसन्नजित थया, तेमनी कायानुं मान छसें धनुष्य अने आयुष्य संख्याता पूर्व न्यून हतुं. तेमणे जघन्य अपराधे हकार ने मध्यम अपराधे मकार अने उत्कृष्ट अपराधे धिकार कहेवुं एम दंमनीति स्थापी, ते नीति छठा मरुदेव तेमना पुत्र थया तेमनी काया साडा पांचसें धनुष्य अने आयुष्य अति न्यून संख्याता पूर्वनुं हतुं, तेमना पुत्र सातमा नाभी कुलगर थया त्यां सुधी ए नीति चाली आवी. तेमनी कायानुं मान सवा पांचसें धनुष्य अने आयुष्य अनुमाने चोरासी लाख पूर्वनुं हतुं. ए नाभी कुलगरनी भार्या मरुदेवा, तेमनी कायानुं मान सवा पांचसें ध-

नुष्य अने आयुष्य क्रोड पुर्वनुं हतुं, तेमनी कुखे सर्वार्थ सिद्ध विमानथी चवीने त्रीजा आराना छेडे चोरासी लाख पूर्व अने उपर नव्याशी पखवाडीआंनो काल बाकी रहे छते असाड वदी ४ तिथिये त्रण ज्ञाने सहित आवीने ऋषभदेव स्वामी उपन्या, अने सवा नव मासे पूर्ण थये चैत्र वदी आठमे जन्म्या. ते वारे छप्पन दिग् कुमरी अने सुर असुर देव देवेंद्रोए मळी प्रभुनो जन्म महोत्सव कर्यो प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामे छे, त्यार पछी अकाळे मृत्यु थवानां विघ्ननो असंभव हतो ते संभव थवा लाग्यो. सुमंगलाना साथे जोडले जन्मेला, तेमना मस्तक उपर ताळ वृक्षनुं फळ पडवाथी बाळ वये मरण पाम्या, अने जोडी खंडित थइ, सुमंगळा एकलां रह्यां, तेमने युगलीए लावीने नाभी कुलगरने सोंप्यां, नाभी कुलगरे कह्युं के सुनंदानी साथे सुमंगला पण ऋषभनी स्त्री थशे, एम करतां काळ महात्म्ये युगलीआंना पुन्यनी ओछाश थई, तेमनुं आयुष्य पण काळे काळे घटतुं घटतुं क्रोड पूर्वनुं रह्युं छे, ते अवसरे कल्पवृक्षे दातारपणानो गुण संकोची लीधो, कल्पवृक्ष पासे हाथ धरीने मागे छे पण मलतुं नथी, दुख पडवा मांड्युं. प्रथम तो सुखे काळ जतो हतो, किंचित् दुःख नहोतुं, ते त्रीजा आराना छेडे दुःखनो वखत आव्यो, ए काळ महात्म्य छे. एटले सुकृत उपार्जवामां कषायनी अधिकताइ थतां ओछाश थइ गई, ए काळे धक्को आप्यो, तेथी दुःख प्राप्त थयुं. ए सुषम दुःखम नामे त्रीजा आराना

कालनो स्वभाव जाणवो. युगलीयां मनुष्यो भूखे पीडातां थकां नाभी कुलगरने पोकार करतां कहे छे के अमारी आजीविकानो उपाय बतावो, त्यारे नाभी कुलगरे युगलीयांना समुदायने कह्युं के ते उपाय तमने ऋषभ बतावशे, तमे ऋषभने राजापणे स्थापो. ए युगलीयांये ऋषभदेव स्वामीना पासे जइने नाभी कुलगरनी कहेली वात करी, ते अवसरे त्यां ऋषभदेव स्वामी पासे सुधर्म इंद्र आवेला छे, तेमणे युगलीयांने कह्युं के तमे ऋषभदेव स्वामीने जळ लावी राज्याभिषेक करो. युगलीयां कमळपत्रना संपुटमां जळ लइ आवी, जुए तो सुधर्मइंद्रे ऋषभदेव स्वामीने जळ अभिषेक करी वस्त्र आभरणे भूषित करी राज्य तख्ते विराजमान कर्या छे, तेमने जोइने युगलीयां विचार करवा लाग्यां. प्रभुनुं सर्व अंग पूजित जोइने अंगुठो उघाडो दीठो, त्यां जमणे अंगुठे युगलीयाना समुदाये मळी जळ अभिषेक कर्यो, ते अवसरे ऋषभदेव स्वामीनी वीश लाख पूर्वनी वय थइ छे. त्यारपछी केटलोक काळ गये नाभी कुलगर काळ करीने भुवनपतिमां गया. मरुदेवा विद्यमान हतां, ए जोडी पण काळ महात्म्ये खंडित थई. हवे अवसरे अवसरे ऋषभदेव स्वामीने भूखे पीडातां थकां युगलीयां पोकार करतां कहे छे. दीनदयाळ ऋषभदेवस्वामीए करुणा लावीने दया चिंतवीने युगलीयां पासे मृतिका (माटी) मंगावीने पोताना हाथे प्रथम हाथीना कुंभस्थळ उपर स्थापीने भाजन करी दीधुं. वळी

पकावीने खावानी विधि शीखवी, त्यार पछी लुहारनुं, वणकरनुं, नाइनुं, चित्रकारनुं एम कुंनकार आदि पांच कर्मनां प्रत्येके प्रत्येके वीस वीस विज्ञान प्रवर्त्ताव्यां, त्यार पछी पुरुषनी बोतेर कळा अने स्त्रीनी चोसठ कळा शीखवी. वळी पोतानी पुत्री ब्राह्मीने अढार प्रकारनी लिपि शीखवी ते लिपि ब्राह्मीथी डुनियामां विस्तार पामी. वळी उग्रकुळ, नोगकुळ, राजकुळ, अने क्षत्रीय कुळ ए चार कुळ स्थाप्यां. एम त्रेसठ लाख पूर्व पर्यंत डुनियाने सांसारिक सुखना हेतु थया, रुडी रीते प्रजाने पाळी डुःखथी रहित करी समजमां लावी उद्यमे वळगाड्या. सुखे निर्वाह करे छे. वळी छेवटे पोताना सो पुत्र नरत बाहुबळ आदिने यथायोग्य राज्य वहेंची दीधां. पोते उदासी नावने नजे छे, ते अवसरे लोकांतिक देवो आवी प्रनुने विनंति करी कहे छे के हे प्रनु! धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावो, बुझो. प्रनु तो बुझेलाज छे परंतु ए देवोनो आचार छे माटे आवे. प्रनु संसारने असार जाणी वरसीदान देइने त्याशी लाख पूर्वनी वय थये छते नरत आदि राजेंड्रना, वळी देव देवेंड्रना मोटा उत्सव पूर्वक चार हजार राजपुत्रनी साथे संसार छोडी कंचन कामिनी रहित थइ अणगार थया.

निर्ग्रंथरायनी अप्रमत्त राजधानीए राज करवा मांड्युं. ज्ञान जोगने दिवान पदे स्थाप्या, समकित महंतने न्यायाधीश पणे स्थाप्या, तप तेजस्वीने सुनटोना अग्रेसरपणे सेनापति करी स्थाप्या, असंख्याता शुन प्रशस्त अ-

ध्यवसायने सुजटो करी स्थाप्या; घातिकर्मनो घेरो चेतनराय निर्ग्रंथनी अप्रमत्त राजधानीना उपरना माळे अनादि संबंधे मोहपल्लीए पोताना बळे अधिपति अग्रेसर थइने शत्रुजावे करेलो ठे, ते राज्य निर्ग्रंथरायने पोतानुं ठे, ते अरिनो एटले वेरीनो हंत एटले नाश करीए, त्यारे वीतराग तख्त पोताना स्वाधीन थाय. एम जाणी घाति कर्मनो घेरो उगाववाना कारणे निर्ग्रंथराये ज्ञान दिवानने हुकम कर्यो के लमाइ शरु करो. हवे लमाइनी शरुआत करवानुं हाल ज्ञान दिवान विशेष उपयोगे विचार करीने निर्ग्रंथरायने ना पाके ठे, कहे ठे के ए वात मारी समजमां ठे परंतु अप्रमत्त जावनो दृढपणे जमावट थवा दो. हजी सुधी जमावट थयो नथी, तमने क्षण क्षण प्रत्ये प्रमत्त गुणस्थानक खेंचे ठे, ताणीने बोलावी ले ठे, त्यारे मारे तमारी साथे अनुजाइपणे त्यां आववुं पके ठे, अने त्यां जतां तो तमारुं अने मारुं तेज उंढुं थइ जाय ठे. त्यां जइने आपणुं चित्त ठरतुं नथी, तेथी तमो अने हुं बे जण पाठा अप्रमत्त स्थानके आवीए ठीए, परंतु ज्ञान दीवान कहे ठे के तमो अप्रमत्त गुणस्थानकने न ठोको, एटले प्रमत्त गुणठाणुं ठठुं ठे त्यां न जाउ तो हुं अनंत चक्षुनो धणी छुं, अने तमे प्रमत्त गुणठाणे जवा आववानुं करो ठो त्यारे तो मारां चर्म चक्षु ज उघामां रहे ठे, बीजां चक्षु मीचाइ जाय ठे, माटे मोहपल्ली साथे युद्ध करतां तो अनंतां चक्षुनुं अनंतु तेज, अनंतो प्रकाश जोइए, त्यारे आपणे एनो एटले मोहपल्लीनो घेरो

उगमीने आपणी वीतराग राजधानी पोताना कबजामां लइ शकीए, माटे तमे अप्रमत्त स्थानकनो दृढपणे जमावट करो अने प्रमत्त गुणठाणाने पुंठ आपो. ए वात निर्ग्रंथराये कबुल करी. हवे ऋषभदेव स्वामी प्रमत्त छठुं गुणठाणुं तेने पुंठ आपवाना विचारमां प्रवर्त्ते छे, ते अवसरे मोहपल्ली काया कोटरूीना आंतरे छुपीने रहेलो हतो ते आ वात सांभळीने चित्तमां राखी चिंतवे छे के मारा संसार नाटकनुं उच्छेदन करवानो मनसुबो करे छे, तेने कबजे करुं. एज अवसरे चार हजार राजपुत्रे निर्ग्रंथपद ऋषभदेव स्वामीना आलंबने ग्रह्युं छे, ते भगवानने विनय पूर्वक सेवक थइने पूछे छे, हे स्वामी! अमने क्षुधा पीडे छे, शी रीते निर्वाह करीए? अमे जाणता नथी. तमारा आलंबने घर छोडीने नीकळ्या छीए, माटे निर्वाह करवानो मार्ग बतावो. ते अवसरे मोहपल्लीए नामकर्म सामंतने बोलाव्यो एणे वचन जोगने रुंध्यो, ते कारणे ऋषभदेव स्वामीए पोताना आलंबने निर्ग्रंथ थएला तेमने दूषण टाळीने सूझतो आहार लेइ निर्वाह करवानो मार्ग न बताव्यो, त्यार पछी मोहपल्लीए अंतराय कर्मने बोलाव्यो, तेणे अशनादि चारे आहारनो अमेळावडो कर्यो, तेथी जठराग्नि पीडे छे, त्यार पछी वेदनी कर्मने बोलाव्यो, एणे क्षुधा वेदनीपणे निर्ग्रंथरायने पीडा करी. पासे आयुकर्म बेठेलो छे ते मोहपल्लीने कहे छे के हुं तो समये समये आयुष्यने छेदतोज जाउं छुं, ए अवसरे ऋषभदेव स्वामी अप्रमत्त राजधानी

निर्नय करवाने माटे प्रमत्त गुणठाणे आववानुं बंध करवाना उपायमां धर्म ध्यान ध्याताथका वर्त्ते छे, परंतु प्रमादनी सनस तुटती नथी, ते कारणे प्रमादे जइने अल्पकाळ रहे छे, अप्रमत्ते जादे रहे छे; एम जवा आववानुं चाले छे. ऋषभदेव स्वामी निग्रंथे अंतरायने चार मासे पाछो हठाव्यो, त्यां श्रेयांसने घेर शेलडीना रसनुं पारणुं कर्युं. त्यांथी सुपात्र दाननी प्रवृत्ति चाली आवे छे, त्यार पछी वेदनी कर्मने पाछो हठावी क्षुधाने टाळी अप्रमत्त स्थानकने निश्चल करवाना सकामी छे. अहीं कोइ कहेशे के अप्रमत्तने निश्चल कर्युं ते सातमा स्थानक उपर शी रीते जशे ? तेने कहीए के उपरनां जे जे गुणठाणां छे, ते सर्वे अप्रमत्त छे, माटे हेठळ ना आवे ते उपर जाय छे, ए प्रमत्त गुणठाणुं रोकवाना उपायमां निग्रंथरायने एक हजार वर्ष धर्म ध्यान ध्यातां गयां, त्यारे प्रमादनो संग सर्वथा प्रकारे तुटयो, एज वखते श्रद्धाअष्टापदनी स्वारी करी आठमा गुणठाणे प्रवेश कर्यो. ज्ञान दिवान चारित्ररूपक्षीसम सावचेतपणाये करीने आगळ अग्रेसरी थको सर्व ऋद्धिये संयुक्तपणे शुक्लध्यान जोगे क्षपकश्रेणी मांडी श्रेणीगत प्रथम युद्ध मोहपल्लीथी शरु थाय छे, मोहपल्ली पण द्वेष गजेंद्रनी स्वारी करी राग केशरी पुत्रने साथे लइने पोताना सहकुटुंबे परिवर्यो थको चढीने सामो आव्यो छे, रणस्थंभ आठमा गुणठाणे रोप्यो छे, सामसामी शस्त्रोनो वरसाद वरसी रह्यो छे, आठमा गुणठाणे मोहपल्लीना आशादि छ सामंत मराणा, त्यां मोह

पाछो हठयो एटले त्यांथी मुकाम उगावीने निर्ग्रंथराये नवमा गुणठाणाने घेरी युद्ध करवा मांड्युं, त्यां त्रण वेद अने त्रण संज्वलनादि कषायनी चोकडी आदिनो सत्ताथी उच्छेद कर्यो, वळी लोभने पण जरजरीत कर्यो अने मोहने पाछो हठाव्यो.त्यांथी दशमा गुणठाणे गया, त्यां युद्ध चाले छे, ए स्थानके लोभ आदि चोथी चोकडीनो सत्ताथी उच्छेद लोभनो अणु उदयागत छे तेनुं, वळी मिथ्यात्वनी सत्तानो उच्छेद करी मोहनी कर्मनी प्रकृत्ति परमाणुदळनो घेरो पोतानी, आत्माना असंख्याता प्रदेशरूप क्षेत्रथी उगावी द्वेष गजेंद्र अने राग केशरीसिंह ए बेनुं नाम अशुद्ध परिणति छे, तेने दशमा गुणठाणाने अंते हणी शुद्ध परिणतिवंत पोते बारमा गुणठाणे वीतराग राजधानीए बीजो पायो एकत्व वितर्क अप्र विचार ध्यातां थकां बिराजमान थया. अहीं ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रणे कर्म सामां लडवा आव्यां. ए त्रणने वीतराग निर्ग्रंथे पोताना पराक्रमे एके हारे समकाळे, ज्ञान, ध्यान, तप तीक्ष्ण धाराए हण्या, अहीं घाति कर्मनो अभाव थयो एटले आत्माना असंख्यात प्रदेश खेत्रथी घाति कर्म प्रकृत्ति परमाणु दळनो घेरो उठयो, निर्ग्रंथ राय सर्वज्ञपणानी ऋद्धिए परिपूर्ण थई अरिहंत पदे वेरीना समुदायथी अने विघ्न संभवनी योग्यताथी रहित थका निर्विघ्नपणे निर्भय दशाने एक अंतर्मुहूर्त्तमां अव्याबाधपणे पाम्या, त्या पूर्वोपार्जित नामकर्मनो जिन बंधनो उदय प्राप्त थयो. ते उदयना खेंच्या चोसठ

इंद्र अने असंख्यात कोमी देवो मली समवसरणनी रचना करी, वनपाळे ं जरतरायने वधामणी आपी, ते अवसरे जरत चक्रवर्त्ती पोतानी दादी मरुदेवा माताने कहे ठे के तमारा पुत्रनी ऋद्धि जोवी होय तो चालो, तेज वखते जरतनुं वचन सांजळीने दादी आववाने तैयार थयां; ए अवसरे जरतरायने वीजी वधामणी चक्ररत्न आयुधशाळामां प्रगट थयानी समकाळे आवी तेने लौकिक जाणी संसार हेतु कारणने पुंठ दइने लोकोत्तरजणी सन्मुख दृष्टि करी अंगमां प्रमोद जराये ठते, दादीने जरते हाथी उपर बेसार्यां· जरत पोताना सहकुटुंवे राज्य ऋद्धिये संयुक्त थका चालता चालता पंथ कापता समवसरण नजीक आवे ठे ते अवसरे देवडुंडुन्नि आदि देवताइ वाजिंत्र समवसरणमां वाजे ठे, ते सांजळीने मरुदेवा माता चिंतवे ठे के में तो सरागता जोगे रोइ रोइने आंखो खोई अने मारो ऋषन्न आवी ऋद्धि जोगवता ठतां एक दिवस संदेशो पण कहाव्यो नथी तो कोना पुत्र अने कोनी माता सौ सौना स्वार्थनुं सगुं ठे·धिक्कार·ठे एक पखारागने,एम विचारी सरागता ठेदी वीतरागता जावे ठे त्यांज शुक्ल ध्यान ध्यातां थकां क्षपक श्रेणी मांकी घाति अघाति कर्म श्रेणीगत हणीने सिद्धि वर्यां· त्यां अढार कोमाकोमी सागरोपमनो सिद्धगतिथी आ जरत क्षेत्र आश्रीने अंतर पमेलो ते जाग्यो, मोक्षनो मार्ग प्रवर्त्यो· जरतराय स्नान करी पवित्र थइ उत्साहथी समवसरणे आव्या,वार पर्षदा मळी ठे,जगवान ऋषन्नदेव

स्वामी देशना दे छे, उपन्नेवा, विगमेवा, धुवेवा, ए त्रिपदी देशनाने सांजळीऋषजसेन आदि चोरासी महापुरुषोत्तम द्रव्यपर्यायनुं विस्तार बुद्धिये यथास्थित ज्ञान पामी अज्ञान तिमिर पमलने दुर करी द्वादशांगी सिद्धांत रचवानो लब्धि पाम्या. (१) आचारांग, (२) सुयगमांग, (३) ठाणांग, (४) समवायांग, (५) जगवती, (६) ज्ञाता धर्मकथा, (७) उपासक दशांग, (८) अंतगम दशांग, (ए) अनुत्तरोववाई दशांग (१०) प्रश्न व्याकरण, (११) विपाक, अने (१२) दृष्टिवाद जेमां चौद पूर्वनो समावेश छे. एम द्वादशांगी सिद्धांत एक अंतर्मुहूर्त्तमां रच्यां. जगवाने वासक्षेप नांखी गणधर पदे स्थाप्या. ऋषजसेन प्रमुख पांचसो जरतरायना पुत्रो अने सातसो पुत्रोना पुत्रो आदि बोधि बीज पामी साधु थया. ब्राह्मी आदि साध्वीउ थई, श्रेयांस आदि श्रावक थया, सुजद्राआदे श्राविकाउ थयां, एम चतुर्विध संघनी स्थापना करी, निर्वेद, संवेग आज्ञागतिए कर्मक्षय मार्ग तीर्थने प्रवर्त्तावी केटलाएकने मोक्ष नगरे पहोचाड्या, केटलाएकने अनुत्तर विमान आदि स्वर्गे मोकल्या. बाधापीमाए रहित कर्या. प्रजु पृथ्वीतळने पावनकरता छता, कंचनना कमळे पग मूकता थका साधुना वहोळा समुदाये युक्त ग्रामानुग्रामे विचरे छे, जव्य जीवोने प्रतिबोधी समकितादि गुणे अज्यंतर ऋद्धिए धनाढ्य करी दारिद्र मिथ्यात्वादि अवस्थाने दूर करे. जेनुं दारिद्र दूर थवानुं होय ते सर्वज्ञनुं दर्शन पामे. जे उपसर्ग करतो आवे

ते पण समकितादि गुणनो लाभ लइ जाय छे, तो रागी थइने विनय करतो आवे तेनुं तो भवभ्रमण रहेज शेनुं! परंतु एक अभवी अने बीजो दुर्भवी ए बेजनुं दारिद्र जे भवभ्रमणनुं बीज मिथ्यात्वशल्य ते दुर थतुं नथी, कारण के अभवीमां समकितादि गुण निष्पन्न करवानो स्वभाव नथी अने दुर्भवी ते अर्द्धपुद्गल परावर्त्त संसार स्थीतिनी मर्यादामां आव्यो नथी, ते कारणे ए बेने समकितादि गुण निष्पन्न करवारूप लोकोत्तर लाभ मळतो नथी, परंतु पुन्य उपार्जवाथी लोकिक शुभनो लाभ ए बेने मले छे ते लाभ पामीने आवता भवनुं दारिद्र जे दुर्गति तेने दुर करे छे, ए अनंतो उपकार करता छता पुनः पुनः शत्रुंजय तीर्थे प्रभु फागण शुदी आठमे नवाणुं पूर्व पर्यंत समोसर्या छे अने एम महातीर्थनो अनंतो महिमा प्रकाश्यो छे. वळी शत्रुंजय तीर्थनी यात्रानो मोटो लाभ ते मोक्षना सुखनी प्राप्ति एम उपदेश कर्यो छे, ए महातीर्थनी यात्राना बे भेद. एक द्रव्यशत्रुंजय तीर्थयात्रा अने बीजो भाव शत्रुंजय तीर्थयात्रा. द्रव्यशत्रुंजय तीर्थयात्रा ते घर छोडीने छरि पाळतां शत्रुंजय तीर्थना सन्मुख विधिपूर्वक यतनाए पगलां भरतो भरतो अनुक्रमे पंथ कापतो कापतो गुरुनिश्राए पालीताणा नगरे रुडा अध्यवसाये चडता परिणामे जइने डुंगरना समीपे तळेटीए प्रभुनां पगलांने वंदन नमन करी डुंगरने मोतीए वधावी स्तुति करी डुंगर उपर चढी जिन मंदिरोमां प्रभुने नीरखे, पूजे. जळ, चंदन, पुष्पादिक, धूप,

नैवेद्य, फळे, वळी हरखे तीर्थने स्पर्शी प्रदक्षणा फरे, टुंके टुंके बिंब नीरखी स्तुति करे, अखंड अक्षते स्वस्तिक आळेखे. एम पुनः पुनः छठ अठमादि तपस्या करता डुंगरे चढे उतरे. एम नवाणुं यात्रा पण करे. चोमासुं त्यां रहे गुरु आदिकने भक्तिये दान आपे, वळी वांदे, विनय साचवे, स्वामी भाइनी भक्ति करे, द्रव्य खर्चे; परंतु घटमां ज्ञान लावी जीव अजीवनी विभाग वहेंचण करी वस्तुगते वस्तुने उळखी, हेय उपादेय बुद्धि, निर्मळ स्थानकने पामी जे पुरुष प्रगट न करे तेने द्रव्य शत्रुंजय तीर्थ यात्रा कहीए.

॥श्लोक॥ इदं तीर्थमिदं तीर्थं ॥ ये भ्रमन्ति तमोवृताः ॥
आत्म तीर्थं न जानन्ति॥तेषां तीर्थं निरर्थकम्॥१॥

अने घरने छोडीने नीकळ्या छे ते घरना कामनी चिंतवना दूर थका नहीं करतां मनने समाधिमां राखी अपूर्व करणे चढतां श्रुतद्वारा ज्ञान पामे, भावशत्रु मिथ्यात्वादि दुष्ट हेतुने हणी हेय उपादेय बुद्धिने पामी वस्तुगते वस्तुने उळखी यथार्थ श्रद्धा करी डुंगर चढतो थको अनिवृत्ति गुणठाणे चढे, त्यां समकितादि गुण प्रगट करी बहिरात्म भावने छोडी अंतर आत्माना भावने पामी पोताना आत्माने परमात्माकरी ध्यावतां सकाम निर्जरा योगे कार्य सिद्धिने पामे. तेना बे भेद, कोई देशथी पामे अने कोइ सर्वथी पामे, जे देशथी पामे तेने चोथा समकित

गुणठाणानी प्राप्ति थाय अने सर्वथी पामे तेने मोक्ष गतिये अव्याबाध सुख मले, तेने नावशत्रुंजय तीर्थयात्रा कहीए, तेनो मनुष्य जन्म सफळ कहीए. इत्यादि उपदेश करी विहार करतां छता, जव्य जीवोने संसार समुद्रमांथी तारता छता, नाभिरायाना पुत्र विनिता नगरीए मरुदेवा मातानी कुखे कंचन वर्णे वृषभ लंछने जन्मपामी वृद्धि पामतां पामतां पांचसे धनुष उंची कायानुं प्रमाण छे, वळी ते चार हजार राजपुत्र साथे संसार छोमी त्यागी वैरागी निग्रंथ पदे एक हजार वरस छद्मस्थ पर्याये रह्या, अने एक लाख पूर्वमां एक हजार वरस उणां केवळपर्याय पाळी चोरासी गणधर आदि चोरासीसहस्र साधु. त्रण लाख ने पांच हजार श्रावक, पांच लाख चोपन हजार श्राविकानी संपदा पामी चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी अष्टापद गिरीए दश हजार मुनि साथे छ दिवसनी संलेषणा अणसण करीने समश्रेणीए त्रीजा आरानां नव्याशी पखवामीआं रहे छते मेर तेरसे अघाति कर्म हणी प्रथम तीर्थंकर सिद्धिवर्या. तेमना अधिष्टायक गोमुख यक्ष अने चक्रेश्वरी देवी छे. ए प्रथम तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो, अने त्रेवीस तीर्थंकरतो चोथा आरामां थया छे. अहीं त्रीजा आरानो अधिकार समाप्त थयो, हवे चोथा आरानो नाव गवेखे छे.

चोथा आरानुं एक कोमाकोमी सागरोपम तेमां बेतालीस हजार वर्ष उणां एटलुं प्रमाण छे. ते चोथो आरो

दुःषम सुषमनामे छे, एटले प्रथम दुःख अने पछी सुख, ते सुखनो हेतु अधिकमां अधिकतो जेनुं मुख जोतां पाप अळगां थई जाय, एवा तीर्थंकर देव तेमनो त्रीजा आरामां संयोगे हतो ते चोथा आरामां नव्याशी पखवाडीआं आगळथी विरह पडी गयो, ते पचास लाख कोडी . सागरोपमनो कल्पसूत्रे कह्यो छे, ए अपेक्षाए चोथाआराना अरधा भागना अनुमाने अंतर पड्यो, परंतु केवळी तथा आचार्य, उपाध्याय, साधु सर्व छे, पण उपकार करवामां तीर्थंकर अने गणधर अधिक अधिक मोटा झाझ रूपे छे, अने तेमना आगळ बीजा सर्व न्यूनाधिक नावडांनां दृष्टांते छे; परंतु तारक पणानो गुणतो सर्वमां छे, पण जेटलुं अधिक एटलुं अधिक गणीए. नावडां छे तेमां बेसीने समुद्र तरीए तो ते नावडां समुद्रनां मोजांने सहन करे नहीं, ए तो खाडी सुधी पहोंचाडे, तेम व्यवहार समकितादि गुण निष्पन्न जे आचार्यादि छे, ते उपदेश करीने मार्गानुसारी पणामां लावे, वळी त्रण तत्त्वनी श्रद्धारूप समकित पमाडे, इत्यादि उपकार करे; अने जे केवळी तथा श्रुत केवळी छे ते तो तीर्थंकरना बराबरीआ तारक, भवभ्रमण निवारक, शीवसुखदाता छे. अंतर पडे न्यूनाधिक पणुं नथी, पण तेमणे शुभ कर्म तीर्थंकर अने गणधर जेटलुं पूर्वे उपार्ज्युं नथी, तेथी उपकार ओछो करी शके. वळी उपकार करतां पुर्वोपार्जित शुभ कर्म खप लागे छे नहीं तो असुच्चा केवळीने उपकार करवो जोइए, ते तेमनाथी थतो नथी

माटे उपकारी गुणे अधिक अधिकतो तीर्थंकर देव अने गणधर देव छे, तेमनो विरह पड्यो एज प्रथम दुःख जाणवुं. ऋषभदेव स्वामीए त्रीजा आराना छेडे युगलियापणुं निवारीने अति जडक प्राणी विचार करवाने, वळी चिंतवना करवाने, अने हेय उपादेयनी व्हेंचण करवाने अयोग्य जेवा मनुष्यो तेमने समकितादि धर्म पमाडी मोक्षनगरे वहोळा समुदाये पहोचाड्या, ए उपकारीपणानो गुण तीर्थंकर अने गणधरदेवनी बरोबरीमां बीजा कोइमां पण नथी, जेम सूर्यनी बरोबरीमां प्रकाश करवाने ग्रह, नक्षत्र, तारा, चंद्रमा, कोइ पण नथी तद्वत जाणवुं. वळी चोथा आराना प्रथम भागमां जडकपणा माटे मूर्खपणुं अधिक छे, अने जे मूर्खपणुं छे एज दुःख छे, ते मूर्खपणुं अनुक्रमे काळे काळे ढवुं थतुं गयुं, तेम तेम डाहापण काळे काळे वृद्धि पाम्युं. अने जे डाहापण छे तेनेज सुख कहीए; माटे प्रथम दुःख अने पछी सुख ए मूर्खपणुं अने डाहापण तेनो सहचारी काळ छे, बीजो कोइ नथी माटे काळ महात्म्य कहीए छीए. वळी व्यवहारमां मूर्खपणुं ते अति जडकपणुं अने वक्रपणुं ते कुतर्कपणुं ते बंन्नेनो कर्त्ता मोह छे, अने तेनो एटले मूर्खपणानो अने वक्रपणानो अभाव कर्त्ता निर्मोह छे. निर्मोह एटले ज्ञानवृत्तिनुं नामज डाह्यापणुं, अने डाह्यापणानो वहोळो समुदाय प्रवाह तो कर्मभूमिनां पंदरक्षेत्रमां अजितनाथ बीजा तीर्थकरना वारे छे, तेनो कर्त्ता व्यवहारमां कोइ नथी, केवळ काळ स-

हचारी छे. काळे नद्रक युगलियां थाय, काळे प्राज्ञ व्हाला थाय, काळे वक्र थाय, काळे अतिवक्र थाय; ए प्रवाह आश्रीने समुदाये वात कही, परंतु प्रत्येक अपेक्षाये विचारीए तो जे विनाव दशा एज मोह छे अने स्वन्नाव दशा एज निर्मोह ते ज्ञान छे. मोह छे ते कर्मबंध हेतु छे, अने निर्मोहवृत्ति ए ज्ञान छे, ते मोक्षनो हेतु छे. ए कर्मबंधनो कर्त्ता अने कर्मनो क्षय कर्त्ता सदाकाळ पोते चेतन छे, बीजो कोइ नथी, परंतु पांच नरत अने पांच ऐरवत ए दश क्षेत्रमां तो काळ प्रमाणेज जीव यथाशक्ति पामे छे, माटे काळज सहचारी छे, ए काळ महात्म्य जाणवुं. हवे चोथा आराना काळनां बेतालीश हजार वरसे ऊणां पचाश लाख कोमी सागरोपम गयां अने पचास लाख कोमी सागरोपम रह्यां छे, ते अवसरे अजितनाथ तीर्थकरनुं निर्वाण थयुं, तेमनो अधिकार कहे छे. अयोध्यानगरीए जितशत्रुराय पिता, विजयाराणी माता, कंचनसम पितवर्ण, गजनुं लंछन, साढाचारसो धनुषनुं देहमान, एकहजार राजपुत्र साथे दिक्षा, एकलाख साधु, तेमां पंचाणुं गणधर, अने त्रणलाख त्रीस हजार साधवी, बेलाख अठाणुंहजार श्रावक, अने पांच लाख पीस्तालीसहजार श्राविकानी संपदा, बहोंतेरलाख पूर्वनुं आयुष समेतशिखरे समश्रेणीए मुक्ति गया. महायक्ष, अने अजितबलादेवी अधिष्ठायक, ए बीजा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. ते काळे पांच नरत अने पांच ऐरवत मळी दश, अने पांच महाविदेहनी एकसोने साठ वि-

जय मळी एकसोने सित्तेर क्षेत्र तेमां एकसोने सित्तेर ती-र्थंकर विचरता हता.

वर कनक शंख विद्रुम, मरकत घन सन्निभं विगतमोहं॥
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामर पूजितं वंदे ॥ १ ॥

ए बीजा तीर्थंकरना निर्वाणथी त्रीसलाख कोमी सागरोपमनो काळ गये थके त्रीजा संभवनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे. सावथ्थी नगरीए सेनाराणी माता, जितारीराय पिता, कंचनसम पितवर्ण, अश्वनुं लंछन, चारसो धनुप ऊंची काया, एकहजार पुरुष साथे दिक्षा, बेलाख साधु, तेमां एकसोने बे गणधर, त्रणलाख छत्रीस हजार साधवी. बेलाख त्राणुंहजार श्रावक, अने छलाख छत्रीसहजार श्रावीकानी संप्रदा, साठलाख पुर्वनुं आयु, समेतशिखरे समश्रेणि ए सिद्धि वर्या. त्रिमुख यक्ष अने दुरितारिदेवी अधिष्टायक, ए त्रीजा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो, तेमना निर्वाणथी दश लाख कोमी सागरोपमनो काळ गये थके चोथा अभिनंदन स्वामी निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. अयोध्या नगरीए संवरराय पिता, सिद्धार्था माता, कंचनसम पितवर्ण, वानरनुं लंछन, साढा त्रणसो धनुप ऊंची काया, एक हजार पुरुप साथे दिक्षा, त्रण लाख साधु तेमां एकसोने सोल गणधर, अने छ लाख त्रीस हजार साधवी, बे लाख अठयासी हजार श्रावक अने पांच लाख सत्तावीस हजार श्राविकानो संपदा, पचास

लाख पूर्वनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रेणि ए मुक्ति, इश्वर यक्ष, अने काली देवी अधिष्टायक, ए चोथा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. तेमना निर्वाणथी नव लाख कोडी सागरोपमनो काळ गये थके पांचमा सुमतिनाथ भगवान निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. अयोध्या नगरीए मंगलाराणी माता, मेघरथराय पिता, कंचनसम पितवर्ण, क्रौंच लंछन, त्रणसो धनुष ऊंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रण लाख वीस हजार साधु तेमां सो गणधर, पांच लाख त्रीज हजार साधवी, बे लाख एकाशी हजार श्रावक अने पांच लाख सोळ हजार श्राविकानी संपदा, चालीस लाख पूर्वनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रेणि ए मुक्ति, तुंबरु यक्ष अने महाकाली देवी अधिष्टायक, ए पांचमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. अहीं चोथा आरानां नवाणुं लाख कोडी सागरोपम तेमां बेतालीस हजार वरस उणां पांचमा तीर्थंकरनुं निर्वाण थये वही गयां, अने एक लाख कोडी सागरोपम चोथा आराना काळनां बाकी रह्यां छे. तेमांथी नेवुं हजार कोडी सागरोपमनो काळ गये थके छठा पद्मप्रभु निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे.

कोसंबी नगरीए श्रीधर रायपिता, सुशीमा राणीमाता, ऊगता सूर्यसम रक्तवर्ण, कमळनुं लंछन, अढीसो धनुष ऊंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रण लाख त्रीस हजार साधु, तेमां एकसोने सातगणधर, अने चार लाख वीस हजार साधवी, बे लाख छोतेर हजार

श्रावक, अने पांच लाख पांच हजार श्राविकानी संपदा, त्रीस लाख पूर्वनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रेणिए मुक्ति, कुसुम यक्ष अने अच्युता देवी अधिष्टायिक, ए छठा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आराना काळनां दस हजार कोडी सागरोपम बाकी रह्यां छे तेमांथी नव हजार कोडी सागरोपमनो काळ गये थके सातमा सुपार्श्वनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे.

वणारसी नगरीए प्रतिष्टराय पिता, पृथ्वी राणी माता कंचन सम पित वर्ण; स्वस्तिक लंछन, बसो धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रण लाख साधु तेमां पंचाणुं गणधर, चार लाख त्रीस हजार साधवी, बे लाख सत्तावन हजार श्रावक, अने चार लाख त्राणुं हजार श्राविकानो संपदा, वीस लाख पूर्वनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिए मुक्ति. मातंगसुर देव अने शांतादेवी अधिष्टायक ए सातमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आरानां एक हजार कोडी सागरोपम बाकी रह्यां छे, तेमांथी नवसो कोडी सागरोपमनो काळ गये थके आठमा चंद्रप्रभु निर्वाण थया तेमनो अधिकार कहे छे, चंद्रपुरी नगरीए महसेनराय पिता, लक्ष्मणाराणी माता, चंद्रसम उज्ज्वलवर्णि दोढसो धनुष उंची काया, चंद्रनुं लंछन, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, अढीलाख साधु तेमां त्राणुं गणधर, त्रण लाख एंसी हजार साधवी,

अढी लाख श्रावक अने चार लाख एकाणुं हजार श्राविकानी संपदा, दश लाख पूर्वनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, विजयसुरदेव अने भृकुटीसुरि देवी अधिष्टायक, ए आठमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आरानां सो कोडी सागरोपम बाकी रह्यां छे तेमांथी नेवुं कोडी सागरोपमनो काळ गये थके नवमा सुविधिनाथ निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे काकंदी नगरीए सुग्रीवराय पिता, रामाराणी माता, चंद्रसम उज्ज्वलवर्ण, मच्छनुं लंछन, सो धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दीक्षा, बे लाख साधु तेमां अठयासी गणधर, अने एक लाख वीस हजार साधवी, बे लाख उगणत्रीस हजार श्रावक, अने चार लाख इकोतेर हजार श्राविकानी संपदा, बे लाख पूर्वनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, अजितसुर देव अने तारासुरी देवी अधिष्टायक, ए नवमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आरानां दश कोडी सागरोपम बाकी रह्यां छे, तेमांथी नवकोडी सागरोपमनो काळ गये थके दशमा शितळनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे. भद्दिलपुरी नगरीएदढरथराय पिता, नंदाराणी माता कंचनसम पितवर्ण, श्रीवत्स लंछन, नेवुं धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, एक लाख साधु तेमां एक्यासी गणधर अने एक लाख छ हजार साधवी, बे लाख नव्यासी हजार श्रावक, अने चार लाख अठावन हजार श्राविकानी संपदा, एक लाख पूर्वनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रे-

णिये मुक्ति, अशोका देवी अने ब्रह्मा यक्ष अधिष्टायक, ए दशमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आरानो एक क्रोड सागरोपम काल रह्यो छे, तेमांथी शेष सो सागरोपम अने पांसठ लाख चोरासी हजार वर्ष एटलो काळ बाकी रह्यो, अने बीजो वधोए गयो, त्यारे अगियारमा श्रेयांस जिनजी निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे, सिंहपुरी नगरीए विष्णु नृपति पिता, विष्णुराणी माता, कंचनसम पितवर्ण, खड्गीनुं लंछन एंशी धनुष्यनी काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, चोराशी हजार साधु तेमां छोतेर गणधर अने एक लाख त्रण हजार साधवी, बे लाख एकत्रण एंशी हजार श्रावक अने चार लाख अडतालीश हजार श्राविकानी संपदा, चोर्यासी लाख वरसनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणीये मुक्ति, मनुएसुर देव अने श्रीवत्सा देवी अधिष्टायक, ए अगियारमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे तेमना निर्वाणथी चोपन सागरोपमनो काळ गये थके बारमा वासुपूज्य निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. चंपापुरी नगरीए वसुपूज्य पिता, जयाराणी माता, परवाळां सम रक्तवर्ण. महिषनुं लंछन, सित्तेर धनुष्यनी उंची काया. छसो पुरुष साथे दिक्षा, बहोतेर हजार साधु तेमां छासठ गणधर अने एक लाख साधवी, बे लाख पंदर हजार श्रावक, चार लाख छत्रीस हजार श्राविकानी संपदा, बहोतेर लाख वर्षनुं आयुष्य, चंपा नगरीए समश्रेणिये मुक्ति, कुमार यक्ष अने चंडा देवी अधिष्टायक, ए बारमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

तेमना निर्वाणथी त्रीस सागरोपमनो काळ गये थके तेरमा विमळनाथजी निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे. कंपिलपुरी नगरीए कृतवर्मरायपिता, श्यामा-राणी माता, कंचनसम पितवर्ण, वराहनुं लंछन, साठ धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, अरु-सठ हजार साधु, तेमां सत्तावन गणधर, एक लाख अने आठसो साधवी, बे लाख आठ हजार श्रावक, चार लाख चोवीस हजार श्राविकानी संपदा,साठ लाख वर्षनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणीये मुक्ति, षण्मुख यक्ष अने विदिता-देवी अधिष्टायक ए तेरमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे तेमना निर्वाणथी नव सागरोपमनो काळ गये थके चौदमा अनंतनाथ तीर्थंकर निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. अयोध्या नगरीए सिंहसेन राय पिता, सुयशाराणी माता,कंचनसम पित वर्ण. सिंचाणानुं लंछन,पचास धनुष्यनी उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, छासठ हजार साधु तेमां पचास गणधर अने बासठ हजार साधवी, बे लाख छ हजार श्रावक अने चार लाख चौद हजार श्रा-विकानी संपदा, त्रीस लाख वरसनुं आयुष्य, समेतशि-खरे समश्रेणिये मुक्ति, पाताळसुर देव अने अंकुसरी देवी अधिष्टायक ए चौदमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. तेमना निर्वाणथी चार सागरोपमनो काळ गये थके पंदरमा धर्म नाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे.

रत्नपुरी नगरीए भानु नृपति पिता, सुव्रताराणी माता, कंचन सम पितवर्ण, वज्रनुं लंछन, पीस्तालीस धनु-ष्य उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, चोसठ

हजार साधु तेमां त्रेतालीस गणधर, बासठ हजार चारसो साधवी, बे लाख चार हजार श्रावक, अने चार लाख तेर हजार श्राविकानी संपदा, दश लाख वरसनुं आयुष, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, किन्नरसुर देव अने कंदर्पासुरीदेवी अधिष्टायक, ए पंदरमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. हवे तेमना निर्वाणथी, पोणो पल्योपमे न्यून त्रण सागरोपमनो काळ गये थके सोळमा शांतिनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे.

गजपुरी नगरीए विश्वसेन रायपिता, अचिराराणीमाता, कंचन समपितवर्ण, मृगनुं लंछन, चालीस धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा बासठ हजार साधु तेमां छत्रीस गणधर, एकसठ हजार छसो साध्वी, एकलाख नेवु हजार श्रावक, त्रणलाख त्राणुं हजार श्राविकानी संपद्रा, एक लाख वर्षनुं आयुष्य, तेमां पंचोतेर हजार वर्ष गृहवासे रह्या, एक वर्ष छद्मस्थ पर्याय, चोवीस हजार नवसें नवाणुं वर्ष केवळ पर्याय, एक मासनो संथारो नवसो मुनि साथे, समेतशिखरे समश्रेणीए मुक्ति गरुड यक्ष, निर्वाणी देवी, अधिष्टायक, ए सोळमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो, हवे तेमना निर्वाणथी अर्द्धा पल्योपमनो काळ गये थके सतरमा श्री कुंथुंनाथ निर्वाण पद पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे.

गजपुरी नगरीये सुरनृपति पिता; श्रीराणीमाता कंचन समपीतवर्ण, अजनुं लंछन, पांत्रीस धनुष्य उंची काया एक हजार पुरुष साथे दिक्षा साठ हजार साधु तेमां पांत्रीस गणधर, साठ हजार छसो साधवी, एक लाखएकत्रण

एंशी हजार श्रावक अने त्रण लाख एक्यासी हजार श्राविकानी संपदा, पंचाणुं हजार वर्षनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति गंधर्व यक्ष, अने बलादेवी अधिष्ठायक ए सत्तरमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे ए प्रभुना निर्वाणथी कोटी सहस्र वर्षे न्यूनुं पा पल्योपमनो काळ गये थके अढारमा अरनाथ निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. गजपुरी नगरीए सुदर्शन रायपिता, देवी माता, कंचन सम पित वर्ण, नंदावर्त्तनुं लंछन, त्रीस धनुष ऊंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, पचास हजार साधु तेमां तेत्रीस गणधर, साठ हजार साधवी, एक लाख चोरासी हजार श्रावक, अने त्रण लाख बोतेर हजार श्राविकानी संपदा, चोरासी हजार वर्षनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणियेमुक्ति यक्षेंद्र यक्ष अने धारिणी देवी अधिष्ठायक, ए अढारमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे तेमना निर्वाणथी*कोटी सहस्र वर्षे ओगणीसमा मल्लिनाथ निर्वाण पाम्या, तेमनो अधिकार कहे छे. मिथिला नगरीए कुंभराय पिता, प्रभावती राणी माता, नीलवर्ण, घटनुं लंछन, पचीस धनुष ऊंची काया, त्रणसो पुरुष साथे दिक्षा, छद्मस्थपणुं एक दिवस, चालीस हजार साधु तेमां अठावीश गणधर, पंचावन हजार साधवी एक लाख त्रासी हजार श्रावक अने त्रण लाख सित्तेर हजार श्राविकानी संपदा, पंचावन हजार वर्षनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणियेमुक्ति कुबेर यक्ष अने वैरुटया देवी अधिष्ठायक, ए ओगणीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आरानां पांसठ लाख अने चोराशी हजार वर्ष रह्यां छे तेमांथी चोपन लाख वरस गये थके वीसमा मुनिसुव्रत स्वामी निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे, राजगृही नगरीए सुमित्रराय पिता पद्मावती राणी माता, आंखनी कीकीसम श्यामवर्ण, काचबानुं लंछन, वीसधनुष उंचो काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, त्रीस हजार साधु तेमां अढार गणधर, पचास हजार साधवी, एक लाख बहोतेर हजार श्रावक अने साडा त्रण लाख श्राविकानी संपदा, त्रीस हजार वरसनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति, वरुण यक्ष अने नरदत्तादेवी अधिष्ठायक ए वीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. तेमना निर्वाणथी छ लाख वर्ष गये थके एकवीसमा नमिनाथनुं निर्वाण थयुं तेमनो अधिकार कहे छे.

मिथिला नगरीये विजयराय पिता, वप्रादेवी माता, कंचन सम पित वर्ण, नीला कमळनुं लंछन, पंदर धनुष उंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, वीस हजार साधु तेमां सत्तर गणधर, एकतालीस हजार साधवी, एक लाख सीत्तेर हजार श्रावक, त्रण लाख अडतालीस हजार श्राविकानी संपदा, दश हजार वर्षनुं आयुष्य, समेतशिखरे समश्रेणिये मुक्ति भ्रकुटीसुर देव अने गंधारी देवी अधिष्ठायक, ए एकवीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. तेमना निर्वाणथी पांच लाख वर्षे बावीसमा नेमिनाथनुं निर्वाण थयुं तेमनो अधिकार कहे छे.

सूर्यपुरी नगरीए समुद्रविजयराय पिता, शिवादेवी माता, आंखनी कीकीसम श्यामवर्ण, शंखनुं लंछन, दश

धनुष ऊंची काया, एक हजार पुरुष साथे दिक्षा, अगियार वा अढार गणधर आदि अढार हजार साधु, चालीस हजार साधवी, एक लाख एकउण सित्तेर हजार श्रावक अने त्रण लाख ने छत्रीस हजार श्राविकानी संपदा, एक हजार वरसनुं आयुष्य. तेमां त्रणसो वरस गृहवासे बाळ, ब्रह्मचारी अने चोपन दिवस छद्मस्थ पर्याय, बाकी सातसो वर्ष देशेनणां केवळ पर्याय, रैवतगिरि पर्वते शुक्ल अष्टमीए समश्रेणिये मुक्त गोमेध यक्ष अने अंबिका देवी अधिष्ठायक. ए बावीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

हवे चोथा आरानां चोराशी हजार वर्ष रह्यां छे, ते मांथी त्याशी हजार सातसोने पचास वरस गये थके त्रेवीशमा पार्श्वनाथ निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे. वणारसी नगरीए अश्वसेनराय पिता, वामाराणी मात नीलवर्ण, नागनुं लंछन, नव हाथ ऊंची काया, त्रणसो पुरुष साथे दिक्षा, दस वा आठ गणधर आदि सोळ हजार साधु अने अरुत्रीस हजार साधवी, एक लाख चोसठ हजार श्रावक अने त्रण लाख ऊगणचालीस हजार श्राविकानी संपदा, सो वरसनुं आयुष्य तेमां त्रीस वरसना अनुमाने गृहवासे अने चोराशी दिवस छद्मस्थ पर्याय, सित्तेरवरस देशे ऊणां केवळ पर्याय, समेतशिखरे शुक्ल अष्टमीए समश्रेणिये मुक्ति, पार्श्वयक्ष अने पद्मावती देवी अधिष्ठायक ए तेवीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो. तेमना निर्वाणथी अढीसो वरस गये थके चोवीसमा वर्द्धमान स्वामी निर्वाण पाम्या तेमनो अधिकार कहे छे.

क्षत्रीयकुंड नगरीए सिद्धारथराय पिता, त्रिसलाराणी माता, कंचनसम पितवर्ण सिंहनुं लंछन, सप्त हाथ ऊंची काया, एकाकीपणे दिक्षा, चौद हजार साधु तेमां अगियार गणधर, छत्रीस हजार साधवी, एक लाख ओगणसाठ हजार श्रावक, त्रण लाख अढार हजार श्राविकानी संपदा, त्रीस वरस गृहवास, बार वरसने साडा छ मास छद्मस्थ पर्याय, त्रीस वरस देशे ऊणां केवळ पर्याय, एम बहोतेर वरसनुं आयुष पूर्ण करी अमावास्यानी पाछली बे घडी रात्री रहे थके स्वाति नक्षत्रे पावापुरी नगरीए समश्रेणि ये मुक्ति, मातंग यक्ष अने सिद्धायिका देवी अधिष्ठायक ए चोवीसमा तीर्थंकरनो अधिकार कह्यो.

अहींआं चोथा आरानां नव्याशी पखवाडीआं काळ बाकी रह्यो छे तेनुं कारण ऋषभदेव स्वामीनुं निर्वाण त्रीजा आरानां नव्याशी पखवाडीआं रहे छते थएलुं, ते कारणे अहीं चोथा आरानो काळ गवेष्यो, तेमां प्रत्येक तीर्थंकरना वारे नव्याशी पखवाडीआं निर्वाण अवसरे पाछळ करीए एटले चोथा आरानां नव्याशी पखवाडीआं बाकी रह्यानुं प्रमाण मळशे, अने चोथो आरो एक कोडा कोडी सागरोपममां बेतालीस हजार वरस ऊणांनो पूर्ण थशे ए वीरप्रभुना अगीआर गणधर तेमां भगवान विद्यमान छतां नव गणधर तो सिद्धि वर्या छे, एक पेहेला अने बीजा पांचमा ए बे गणधर छद्मस्थ पर्याये छे, तेमां भगवानना निर्वाण अवसरे आयुष्यने अंते पांचमा गणधर सुधर्मा स्वामी भगवाननी पासे छे तेमने पाट भगवाने

सोंप्यो. गौतम स्वामीने जगवाने पोताना उपर अतिराग जाणीने उपदेश करवाना कारणे गामांतरे जवानी आज्ञा करीने मोकलेला छे, त्यांथी आवतां रस्तामां तेज प्रजाते जगवान वीरप्रजुनुं निर्वाण थयुं, एम देवताना मुखथी सांजळीने एकदम मूर्छागत थइ हेठा पड्या, वज्रघात सरखुं दुःख प्राप्त थयुं, रागना कारणे घणा विलाप कर्या, कृणेक अंतरे समज्या के मारी जूल छे, ए वीतराग निरागी-निःस्नेही उपर में राग कीधो, धिक्कार छे एक पखारागने-कोना गुरु अने कोना शिष्य एक वस्तुगते पोतानी आत्मसत्तानुं अवलंबन करवुं एज श्रेय छे, कल्याणकारी छे. वाकी सर्व मिथ्या एम कारणनो अजाव थतां सरागता अटकी, त्यां तदाश्रुतनो अंतरजावे उपयोग करी परिणाम पामतां सरागतापणे मोहित दशानुं बंधन हतुं ते त्रूटयुं अने वीतरागता प्रगट थइ, शुक्ल ध्यानना ध्याता थया, क्षपकश्रेणी मांडी घातिकर्म हणी, जवज्रमणानुं वीज जे घातिकर्म तेने ध्यान अग्निए वाळी जाळीने केवळज्ञान केवळदर्शन आदि क्षायकजावनी अनंती लब्धि पाम्या, देवदेवेंद्र मळीने जातिवंत कंचनना कमळनी रचना करी मोटो उत्सव कर्यो, गौतमस्वामी महाराजे केवलज्ञानी थका उपदेश कर्यो, चतुर्विध संघे सांजळ्यो, त्यां अनंतो लाज थयो, जाव संवर अने सकाम निर्जरा घणा जनो पाम्या. अहीं चोथा आरानो अधिकार समाप्त थयो.

આ અવસર્પિણિકાળે વર્ત્તમાન ચોવીશીનો ત્રેવીસ બોલનો યંત્ર.

૯	૧૦	૧૧	૧૨	૧૩	૧૪	૧૫
ચ્યવન તિથિ	જન્મતિથિ	દિક્ષા તિથિ	કેવળજ્ઞાન તિથિ	નિર્વાણતિથિ	કેટલાસાથે દિક્ષા	ગણ-ધર
અસાડ વદી ૪	ચૈત્ર વદી ૮	ચૈત્રવદ ૮	ફાગણવદ ૧૧	માહાવદ ૧૩	૪૦૦૦	૮૪
વૈશાખ શુદ ૧૩	માહા શુદ ૮	માહાવદ ૯	પોસવદ ૧૧	ચૈત્રશુદ ૫	૧૦૦૦	૯૫
ફાગણું શુદ ૮	માહા શુદ ૧૪	માગશરશુદ ૧૫	કારતકવદ ૫	ચૈત્રશુદ ૫	૧૦૦૦	૧૦૨
વૈશાખ શુદી ૪	માહા શુદ ૨	માહાશુદ ૧૨	પોષવદ ૧૪	વૈશાખશુદ ૮	૧૦૦૦	૧૧૬
શ્રાવણ શુદ ૨	વૈશાખ શુદ ૮	વૈશાખશુદ ૯	ચૈત્રશુદ ૧૧	ચૈત્રશુદ ૯	૧૦૦૦	૧૦૦
માહા વદ ૬	કારતક વદ ૧૨	કારતકવદ ૧૩	ચૈત્રશુદ ૧૫	માગશરવદ ૧૧	૧૦૦૦	૧૦૭
ભાદરવા વદી ૮	જેઠ શુદ ૧૨	જેઠશુદ ૧૩	ફાગણવદ ૬	ફાગણવદ ૭	૧૦૦૦	૯૫
ચૈત્ર વદી ૫	પોસ વદ ૧૨	પોષવદ ૧૩	ફાગણવદ ૭	ભાદરવાવદ ૭	૧૦૦૦	૯૩
ફાગણવદ ૯	માગશર વદ ૫	માગશરવદ ૬	કારતકશુદ ૩	ભાદરવાશુદી ૯	૧૦૦૦	૮૮
વૈશાખ વદી ૬	માહા વદ ૧૨	માહાવદી ૧૨	પોષવદ ૧૪	વૈશાખવદ ૨	૧૦૦૦	૮૧
જેઠ વદ ૬	ફાગણવદ ૧૨	ફાગણવદ ૧૩	મહાવદી ૧૩	શ્રાવણવદ ૩	૧૦૦૦	૭૬
જેઠ શુદ ૯	ફાગણવદ ૧૪	ફાગણશુદ ૧૫	મહાશુદ ૨	અસાડશુદ ૧૪	૬૦૦	૬૬
વૈશાખ શુદ ૧૨	માહાશુદ ૩	માહાશુદ ૪	પોષશુદ ૬	અસાડવદ ૭	૧૦૦૦	૫૭
શ્રાવણ વદ ૭	વૈશાખવદ ૧૩	વૈશાખવદ ૧૪	વૈશાખવદ ૧૪	ચૈત્રશુદ ૫	૧૦૦૦	૫૦
વૈશાખ સુદી ૭	માહાશુદ ૩	મહાશુદ ૧૩	પોષશુદ ૧૫	જેઠશુદ ૫	૧૦૦૦	૪૩
ભાદરવા વદ ૭	જેઠવદ ૧૩	જેઠવદ ૧૪	પોષશુદ ૯	જેઠવદ ૧૩	૧૦૦૦	૩૬
શ્રાવણ વદી ૯	વૈશાખવદ ૧૪	ચૈત્રવદ ૫	ચૈત્રશુદ ૩	વૈશાખવદ ૧	૧૦૦૦	૩૫
ફાગણ શુદી ૨	માગશરશુદ ૧૦	માગશરશુદ ૧૧	કારતકશુદ ૧૨	માગશરશુદ ૧૦	૧૦૦૦	૩૩
ફાગણ શુદી ૪	માગશરશુદ ૧૧	માગશરશુદ ૧૧	માગશરશુદ ૧૧	ફાગણશુદ ૧૨	૩૦૦	૨૮
શ્રાવણ શુદ ૧૫	જેઠવદ ૮	ફાગણશુદ ૧૨	ફાગણવદ ૧૨	જેઠવદ ૯	૧૦૦૦	૧૮
આસો શુદ ૧૫	શ્રાવણવદ ૮	અસાડવદ ૯	માગશરશુદ ૧૧	વૈશાખવદ ૧૦	૧૦૦૦	૧૭
કારતક વદ ૧૨	શ્રાવણશુદ ૫	શ્રાવણશુદ ૬	આસોવદ ०))	અસાડશુદ ૮	૧૦૦૦	૧૧
ચૈત્ર વદ ૪	પોષવદ ૧૦	પોષવદ ૧૧	ચૈત્રવદ ૪	શ્રાવણશુદ ૮	૩૦૦	૧૦
અસાડ શુદ ૬	ચૈત્રશુદ ૧૩	માગશરવદ ૧૦	વૈશાખશુદ ૧૦	કારતકવદ ०))	૧	૧૧

આ વર્ત્તમાન અવસર્પિણિકાલે ત્રેસઠ સલાકા પુરૂષ થઇ ગયા તેમનો યંત્ર.

અંક	તીર્થંકર.	ચક્રવર્તિ	વાસુદેવ	બળદેવ	પ્રતિવાસુદેવ	દેહ પ્રમાણ	આયુષ્ય
૧	ઋષભદેવજી	ભરત ૧	૦	૦	૦	૫૦૦ ધનુષ્ય	ચોરાસીલાખપૂર્વ
૨	અજિતનાથ	સગર ૨	૦	૦	૦	૪૫૦ ધનુષ્ય	બોતેરલાખપૂર્વ
૩	સંભવનાથ	૦	૦	૦	૦	૪૦૦ ધનુષ્ય	સાઠલાખપૂર્વ
૪	અભિનંદન	૦	૦	૦	૦	૩૫૦ ધનુષ્ય	પચાસલાખપૂર્વ
૫	સુમતિનાથ	૦	૦	૦	૦	૩૦૦ ધનુષ્ય	ચાલીસલાખપૂર્વ
૬	પદ્મપ્રભ	૦	૦	૦	૦	૨૫૦ ધનુષ્ય	ત્રીસલાખપૂર્વ
૭	સુપાર્શ્વનાથ	૦	૦	૦	૦	૨૦૦ ધનુષ્ય	વીસલાખપૂર્વ
૮	ચંદ્રપ્રભ	૦	૦	૦	૦	૧૫૦ ધનુષ્ય	દશલાખપૂર્વ
૯	સુવિધિનાથ	૦	૦	૦	૦	૧૦૦ ધનુષ્ય	બેલાખપૂર્વ
૧૦	શિતળનાથ	૦	૦	૦	૦	૯૦ ધનુષ્ય	એકલાખપૂર્વ
૧૧	શ્રેયાંસનાથ	૦	ત્રિપૃષ્ટ ૧	અચળ ૧	અશ્વગ્રીવ ૧	૮૦ ધનુષ્ય	ચોરાસીલાખવર્ષ
૧૨	વાસુપૂજ્ય	૦	દ્વિપૃષ્ટ ૨	વિજય ૨	તારક ૨	૭૦ ધનુષ્ય	બોતેરલાખવર્ષ
૧૩	વિમળનાથ	૦	સ્વયંભુ ૩	ભદ્ર ૩	મેરક ૩	૬૦ ધનુષ્ય	સાઠલાખવર્ષ
૧૪	અનંતનાથ	૦	પુરૂષોત્તમ ૪	સુપ્રભ ૪	મેધકે ૪	૫૦ ધનુષ્ય	ત્રીસલાખવર્ષ
૧૫	ધર્મનાથ	૦	પુરૂષસિંહ ૫	સુદર્શણ ૫	નીસંભ ૫	૪૫ ધનુષ્ય	દશલાખવર્ષ
૦	૦	મઘવા ૩	૦	૦	૦	૪૨॥ ધનુષ્ય	પાંચલાખ વર્ષ
૦	૦	સનતકુમાર ૪	૦	૦	૦	૪૧॥ ધનુષ્ય	ત્રણલાખવર્ષ
૧૬	શાંતિનાથ	શાંતિનાથ ૫	૦	૦	૦	૪૦ ધનુષ્ય	એકલાખવર્ષ
૧૭	કુંથુંનાથ	કુંથુંનાથ ૬	૦	૦	૦	૩૫ ધનુષ્ય	પંચાણુંહજારવર્ષ
૧૮	અરનાથ	અરનાથ ૭	૦	૦	૦	૩૦ ધનુષ્ય	ચોરાસીહજારવર્ષ

आ वर्त्तमान अवसर्प्पिणि काळे पांच जरत अने पांच ऐरव्रत ए दश क्षेत्रमां प्रत्येक क्षेत्रे एक एक चोवीसी थाय अने तीर्थंकरोना वचमां काळनां आंतरां पडे तेनो यंत्र.

१ आं जरतक्षेत्रमां प्रथम ऋषजदेव स्वामी थया तेमना निर्वाणने अनें गत चोवीसना छेल्ला तीर्थंकरना निर्वाणने अढार कोमाकोमी सागरोपमनो आंतरो.

२ पेहेला तीर्थंकर अने बीजा तीर्थंकर वच्चे बेतालीस हजार वर्ष उणां पचास लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.

३ बीजा तीर्थंकर अने त्रीजा तीर्थंकर वच्चे त्रीस लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.

४ त्रीजा तीर्थंकर अने चोथा तीर्थंकर वच्चे दश लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.

५ चोथा तीर्थंकर अने पांचमा तीर्थंकर वच्चे नव लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.

६ पांचमा तीर्थंकर अने छठा तीर्थंकर वच्चे नेवुं हजार कोमी सागरोपमनो आंतरो.

७ छठा तीर्थंकर अने सातमा तीर्थंकर वच्चे नव हजार कोमी सागरोपमनो आंतरो.

८ सातमा तीर्थंकर अने आठमा तीर्थंकर वच्चे नवसो कोमी सागरोपमनो आंतरो.

९ आठमा तीर्थंकर अने नवमा तीर्थंकर वच्चे नेवुं कोडी सागरोपमनो आंतरो.

१० नवमा तीर्थंकर अने दशमा तीर्थंकर वच्चे नव कोडी सागरोपमनो आंतरो.

११ दशमा तीर्थंकर अने अगियारमा तीर्थंकर वच्चे सो सागरोपम अने पांसठ लाख चोराशी हजार वर्षे न्यून एक कोडी सागरोपमनो आंतरो.

१२ अगीआरमा तीर्थंकर अने बारमा तीर्थंकर वच्चे चोपन सागरोपमनो आंतरो.

१३ बारमा तीर्थंकर अने तेरमा तीर्थंकर वच्चे त्रीस सागरोपमनो आंतरो.

१४ तेरमा तीर्थंकर अने चौदमा तीर्थंकर वच्चे नव सागरोपमनो आंतरो.

१५ चौदमा तीर्थंकर अने पंदरमा तीर्थंकर वच्चे चार सागरोपमनो आंतरो.

१६ पंदरमा तीर्थंकर अने सोळमा तीर्थंकर वच्चे पोणोपल्यापमे न्यून त्रण सागरोपमनो आंतरो.

१७ सोळमा तीर्थंकर अने सत्तरमा तीर्थंकर वच्चे अरधा पल्योपमनो आंतरो.

१८ सत्तरमा तीर्थंकर अने अढारमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वर्षे उणो पा पल्योपमनो आंतरो.

१९ अढारमा तीर्थंकर अने उगणीसमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वर्षनो आंतरो.

२० उगणीसमा तीर्थंकर अने वीसमा तीर्थंकर वच्चे चोपन लाख वरसनो आंतरो.
२१ वीसमा तीर्थंकर अने एकवीसमा तीर्थंकर वच्चे छ लाख वर्षनो आंतरो.
२२ एकवीसमा तीर्थंकर अने बावीसमा तीर्थंकर वच्चे पांच लाख वरसनो आंतरो.
२३ बावीसमा तीर्थंकर अने त्रेवीसमा तीर्थंकर वच्चे त्र्यासी हजार सातसोने पचास वर्षनो आंतरो.
२४ तेवीसमा तीर्थंकर अने चोवीसमा तीर्थंकर वच्चे अढीसें वर्षनो आंतरो.

आवती जावी चोवीसीए पांच जरत अने पांच ऐरव्रत ए दस क्षेत्रमां क्षेत्र क्षेत्र प्रत्ये एक एक चोवीसी उत्सर्पिणि काळे थशे तेमां तीर्थंकरोना वचमां काळनां आंतरां पडे तेनो यंत्र.

१ आ जरत क्षेत्रमां प्रथम तीर्थंकर पद्मनाज स्वामी थशे तेमना निर्वाणने अने महावीर स्वामीना निर्वाणने चोरासी हजार वरसनो आंतरो.
२ पेहेला अने बीजा तीर्थंकर वच्चें अढीसो वरसनो आंतरो.
३ बीजा अने त्रीजा तीर्थंकर वच्चे त्र्यासी हजार सातसोने पचास वर्षनो आंतरो.

४ त्रीजा अने चोथा तीर्थंकर वच्चे पांच लाख वरसनो आंतरो.

५ चोथा अने पांचमा तीर्थंकर वच्चे ७ लाख वरसनो आंतरो.

६ पांचमा अने ७ठा तीर्थंकर वच्चे चोपन लाख वरसनो आंतरो.

७ ७ठा अने सातमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वरसनो आंतरो.

८ सातमा अने आठमा तीर्थंकर वच्चे कोटी सहस्र वरसे ऊणा पा पल्योपमनो आंतरो.

९ आठमा अने नवमा तीर्थंकर वच्चे अरधा पल्योपमनो आंतरो.

१० नवमा अने दशमा तीर्थंकर वच्चे पोणा पल्योपमे न्यून त्रण सागरोपमनो आंतरो.

११ दशमा अने अगीआरमा तीर्थंकर वच्चे चार सागरोपमनो आंतरो.

१२ अगीआरमा अने बारमा तीर्थंकर वच्चे नव सागरोमनो आंतरो.

१३ बारमा अने तेरमा तीर्थंकर वच्चे ७त्रीस सागरोपमनो.

१४ तेरमा अने चोदमा तीर्थंकर वच्चे चोपन सागरोपमनो.

१५ चौदमा अने पंदरमा तीर्थंकर वच्चे पांसठ लाख चोराशी हजार वर्ष अने सो सागरोपम न्यून एक कोडी सागरोपमनो आंतरो.

१६ पंदरमा अने सोळमा तीर्थंकर वच्चे नव कोमी साग-
रोपमनो आंतरो.

१७ सोळमा अने सत्तरमा तीर्थंकर वच्चे नेवु कोमी साग-
रोपमनो आंतरो.

१८ सत्तरमा अने अढारमा तीर्थंकर वच्चे नवसो कोमी
सागरोपमनो आंतरो.

१९ अढारमा अने उगणीसमा तीर्थंकर वच्चे नव हजार
कोमी सागरोपमनो आंतरो.

२० उगणीसमा अने वीसमा तीर्थंकर वच्चे नेवुं हजार को-
मी सागरोपमनो आंतरो.

२१ वीसमा अने एकवीसमा तीर्थंकर वच्चे नव लाख को-
मी सागरोपमनो आंतरो.

२२ एकवीसमा अने बावीसमा तीर्थंकर वच्चे दस लाख
कोमी सागरोपमनो आंतरो.

२३ बावीसमा अने त्रेवीसमा तीर्थंकर वच्चे त्रीस लाख को-
मी सागरोपमनो आंतरो.

२४ त्रेवीसमा अने चोवीसमा तीर्थंकर वच्चे बेतालीस ह-
जार वर्षे न्यून पचास लाख कोमी सागरोपमनो आंतरो.



अहीआं चोथा आराना अधिकारनी समाप्ति करी.
हवे पांचमा आरानो भाव कहे छे. पांचमो आरो एकवी-
स हजार वरसनो दुःषम नामे छे, एटले आ काळे दुःख

ज छे, सुख नथी तेनुं कारण ए छे के चोथा आराना श्रेष्ट कालने मोहपल्लीए धक्को मारी पाछो हठावी मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रि सर्वने मदिरानो प्यालो पायो छे, तेथी निर्दयपणुं, असत्य मृषापणुं, चोरीपणुं, विषयरक्तपणुं, अति तृष्णापणुं, कषायनी बहोळता, अप्रशस्तनुं रागीपणुं, प्रशस्तनुं द्वेषीपणुं, कुसंपपणुं, अछता कलंकनुं देवुं, एकनी चाडी बीजाने करवी, मोटप नहीं छते मोटप मानवी, छोटप नहीं छते कृपण थइने छोटप करवी, पारकी निंदा करवी, कपट केळववुं, प्रपंच करवो, फंदो रचवो, इत्यादि पापस्थाननुं सेवन, बहुधा तो धनाढ्य अने निर्धन, सर्व जीवोए आ काले ग्रहण कर्युं छे, तेथी पापपुंज बांधवुं, तेमां किंचित् नाम मात्र सुकृत व्यवहारे कोइक जीवो ग्रहण करे तेथी अल्प ऋद्धि पामे, ते ऋद्धिमां मूर्छित थइने पाछा पाप उपार्जे, ते पापनो उदय थाय तेथी सुखनो संभव क्यांथी आवे ? वळी कोइ वीरला जीवो मोहना छाकथी नोखा पडेला हशे, आश्रवथी अळगा थयेला, ते सुकृत जोगे पुन्य उपार्जे, गुण निष्पन्न जोगे सकाम निर्जरा करे तेथी मिथ्यात्व कषायादि अशुभ कर्मने निर्जरे, एम पांचमा आरामां भासन थाय छे; कारण के सातमा गुणठाणा सुधीना जीवोनी योग्यता आ काळे जोवामां आवे छे, वळी ग्रंथादि सिद्धांतमां पण पांचमा आराना छेडा सुधी चारित्र धर्म, बे चारित्रनी अपेक्षाए अखंडपणे वीरनुं शासन जयवंतु चालशे एम लखे छे, परंतु गुणग्राही तो अल्प देखाय छे.

घणो न्नाग तो पहेला गुणगणाना धणी, परमात्मानी आज्ञाना अग्राहक एम न्नासे ठे, कारण के वस्तुगत न्नावना अजाण, जन्न न्नावमां रच्या पच्या, बाह्य करणीना रागी, अध्यात्मना द्वेषी, एवा समुदाय घणा जोवामां आवे ठे, अने न्नेद ज्ञाननी अपेक्षाए बोलनारा नपयोगी पुरुषो कोइ वीरला आ क्षेत्रे देखाय ठे, तेथी बहुधा तो निर्गुणी, समकित आदि गुण रहित, तेमां पण शुन्न आश्रवना नपार्जवा वाळा थोमा अने पापना बांधवावाळा घणा, एम न्नासे ठे, तेमां जे जीवो समकितादि गुणने पामेला ठे, तेने तो आ न्नव सुधर्यो अने आवतो न्नव पण गुण जोगे पुन्य ग्रहण करवाथी सुधर्यो, परंतु ते न्नाग अल्प ठे अने गुण निष्पन्न विनाना जीवो पुन्य, कष्ट क्रिया जोगे किंचित् नपार्जे, तो ते बहुधा तो अशुन्न आचरण जोगे शुन्न दळ विखरी जाय, अने कदाच न विखरे तो शुन्न बंध बांधवाथी आवतो न्नव सुधर्यो एम व्यवहारे कहीए. ते गुण निष्पन्नपणाना अन्नावे पुन्य तो करीए त्यारे थाय, अने गुण निष्पन्न जोगे तो विना कर्ये पण अधिक अधिक पुन्य चाल्युं आवे ठे. प्रशस्त रागे श्रेणीक महाराजे अविरति थका जिननामकर्म बांध्युं तद्वत्, परंतु ए बे विना त्रीजाने तो पाप बांधवाथी आ न्नव बगड्यो अने आवतो पण बगड्यो, कारण के पाप जोगे माठी गति प्राप्त थशे. एवा जीवो आ पांचमा आरामां बहुधा आ क्षेत्रे घणा होय अने चोथा आरामां गुण निष्पन्न जीवो घणा हता, तेथी

परमात्माए पांचमा आराना काळने दुषम कह्यो छे, ते दुषम काळना जीवोने समुदाये गवेषे छे. पुन्य हीण जीवोने इच्छा, मनोरथ, मूर्छा घणी होय छे अने पापना उदय जोगे उद्यम करतां पण वस्तु मळती नथी, मनोरथ पूरा थता नथी, एज मोटुं दुःख. कदाच पुन्य जोगे प्रयत्न एटले उद्यम करतां मळी, ते उद्यम करवानुं पण आ काळे घणुं दुःख छे, लोभने माटे भूख, तरस, टाढ, ताप, रात, दिवस, कांटा, कादव, भांठा, अंधारीउं, अजवाळीउं, वृष्टि, अनावृष्टि, वाट, उवाट, इत्यादि कारण जोगे लोभना अर्थे उद्यम करतां जीव भवपर्यंत दुःख भोगवे छे. शेठनी नोकरी सारी पण लोभनी नोकरी अति बुरी छे, शेठनी नोकरी दिवसनी छे अने लोभनी नोकरी रात दिवसनी छे, वळी शेठ तो वार पर्वे अवसरे रजा आपे, अने लोभनी रजा तो एक क्षणवार पण जीवने मळती नथी. घणुं ज दुःख भोगवे छे, ते दुःखने लोभ सागरमां तणातो थको जीव गणतो नथी. लाभने देखे अने माचे के मारा जेवो कोण होशिआर अक्कलवाज छे, हुं करूं ते बीजाथी न बने; एम दुःख भोगवीने राजीपणुं माने. लाभ जोइने मन राजी थाय पण काया कष्टीए करीने पीडाणी थकी राजीपणुं मानती नथी. कायाने कष्टी न पडे अने सहेजे सहेजे लाभ मळे तो उपचारे सुख मानीए. ए वस्तु मेळववानुं दुःख संक्षेपे कही देखाड्युं. हवे वस्तु मळी छे ते खाइए तो खुटी जाय अने वापरीए तो हानि थाय,

त्यारे रखोपुं करीने मरतां सुधी जीवो राजीपणुं माने के मारी पासे वस्तु छे, ए जीवोने सुख क्यांथी आवे ? आ जव दुःखे काढे, अने आवतो जव सर्पनो वा नोळीआनो, उंदरनो, गीरोळीनो, कूतरानो इत्यादि करीने उपर पूर्वजवनी मूर्छाए रखोपुं करतो थतो फर्या करे. एटले वे जव बगड्या माटे दुःख छे, अने सुख नथी. वळी कोइ पुरुष स्त्री, खाय, खवरावे, वापरे तेने गवेषे छे. ते पोते खाय, खवरावे, ते स्त्रीने पुत्र, पुत्रीने, जमाइने इत्यादि सगां वाहालांने खवरावे, वापरे; ते विवाह वाजनमां मृतकार्यमां ज्ञाति व्यवहारमां संसार मार्गे वापरे, तेथी मोटप माने. ए पैसो पाप जोगे मेळव्यो अने संसारमां तेनो व्यय कर्यो ते पाप बंध हेतु छे; एम करतां कोइ ते पैसानो व्यय करी शुज मारग जाणे एटले अनुकंपाए धर्महीण दीन दुःखीआंने आपे, वळी पात्र जाणी ब्राह्मणादिकने आपे अथवा सदाव्रत आपे, सरोवर खोदावे, पाणीनी परवो मंकावे, कूवा वावो खोदावे, कूतरांने खवरावे, न्याणेजने, जमाइने, छोकीने आपे, अने पुन्य माने: ते पुन्य कहीए तो पापानुबंधी पुन्यमां छे, अने पापमां पण छे, वळी ए लौकिक पक्ष छे ते गवेखीने कह्यो. हवे लोकोत्तर पक्षे पैसानो व्यय करवो ते व्यवहारने अनुसरीने गवेषे छे, मुनिरायने सत्य जाषा (बोली) ए जक्ति पूर्वक सूझतुं अढळक धन आग्रह करीने देवुं. ज्ञान पुस्तक लखाववुं, जणताने सहाय आपवी दिक्षा उछव करवो, गीतारथनुं सामैयुं करवुं, जजमणुं

करवुं, देरासर करावववां, जीर्ण देहेरा समराववां, प्रतिमाउ जराववी, पुजा प्रन्नावना करवी, आंगी रचवी, रचाववी, स्वामीन्नाइनी न्नक्ति करवी. स्वामी वत्सल इत्यादि लोकोत्तर पक्के व्यय करवानो कह्यो. ते घणा जनो धन पामीने करे तेमां घणी तरमता छे, एक तो मोटप माटे खरचे तेने लोकोत्तर फळ मळतुं नथी, बीजा आकांक्षाए एटले परन्नवे जोग संयोग पामवाना अन्निलाषे खरचे, तेने लोकोत्तर लान्न होय नहीं. त्रीजा कृपणताये खरचे, तेने फळ मळवामां उंगाश थाय. चोथा खरचीने पस्तावो करे के घणुं खरच थइ गयुं, फलाणे खरचाव्युं, आटलुं खरच करवुं नहोतुं, तेनुं खरचेलुं धने गयुं अने मेळवेलुं पुन्य पण पस्तावो करवाथी घणुं विखरी गयुं, अल्प रह्युं. एम थाय त्यारे लोकोत्तर मार्गे पैसो वापर्यो, परंतु लोकोत्तर फळ न मळ्युं. एटले प्रथमतो लौकिक लोकोत्तर फळने समजवुं जोइए. फळ तो व्यवहारे पुन्य बंध करवो तेने फळ कहीए. निश्चयमां समकितादि गुण निष्पन्न करवो तेने फळ कहीए, परंतु अहीआं तो व्यवहार नयनी मुख्यता छे ते प्रशस्त अध्यवसाये वर्त्ततां कारण जोगे शुन्न आश्रव एटले अघाति कर्म प्रकृतिनां शुन्नदळ ग्रहीने आत्म प्रदेशे एकत्वपणे बंध पारुवो तेने फळ कहीए, तेना बे न्नेद, एक लौकिक अने बीजो लोकोत्तर. लौकिक ते ए बंध करेलो तेनो उदय थये पुन्य न्नोगवतां पाछुं पाप बंधाय तेने लौकिक कहीए, अने पुन्य न्नोगवतां समकितादि गुण प्रगट करवानो, वळी

मूर्छा उतारवानो अने फरीने पुन्य उपार्जवानो हेतु थाय तेने लोकोत्तर कहीए. ते लोकोत्तर फळने कोण उपार्जे छे? तो जे पूर्वे रूपणो कह्यां इत्यादि दूषणोए वर्जित थइने उदार चित्ते पैसा उपरथी मूर्छा उतारीने निराशी भावे मोकळा मने पैसानो व्यय करे अने राजीपणुं माने. पैसो खर्च्यो ते सारु कर्युं एम पोताना आत्माने धन्य माने वळी व्यय कराववामां जे सहचारी पुरुष हेतु होय तेनो गुण लइने व्यय कर्यानी, वळी व्यय करावबा वाळानी अनुमोदना करे ते लोकोत्तर फळने उपार्जे. बीजा न उपार्जे. एवा जीवो तो आ काळे आ क्षेत्रे कोइ वीरला जोवामां आवे छे. अने लौकिक पुन्य बांधवा उपार्जवा वाळा घणा आवे छे, माटे दुःखे भव पुरो थाय, अने सुख गणीए तो मदोन्मत्त पणे दुःखने सुख मान्युं छे, पण परमार्थे सुख नथी. विचारी जुओ के दुःख शुं छे अने सुख शुं छे. तो असंतोषीपणुं एज दुःख अने संतोषीपणुं एज सुख. छती वस्तुए असंतोषीने सुख नथी, अने नही छतां संतोषीने सुख छे, नहीं छते संतोष करवावाळा पुरुषो आ क्षेत्रे आ काले कोइ वीरला जोवामां आवे छे, अने छती वस्तुए असंतोषी पुरुषो घणा जोवामां आवे छे, माटे आ पांचमा आराना काळने सर्वज्ञ देवे दुषम कह्यो छे. आ दुषमकाळे सूर्य समान केवळी भगवाननो विरह पडवाथी रात्री थइ केवळज्ञान रूप सूर्यनो अस्त थयो त्यां अंधकार व्यापक आ भरतक्षेत्र रात्रिसम थयुं ते अंधकारने टाळवा माटे

गीतार्थ निर्ग्रंथ रात्रीने विषे पूर्ण चंद्र समान प्रकाशना करवावाळा आ क्षेत्रे थया, जेना आधारे जैनतीर्थ प्रवर्त्ते छे. अज्ञान, मोह,आदि तिमिरांधकार भव्य जीवना अंतःकरणथी विलय पामे छे, अने शुद्ध चिदानंद स्वरूप प्रतिभासे छे, अरूपी आत्मा, अनुभव चक्षुए प्रत्यक्ष करे छे तद्रूप उपकारना कर्त्ता बहु श्रुत गीतार्थो घणा थया, तेमना गुणनी स्तुति करुंछुं, छेल्ला केवळी जंबुस्वामी आ पांचमा आरामां थया ते सोल वरस गृहवासे रह्या, अने वीस वरस छद्मस्थ पर्याये अने चुम्मालीस वरस केवळ पर्याय पाळी एंशी वरस आयुष पूरण करी सिद्धि वर्या, तेमना पाटे चौद पूर्वधर प्रभवा स्वामी थया, तेमना पाटे सीजंभव सूरि चौद पूर्वधर दश वैकालिक सूत्रना रचवावाळा थया, तेमना पाटे यशोभद्र सूरि चौद पूर्वधर थया. तेमना पाटे संभूतिविजयजीतथा भद्रबाहु स्वामी चौद पूर्वधर महा प्रभाविक थया. कल्पसूत्र आदि सिद्धांतना रचवावाळा, तेमना पाटे थूलीभद्र चौद पूर्वधर महा प्रभावीक थया, जेणे गुरुनी आज्ञा लइने कोश्याना घेर आवी चित्रशाळाए रहेता थका षट् रस भोजन आहार करता छता शीलगुणे निश्चळ चित्ते दिक्षा लइने प्रथम चोमासुं पूर्ण करी कोश्याने प्रतिबोधी समकितनी प्राप्तिना हेतु थया, जेनी अनुमोदना चोराशी चोवीशी सुधी महापुरुषो करशे, एवा उत्कृष्टा थइने चोमासु बदली गुरु पासे आव्या, गुरुए दुःकर दुःकर करणीना कर्त्ता कह्या. धन्य छे ए पुरुषोत्तमने

जेणे बार वरस पर्यंत सामी बार क्रोड सोनैया जेनी साथे खाधा छे, विषय भोग भोगव्या छे, तेनी साथे चतुर्मासु एकाकीपणे रहेता थका अने मादक आहार करता थका किंचित् मात्र मनथी पण डग्या नहीं, मूछ उतारी. छेटी दूर थइने तो सर्व तजे छे, पण नजीक थका तजे, तेनी तो बलिहारी छे. वळी अनुक्रमे सिद्धसेन दिवाकर महा प्रभाविक थया, जेणे विक्रम राजाने प्रतिबोधीने जैनी कर्यो, वळी संमतिआदि महा तार्किक ग्रंथो रच्या छे. जेनी दृष्टि अतिसूक्ष्म छे. एज काळे जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण विशेषावश्यक ग्रंथना कर्त्ता दस पूर्वधर थया छे. सिद्धसेन दिवाकरने अने जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणने चर्चाउ थइ ते चर्चामां पण अधिकताइ पणुं सिद्धसेन दिवाकरनुं भासे छे, परंतु बेउ महापुरुषोत्तम छे, भव भीरु छे, जीभनुं टेरवुं लांबु करवावाळा एके नथी, जिनभद्र गणी क्षमाश्रमण सिद्धांतवादी छे, अने सिद्धसेन दिवाकर नयवादी छे, जेनुं मुख दीठे पाप जाय एवा बेउ उत्तम छे, वळी उमास्वाति वाचक महा प्रभाविक थया, तेमना करेला तत्वार्थ, पर स्मृति आदि ग्रंथो घणा छे. महा पंडित, वीर्यवान, पूर्वधर छे. वळी वयरस्वामी महाप्रभावीक ज्ञानगुणे जन्मथी वृद्धि पामता थका बाल्यावस्थाए पंडितप्राय, सिद्धांतनो पाठ कंठाग्र विनाभणे सांभळीने कर्यो छे जेणे एवा, वळी अनेक लब्धिना पात्र, दस पूर्वनुं ज्ञान पाम्या, महा उपकारी थया. वळी देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महा प्रभाविक थया

जेणे वल्लभिपुर नगरे साधुनो समुदाय एकठो मेलवी सि-
द्धांत विच्छेद जवाना जयथी गणधर रचित सिद्धांतोना प-
रमार्थ बोध साधुर्जना मुखथी पूछी लइ, संकलना मेळवी
शैली प्रमाणे मागधी जाषाए आचारांगादि सिद्धांतो रच्या,
ते सिद्धांतोनी टीकाना कर्त्ता महामुनि गीतार्थ अजय दे-
वसूरि तथा शिलांगाचार्य अने मलयगिरि आदि थया, ते-
मणे विस्तार बुद्धिए गुह्यार्थने उणीने प्रगट करी जेम रा-
त्रिए दीवो अजवाळुं करे तेना प्रकाशे वारीक वस्तु नजर
आवे, तेम परोक्ष वस्तु वा सूक्ष्म जाव जाणवामां आवे,
एम स्फुट करी देखाड्या. ते सिद्धांतो, ते टीका महामुनिना
मुखथी मारा जेवा वाळ जीवोने श्रवण करवा, चिंतवन
करवाने अर्थे वर्त्तमान अवसरे थाय छे, ते उपकारना कर्त्ता ए
महा मुनि छे, वळी हरिजद्र सूरि महा प्रजाविक थया,
जेणे चौदसो चुम्मालीस तो ग्रंथो रच्या छे, वळी पाटणनी
गादीए सिद्धराज जेसंग तथा कुमारपाळ मोटा छत्रपति
राजा थया, तेमना गुरु हेमचंद्र सूरि आ कलिकाळे सर्वज्ञ
सरखा महा प्रजाविक थया तेमणे योगशास्त्र अने स्याद्वाद
मंजरी आदि घणा ग्रंथो रच्या छे. वळी सिद्धराज जेसंगनी
वखते वीजा पण घणा पंमितोनी सजा हती ते सजामां
महामुनि हेमचंद्रसूरिनुं अग्रेसरपणुं हतुं ते अग्रेसरपणाने
नहीं सहन करतां ब्राह्मण लोको ते आचार्यने एम वोल्या
के अंते तमारा गुरु अमे छीए. कारण के तमे जे व्याक-
रण जणो छो ते अमारा वमील पंमितोनुं करेलुं छे. त्यां

हेमचंद्रसूरिए उत्तर कर्यो छे के हुंतो ए व्याकरण जाणतो नथी, अने तमारा वडीलो अमारा गुरु पण नथी, त्यारे ते पंडितोए पूछयुं के तमे कयुं व्याकरण जाणो छो? त्यारे हेमचंद्र सूरि बोल्या के हुं तो जैनी व्याकरण जाणतो हुं. जिनेंद्रना मुखथी बाळ अवस्थाए निशाळगरणाना अवसरे देवदेवेंद्रनो अने मनुष्यनो समुदाय मळे छते अध्यापकने सामो बेसाडी वीर स्वामीने सुधर्म इंद्र तख्ते बेसार्या त्यां मधुरध्वनीए भगवान महावीरस्वामीए उच्चारण कर्युं छे ते व्याकण जाणतोहुं. त्यां ब्राह्मण लोकोए पूछयुं के ए व्याकरण तमने कोणे जणाव्युं? तेनो उत्तर हेमचंद्र सूरिए आप्यो के ए व्याकरण मने सरस्वतिए जणाव्युं छे, हुं सरस्वती पुत्र हुं. त्यारे पछी हेमचंद्रसूरिए हेमव्याकरण तथा हेमकोश रच्यो छे. ए व्याकरणना आगळ बीजां व्याकरण थूल छे, अने हेम व्याकरण सूक्ष्म छे, वळी हेमचंद्रसूरिना रचेला ग्रंथोमां सामानिक पुरुषोथी पेसारो पण थतो नथी. जे विशेषोपयोगी होय तेज ए ग्रंथोना भाव जाणी शके, वळी कुमारपाळना वखते दुनिआमां अमार पडो वजडाव्यो छे, हाथी घोडाने गळीने पाणी पाय छे वळी पुंजोने पलाण मांडे छे, महा दयाळु ज्ञाता छे, कुमारपाल जेवा जैनी राजा तो बहुधा चोथा आरामां पण नहीं थया होय. वळी हिरविजय सूरि महा प्रभाविक थया जेणे अकबर बादशाहने प्रतिबोधी जैनी कर्यो, वळी दुनिआमां अमार पडह वजडाव्यो छे, वळी यशोविजयजी

उपाध्याय महा प्रभावीक थया, जेमणे काशीए जइने न्यायशास्त्र भणी न्यायविसारद पदवी मेळवी छे. वळी तेमना रचेला ज्ञानार्णव, ज्ञानसार, अध्यात्मसार, वैराग्य-कल्पलता, द्रव्यगुणपर्यायनो रास इत्यादि सो ग्रंथो कहेवाय छे, ते काळे महामुनि आनंदघनजी थया छे, एमनुं नाम तो लाभाचंदजी छे, तेमनी करेली चोवीसी, बोहोतरी आदि अध्यात्मिक पदो छे. ए बे पुरुषोत्तम आत्मदर्शित आत्मज्ञानी छे, वळी ए बे भेगा थयेला एम पण भासे छे, कारण के ए बेउ जणना करेलां आठ आठ पद छे, ते पदोमां एक एकना गुणनी परस्पर प्रमोदता छे, तेमां आनंदघनजी संत पुरुष छे, अने जशोविजयजी उपाध्यायतो महा तार्किक शिरोमणी पंडित छे, वळी यशोविजयजीनी साथे विनयविजयजी उपाध्याय थया तेमना रचेला लोक प्रकाश, शान्त सुधारस आदि ग्रंथो छे. वळी कल्पसूत्रनी टीका, सुकबोधिका पण एमनी करेली छे, वळी महामुनि देवचंद्रजी थया तेमना करेला नयचक्रसार, ध्यानमाळा, चोवीसी, वीसी, आदि ग्रंथो छे, ए गीतार्थ द्रव्यानुयोगना जाण, कदाग्रह रहित, गुणग्राही, गुणारागी, भवभीरु हता. वळी मुनिचिदानंदजी आत्मज्ञानी आत्मदर्शी थया तेमनी करेला परमात्म छत्रीसी तथा पुद्गल गीता, वळी आत्मबोध सवैया आदि अध्यात्मिक पदो तेमनुं नाम तो कपुरचंदजी छे परंतु कवितामां चिदानंदजी नाम आप्युं छे, वळी ओगणीसें भणनी सालमां

महा पुरुषोत्तम हुकम मुनि स्वयंबुधपणे राधनपुर नगरे दिक्षा लइ निस्पृह न्नावे संजम पाळी ग्रामांनुग्रामे विहार करी विचरता ठता, जव्य जीवोने बोधि बीज पमाकता ठता, अध्यात्मन्नावनी प्ररूपणा करता ठता संवेगद्धार, तत्त्वसारोद्धार, अध्यात्म सारोद्धार सिद्धांत सारोद्धार, ज्ञानविलास, ध्यानविलास, अनुन्नवप्रकाश, परिणति प्रकाश, ज्ञानजूषण, मिथ्यात्वविध्वंसण, आत्मचिंतामणी, मित्र परिक्षा, बोध दिनकर, संतस्वरूप पंचाशी, अध्यात्म ठन्नुवी, अन्नाव प्रकरण, रागमाळा, वस्तुकपूजा, मनोरथन्नावना, चिदानंदबत्रीसी, सिद्धनी ढाळो, इत्यादि रचना करी ठे, वळी मारा तो परम उपकारी एज ठे एमना गुणनो हुं रागी छुं, ते गुणरागीपणामाटे किंचित् विस्तारीने स्तुति करुंछुं.

दिक्षा लइने पेहेलुं चोमासुं पालीताणे कर्युं, शत्रुंजय गिरि उपर अनेक वार चढी जिनराजनी स्थापना जैनप्रतिमा निरखी वंदन नमन पंचांग प्रणाम करी पदस्थ, पिंमस्थ, रूपस्थ, ध्यान दशा चिंतवी न्नावस्तव कर्यु ठे. वळी ए गिरिए अनंता मुनि सिद्ध वर्या ठे, तेमनी समश्रेणि ए गिरिए चिंतवी प्रमोदित थया ठे, समाधि पाम्या ठे, एम करतां चौमासुं पूर्ण थया केके विहार करी ग्रामानु ग्रामे लींबकी, वढवाण, ध्रांगध्रा, मोरवी, मांकल आदि ठेकाणे विचरता थका वढियार काठियावाक जिल्लामां सात आठ चोमासां प्राये कर्यां ठे. त्यारबाद अमदावाद थइने चलोतरमां

ग्रामानुग्रामे विचरता थका भव्य जीवोने बोधिबीज पमाडता थका निजात्माने भावता थका, वसो आदि नगरे बे चार चोमासां कर्यां छे. त्यार बाद चणोदरा, पादरा, सिनोर, विगेरे ग्रामानुग्रामे विचरता थका जंबुसर, आमोद, कंजट, अणखी, भरुद आदि ठेकाणे विचरी भव्य जीवोनें मिथ्यात्व दालिद्र थकी रहित करी, समकितादि गुणे धनाढ्य कर्या छे, वळी सिनोर, आमोद आदि चोमासां कर्यां छे. त्यार बाद भरुच, सुरत वगेरे ग्रामानुग्रामे विहार करी विचरता थका भव्य जीवोने अनंतो उपकार करता संवत १९०५ नी सालमां विंध्याचल पर्वत उपर महुडीना वृक्षनी छाया नीचे एक गुफामां मोटी तपस्या करीने, ध्यानारूढ थइ एकाकीपणे निर्भय थका सहज समाधिये वृद्धि पामता महा योगींद्र पंक्ति वीर्य फोरवीने राग, द्वेष, मोहने उपशमावी वीतरागता भावी छे, धन्य छे ए पुरुषोत्तमने के महा विकट स्थानके निरविघ्नपणे रह्या. ज्यां वाघ वरुनो तो वासज छे. परंतु महा मुनिने, स्व अतिशय वळे कोइनो उपद्रव नड्यो नथी. आजे पण लोको ए महुडीने मुनि बावानी महुडी कहे छे, त्यार बाद विहार करी ग्रामानुग्रामे विचरता थका भव्य जीवोने वचनामृत श्रवण करावी घटंतर वृत्तिये सोचनवंत कीधा. एम उपकार करता छतां भरुच सुरत आदि चोमासां कर्यां, त्यार बाद ग्रामानुग्रामे विचरी पृथ्वी तळने पावन करता छता आमोद, पादरा, आदि गामे चोमासां कर्यां छे, एम अनंतो उपकार कर्त्ता अने ज्ञानदान दाता

छे. वळी संवत १९२६ नी सालमां गोधरा वेजलपुर तरफना डुंगरमां एकाकीपणे जइ त्यां रही मोटी तपस्या करी ध्यानारुढ थइ अंतर वृत्तिये शुद्धात्म स्वरूपनो अनुभव कर्यो छे. धन्य छे ए महा योगींद्रने के एवा विकट स्थानके निर्भयपणे रह्या. आजुबाजु तो वाघ वरु घुघवाटा करो रह्या छे, त्यां नजीकना गामोना श्रावक लोकोने केटलेक दिवसे खबर पडी के एक साधु डुंगरमां आवीने रह्या छे. त्यारे श्रावक लोकोए ते महा मुनिने वांदवा, नमस्कार करवाने अर्थे जवुं आववुं शरु कर्युं. भावी श्रावकोए महा मुनिने विनंति करी के हे स्वामी अमारा गाममां पधारो, तो पण प्राये मास कल्प पुरो थता सुधी एकाकीपणे समाधिए ए डुंगरमां रहीने त्यांथी विहार करी वेजलपुर जइ चोमासुं रह्या. भव्य जीव प्रत्ये वचनामृत मेघधाराए देशना दे छे. त्यां श्रोताजनो श्रवण करी, मनन करी, चिंतवन करी, रहस्यार्थने तद्गत परिणमावे छे. त्यां तेमनो अभिलाषारूप ताप टले छे, अने ममत्वभाव ते परवस्तुने विषे पोतापणानी बुद्धि ते गले छे, अने निज ऋद्धिए संतोप पामतां शीतळता वळे छे, एम सद्गुरुनुं निमित्त पामीने भव्य जीवो अनादि तापने टाळी शातळता पामे छे. एम अनंतो उपकार करता छता महामुनि वर्त्ते छे, वळी चोमासुं उतरे विहार करी गोधरा विगेरे गामे विहार करता थका निजात्माने भावता थका, भव्य जीवोने हितोपदेश देता, शंका संदेहने टाळता, अशंकित करता, अनुक्रमे सुरत पधार्या,

अने चोमासुं पण त्यांज रह्या. मेघाडंबर नाद ध्वनीए गाजता वचनामृत मेघ जळधाराए सींची भव्यजीवोना समुदायने प्रमोदित करी संवेग भावमां स्थिर करता. जेने मोटा पुन्यनो उदय होय ते एवा मुनिनां दर्शन पामे, ते महामुनि अनुक्रमे संवत १९३४ नी सालमां फागण शुदमां चमार गाम विहार करी आव्या हता, तेमनुं आगमन जाणी गाम साढलीथी मोदी उमेदभाइ गुलाबचंद वगेरे अमे पांच सात भाइओ त्यां जइ महा मुनिरायने वांदी पंचांगी प्रणाम करी शाता पूछी सन्मुख दृष्टिए सामा बेशी, मुनिराये उपदेश कर्यो ते सांभळी, विनंति करी के स्वामी अमे तेडवा आव्या छीए. अमारा गामे कृपा करीने पधारो तेमणे अमारो भाव जोइने आववानी हा पाडी अने फागण वदमां अमारा गामे आव्या, मोटा आडंबरे सामैयुं करी अंगमां प्रमोद भराया छते घणा पुरुषोना समुदाय युक्त वाजते गाजते तेडी लाव्या. महामुनिये मंगलाचरण करी वचनामृतनुं पान करावी संतोष्या, अने त्यां मास कल्प रह्या. अमने उपदेश करी जड जेवाने चेतन कर्या अने वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धा करावी. त्रणे काळ उपदेश करता हता, सेंकडो माणसनो समुदाय मळी सांभळतो हतो, वळी तर्क करी शंका टाळवा पूछता हता, तेनो खुलासो यथास्थित आपता हता. वळी न समजाय त्यां सुधी हेतु दृष्टांत युक्ति फेरवीने वारंवार समजावता हता, पण कंटाळता नहीं, वळी कहेता हता के जे पूछशे ते समजशे. वस्तु-

गत वस्तुता धर्म रह्यो ले, तेने जाणवुं. वळी हेय उपादेय बुद्धिनुं पामवुं ए कांइ सुलभ नथी, ज्यां त्यां न पामीए. अमने तो बोधिबीजना दातार ए महामुनिराय ले. एमना केटला गुण गाइए, न गाइए एटला उंठा ले. चैतर वदमां साढलीथी विहार करी सीनोर, मालशर वगेरे ठेकाणे विचरता अनंतो उपकार करता, हुं पण एमनी साथे एक मास सुधी ज्यां विहार करीने जाय त्यां रह्यो हतो. एमनी बरोबरीमां वर्त्तमान अवसरे मारा जोवामां बीजा कोइ आव्या नथी. ए महामुनिने तो घटंतर वृत्तिये जाणे उपयोग ज्योति जगजगायमान होय अने तेथी तिमिरांधकार विलय पाम्यो होय एम भासे ले. एम उपकार करता उता गामेगाम विचरता थका आमोद, जंबुसर भरुच थइ सुरत पधार्या, अने चोमासु पण त्यां रह्या. त्यार बाद संवत १९३६ नी सालमां सीनोरना संघना आग्रहथी श्री वासुपूज्यस्वामीनी प्रतिष्ठा वखते विहार करी त्यां आव्या, भव्य जीवोने वचनामृत मेघ जळ वृष्टिए ज्ञानदान दइ बोधित कर्या. एम उपकार करता गामेगाम विचरता थका चोमासा उपर सुरत आवी त्यां रह्या. निजात्माने भावता थका काळ निर्गमन करे ले, वळी भव्यजीवोने करुणा लावी नय गर्भित देशना आपी, द्रव्य पर्यायनुं जाणपणुं करावी वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धा करावे ले, अने जमता टाळे ले. उदिकभावने वस्तु मानवी एज बाह्य भाव ले तेने जमता कहीए, अने वस्तुना स्वभावने वस्तु मानवी ते अंतर-

गत सहज भाव छे, तेने चेतनता कहीए. त्यारे आपणी काया, मन, वचन, इंद्रियो जे प्राप्त थयुं तेने उदिक भाव कहीए. पूर्वकृतकर्मयोगे मळ्युं ते जीव नथी. जीवतो अंतर्गत कायामां व्यापकपणे रह्यो, ज्ञानदर्शने उपयोगमय ते जीव छे, एम भेद ज्ञाने व्हेंचण विभाग करी निज स्वरूपमां रमण करे, स्थिर समाधि पामे तेने सामायक कहीए, इत्यादिक उपयोगी वचनो महामुनिना मुखथी अखंड धाराए नीकळे, ते वचन माळानुं श्रवण करतां, आस्वादन करतां श्रोताजनो थाकता नथी. तृप्त थता नथी के एटलुं ज. एवा तो भाविक श्रावको महामुनिना छे. वळी तेमना समीपे अन्य दर्शनीओ पण घणा आवता हता. तेमनी साथे तेमना दर्शननी रीतथी वात करता हता. वळी तेनो जे पक्ष हठवादे ग्रहेलो होय तेथी मुक्त करता हता. अन्य दर्शनमां जैन दर्शन स्थापवाने शक्तिवंत पोते हता. अन्यदर्शनीउ पण आजे तेमना घणा गुण गाय छे. वळी सामो जे पुरुष प्रश्न करे तेने न्याय हेतु दृष्टांत युक्ति लगावीने समजाववाने घणा कुशळ हता. तर्क वितर्कनो खुलासो करवाने महा चतुर हता. वळी सामानो अभिप्राय जाणवाने प्रविण हता. गुणग्राही पुरुषने तो यथार्थ श्रद्धा करी समकित पामवाना हेतु एटले निमित्त कारण हता. जेने मोटा पुन्यनो उदय होय ते एवा मुनिना दर्शननो लाभ पामे. दर्शन करतां गुणग्राहीने मिथ्यात्वादिक पाप जाय, अने तेमना मुखथी वचन सांभ-

ळतां परवस्तुनी अभिलाषा जे तृष्णा, पीपासा ते टले. तेमना गुणनुं मनन चिंतवन करतां परिणाम पामतां भाव संवर अने सकाम निर्जरा प्राप्त थाय, ए लाभनुं पामवुं अपूर्व छे, ते लाभ ज्यां त्यां मलतो नथी चोथा आरामां पण सर्वक्षेत्रे सदाकाळ सद्गुरु संयोग मळवो दुर्लभ हतो. वळी ए महामुनि रोगादि परिसह सेहेवाने तो अति कठोर हता, छेल्ली वये चक्षुमां तथा मुखमां घणी गरमी पराभव करवाने उदयागत प्राप्त थइ हती, कोइ अवसरे मुख पाकी जतुं हेतु कोइ अवसरे नेत्र चणोठीना रंग प्राय थइने आंसुनी धारा पडती हती एवी ने एवी स्थिति एक बे मास पर्यंत पराभव करते छते, अशाता आपते छते पण महा मुनिए औसड उपचार चिंतव्या नथी तेमना सेवकोनी दिलगीरि जोइने बलात्कारे कहेतां पण औसड उपचार कर्यो नथी, असमाधिना वखतमां समाधि चिंतवी छे, वळी महामुनि कहेता हता के उपरथी ओसड उपचार करीने ए रोगनी शांति करीशुं तेथी ए प्रकृति क्षीण थवानी नथी ज्यारे त्यारे दुःख आपशे. माटे आ वखते समताए सहन करवुं, एज ज्ञानीनुं लक्षण छे. एम भावती कळाए छेतालीस वरस पर्यंत निर्ग्रंथ पदे चारित्र पर्याये साधक दशा चिंतवी समाधिए मरण करी आराधक थइ एकउण एंशी वर्षनी वय थये संवत १९४९ ना कारतक वदी १० ने मंगळवारनी रातना साडानव वागे मनुष्य भव छोडी स्वर्गे पधार्या. धन्य छे ए पुरुषोत्तमने के मनुष्य भव

पामीने नव्य जीवोने बोधिबीज पमाडी दारिद्र मिथ्यात्वथी डुर करी समकितादि गुणे धनाढ्य अने परवस्तुनी इछा वांछाना अन्नावे तृप्त करी अनंता उपकारना कर्त्ता थइ पोताना आत्माने कृतकृत्य करी समाधिए मरण पाम्या. हुं पण एज नावने अनुमोडुं छुंछुं, वळी एमनी ज वखतमां महा मुनि बुटेरावजी थया, ते महात्मा पुरुष आत्मज्ञानी आत्मदर्शी हता, तेमणे अमदावादमां घणां चोमासां कर्यां अने नव्य जनोने अध्यात्म नावनो उपदेश करी वस्तुगते वस्तु पणानी श्रद्धा करावी बोधित कर्या छे. नगरशेठ मयानाइ प्रेमानाइ तथा दोसी नथुनाइ जीवराज तथा सा. प्रेमचंद जेठा वगेरे अध्यात्म पक्षी, तत्त्वनारागी गुणग्राही पुरुषो जोवामां आवे छे. एम उपकारना कर्त्ता ए महामुनि आदि घणा थया वळी पांचमा आराना छेरा सुधी प्रवर्त्तशे, परंतु कोइक अवसरे कोइक क्षेत्रे लाधे, सर्व क्षेत्रे सदा न पामीए माटे पुन्योदय जोगे संजोग मळे बहु श्रुत गीतारथनो खप करवो, बहु मान करवुं, विनय साचववो. विनय छे एज गुण निष्पन्न धर्मनुं मूल छे, गीतार्थनो विनय लोकोत्तर फळ दाता छे, एम गवेपीने गीतार्थोनी स्तुति करी ते प्रमोद नावना नाववी. अहीं पांचमा आरानो अधिकार समाप्त थयो.

हवे छठा आरानो नाव गवेपे छे, छठो आरो एकवीस हजार वरसनो दुःषम दुःषम नामे छे. ए छठो आरो बेसतां साधु अने श्रावक बेउना धर्मनो लोप थइ जशे, जिनेंद्र

महावीर स्वामीना शासननो नाश थशे, वळी अग्निनो अतिशय प्राप्त थशे, मनुष्य अने तिर्यंच बेउने उजुं रहेवानुं ठेकाणुं पण मळवुं दुर्लभ थइ पडशे, पवन पण घणो प्रतिकुळ वाशे, सूर्यनो ताप घणो पडशे, दुकाळ पण उपरा उपरी पडशे, माग्या मेघ नहीं वरसे, वळी वरसशे तो रहेशे नहीं. एम दुःख उपर दुःख प्राप्त थशे, भूख तृषा घणी पीडशे, खावा धान्य नहीं मळे, पीवा पाणी नहीं मळे, रहेवा घर नहीं मळे, पेहेरवा वस्त्र नहीं मळे; नग्नपणे वैताढ्यादि पर्वतोनां घणां बीलो छे ते बीलोने विषे जइने रहेशे, ७ वरसनी वये स्त्री गर्भ धारण करशे, रोग पण घणा नवा नवा उदय थशे, मावापनी खबर पुत्र नहीं जुए, एवो कीटण काळ आवशे तेनुं नाम दुःषम दुःषम काळ छे, जेम तिर्यंच पंचेंद्रिनी जातिमां एक बीजानुं भक्षण करे छे, तेम मनुष्य मनुष्यनुं तथा तिर्यंच मछादिनुं निर्दय अति हिंसक थइने भक्षण करशे एवो वखत आवशे; रात दिवस भयमां ने भयमां जशे, मनुष्यनुं पुन्य खवाइ जशे अने जे अति पापी प्राणी हशे ते दुःषम दुःषम काळे पांच भरत अने पांच ऐरवत ए दश क्षेत्रमां मनुष्यपणे जन्म लेशे. वीश वरसनुं ते काळे आयुष्य छे, अने बे हाथ ऊंची काया छे, ते आयुष पूर्ण करी मरतां सुधी सुख तो छेज नहीं, पण दुःख आवीने पडशे, ते दुःख भोगवतां संक्लिष्ट परिणामे पाछुं पापनुं बांधवुं थाय, अने पूर्वनुं पाप बांधेलुं उदयागत भोगववुं, एम पाप योगे दुःखनो

पराभव जीवोने मोह पक्षी दुष्टनो काळ महात्म्ये घणो वधारे छे. शत्रु जोइए तो जीवने कर्म छे एज मोटो शत्रु छे, बीजो कोइ शत्रु नथी, ते कर्ममां अघाति करतां घाति बळवान छे, अने घातिमां वळीओ मोह छे, अने मोहमां वळीओ मिथ्यात्व छे वळी काळने शत्रु कहीए तो पांच भरत अने पांच ऐरवत ए दस क्षेत्रमां अवसर्पिणि काले छठो आरो अने उत्सर्पिणि काळे पहेलो आरो एकवीस एकवीस हजार वरसनो ते बेउ मळीने बेतालीस हजार वरसनो काळ ते जीवने शत्रु छे, परंतु शत्रु तो मोह छे, अने ते काळे जीवना क्रूर परिणाम वृत्तिपणे मोह पक्षिना सहचारी थइने सहाय आपी छे. जेम अग्निने प्रज्वलित थवामां ग्रिष्म ऋतु अने पवन सहचारी थइ सहाय करे छे तेम जीवना अंतःकरणने काळ महात्म्ये अतिवक्र करी मूक्या छे, तेथी पापबंधनो ग्राहक थइने नरक अने तिर्यंच ए बे गतिनुं बहुधा आयुष्य बांधी ते गतिये जाय, अने पुन्य बंध करवानी वा सकाम निर्जरा करवानी जे सरळता ते ए काळे ए दशे क्षेत्रे बहुधा नथी. ए छठा आरानो अधिकार कह्यो अने अवसर्पिणि काळनां दसकोडाकोडी सागरोपम छ आरा मळीने पूर्ण थयां. हवे उत्सर्पिणि काळना छ आरानो भाव कहे छे. पेहेलो आरो एकवीस हजार वर्षनो दुःषम दुःषम नामे ते अवसर्पिणि काळे छठो आरो कह्यो, एज प्रमाणे दुःख उपर दुखःनो पराभव पांच भरत अने पांच ऐरवत ए दश क्षेत्रमां सरखे भावे उत्सर्पिणि

काळे पहेले आरे जाणवुं. अने बीजो आरो एकवीश हजार वर्षनो दुःषम नामे छे. ते पांचमो आरो अवसर्पिणी काळे कह्यो ए प्रमाणे सुख दुःख तो दशे क्षेत्रमां उत्सर्पिणी काळे बीजा आरामां सरखुं जाणवुं. हवे त्रीजा आरानां नव्याशी पखवाडीयां गये थके प्रथम तीर्थंकर पद्मनाभ स्वामीनो जन्म थशे ते अनुक्रमे वृद्धि पामतां, वय प्रमाणे अवसरे संसार छोडी दिक्षा लइ क्षपक श्रेणी मांडी घाति कर्म हणी केवलज्ञान केवळ दर्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामी त्रिपदी देशना दइ गणधर आदि चतुर्विध संघनुं स्थापन करी समवसरण आदि अष्ट प्रातिहार्यादि ऋद्धि भोगवी सोनाना कमळे पग मुकता थका ग्रामानुग्रामे विहार करी साधुना वहोळा समुदाये विचरी अनेक भव्यजीवोने बोधी बीज पमाडी यावत् मोक्षनगरे पहोंचाडी बोहोतेर वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी अंत छेके जोगनो रोध करी अयोगी गुणठाणे अघाति कर्म हणी कार्मण वर्गणादि पुद्गलना बंधनथी छुटी समश्रेणिए भविष्यकाळे सिद्धि वरशे. एज रीते पांच भरत अने पांच ऐरवत ए दस क्षेत्रमां प्रथम तीर्थंकरनो जन्म अने निर्वाण जे दिवसे अहीं ते दिवसे त्यां एम एक दिवसे जाणवुं. ए त्रीजा आराना काळनुं एक कोडाकोडी सागरोपममां बेतालीस हजार वर्ष उणां एटलुं उत्सर्पिणि काळे प्रमाण छे, अने ए त्रीजो आरो दुःषम सुषम नामे छे, ते अवसर्पिणि काळे जेम चोथा आरामां अतिभद्रकपणा माटे प्र-

थम ऋजु मूर्खपणानुं दुःख कह्युं हतुं, तेम उत्सर्पिणिकाळे त्रीजा आरामां प्रथम वक्रपणानुं दुःख छे, एटले जेमजेम काळ जशे तेम तेम वक्रतानो व्यय थशे, अने प्राग्भाव जे जिज्ञासा तथा सरलता तेनी वृद्धि थशे, तेथी संतोषी पणुं वृद्धि पामशे, अने असंतोषीपणानी हानि थशे, ते कारणे प्रथम दुःख अने पछी सुख, एम त्रीजा आराना काळनो उत्सर्पिणि माटे चढतो भाव जाणवो वळी ए त्रीजा आरामां अनुक्रमे काळे काळे एटले आंतरे आंतरे त्रेवीस तिर्थंकर आदि एकसठ सलाका पुरुष थशे, अने एक छेल्ला चोवीसमा तीर्थंकर तथा एक बारमा चक्रवर्ति ए बे चोथा आरामां थशे, अहीं उत्सर्पिणि काळे त्रीजा आरानो अधिकार समाप्त थयो. हवे चोथा आरानां नव्याशी पखवाडीआं गये थके छेल्ला चोवीसमा तीर्थंकरनो जन्म थशे, तेमनुं चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य छे, अने ते काळे बारमा चक्रवर्ति पण थशे, ए चोवीसमा तीर्थंकर अवसरे संसार त्याग करी दिक्षा लइ घातिकर्म हणी केवळज्ञान केवळदर्शन आदि अनंत चतुष्टयी पामी चतुर्विध संघनुं स्थापन करी धर्म तीर्थ प्रवर्तावी अनेक भव्यजीवोने मोक्ष नगरे पहोंचाडी आयुष्यना छेडे योगनो रोध करी सिद्धि वरशे. ते अवसरे ते काळे पांच भरत अने पांच ऐरवत ए दस- [illegible] मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रि सर्व युगलियां थइ जशे. उत्सर्पिणि काळे भावी चोवीशीए तीर्थंकरो थशे तेमनां नाम.

१ पद्मनाभ	७ उदयनाथ	१३ निःकषाय	१९ यशोधर
२ सूरदेव	८ पेढाळ	१४ निष्पुलाक	२० विजय
३ सुपार्श्वदेव	९ पोट्टिल	१५ निर्मम	२१ मल्लिनाथ
४ स्वयंप्रभ	१० शतकिर्ति	१६ चित्रगुप्त	२२ देवनाथ
५ सर्वानुभूति	११ सुव्रतनाथ	१७ समाधि	२३ अनंतवीर्य
६ देवश्रुति	१२ अमम	१८ संवर	२४ भद्रकृत

ए चोथा आराना काळनुं बे कोडाकोडी सागरोपमनुं प्रमाण छे अने ए चोथो आरो सुषम दुःषम नामे अवसर्पिणि काळे त्रीजो आरो कह्यो ते प्रमाणे सरखे भावे जाणवो, एटले अवसर्पिणि काळे त्रीजा आराना छेडे युगलियांने खावानुं आदि दुःख पड्युं हतुं तेम अहीं पण उत्सर्पिणि काळे प्रथम दुःखनो संभव नजरे आवे छे. एटले मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रिनो समुदाय सर्वे काळ महात्म्ये अति भद्रकपणाने पामशे, एटले ऋजु प्राग हता ते ऋजु मूर्ख थशे, त्यां ज्ञातापणुं जशे अने अज्ञातापणुं प्राप्त थशे, वळी त्यां मोक्षनो मार्ग पांच भरत अने पांच ऐरवत ए दस क्षेत्रमां बंध थशे, वळी मोक्षनी प्राप्ति हेतु चतुर्विध संघ (साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका) तेनो अभाव थशे, वळी दस क्षेत्रमांथी बीजा देवलोक उपरांत देवगतिए जवानो पण अभाव थशे. घणी हानि थइ, सुकृतनी साधनता गइ ए दुःख जाणवुं, बाकी युगलियापणानुं सुख छे. ए चोथा आरानो भाव कह्यो. हवे पांचमो आरो त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो सुषम नामे, ते जेम अवसर्पिणि

काळे बीजो आरो कह्यो ते प्रमाणे उत्सर्प्पिणि काळे पांचमो आरो जाणवो. हवे छठो आरो चार कोमाकोमी सागरोपमनो सुषम सुषम नामे, ते जेम अवसर्प्पिणि काळे पेहेलो आरो कह्यो ते प्रमाणे उत्सर्प्पिणि काळे छठो आरो जाणवो; एम चोथो पांचमो अने छठो ए त्रण मळी अनुक्रमे बे त्रण अने चार मळी नव कोमाकोमी सागरोपम उत्सर्प्पिणि काळे, अने पहेलो बीजो अने त्रीजो आरो अनुक्रमे, चार त्रण अने बे मळी नव कोमाकोमी सागरोपम अवसर्प्पिणि काळे एम बेउ मळी अढार कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत युगलियापणे पांच भरत अने पांच ऐरव्रत मळी दस क्षेत्रमां जाणवो. हवे पांच भरत अने पांच ऐरव्रत ए दस क्षेत्रमां मनुष्य तिर्यंच पंचेंद्रि जीवोना समुदायने सुख दुःख अनुभवाय छे, भोगवाय छे ते आश्रीने सामान्य विशेषता कहे छे. जेम देवगतिए चार निकायना देवताउ सर्वेने सुख छे परंतु अनुत्तर विमानना देवो सर्वोपरी अधिक सुख अनुभवे छे, ते दृष्टांते मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रिना सुखनी योग्यतानुं अधिक सुख उत्सर्प्पिणि काळे छठो आरो अने अवसर्प्पिणि काळे पेहेलो आरो ए बे आरा चार चार कोमाकोमी सागरोपमना सुषम सुषम नामे ते बेउ मळीने आठ कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत मनुष्य तिर्यंच युगलियां जीवोने अधिक सुख छे, वळी जेम अनुत्तर विमानथी उंछुं अने देवलोकथी अधिक सुख नव ग्रैवेयकना देवताउ अनुभवे छे, ते दृष्टांते ए बे आरा उपर आठ कोमाकोमी सा-

गरोपमना कह्या तेथी उंतुं अने बीजा कहेवा छे तेथी अधिक सुख उत्सर्पिणि काळे पांचमो आरो अने अवसर्पिणि काळे बीजो आरो त्रण त्रण कोमाकोमी सागरोपमना सुषम नामे, ते बेउ मळी छ कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत युगलियां सुख अनुभवे छे. जेम नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमान मळी चौद विमानना देवताउने माथे कोइ इंद्र नथी एटले सर्व इंद्र छे तेम ए चार आरानां चौद कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत युगलियां मनुष्योने माथे कोइ राजा नथी. एटले सर्वे राजा छे वळी नव ग्रैवेयकथी उंतुं अने भुवनपति व्यंतर अने जयोतिषी करतां अधिक सुख बार देवलोकना देवताउ अनुभवे छे, ते दृष्टांते उत्सर्पिणि काळे चोथो आरो अने अवसर्पिणि काळे त्रीजो आरो ए बे सुषम दुःषम नामे बे बे कोमाकोमी सागरोपमना मळी चार कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत जुगलियां सुख अनुभवे छे, वळी जेम देवलोकना देवोने इंद्रनी आज्ञा मानवी पमे तेम अहीं पण अवसर्पिणि काळे त्रीजा आराना छेमे कुलगर राजानी आज्ञा युगलियांने मानवी पमे ए त्रण दु छ आरानां अढार कोमाकोमी सागरोपम पर्यंत युगलियांने, देवतानी रीते विना उद्यमे इच्छा करवाथी सुखे काळ निर्गमे छे, वळी आठमा देवलोक उपरना देवो सर्वे देवताना भवनुं आयुष पूर्ण करी, एक मनुष्य गतिमां आवी उपजे, बीजी गतिये जाय नहीं, तेम युगलियां मरीने एक देवगतिये जाय, पण बीजी ग-

तिये जाय नहीं. हवे पांच भरत अने पांच ऐरव्रत ए दस क्षेत्रमां अवसर्पिणि काळे पेहेला आराना प्रथम काळे अने उत्सर्पिणि काळे छठा आराना छेडे युगलियां सुख अनुभवे, वळी तेमनुं त्रण पल्योपमनुं आयुष, त्रण गाउनी उंची काया एज प्रमाणे सदैव सरखुं जंबुद्वीपनी अकर्म भूमिए देवकुरु अने उत्तर कुरुक्षेत्रे जाणवुं, वळी अवसर्पिणि काळे बीजा आराना प्रथम काळे अने उत्सर्पिणि काळे पांचमा आराना छेडे युगलियां ए भरत ऐरव्रतनां दसक्षेत्रे सुख अनुभवे, वळी तेमनुं बे पल्योपमनुं आयुष्य, बे गाउनी उंची काया, ते प्रमाणे सदैव सरखुं धातकीखंडनी अकर्मभूमिए हरिवर्ष तथा रम्यक्क्षेत्रे जाणवुं, वळी अवसर्पिणि काळे त्रीजा आराना प्रथम काळे अने उत्सर्पिणि काळे चोथा आराना छेडे, भरत अने ऐरव्रत ए दसक्षेत्रे युगलियां सुख भोगवे, ते प्रमाणे सुख. वळी तेमनुं एक पल्योपमनुं आयुष अने एक गाउनी उंची काया होय, ते प्रमाणे सदैव सरखुं पुष्करवर द्वीपनी अकर्मभूमिए हिमवंत तथा ऐरण्यव्रत क्षेत्रे जाणवुं, अने अंतरद्वीपनां युगलियांनुं आयुष्यतो एक पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं छे, वळी काया आठसो धनुष उंची कही छे. आहारनी इच्छा एकांतरे थाय अने अपत्तपालणा अगन्यासी दिवस करीने माता पिता काळ करे, माटे अवसर्पिणिकाळे त्रीजा आरानो घणो काळ जाय अने अनुमाने एकपल्योपमनो आठमो भाग बाकी रहे त्यारे अंतरद्वीपनां युगलीयांने

सदैव ज्ञरतऐरवतनां दसक्षेत्रथी सरखापणुं अनुमाने संज्ञवे, अने ज्ञरतऐरवतनां दसक्षेत्रे सदैव सरखापणुं न होय. हवे मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रिने दुःखनी अधिकता जोइए तो, जेम नारकी जीवोने साते नरकमां दुःख छे परंतु सातमी नरके सर्वोपरि अधिक दुःख, ते दृष्टांते मनुष्य, तिर्यंच पंचेंद्रिनी योग्यताना दुखमां अवसर्प्पिणिकाळे छठे आरे अने उत्सर्प्पिणिकाळे पेहेले आरे, ए वे एकवीस एकवीस हजार वर्षना दुःषमदुःषम नामे ए वे आरा मळी वेताळीस हजार वर्ष पर्यंतनो काळ ते मनुष्य तिर्यंच पंचेंद्रिने अतिदुःखदायी छे, पांच ज्ञरत अने पांच ऐरवत मळी दसेक्षेत्रमां सरखाज्ञावे ते काळे दुःख जाणवुं. हवे अवसर्प्पिणि काळे पांचमा आरामां अने उत्सर्प्पिणिकाळे बीजा आरामां जेम ज्ञूत, प्रेत, अवगतियां व्यंतरां ज्यां त्यां रखडी रखडीने दुःखे ज्ञव पुरो करे अने सुख माने, ते न्याये अवसर्प्पिणि काळे पांचमो आरो अने उत्सर्प्पिणि काळे बीजो आरो एकवीस एकवीस हजार वरस पर्यंत मनुष्यो मोहनी छाके छक्या थका विकळ थइने जीनेंद्र देवना तीर्थने अणपामते समकितादि गुण स्थानकने अण फरसते वहुधातो दुःखने सुख मानी ए वे आरानां वेतालीस हजार वरस पर्यंत दुःषम काळना पराज्ञवे पीडाता थका जीवो दुःखने अनुज्ञवे. वळी जीनेंद्र देवना तीर्थने कोइ एक पाम्या छे, समकितादि गुण स्थानकने फरस्या छे, तेने पण उदिकताना अनुसारे अशाताना कारणनी वहुधा आ काळे अधिकताइ

धर, आचार्य, उपाध्याय,, साधुनो जोग छे, मोक्षनो मार्ग छे, माटे ए बे कोडाकोडी सागरोपमनो काळ अनुमोदवा योग्य छे अने बाकीनां अढार कोडाकोडी सागरोपमना अनुमाने दस आरा ते मोक्ष मार्ग धर्म साधननी अपेक्षाये अनिष्ट छे. ए अवसर्पिणि, उत्सर्पिणिनी बे चोवीसी साथे वीस कोडाकोडी सागरोपमनुं एक काळ चक्र बार आराए करी पूरण गवेखीने कह्युं. ए प्रमाणे काळनुं बार आराए करीने अनादि अनंत भांगे परावर्त्तन जाणवुं. हवे पूर्वनुं मान कहे छे, चोराशी लाखने चोराशी लाख साथे गुणाकार करीए अने जे आंक आवे एटला वर्षे एक पूर्व थाय एटले ७०५६०००००००००० सीत्तेर लाख करोड अने छप्पन हजार क्रोड एटला वर्षे एक पूर्व थाय. हवे अहीं-आं मुहूर्त्तथी मांडीने शिर्ष प्रहेलिका सुधी अनुक्रम जाणवो. ते पांचमा कर्मग्रंथे तेनी व्याख्या छे, त्यांथी जोइ लेजो, इहां लखी नथी. शिर्ष प्रहेलिकाये चोपन अक्षर अने तेना उपर एकसो ने चालीस शून्य मळी एकसोने चोराणुं आंक आवे त्यां सुधी संख्या तो काल कह्यो ते गणतरिये काळ गएयो आवे ते अंक मांडीये छैये ७ ५ ८ २ ६ ३ २ ५ ३ ० ७ ३ १ ० २ ४ १ १ ५ ७ ९ ७ ३ ५ ६ ९ ९ ७ ५ ६ ९ ६ ४ ० ६ २ १ ८ ९ ६ ६ ८ ४ ८ ० ८ ० १ ८ ३ २ ९ ६ २ ९ चोपन आंक आगल एकसोने चालीश शुन्य मांडीये त्यारे एकसोने चोराणुं अंक थाय त्यां सुधी संख्यातां वर्ष जाणवां. हवे पल्योपमनुं प्रमाण कहे छे, ते पल्योपमनो

काळ तो असंख्यातो छे माटे गणत्रीनी अपेक्षा काम आवे नही. अहींआं तो कुवाना आकारे प्यालो कल्पीये, एटले बे हजार धनुष्य लंबाइना आठ हजार हाथनुं प्रमाण थाय तेनो एक कोश कहेतां एक गाउ कहीए अने चार गाउने एक जोजन कहीए. ते एक जोजन प्रमाण प्याला-ना आकारे गोळाश परुतो उंडो कुवो अने लांबो पहोळो पण एक जोजन प्रमाण कल्पीए अने ते कुवानी परधि त्रण जोजन अने एक जोजननो छठो भाग तेना उपर अधिक, एटली थाय, ते कुवामां देव कुरु अने उत्तर कुरु क्षेत्रनां जुगलियां जन्मना दिवसथी ते सात दिवसनी छोटी बालवयनां, तेमना मस्तकना वालना अग्र एटले छे-ल्ला खंड जे एकना बे खंड न थाय एवा बारीक खंडोखंड करीए ते पण बादर खंड कहेवाय, ते बादर खंडोना प्रत्येके एक एक खंडना असंख्याता असंख्याता खंड कल्पीए, ते कल्पित शुक्ष्म खंडोए उपर वर्णवेलो कुवो ते ठांसीने भ-रीए के तेना उपर चक्रवर्तीनुं सैन्य चाल्युं जाय तो पण दबाय नहीं, वली गंगा नदीनो प्रवाह पण ए भरेला बालाग्रना सूक्ष्म खंड तेने भेदी शके नहीं वली उज्वाज-ल्यमान अग्नि पण बाली शके नही अति पवन प्रयोगे पण एक बालाग्र खंड ते उडी शके नही एवो ठांसीने भ-रीए, ते कुवामांथी समये समये एक एक वालनो खंड काढतां जेटला काले ए कुवो खाली थाय तेटला कालने सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहीए. एवां दस कोडाकोडी प-

ल्योपमे एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय तेवा अढी सागरोपमना जेटला समय थाय एटला तीर्गा लोकमां द्वीप समुद्र छे एम जाणवुं, अने सो सो वर्षे एक एक वालनो खंम काढतां जेटला काले ए कुवो खाली थाय, निर्लेप थाय तेटला कालने एक सूक्ष्म अद्धा पल्योपम कहीए अने एवां दस कोमाकोमी सूक्ष्म अद्धा पल्योपमना कालने एक सूक्ष्म अद्धा सागरोपम कहीए. सागर एटले समुद्रनो पेठे जेनुं पार पामवुं ते दुर्लभ होय एम सरखापणुं छे, ते कारणे सागरोपम नाम छे ते गवेखोने कह्युं. ए सूक्ष्म अद्धा सागरोपम कह्युं. तेवां वीस कोमाकोमी सागरोपमे एक उत्सर्पिणि अवसर्पिणि थाय तेने कालचक्र पण कहीए. वली देवतानुं नारकीनुं तथा युगलीआं मनुष्य तिर्यंचनुं आयुष्य मान तथा कर्म स्थीतिमान, तथा काय स्थिति मान ए सर्वेनुं मान ते सूक्ष्म अद्धा पल्योपम सागरोपमनी अपेक्षाये छे, अने एक कालचक्र गवेख्युं तेवां अनंतां कालचक्र आगल वही गयां ते, कालनो आदि नथी अने आपणो जीव अनादि संबंधे अनाभोग मिथ्यात्वने लोधे चतुर्गति संसार चक्रमां गत्यागती करे छे, ते गति आगतिने हवे गवेखे छे. तेमां प्रथम तिर्यंच गतिये एकेंद्रोथी पंचेंद्रि पर्यंतमां कोण कोण आवीने उपजे ? तो सूक्ष्म बादर पृथ्वी आदि पांचे प्रत्येक स्थावर बादर साधारणमां उपजे, वली पांचे स्थावरमां पोतपोतानी जातीना पुनः पुनः मरीने पोतानी कायामां

उपजे अने उलट सुलट पृथ्वीकायना जलमां, अग्निमां, वायुमां अने वनस्पतिमां उपजे, वळी अपकायना पृथ्वीमां, अग्निमां, वायुमां अने वनस्पतिमां उपजे, वळी तेउकायना पृथ्वीमां जलमां, वायुमां, अने वनस्पतिमां उपजे, वळी वायुकायना पृथ्वीमां, जलमां, अग्निमां अने वनस्पतिमां उपजे वळी वनस्पतिना पृथ्वीमां, जलमां अग्निमां अने वाउकायमां उपजे, वळी साधारण वनस्पतिमां सूक्ष्म साधारणना बादर साधारणमां उपजे अने बादर साधारणना सूक्ष्म साधारणमां तथा सूक्ष्म बादर पांचे प्रत्येक स्थावरमां उपजे, वळी विकलेंद्रि पण पांचे बादर प्रत्येक स्थावरमां उपजे.संख्याता वर्षना आयुषवाला तिर्यंच अने मनुष्य सन्नि असन्नि पंचेंद्रि ते सर्वे प्रत्येक पांचे बादर स्थावरमां उपजे. वळी भूवनपति व्यंतर अने ज्योतिषि ए त्रण अने वळी वैमानिकमां सुधर्म कल्प अने इशान कल्प ए बे देवलोक सुधीना देवो अने देवीउ ते पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय ए त्रण स्थावर पर्याप्ता बादरमां उपजे, एक नारकी एकेंद्रिमां आवे नहीं एम एकेंद्रिमा त्रण गतियो चवीने आववानी गति कही हवे विकलेंद्रिमां कहे छे. बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरेंद्रि ए त्रणे पोत पोतानी जातिमां तो फरी फरी मरीने उपजे, वळी बेइंद्रि जीवो तेइंद्रि अने चौरेंद्रिमां उपजे, तेइंद्रि जीवो बेइंद्रि अने चौरेंद्रिमां उपजे, अने चौरेंद्रि जीवो बेइंद्रि अने तेइंद्रिमां उपजे; वळी पांचे बादर प्रत्येक स्थावर विकलेंद्रिमां उपजे, वळी

संख्याता वर्षना आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्य पचेंद्रि संज्ञि असंज्ञि ते सर्वे विकलेंद्रिमां उपजे, एम विकलेंद्रिमां वे गतिथी चवीने आववानी गति कही. देवता तथा नारकी विकलेंद्रिमां न आवे हवे तिर्यंच पचेंद्रिमां तिर्यंच पचेंद्रि संख्याता वर्ष आयुष्यवाला मरीने पुनरपि पुनरपि उपजे, वली विकलेंद्रि तिर्यंच पचेंद्रिमां उपजे पांचे स्थावर वादर प्रत्येक ते पण तिर्यंच पचेंद्रिमां उपजे अने संख्याता वर्षना आयुष्यवाला मनुष्यो पण संज्ञि असंज्ञि पचेंद्रि ते तिर्यंच पचेंद्रिमां उपजे, वली साते नारकी अने भूवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि अने वैमानिकमां आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना पण तिर्यंच पचेंद्रि संज्ञिमां संख्याता वर्षना आयुष्ये उपजे, पण असंख्याता वर्षना आयुष्ये जुगलिया तिर्यंचपणे देवता नारकी न उपजे एम तिर्यंच पचेंद्रिनी जातिमां आववानी चारे गतियो कही. हवे तिर्यंचनी पांचे जाति एकेंद्रि आदि ते मरीने क्यां जाय? तो पोतपोतानी जातिमा तो तिर्यंच सर्वे जाय, परंतु अपर जातिमां जाय ते न्यूनताइ अधिकताइने गवेखे छे. साधारण जे सूक्ष्मनिगोदना जीवो ते कंदमूलादि वादरनिगोदमां उपजे अने वादर साधारण ते पांचे स्थावर सूक्ष्म वादर प्रत्येकमां जाय अने पृथ्वी आदि सूक्ष्म वादर चार स्थावर अने प्रत्येक वनस्पतिकाय मली सर्वे ए पांच ते वादर साधारण जे कंदमूलादि तेमा जाय, वली वादर साधारणना जीवो सूक्ष्म साधारणमां जाय.वली पृथ्वी आदि चार सूक्ष्म स्थावर

ते पांचे बादर स्थावरमां जाय, वली प्रत्येक वनस्पतिकाय आदिए पांचे बादर स्थावर ते प्रत्येक चार सूक्ष्म स्थावरमां जाय, वली पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय अने वाउकाय ए चार अने प्रत्येक वनस्पतिकाय मली पांचे बादर स्थावरना जीवो ते मरीने बेइंद्रि, तेइंद्रि, चौरिंद्रि अने वली सन्नि असन्नि पचेंद्रि तिर्यंच संख्याता आयुष्यवाला तेमां जाय. वली संख्याता वर्षना आयुष्यवाला मनुष्योमां बादर पृथ्वीकाय अपकाय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ए त्रण स्थावर पर्याप्ता मरीने आवे, अने तेउकाय वाउकाय ए बे स्थावर मरीने मनुष्य न थाय, ए एकेंद्रि जीवोने मरीने जवानी बे गतियो कही. हवे विकलेंद्रि मरीने पांचे बादर प्रत्येक स्थावरमां जाय, वली संख्याता वर्षना आयुष्ये तिर्यंच अने मनुष्य पंचेंद्रिमां सन्नि असन्नि बे भेदोमां विकलेंद्रि मरीने जाय. ए विकलेंद्रिने जवानी बे गतियो कही. हवे तिर्यंच पंचेंद्रि असन्नि संख्याता वर्षना आयुष्यवाला मरीने क्यां जाय ते कहे छे. पांचे बादर प्रत्येक स्थावरमां अने विकलेंद्रिमां तथा सन्नि पंचेंद्रि तिर्यंचमां अने वली मनुष्यमां संख्याता वर्षना आयुष्ये अने वली पेहेली नरक सुधी अने देवगतिये भुवनपति अने व्यंतर ए बे निकायमां एम असन्नि तिर्यंच पंचेंद्रि मरीने चारे गतिमां जाय. वली सन्नि तिर्यंच पंचेंद्रि संख्याता आयुष्यवाला तो पांचे बादर प्रत्येक स्थावरमां जाय, अने विकलेंद्रिमां पण जाय, असन्नि पंचेंद्रि तिर्यंच अने मनुष्यमां पण जाय, सन्नि मनु-

ष्यमां पण जाय, असंख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्य जुगलियां तेमां पण जाय, देवगतिये भुवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी अने वैमानिकमां आठमा सहस्रार देवलोक सुधी पण जाय, वली नरक गतिये भुजपरि सर्प, घो, नोलिया उंदर आदि बीजी नरक सुधी जाय अने खेचर पक्षी मांसनो आहार करवावाला सींचाणा समली आदि त्रीजी नरक सुधी जाय, वली सिंह, चित्रा, कुतरां, बिलाडां आदि हिंसक जीवो चोथी नारकी सुधी जाय, उरपरि सर्प ते नाग काला धोला अने कावरा अने वली अजगर आदि पांचमी नारकी सुधी जाय अने जलचर मच्छादि रौद्र ध्याने सातमी नरक सुधी जाय. ए सन्नि पंचेंद्रि तिर्यंच संख्याता आयुष्यवालाने मरीने परभवे जवानी च्यारे गतियो कही अने असंख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच पंचेंद्रि युगलियां तो मरीने भुवनपति व्यंतर आदि एक देवगतियेज जाय, बीजी गतिये जाय नहीं, ए तिर्यंचनी गति आगति कही हवे मनुष्यनी गति आगति कहे छे, तेमां प्रथम तो मनुष्यमां चवीने आवी कोण न उपजे ते कहे छे. मनुष्य गतिमां असंख्याता वर्षना आयुष्यवाला एक मनुष्य अने बीजा तिर्यंच युगलियां ए बे तो मरीने मनुष्यमां उपजे नहीं ए तो एक देवगतिये जनारा छे; अने एकेंद्रि सुक्ष्म प्रत्येक तथा साधारण टाली बादरस्थावरमांथी एक तेउकाय अने बीजा वाउकाय ए बे मनुष्यनी गति पामवाने अयोग्य छे, माटे मनुष्यमां आवे नहीं, बाकीना सर्वे प्राणी मनुष्य

गतिमां आवे, तेमां मनुष्यनो भव पामीने जे तीर्थंकर थाय अथवा चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव, थाय ते देवगतिथी वा नरक गतिथी आवीने मनुष्य थएला जाणवा, पण मनुष्य गतिथी वा तिर्यंच गतिथी आवेला ए चारेने जाणवा. वली देवगतिथी आवीने वासुदेव, प्रतिवासुदेव थाय तो पांच अनुत्तरविमानथी आवीने थाय नहीं एम जाणवुं. निश्चे नरकगामी छे माटे अनुत्तरविमानथी वासुदेव आवे नहीं. हवे विशेषे गवेषे छे. असन्नि सम्मूर्छिम-मनुष्य अने तिर्यंच ए बे मरीने मनुष्य थाय तो संख्याता आयुषवाला मनुष्य थाय, पण असंख्याता आयुषमां आवे नहीं, अने सन्नि पंचेंद्रि संख्याता वरसना आयुष वाला मनुष्य अने तिर्यंच ए बे मरीने मनुष्य थाय ते संख्याता असंख्याता बे भेदे आयुष्यमां युगलिया अयुगलियापणामां आवे छे माटे संभवे, अने विकलेंद्रि ते बेइंद्रि तेइंद्रि अने चौरेंद्रि ए त्रणे मरीने मनुष्य थाय तो संख्याता आयुष्ये मनुष्यनो भव पामी अधिकताइ पामे तो सर्वविरति चारित्र ग्रहण करे पण श्रेणी न मांडे ते कारणे विकलेंद्रिथी मनुष्य थयेला तद्भवे मोक्ष न जाय, वली पृथ्वीकाय, अपकाय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ए त्रणे स्थावरमांथी मरीने मनुष्य थाय ते संख्याता आयुष्ये थयेला जाणवा. वली भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक ते बार देवलोक, नवग्रैवेयक, अने पाच अनुत्तर विमान सर्वार्थ सिद्ध पर्यंतथी मरण करी चवीने मनुष्य गतिये आवे,

ते मनुष्य सर्वे संख्याता वरसना आयुष्ये थयेला छे. वली साते नरकथी चवीने संख्याता आयुष्ये मनुष्यमां आवे तेमां पेहेली नरकथी आवी कोइ चक्रवर्त्ती पण थाय, बीजी नरकथी आवीने कोइ वासुदेव बलदेव थाय. त्रीजी नरकथी आवीने कोइ तीर्थंकर पण थाय, चोथी नरकथी आवीने कोइ सामान्य केवली थइ मोक्षे जाय, पांचमी नरकथी आवेला अधिकताइ पामतां सर्व विरतिपणा सुधी आवे, छठी नरकथी आवेला देशविरति पांचमुं गुणठाणुं कोइ पामे, सातमी नरकथी आवेला समकित चोथुं गुणठाणुं कोइ पामे, उपरनुं गुणठाणुं ते जवे न ग्रहे. ए मनुष्यमां आववानो अधिकार चारे गतिथी कह्यो. हवे मनुष्य गतिमांथी आयुष पूर्ण करी मरीने क्यां जाय? तो सर्वे संसार गतिए मनुष्यो चवीने जाय अने पांचमी सिद्ध गतिए पण संख्याता आयुषवाला मनुष्यो उत्तरोत्तर वृद्धि पामतां जाय अने संसार गतिये जायतो आर्त्त ध्यान योगे तिर्यंच गतिये बेइंद्रि आदि त्रसमां जाय. अने रौद्र ध्यान योगे नरक अथवा स्थावर गतिमां जाय, वली धर्मध्यान ध्यातां देवगतिये नवग्रैवेयक पर्यंत जाय अने शुक्लध्याननो पेहेलो पायो ध्यातां अनुत्तर विमान मले, वली बीजो पायो ध्यातां केवलज्ञान केवल दर्शन आदि अनंती क्षायक लब्धिनी प्राप्तिये तेरमे गुणठाणे अरिहंतपद मले, वली त्रीजो चोथो पायो ध्यातां सर्व कर्म रहित थइ मोक्षे जाय एम जाणो इति अर्थे आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ए बे अशुभ

दुःख हेतु जाणी चपल चित्त निवारीने तजवुं अने स्थिर चित्ते धर्म ध्यान शुक्ल ध्याननो खप करवो तेथी हित अर्थ प्राप्त थशे.मनुष्य भव पाम्यानुं एज सार छे, वली भव्यपणानुं लक्षण पण समकितादि गुण स्थानकनुं पामवुं ए छे सम-कित प्राप्त न थयुं त्यां सुधी भव्यपणुं ते पण अभव्य प्राय छे हवे जे मनुष्य गति पामीने सिद्ध वरे ते एक समये एक पण सीजे अने उत्कृष्टा एकसोने आठ पण सीजे ते चारगति आश्रीने उत्कृष्टा गवेषे छे. मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला सीजे तो एक समये वीस सीजे, तिर्यंच पंचेंद्रियी आवीने मनुष्य थइ सीजे तो एक समये दस सीजे, पृथ्वी-काय, अपकाय ए बे स्थावरमांथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये चार सीजे, प्रत्येक वनस्पतिकायमांथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये छ सीजे वली पेहेली बीजी अने त्रीजी ए त्रण नारकीमांथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये दस सीजे, चोथी नारकी पंकप्रभाथी आवी मनुष्य थइ सीजे तो एक समये चार सीजे, देवग-तिये भूवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी ए त्रण निकायना देवो मनुष्य थइ सीजे तो एक समये दस सीजे; अने भुवनपति तथा व्यंतर ए बे निकायनी देवीओ मनुष्य थइ सीजे तो एक समये पांच सीजे, अने ज्योतिषीनी देवीओ दस सीजे, वली वैमानिकथी एटले छवीस स्वर्गथी देवो आवी पुरुषवेदे मनुष्य थइ सीजे तो एक समये एकसोने आठ सीजे, देवलोकमां बीजा देवलोक सुधी देवांगनानी

उत्पत्ति छे, ते देवीओ मनुष्य थइ सीजे तो एक समये वीस सीजे. ए आगति आश्रीने सिद्धिवरवानो अधिकार कह्यो. वली मनुष्यनी गति आगति कही. हवे नारकीनो गति आगति कहे छे. नरकमां उपजवावाला सन्नि पंचेंद्रि तिर्यंच अने मनुष्य संख्याता वर्षना आयुष्यवाला साते नरकमां उपजे अने असन्नि तिर्यंच पंचेंद्रि संख्याता वर्षना आयुष्यवाला जघन्य आयुष्ये वा मध्यस्थ आयुष्ये पेहेली नरक सुधी जाय अने उत्कृष्टा आयुष्ये असन्नि तिर्यंच नरके न जाय, अने नरकनुं आयुष्य पूर्ण करी चवीने नारकी जीवो एक तिर्यंच पंचेंद्रि सन्निनी पांचे जाति थलचर, जलचर, खेचर, उरपरि अने भुजपरि तेमां संख्याता वर्षना आयुष्ये उपजे. वली सन्नि मनुष्यनी पण त्रण जाति स्त्री, पुरुष अने नपुंसक ए त्रणवेदे दस प्राणधारीपणे संख्याता वर्षना आयुष्ये मनुष्यमां उपजे. नारकी नारकीमां न उपजे वली देवगतिये पण न जाय, विकलेंद्रि अने स्थावरमां पण न जाय वली जुगलियां मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रि असंख्याता वर्षना आयुष्यवाला तेमां पण न जाय, असन्नि तिर्यंच अने असन्नि मनुष्यमां पण नारकी न आवे, ए नारकीनी गति आगति बे गतिथी कही. हवे देवतानी गति आगति कहे छे. देवता देवगतिमां चवीने फरी न उपजे वली नारकी पण देवगतिए आवे नहीं. त्यारे कइ गतिथी आवीने देवगतिमां उपजे ? तो पंचेंद्रि सन्नि मनुष्य तथा सन्नि असन्नि पंचेंद्रि तिर्यंच ए बे गति-

वाळा चवीने देवगतिमां उपजें तेने गवेषे छे. असंख्याता वर्षना आयुष्यवाळा मनुष्य अने तिर्यंच युगलियां तो उत्कृष्टा बीजा देवलोक सुधी त्रण पल्योपमना आयुष्ये उपजे, अने जघन्य ओछा आयुष्ये भुवनपति अने व्यंतरमां उपजे, पण त्रण पल्योपमथी अधिक आयुष्ये बीजा देवलोक उपरांत युगलियां जाय नहीं. हवे संख्याता वर्षना आयुष्य वाळा तिर्यंच पंचेंद्रि सन्नि अने असन्नि सर्वे अने वली सन्नि मनुष्यो क्रियाभेदे घणा प्रकारे देवगतिये जाय छे श्री भगवती सूत्रे प्रथम शतके बीजे उद्देशे कह्युं छे के—

अहं भंते असंजय भविय दव्व देवाणं ॥१॥ अविराहिय संजमाणं ॥२॥ विराहिय संजमाणं ॥३॥ अविराहिय संजमा संजमाणं ॥४॥ विराहिय संजमासंजमाणं ॥५॥ असन्नीणं ॥६॥ तावसाणं ॥७॥ कंदप्पियाणं ॥ ८ ॥ चरगपरिवायगाणं ॥ ९ ॥ किंबिसियाणं ॥ १० ॥ तिरिच्छियाणं ॥ ११ ॥ आजिवीयाणं ॥ १२ ॥ अभीयोगीयाणं ॥ १३ ॥ सलिंगाणं दंसण वावणगाणं ॥ १४ ॥ एतेसिणं देवलोगेसु, उववज्जमाणंक-सकाहि उववाए गोयमा, असंजय भविय दवदेवाणं जहन्नेणं भवणवासिसू उक्कोसेणं उवरिमगे विजयेसु ॥ १ ॥ अविराहिय संजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं सवठ सिद्धि विमाणे ॥ २ ॥ विराहिय संजमाणं जहन्नेणं भवण उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ॥ ३ ॥ अविराहिय संजमा संजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे ॥ ४ ॥ विराहिय संजमासंजमाणं जहन्नेणं भवण वासिसू उक्को-

सेणं जोइसिएसु ॥ ५ ॥ असणीणं जहन्नेणं, नवण वासीसू उक्कोसेणं वाणवंतरेसु ॥ ६ ॥ अवसेसा सवे जहन्नेणं नवण वासीसू उक्कोसेणं वोच्छामि तावसाणं जोइसिएसु ॥ ७ ॥ कंदप्पियाणं सोहम्मे कप्पे ॥ ८ ॥ चरगपरिवायगाणं बंभलोए ॥ ९ ॥ किंबिसियाणं लंतए कप्पे ॥ १० ॥ तिरिछियाणं सहसारे कप्पे ॥ आजियाणं अच्चुए कप्पे ॥ १२ ॥ अभियोगीयाणं अच्चुए कप्पे ॥ १३ ॥ सलिंगी दंसणं वावणंगाणं उवरीमग्गे विजएसु ॥ १४ ॥

अर्थः—असंजय कहेतां द्रव्यथी जैन मुनि अने भावथी ग्रंथि भेदना अभावे मिथ्यादृष्टि माटे असंजति कह्या. ते उत्सूत्रनी प्ररूपणा न करे तो जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा नवमा ग्रैवेयक सुधी जाय, (१) अविराहिय संजमाणं कहेतां अप्रमत्तादि गुण स्थानक योग्य बहु श्रुतगीतारथ श्रुतकेवली तद्गत भावने पामेला स्याद्वाद वादी अंतर दृष्टि धर्मध्यान शुक्लध्यानना ध्याता उत्सर्ग मार्गना ग्राहकवंत संयति ते जघन्यथी सुधर्मकल्प अने उत्कृष्टा सर्वार्थसिद्ध विमाने जाय (२) विराहिय संजमाणं कहेता प्रमत्तादि गुण स्थानकयोग्य अतिचार लगावता थका अपवाद मार्गे चालवावाला संयति ते जघन्यथी भुवनपति अने उत्कृष्टा सुधर्म कल्पे जाय (३) अविराहिय संजमासंजमाणं केहेतां पांचमा गुणठाणाना धारक, रोचकसमकितना ग्राहक, निरतिचारवंत आराधक श्रावक ते जघन्यथी सुधर्म कल्प अने उत्कृष्टा अच्युत बारमा देव-

लोके जाय (४) विराहिय संजमा संजमाणं केहेता देश-
विरतिपणामां अतिचार लगावता थका विराधक श्रावक
ते जघन्यथी जुवनपति अने उत्कृष्टा ज्योतिषीए जाय (५)
असणीणं केहेतां असन्नि तिर्यंच पंचेंद्रि ते जघन्यथी जुव-
नपति अने उत्कृष्टा वाणव्यंतरमां जाय (६) तावसाणं
कहेतां चार बाजुए अग्निप्रज्वलित अने पांचमुं सूर्यना
तापे तपता अशक्त थका सहेता एवा तापस अज्ञान तप
कष्ट जोगे जघन्य जुवनपति अने उत्कृष्टा ज्योतिषीए जाय
(७) कंदप्पियाणं कहेतां संजति थइने एकबीजानी हांसी
करे मश्करी करे तेने कंदर्पि कहीए ते जघन्यथी जुवनपति
अने उत्कृष्टा सुधर्म कल्पे जाय (८) चरग परिव्रायगाणं
केहेतां चर्क त्रिदंमी तिर्यंचनी दया विशेषे पाले ढे वली वे
चार जेगा थइने जिक्षा करता ते जघन्यथी जुवनपति अने
उत्कृष्टा पांचमा ब्रह्मदेवलोके जाय (९) किंबिसीयाणं
कहेतां संयति थइने दर्शनमोहनी उदयागतना परान्नवे
पीमाता थका उत्सूत्रनी प्ररूपणा करे वली द्रव्यथी निर-
तिचार चारित्र पाले ते जघन्यथी जुवनपति अने उत्कृष्टा
लांतक नामे ढहा देवलोके किल्बिषिया देवतापणे उपजे
(१०) तिरिछियाणं केहेतां तिर्यंच पंचेंद्रि अने सन्नि ज-
लचर, थलचर, खेचर, उरपरि सर्प अने जुजपरि सर्प ए
पांचे जातिना ते जघन्यथी जुवनपति अने उत्कृष्टा आठमा
सहस्रार देवलोके जाय (११) आजिवीयाणं केहेतां आ-
जिविका अर्थी पाखंमी, वेशधारी, गोशालाप्राय संयमी

ते जघन्यथी जुवनपति अने उत्कृष्टा बारमा अच्युत देवलोके जाय (१२) अन्नीयोगीयाणं कहेतां संयति थइने मंत्र जंत्र, दोरा, धागा करे वली देव देवीनी उपासना करे तेने अजियोगीक कहीए ते जघन्यथी जुवनपति अने उत्कृष्टा बारमा अच्युत देवलोके जाय (१३) सलिंगीदंसण वावणंगाणं कहेतां संयति जैन लिंगधारी अल्प कषायी निरतिचारी समकितथी ज्रष्ट थएला श्रद्धा विपर्यासना लीधे पण ऽव्य चारित्रथी ज्रष्ट थयेला नही, ते जघन्यथी जुवनपति अने उत्कृष्टा नवमा ग्रैवेयके जाय (१४) ए देवगतिमां आववानो अधिकार वेगतिथी कह्यो-हवे देवता देवगतिनुं आयुष पूर्ण करी चवीने क्यां जाय ते कहे छे. जुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिकमां सुधर्म कल्प अने बीजुं इशान कल्प ए वे देवलोक सुधीना देवो अने देवीओ पृथ्वीकाय अपकाय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ए त्रण स्थावर बादर पर्याप्तामां पण जाय, वली आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना तिर्यंच पंचेंद्रि सन्निमां संख्यातावर्षना आयुष्ये उपजे अने सर्वार्थ सिद्धपर्यंत चारे निकायना देवो सन्नि मनुष्य संख्याता आयुष्यवाला तेमां उपजे, देवता देवगतिमां वा नरकगतिमां, वा तेउकाय वाउकायमां वा सूक्ष्म पृथ्वीकाय आदि प्रत्येक अने वली सूक्ष्मबादर सा- [illegible] ; अने वली विकलेंद्रिमां वा असंन्नितिर्यंच अने मनुष्यमां वा सर्व जातिना अपर्याप्ता (मरे ते) मां वा असंख्याता वर्षना [illegible] पतिर्यंच जुगलिया

तेमां आवे नहीं उपजे नहीं. ए देवगतिथी मरीने परभवे जवानो अधिकार बे गतिथी कह्यो. वली चारे गतमां जीवोनी भ्रमण चक्ररूप गतिआगति अनुक्रमे कही ते मिथ्यात्व भावे जीवने चारे गतिनो संसार छे अने समकित भावे एक मनुष्यनी अने बीजी देवनी ए बे गतिनो संसार छे कारण के नरकनुं अने तिर्यंचनुं आयुष्य समकित गुणठाणे वर्त्ततो जीव न बांधे तो शी रीते जाय? जवुं पडे नहीं, कदापि समकित पाम्या पेहेलां नरक तिर्यंचनुं आयुष्य बांध्युं होय तो समकित पाम्या पछी तेने जवुं पडे नहीं तो न जाय. माटे दुःखनो दातार आत्माने महाशत्रु एक मिथ्यात्व छे बीजो कोइ नथी ते योगे जीवने नरक निगोदनां दुःख भोगववां पडे छे अने नरकनां अनंतां दुःख नारकीना जीवो भोगवे. तेथी निगोदना जीवने अनंतु दुःख छे. एम सिद्धांत कहे छे. अहींआं किंचित् निगोदनुं स्वरूप गवेषे छे.

सवैया एकत्रीसा.

दस चन्न राजलोक, असंख्य प्रदेश थोक,
सूक्ष्म निगोय भर्यो, घी घट ज्युं ठांसीने
प्रदेशे प्रदेशे गोलो, असंख्य प्रदेशे एम,
गोलामां असंख्य कही, निगोय जिनेंद्रने.
निगोय प्रत्येके कह्या, अनंत राशीए जीव,
सिद्धसें अनंतगुणा, एसो जीन वचनै

अनादि संबंध एही, जनम मरण तिहां,
अव्येवारे व्येवारे बादर थइ या तेनें.

अर्थः—ऊंचपणे चौद राज्य प्रमाण लोक छे, तेना एटले लोकाकाशना प्रदेश असंख्याता छे तेनी मांहेथी कोरे सूक्ष्म निगोद घीना घडाना दृष्टांते ठांसीने भर्यो छे. जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेटला गोला छे, एटले एक गोलो एक आकाश प्रदेश फरसीने रह्यो छे, एम असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण असंख्याता गोला रह्या छे ते एक एक गोलामां असंख्याता निगोद छे, एटले निगोद शब्दनो अर्थ ए छे के अनंता जीवोनुं पिंडभूत एक शरीर तेने निगोद कहीए. ते प्रत्येक निगोदमां अनंता जीव कह्या, ते सर्व सिद्धथी एक निगोदमां अनंतगणा अधिक जीव छे एवुं जिन वचन सिद्धांत साक्षीए छे.

गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोयउ हवइ गोलो ॥
इक्किक्कमि निगोए, अनंत जीवा मुणेयव्वा ॥ १ ॥

अर्थः—लोक मांहे असंख्याता गोला छे, अने अकेका गोला मध्ये असंख्याती निगोद छे अने अकेक निगोदमां अनंता जीव छे, ते अतित कालना सर्व समय तथा अनागत कालना सर्व समय अने वर्त्तमान कालनो एक समय, एम त्रणे कालना समय भेगा करी तेने अनंते गुणीए एटला एक निगोदमां जीव कह्या छे. अने गयो काळ तेनी आदि नथी अने आवतो काल तेनो पण छेडो नथी एटले

अंत नथी तेनुं शुं प्रमाण बांधीये, तेना जेटला समय थाया थाय तेथी अनंतगुणा एक निगोदमां जीव कह्या, तेवी एक गोलामां असंख्याती निगोद अने एक गोलो कह्यो तेवा, लोकमां असंख्याता गोला छे, ए निगोदना जीवोने निगोद साथे अनादि संबंध एटले त्यांज जन्मे अने त्यांज मरे छे.

गाथा

अत्थि अनंता जीवा जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो
उववज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव ॥१॥

अर्थः—निगोदमां अनंता जीवो एवा छे के त्रसपणुं पेहेलां कोइवारे पाम्या नथी अनंतो काल पूर्वे गयो अने अनंतो काल जशे पण ते जीवो वारंवार त्यांज उपजे अने त्यांज चवे एम एक निगोदमां अनंता जीव छे. हवे तेना भवनुं प्रमाण कहे छे.

गाथा.

सत्तरस समहिया किरइगाणु,पाणमिहुंति खुड्ड भवा॥
सगतिस सयतिहुत्तर पाणुं, पुणइग मुहुत्तंमि ॥१॥

अर्थः—निगोदिया जीवो ते मनुष्यना एक उश्वास-मां सत्तर भव फाफेरा करे छे एटले सत्तरवार जन्मीने मरे अने अढारमी वारनो जन्मे छे. अने साडत्रीससो तोतेर श्वासोश्वास एक मुहूर्त्तमां थाय.

गाथा.

पणसठ सहस्स पणसय,छत्तिसा इग मुहुत्त खुड्डभवा॥

आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एग खुड्ड जवे ॥१॥

अर्थः—निगोदिया जीवो एक मुहूर्त्तमां पांसठ हजार पांचसे ने छत्रीस जव करे अने निगोदनो एक जव बसेंने छप्पन्न आवलीनो छे. क्षुल्लक जवनुं ए प्रमाण छे. ते निगोदना वे जेद एक अव्यवहार राशी निगोद अने बीजी व्यवहारराशी निगोद, तेमां जे बादर एकेंद्रिपणुं जावे त्रसपणुं कोइ वखत पाम्या नथी अने निगोदमांथी कोइ पण काले नीकल्या नथी ते निगोदीआ जीवोने अव्यवहारराशीआ कहीए, ए पेहेलो जेद, अने जे जीवो निगोदमांथी नीकली बादर एकेंद्रिपणुं जावे त्रसपणुं पामीने पाछा निगोदमां जइने पड्या छे ते निगोदीआ जीवोने व्यवहारराशीआ कहीए, ए बीजो जेद, अने अहीं मनुष्यपणाथी जेटला जीवो कर्म खपावीने एक समये मोक्षे जाय तेटला जीवो तेज समये अव्यवहारराशी सूक्ष्म निगोदमांथी नीकलीने जंचा आवे छे पण व्यवहारराशीमां कोइ जीव वधे घटे नहीं. ए सूक्ष्म निगोदमां पृथ्वी आदि पांचे स्थावरना सूक्ष्म जीवो ते सर्व लोकमां काजलनी कुंपलीनी पेरे जर्या थका व्यापी रह्या छे, अने तेमां साधारणपणुं तो मात्र एक वनस्पतिमां छे पण चार स्थावरमां नथी. ए सूक्ष्म निगोदमां अनंतु दुःख छे, तेनुं उदाहरण कहे छे. सातमी नरकनुं आयुष तेत्रीस सागरोपमनुं छे, ते तेत्रीस सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला वखत सातमी नरकमां उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपमने आयुषे कोइक जीव

उपजे तेटला नवोमां जेटलुं छेदन नेदननुं दुःख थाय ते सर्व एकटुं करीए तेथी अनंत गणुं दुःख निगोदना जीवो एक समयमां नोगवे छे यथा दृष्टांते जेम कोइक मनुष्यने साम्रानए कोरू लोढानी सोयो अग्निथी तपावी कोइक देव समकाले तेना अंगमां खोसे तेथी तेने जे वेदना थाय तेनाथी अनंत गणी वेदना निगोद मध्ये छे, अने नव्य जीवने निगोदनुं कारण ते अज्ञान छे, माटे हे नवनीरु नाइर्ड ! तेनो तमे त्याग करो अने ज्ञाननो खप करो, सद्गुरुनो विनय करो, तेथी आत्मसत्ता अनात्मसत्तानुं जाणपणुं पामशो, तीहां स्वनावनो अने विनावनो नेद जूदो पमशे. वली बुद्दिकताने वस्तु मानवी तेनो न्रम टलशे अने अंतर दृष्टि थशे, त्यां ज्ञान चेतना जाग्रति पामशे ए निगोदनो विचार कह्यो. हवे काय स्थिति संग्रहणी सूत्रथी तथा देवचंदजी कृत गत चोवीशीमां ठठा जिनजीना स्तवनथी गवेषे छे. कायस्थिति एटले जीवो संसार न्रमणगति चक्रमां नाना प्रकारनी काया ग्रहण करे वे, तेमां जे कायाए मरण पाम्या तेज कायामां फरी फरी जन्मवुं अने मरवुं. बीजी कायामां ज्यां सुधी न उपजे तेटला कालने कायस्थीतिनुं मान कहीए तेनां प्रथम निगोदीया जीवनी क्षेत्र आश्रीने असंख्याता पुद्गल परावर्त्तनो काय स्थिति कही छे, अने काल आश्रीने अनंता काल चक्रनो एटले अनंती उत्सर्पिणि अवसर्पिणिनो व्यवहारराशी निगोद एटले जे जीवो सूक्ष्म बादर निगोद जे साधारण

वनस्पतिमांथी नीकलीने प्रत्येक पांच स्थावर आदि त्रसपणुं पामीने पाछा निगोदमां गया तेनी ए उत्कृष्टी कायस्थिति कही अने अव्यवहारराशी निगोदिआ जीवनी कायस्थिति क्षेत्र आश्रीने अनंतां पुद्गल परावर्त्तनी जाणवी अने काल आश्रीने भवाभवी जीवनी अनादि अनंत भांगे अने भवी अभवीनी उंधे अनादि सांत भागे कहीए, वली सादि सांत भागे पण कहीए ए सूक्ष्म साधारण वनस्पतिकायनी उत्कृष्टी काय स्थिति कही, अने बादर साधारण वनस्पति काय जे बादर निगोद तेनी उत्कृष्टी स्थिति अढी पुद्गल परावर्त्तनी कही छे. हवे पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय अने वाउकाय ए चार सूक्ष्म स्थावरनी प्रत्येके एकएकनी उत्कृष्टी कायस्थिति असंख्याता कालचक्रनी एटले असंख्याती उत्सर्पिणि अवसर्पिणिनी कही छे, अने प्रत्येके वनस्पति साथे पांचे बादर स्थावरनी प्रत्येके प्रत्येके उत्कृष्टी स्थिति सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी कही छे. हवे विकलेंद्रि ते बेइंद्रि तेइंद्रि अने चौरेंद्रि तेमनी प्रत्येके प्रत्येके संख्याता हजार वर्षनी उत्कृष्टी कायस्थिति कही छे. अने पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय तथा प्रत्येक वनस्पतिकाय मली पांचे बादर स्थावर तथा बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरेंद्रि ए त्रणे विकलेंद्रि मली ए आठ पर्याप्तानी समुदाये भेगी गणतां कालथकी बे हजार सागरोपमनी झाझेरी कायस्थिति कही छे. हवे पंचेंद्रि तिर्यंचनी अने मनुष्यनी प्रत्येके प्रत्येके उत्कृष्टी

सात आठ भवनी काय स्थिति छे, अने देवता नारकी म-
लीने ए चारे गतिना पंचेंद्रिपणानी समुदाये भेगी गणतां
कालथकी एक हजार सागरोपमनो झाझेरी उत्कृष्टी स्थी-
ति कही छे. अने मनुष्यनी उत्कृष्टी स्थीति त्रण पल्यो-
पम झाझेरी कही छे, आठ भवमां एक भव जुगलीयानो
अपेक्षामां लेतां. वली देवता अने नारकी तो आयुष्य पूर्ण
करीने फरी देवता देवगतिमा न उपजे अने नारकी नरक
गतिमां न उपजे माटे तेमने काय स्थिति न होय, ए उ-
त्कृष्टी काय स्थिति कही अने जघन्यथी तो सर्व जीवनी
एक अंतर्मुहुर्त्त प्रमाण काय स्थिति कही छे ए संग्रहणी
सूत्रनी गाथा तथा स्तवन.

गाथा.

एसा पुढवाइणं ॥ भवठिइ संपयं तु कायठिइ ॥
चउएगिंदिसु णेया, उसप्पिणीउं असंखिज्जा २६४
ताउ वणंमि अणंता.संखिज्जा वाससहस विगलेसु
पंचिंदितिरिनरेसु, सत्तठ भवाउ उक्कोसा ॥२६५॥
सव्वेसिंपिजहन्ना, अंत मुहुत्तं भवेय काएय ॥

हवे गत चोवीसीमां छठा जिनजीनुं स्तवन
लिख्यते.

जगतारक प्रभु विनवुं, विनतकी अवधाररे
तुज दरसण विण हुं भम्यो, काल अनंत अपाररे जग० १

वनस्पतिमांथी नीकळीने प्रत्येक पांच स्थावर आदि त्रसपणुं पामीने पाछा निगोदमां गया तेनी ए उत्कृष्टी कायस्थिति कही अने अव्यवहारराशी निगोदिआ जीवनी कायस्थिति क्षेत्र आश्रीने अनंतां पुद्गल परावर्त्तनी जाणवी अने काळ आश्रीने नवाभवी जीवनी अनादि अनंत भांगे अने भवी अभवीनी उंधे अनादि सांत भागे कहीए, वळी सादि सांत भागे पण कहीए ए सूक्ष्म साधारण वनस्पतिकायनी उत्कृष्टी काय स्थिति कही, अने बादर साधारण वनस्पति काय जे बादर निगोद तेनी उत्कृष्टी स्थिति अढी पुद्गल परावर्त्तनी कही छे. हवे पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय अने वाउकाय ए चार सूक्ष्म स्थावरनी प्रत्येके एकएकनी उत्कृष्टी कायस्थिति असंख्याता काळचक्रनी एटले असंख्याती उत्सर्पिणि अवसर्पिणिनी कही छे, अने प्रत्येके वनस्पति साथे पांचे बादर स्थावरनी प्रत्येके प्रत्येके उत्कृष्टी स्थिति सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी कही छे. हवे विकलेंद्रि ते बेइंद्रि तेइंद्रि अने चौरेंद्रि तेमनी प्रत्येके प्रत्येके संख्याता हजार वर्षनी उत्कृष्टी कायस्थिति कही छे. अने पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय तथा प्रत्येक वनस्पतिकाय मळी पांचे बादर स्थावर तथा बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरेंद्रि ए त्रणे विकलेंद्रि मळी ए आठ पर्याप्तानी समुदाये भेगी गणतां काळथकी बे हजार सागरोपमनी जाझेरी कायस्थिति कही छे. हवे पंचेंद्रि तिर्यंचनी अने मनुष्यनी प्रत्येके प्रत्येके उत्कृष्टी

बाधक परिणति सवि टले, साधक सिद्ध कहायरे जग०१५
कारणथी कारज हुवे, ए प्रतित अनादिरे ॥
माहारा आतम सिद्धिना, निमित्त हेतु प्रभु सादी रे जग०१६
अविसंवाद हेतुनी, दृढ सेवा अभ्यासरे ॥
देवचंद्र पद नीपजे, पूर्णानंद विलासरे जग० १७

समाप्त.

ए कायस्थिति कही, तेमां अधिक स्थिति तो स्थावरमां छे, तेमां पण बादर करतां सूक्ष्ममां वधारे छे एम अनंतो काल ते गतिउमां अव्यक्तपणे रहेवानुं कारण अज्ञान अने मोह छे, बीजुं नथी, माटे भव्य जीवने मनुष्यनो भव पामीने स्वपरनुं जाणपणुं करी परवस्तु उपरथी, स्नेह सरागता छंडी करवी, परवस्तुने विषे जीवनुं कर्त्तापणुं, भोक्तापणुं, ग्राहकपणुं, स्वामित्वपणुं, छंडुं करवुं अने स्वस्वरूप रसिक थवुं, स्वस्वरुप रमण करवुं, ते जोगे ए गतिउमां जवुं बंध थशे अने मुक्ति नजीक थशे, वली अल्प कालें मलशे, नरक निगोदनुं दुःख टलशे, वली अव्याबाध सुखना सादि अनंत भांगे भोगी थशे, जो परवस्तु जे शुभाशुभ तेने विषे धसवापणुं नहीं थाय तो, अध्यातम गीताए कह्युं छे के—

इंद्र चंद्रादि पद रोग जाण्यो,
शुद्ध निज शुद्धता धन्य पिछाण्यो ॥
आत्म धन्य धन्य आपे न चोरे,
कोण जगदीन वली कोणजोरे ॥ १५ ॥



अर्थः–इंद्र चंद्रादि कहेतां देवगतिये वीस भुवनपति, बत्रीस व्यंतर, बे ज्योतीषी अने दस वैमानिक एटले बार देवलोक पर्यंत सर्व मळीने चोसठ इंद्र छे; अने उपर नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमानमां तो सर्व देवो इंद्र छे एटले त्यां तो कोइ रैयतज नथी, ए सर्वे देवेंद्र अने आदि शब्द तथा मनुष्यगतिये नरेंद्र जे चक्रवर्ती, वासुदेव अने बलदेव तेमनु पद कहेतां जे तेमना ऐश्वर्यपणानी पुद्गलिक ऋद्धिनी ठकुराइ तेनुं इंद्रि नोइंद्रि जनित जे विषय सुख तेने रोग जाण्यो कहेतां रोग सरखुं कोणे जाण्युं, तो जे अंतर आत्माना भावने पाम्या तेमणे जाण्युं छे शामाटे रोग सरखुं जाण्युं छे तो कहे छे के शुद्ध निज एटले नीज कहेतां पोताना आत्मानुं शुद्ध कहेतां निर्मल आत्मसत्ताने विषे मळ आवरणे करीने रहित शुद्धता कहेतां सिद्ध निष्पन्नता, धन्य कहेतां क्षायक, लब्धि, केवलज्ञान, केवल दर्शनादि अनंता गुणने अव्याबाधादि अनंता पर्याय पिछाण्या केहेतां जाण्या, ओळख्या, ए क्षायक ऋद्धिना रागी थया, अर्थी थया ते जोगे रागना प्रेर्या थका सहज वीर्यनी स्फुर्णाए तद्गत परिणाम पाम्या, सस्वरूपने अनुभवे छे ए स्वरूप केवुं छे तो आत्म कहेतां आत्मानी धन्य धन्य केहेतां क्षय उपशम भावे गुण पर्यायनी प्रगटता छे अने मूल स्वरूपे आत्मसत्ताए क्षायक भाव छे ते धन्य लब्धिने आपे कहेतां कोइने कोइथी आपि अपाय नहीं अने लीधी लेवाय नहीं तो, न चोरे केहेतां कोइथी चोरीने लीधी तो

लेवायज केम ? कोण जग दीन कहेतां स्वर्ग मृत्यु अने पाताल ए त्रणने जगत्रय कहीए. तेमां वली कोइ जीवविन एटले कंगाल क्षायक ऋद्धिए रहित आत्मसत्ताये नथी, ते तेने अनुकंपा लावीने आपीये. वली कोणजोरे केहेतां तेम कोइ जगतमां जोरावर योद्धो नथी, ते एक जीवनी क्षायक ऋद्धिने बीजो अन्य चोरी लेशे, वा पामी लेशे, एम क्षायक ऋद्धिनी आत्माना असंख्याता प्रदेशे अचलता प्रत्येक प्रदेशे अनंती अनंती ऋद्धि जोइने अनुभवीने निर्भयपणे संवेगवेगी महापुरुषोत्तम तृप्त थया छे, समाधि पाम्या छे. निरीछायेज संतुष्ट थया छे. ते कारणे अनंता जीवे जोगवी जोगवीने छोडेली एवी पुद्गलिक अने विनाशक देव मनुष्य गतिये इंद्रादिक पदनी ऐश्वर्यादिक ऋद्धिने कोण इछे ? ए ऋद्धिना इछक तो बाह्य दृष्टि आत्मिक गुणनी अंतर्गत ऋद्धिना अजाण तेउ मिथ्यात्वोदय उदयागतना पराजव संयोगे विकल थयेला दीन कंगाल ते बहिरात्म जावने पामेला ते जीवो जेम पतंग उमीने दीवामां दीपकनुं मनोहर रूप पोतानां विकल चक्षुवडे जोइने मोहित थका पडे छे ए न्याये मिथ्यादृष्टि जीवो पुन्य पुन्य पोकारता मोहितपणे शुज क्रियाना रागी थइने इंछा करता वर्त्ते छे पण तेमने गुणना अजावे यथास्थित मलतुं नथी, अने आत्मज्ञानी आत्मदर्शी जे छे तेमने तो गुण रागीपणाने लीधे प्रशस्त रागे घणुं घणुं पुन्य जे शुज आश्रव ते आवे छे, पण तद्गत अंतरवृत्तिए बंध पाडवानो खप नथी,

अर्थ नथी; जेम आवे तेम स्वरूप रमणीपणे ध्यानयोगे निर्जरता जाय छे ते कारणे इंद्रि. नोइंद्रि जनित अनुकुल विषय सुखने पण ज्ञानी पुरुषो रोग सरखुं यथास्थित जाणे छे अने सत्यपणे श्रद्धा पूर्वक सद्दहे छे, केवल आनंदोपेत सहज सुखनाज सकामी अने मोक्षना अर्थी छे. ए सम्यक्ज्ञान अने सम्यक्दर्शननुं लक्षण छे ते कह्युं. (२१)

जिणे आत्मा शुद्धताये पीछाण्यो;
तिणे लोक अलोकनो भाव जाण्यो ॥
आतम रमणी मुणी जगवदीता,
उपदीश्युं तेणे अध्यात्मगीता ॥ २ ॥

अर्थः—जेणे कहेतां जे पुरुषे आत्मा कहेतां पोताना आत्माने शुद्धताए कहेतां उपयोगे स्वपर विभाग व्हेंचण करीने उपाधीथी न्यारो करीने अंतःकरणे ऊंडा उतरीने मनजोगने स्थिर करीने पीछाण्यो कहेतां जाण्यो अनुभव्यो छे जेणे, तेणे कहेतां ते पुरुषे लोक कहेतां चौद राजलोकनो अने अलोक कहेतां अनंतां राज अलोकनो, वली लोकमां रहेला धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, पुद्गलास्ति अने जीवास्ति ए पंचास्तिकायनो भाव कहेतां धर्म जाण्यो, एटले धर्मास्तिकायनो चलण सहायता अधर्मास्तिकायनो स्थिर सहायता, आकाशास्तिकायनो अवगाहकता पुद्गलनो मीलण विखरणता अने जीवनो ज्ञायकता. वली कालनुं स्वरूप तो उपचारे छे तेनो वर्तना

एम षट् द्रव्यनो धर्म भिन्न एटले जुदो जुदो जाण्यो, ते शाथी जाण्यो ? तो कहे छे के आत्मरमणी मुणि- कहेतां आत्मस्वरूपमां रमण करवावाला मुणि एटले ज्ञानी छे ते केवा छे तो जग कहेतां स्वर्ग मृत्यु अने पाताळ तेमां रहेला पदार्थना वदीता कहेतां जाण अने वली चाला छे एम ठाणांगजी आदि सिद्धांते पण कहेलुं छे.

एगं जाणइ, सव्वं जाणइ, एगं न जाणइ, सव्वं न जाणइ.

अर्थः—जेणे एक पोताना आत्माने नयनिक्षेप पक्ष प्रमाणे करीने स्याद्वाद दृष्टिए युक्त सत्ता स्वरूपने ग्रहीने अनुभव्यो जाण्यो छे, तेणे सर्व जाणइ कहेतां ते पुरुषे सर्व जाणी लीधुं एटले तेने ज्ञानी कह्यो. अने एक न जाणे सव्वं न जाणइ तेनो अर्थ हवे कहे छे—नरकने जाणे, स्वर्गने जाणे, द्वीप समुद्रने जाणे; यतिनो अने श्रावकनो आचार जाणे, जीवनी गति आगति जाणे, जीवना पांचसोने त्रेसठ भेद अने अजीवना पांचसोने साठ भेद व्हेंची जाणे, कर्मनी मूल आठ प्रकृति अने उत्तर एकसो ने अठावन प्रकृतिना भेद करीने गणी वाले. इत्यादि जाण थाय तो पण एक पोताना आत्माना स्वभावने जाण्यो नथी, वस्तुगते स्वभावने ओलख्यो नथी, सप्रविभाग वेंहेंच्यो नथी, उपयोग गोचर आत्माने कर्यो नथी त्यां सुधी ते जीवने अजाण अज्ञानी कहीए, वली अनाभोग मिथ्यात्व कहीए; माटे ज्ञानीपणुं तो एक पोताना आत्माने जाणी तेमां रमण करे छे जे मुनि तेनुं छे; उपदीश्युं तेणे

अध्यात्मगीता कहेतां अध्यात्म एटले अद्वितीय भाव जे पुदगलिक भावथी रहित तादृश्य आत्मिक भाव वस्तुना मूल स्वरूपने ग्रहण करवुं, ते भाव अध्यात्म एटले आत्मा अनात्माना गुण पर्यायनुं जाणपणुं करवुं, अनात्म भावने हेय जाणीने तजवुं अने आत्मभावने उपादेय जाणीने ग्रहवुं. उपदीश्युं तेणे एटले एम आत्म स्वरूपना यथास्थित जाण पुरुषोए गीता एटले अध्यात्म सार, ज्ञानसार आदि अनेक ग्रंथोमां वली आचारांगादि सिद्धांतोमां उपदेश कर्यो छे ते कह्यो. अध्यात्म गीताना कर्त्ता देवचंद्रजी कहे छे के हुं मारी मति कल्पनाये कहेतो नथी (३) माटे हे आत्मार्थि भाइओ तमे आत्माने जाणवानो खप करो तेथी समकितादि गुणस्थानकने पामशो. वली समयसार नाटक ग्रंथे छठा संवरद्वारे कह्युं छे.

सवैया तेविसा.

"जो कवहूं यह जीव पदारथ,
औसर पाइ मिथ्यात मिटावे;
सम्यक धार प्रवाह वहे गुन,
ज्ञान उदे मुख उरध ध्यावे;
तो अभि अंतर दर्वित भावित,
कर्म किलेश प्रवेश न पावे;
आतम साधि अध्यातमके पथ
पूरण हे परब्रह्म कहावे ॥ १६९ ॥

अर्थः—जा कबहु यह जीव पदारथ कहेतां जो कोइ भव्य जीव छे ते, औसर पाइ कहेतां काललब्ध पामीने यथा प्रवृत्ति करणे कर्म स्थीति घटाडी अपूर्व करणे अपूर्व वीर्य फोरवी मिथ्यात कहेतां मिथ्यात्व ग्रंथि भेद करीने आत्म प्रदेशे रहेलां मिथ्यात्व मोहनीनां एटले दर्शन मोहनीनां अने वली अनंतानुबंधि कषायनी चोकडी ते चारित्र मोहनीनां कार्मणदल पुद्गल तेने मीटावै कहेतां निर्जरे, त्यां सम्यक् धार कहेतां शुद्ध सम्यक्त्व पामे. प्रवाह वहे गुन केहेतां, त्यांथी गुन एटले स्वरूपज्ञान जलधारानो अनुभवप्रवाह वहेवा लाग्यो, अने ज्ञान उदे कहेतां अंतःकरणे अनुभव भवने ज्ञानभाव सूर्य उदय थयो अने तिमिरांधकार विलय पाम्यो त्यां पोतानो चेतन शिवरूप छे, ते उपयोगे निहाल्यो, दृष्टि प्रत्यक्ष कीधो त्यां मुख उरध कहेतां उत्तरोत्तर चढती स्थितिये आत्माना मूळ स्वरूपनुं स्वभाव पर्यायनुं ध्यावै कहेतां ध्यान करे छे. तो कहेतां त्यां, अभ्यंतर कहेतां आत्माना प्रदेशे प्रदेशे पूर्व कृत्य अनंतां अनंतां दुरित कहेतां ज्ञानावरणादि, अने भावित कहेतां रागद्वेष, कर्म कहेतां एम द्रव्यभाव बे भेदे कर्म तेनो उदयागत क्लेश कहेतां पराभव प्रवेश न पावै कहेतां पोताना ज्ञान ध्यानमां प्रवेश न करी शके परंतु ज्ञान ध्यान जोगे द्रव्यभाव कर्म उपाधि उपर कही ते अनंती अनंती हणाती जाय छे.आतम साधि केहेतां एम शुद्धात्म स्वरूप ध्यानगत समाधिए साधि अध्यात्म के पंथ केहेतां अद्वितियभाव एटले

पुद्गलिक भावरहित एकताद्दश्य आत्मिक भाव ते अध्यातम शैलीनो पंथ पूरण है कहेतां परिपूर्ण निर्वहतां थकां वीतराग परिणतिनी पूर्णता पामे, वली क्षायक लब्धिनी पूर्णता पण पामे, परब्रह्म कहावै कहेतां ते पुरुष परब्रह्म कहेवाय, अरहंत कहेवाय (१६७) एम साधननी पूर्णता अंतर्वृत्तिये ज्ञान जोगे कही वली एज ग्रंथे सप्तमनिर्जराद्वारे कह्युं छे के.

सवैया तेइसा.

ज्ञान उदे जीनके घट अंतर,
ज्योति जगी मति होति न मैली ॥
बाहीज दृष्टि मिटी तिन्हके हिये,
आतम ध्यान कला विधि फैली ॥
जे जन चेतन भिन्न लखै,
सुविवेक लिये परखै गुन थैली ॥
ते जगमें परमारथ जानि,
गहे रुचिमानि अध्यातम सैली ॥ २०२ ॥

अर्थः—ज्ञानउदे जीनके घटअंतर के० जेना घटांतरने विषे ज्ञानउदै केहेतां ज्ञानभाव उदय पाम्यो, त्यां विवेक आव्यो निज परनुं भान थयुं, पोतानुं अतींद्रिय अरूपी रूप भास्युं, अंतर्वृत्तिये लोचनवंत चक्षुवंत थयो, त्यां सहज वीर्यनी स्फुर्णा पाम्यो ते जोगे करणवीर्य स्फुर्णानो अभाव थयो. मन वचन अने कायाना त्रण जोग स्थंभि गया एटले स्थिर थया, त्यां ज्योति जगी केहेतां नोकर्म उपाधि

संयोग वादळाना अज्ञावे ज्ञान ज्योति विस्तारे जागृत थइ प्रकाशित थइ ते जोगे अजवाळुं वधु थयुं अने घटांतर वृत्तिये व्यापेलो तिमिरांधकार ते विलय पाम्यो. मति होती नमैली कहेतां मति एटले बुद्धि उज्वल थइ जमता टली अने चेतनता प्रगटी. ते हवे फरीने मलिन थाय नहीं बाहिज दृष्टि मिटी तिन्हके हिये केहेतां ते पुरुषना हृदय कमलमां कायाने विषे चेतनपणानो भ्रम हतो ते मटी गयो अने बाह्य दृष्टिनो प्रसार गळी गयो ते जोगे आतमध्यान कलाविधि फैली कहेतां आत्मध्यान एटले आत्माना ज्ञान दर्शनादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय तेनी गवेषण एटले हवे चेतनराय पोतानुं घर संज्ञालवा वेठा, तो पोताना घरमां सत्ताये अनादि संबंधे शक्तिज्ञावे अनंती क्षायक ऋद्धि रहेली ते नजरे आवी, रुचिमां आवी एटले ए ऋद्धिमां दृष्टि खुपी, एम ध्यान करवानी कला विधि स्वज्ञावगत फैली एटले विस्तार पामी, जे जमचेतन भिन्न लखै कहेतां जे पुरुषोत्तम एम अनुज्ञवगत ध्याने करी स्पष्ट बोध पामीने जम एटले पुद्गल जे मन वचन अने काया, अने मनना विषय, वचनना विषय, अने कायाना विषय साथे शुज्ञाशुज्ञ सर्वे ते द्रव्य उपाधि, अने अहंममत्वपणुं, लोज्ञनी आशा अने विषयज्ञोगनी तृष्णा, मोहनी घेलछाए विकलपणुं, स्वस्वरुपथी ज्ञुलवापणुं, चुकवापणुं, अरुचिपणुं, तेनो कर्त्ता मोहनो कर्म जे ज्ञाव सदिरारुप छाक ते ज्ञाव उपाधि एम द्रव्यज्ञाव वेहुजेदे उपाधि

ते जन्म एटले द्रव्य उपाधिमां प्रथमनी सात वर्गणा समाय छे अने जाव उपाधिमां आठमी कार्मण वर्गणानो समावेश थाय छे एटले द्रव्यजाव उपाधि तेज पुदगल अने अंतर्गत व्यापकपणे पोते पोतामां परिणमीने रहेलो, साक्षात् परमात्मा सरखो, सिद्धनो साधर्मी, मोक्षमयी, मोक्षमां रहे-वावालो निरंजन, निराकार निर्लिप्त, निरावर्ण, तेज चेतन एम जिन्न लखे कहेतां जुदो जुदो जाणवामां अनुजववामां आवे. सुविवेक कहेतां तेनुंज नाम जलो विवेक कहीए ते विवेके करीने, लिये परखे गुनथैली के० रत्नत्रयादि अनंता गुण पर्यायनो पूंज शुद्धात्म द्रव्य तेज गुण थैलो अने परखे एटले उपयोग दृष्टिए जोइ निहाली परखीने लिये एटले ग्रहण करे. ते जगतमां कहेतां स्वर्ग मृत्यु अने पातालमां परमारथ जानि कहेतां तेने उत्कृष्टो अर्थ जाणवो. एम चेतन जावनुं पामवुं थाय एथी अधीक बीजो हित अर्थ कोइ पण जगतमां नथी, ते कारणे शुद्धात्म स्वरूपने पा-मतां चेतन परिपूर्ण अर्थ पाम्यो, एम कहीए, गहे रुचि मानी केहेतां ए परिपूर्ण अर्थ जे शुद्धात्म स्वरूप ते रुचि मानि एटले रुचिमां लावीने गहे एटले प्रमोदित थइने आनंदित थइने ग्रहण करे. अध्यात्म शैली के० तेनुंज नाम अध्यात्म शैली छे ॥ २०२ ॥ ते गवेखीने कही परंतु अध्यात्म शैलीमां चेतन केम आवतो नथी, अध्यात्म शै-लीने पामतो नथी, तेनुं कारण शुं छे ? तो चेतन अनादि संबंधे बहु सयन दशाने ग्रहण करी रह्यो छे, तेने छोमतो

नथी अने जाग्रत दशामां आवता नथी, तेथी अध्यात्म शैलीने पाम्या नहि. एटले बहु शयन आदि चेतननी चार दशाओ छे. कह्युं छे—यशोविजयजी उपाध्याये साडा त्रणसो गाथाना श्री सीमंधर स्वामीना स्तवननी सोलमी ढाले.

चार छे चेतनानी दशा अवितथा,
बहु शयन शयन जागरण चोथी तथा ॥
मिच्छ अविरत सुयत तेरमें तेहनी,
आदि गुणठाण नय चक्रमांहे मुणी ॥ १ ॥

अर्थः—चार छे चेतनानी दशा अवितथा के० चेतना शब्दे आत्मानी अवितथा केहेतां यथास्थित साची चार दशाओ छे, एटले बहु शयन दशा अनादि संबंधे छे. अने शयनदशा पडता जावे, एम ए बेहु प्रथम गुणठाणे बहिरातम जावे छे, अने त्रीजी जाग्रत दशा ग्रंथि भेद पूर्वक चोथा गुणठाणेथी ते सातमा गुणठाणा सुधी कहीए, यावत् उपशम श्रेणिनी अपेक्षाये अगियारमा गुणठाणा सुधी पण जाग्रत दशा कहीए अने चोथा समकित गुणठाणाथी अगीआरमा उपशांत मोह गुणठाणा सुधी जे चढेला, तेमने क्षायक समकितनी प्राप्ती न होय तो तेना अभावे पडवानो संभव उपशम क्षयोपशम भावनी हानि योगे छे. ते कारण पडतां पडतां मिथ्यात्व गुणठाणे आवे तो त्यां घणो काल पण रहे, माटे जाग्रत दशानो अभाव थाय अने शयन दशानी प्राप्ति थाय ए बीजो शयन दशा

पणता नावनी अपेक्षाये मिथ्यात्व गुणठाणे कही अने चोथी बहु जाग्रत दशा क्षपक श्रेणी मांडे त्यांथी एटले अप्रमत्तादि आठमा गुणठाणाथी तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत यावत् सिद्ध पर्यंत बहु जाग्रत दशा संनवे, एटले बहु शयन दशा अनवी जीवने अनादि अनंत नांगे अने नवी जीवने अनादि सांत नांगे कारण के नवो जीव काल लब्धि पामी यथाप्रवृत्ति आदि करण करी समकित पामे, त्यां बहुशयन दशा अनादि संबंधे संलग्नपणे हती तेनो अनाव थाय नाश थाय, ते कारणे नवीने अनादि सांत नांगो लागे अने अनवी जीव त्रण कालमां पण समकित पामे नही, माटे सदाकाल बहुशयन दशा संनवे, ते कारणे अनादि अनंत नांगो अनवीने कह्यो. अने बीजी शयनदशा तथा त्रीजी जागृत दशा ए बे दशा तो सादि सांत नांगे छे. एटले ए बे दशानी आदि पण छे अने अंत पण थाय, अने चोथी बहु जाग्रत दशानी आदितो छे पण अंत न आवे माटे सादि अनंत नांगो लागे एम विशेष अपेक्षाये चार दशा चेतननी करी, परंतु सामान्य अपेक्षाये बेज दशा चेतननी छे बहुशयन दशानो एक शयन दशामां समावेश करीए, अने बहु जाग्रत दशानो एक जाग्रत दशामां समावेश करीए तो एक शयनदशा अने बीजी जाग्रत दशा एम बेज कहेवाय, तेमां प्रथम शयन दशानुं वर्णन समयसार नाटक ग्रंथना सातमा निर्जरा द्वारथी कहे छे.

सवैया एकत्तीसा.

काया चित्र सारीमें करम परयंक भारी
मायाकी संवारी सेज चादर कलपना
सैन करै चेतन अचेतनता नींद लीए,
मोहकी मरोर यहै लोचनको ढपना
उदै बलजोर यहै श्वासको सबद घोर,
विषै सुख कारजकी दोर यहै सुपना
ऐसी मूढ दशामैं मगन रहै तिहूकाल,
ध्यावै भ्रम जालमैं न पावै रूप अपना ॥ १९० ॥

अर्थः—काया चित्र सारीमैं केहेतां विषयभोग रमणिक मनुष्य तिर्यंच गतिये उदारिक काया अने देवगति नरकगतिये वैक्रिय काया तद्रूप मेहेलातोमां कर्म केहेतां महा मोहनी कर्म प्रकृति स्त्री आदी वेद, तद्रूप परयंक केहेतां ढोलीउं; भारी केहेतां करण वीर्यनी अति शक्तिये पण देवताउ मनुष्यो अने तिर्यंचो न खसावी शके तेवो अनादि संबंधे परंपराये ढाली मुक्यो छे ते ढोलीआ उपर मायाकी केहेतां शुभाशुभ कपट क्रियानो, संवारी केहेतां सरागतानी सेज संथारो पाथरो छे, चादर कलपना केहेतां ते शुभाशुभ क्रिया करणीने विषे मनना अथिरपणाने लीधे विकल्पनी आहट्ट दोहट्ट श्रेणि तद्रूप चादर वोढावी छे, सैयन करे चैतन केहेतां एवी सामग्रीमां चेतन शयन करी रह्यो छे. अचेतनता नींद लीए केहेतां त्यां पोतानुं शुद्धात्म

स्वरूप जूलीने अने चुकीने अचेतनता एटले जमतारूप इंद्रियरूपार विषयक्तपणे नींद लीए केहेतां निद्रा लेतां मोहकी मरोर एटले मोहरूप मदिरानो घेलगाए, यहै लोचनको ढपना के० बाह्य अभ्यंतर चक्षुयुगल तेथी भींचाइ गयां, ढंकाइ गयां. उदै बलजोर के० ए पूर्वकृत कर्मबंधनो उदय प्राप्त थयो, ते ज़ोर एटले अति बलवान सचेतन जावने हणनार ठे, यहै श्वासको शबदघोर के० ए निद्रागत श्वासो श्वासनो घोर शब्द चालतां ठतां विषे के० पांच इंद्रिना विषयजोग ते विषयजोगने जोगवे ते सुख एटले तेने अज्ञान जावे सुख माने, अने कारज एटले जीवनुं कार्य समजे. की एटले एम, दोर एटले मनादि योगनो गवेषणा परिपाटी चाले ठे. यहै सुपना के० तेज स्वप्नावस्था ठे. ऐसी के० ए उपर कही तेवी मूढ दशामां के० विकल दशामां मूरख यइने, मगन रहै के० आनंद माने प्रमोदित थाय तिहुकाल के० अतीत काल ते गयो काल, अनागत काल ते आवतो काल अने वर्त्तमान काल ते चालतो समय; एम त्रणे काल मिथ्यात्व वशे चेतन पोतानुं स्वस्वरूप जूलीने, ध्यावै भ्रम-जालमें के० कायादि पर संयोगने विषे चेतनपणानो भ्रम मानीने समये समये सात आठ कर्मनी वर्गणानां अनंतां कार्मणदल विषम जावे दोमी आश्रव रूप ग्रहीने एकता-पणे आत्मप्रदेश साथे बांधतो बांधतो अनादि संबंधे चा-आवे ठे तेथी आत्मसत्ता कर्मवर्गणाए करीने दबाइ गइ ठे ते कारणे न पातौ रूप अपना के० चेतन पोतानुं

मूल शुद्धात्म स्वरूप पामी शकतो नथी, एनुंज नाम शयनदशा छे. ॥ १९० ॥

हवे बीजी जागृत दशानुं कथन करे छे.

सवैया एकतीसा.

चित्रसारी न्यारी परयंक न्यारो सेज न्यारी,
चादर भी न्यारी इहां जूठी मेरो थपना ॥
अतित अवस्था सैन निद्रा वहीको उपने,
विद्यमान पलक न यामें अब छपना ॥
श्वास औ सुपन दोउ निद्राथी अलग बूझे,
सूझै सब अंग लखो आतम दरपना ॥
त्यागी भयो चेतन अचेतनता भाव त्यागी,
भाले दृष्टि खोली कै संभाले रूप अपना ॥ १९१ ॥

अर्थः—चित्रसारी न्यारी के० आत्मज्ञान पाम्या थकी न्यारी एटले कायागत पांच इंद्रिउ अने मनादि त्रण योग ते थकी जूदी घटांतर वृत्तिये चित्रसारी एटले आत्माने स्वस्वरूप रमण करवानो रमणिक ज्योतमय प्रकाशित, प्रस्थूल महामोटी, खुल्लो आकाश वली उपद्रवे करीने रहित, आधि व्याधिये करीने रहित, केवल शिवरूप आनंदोपेत, सुखदायक अनुभव भुवननामे महेलात छे, तेमां परयंक न्यारो के० शयनदशामां कह्यो ते थकी जूदो एटले बाह्य भावे मोहराजानी राजधानी छे, अने अंतर भावे चारित्रराजानी राजधानी छे, माटे परयंक एटले चेतनरायने

बेसवा योग्य समजावरूप जद्रासन मांड्युं छे. सेज न्यारी एटले अपूर्व सरलजाव शुद्धोपयोग तद्रूप सेज संवारी छे,चादर जी न्यारी के०तेना उपर निर्विकल्परूप चादर एटले अजेद जाव ग्राहक तो चादर बीछावी छे. इहां के० पूर्वे शयनदशामां गवेखी तीहां जूठी मेरी थपना के० में अंतर्गत ज्ञानना अजावे मोहितपणे ममत्वे करीने मारापणे मानी लीधेली थापना ते जुठी एटले असत्य छे, अने उपर ज्ञानदृष्टिए अंतर्गत चेतनजावे चेतननी स्थापना गवेखी, ते यथास्थित सत्य छे. अतीत अवस्था सैननिद्रावही को जपने के० गया कालनी अवस्थाने विषे शयनदशामां निद्रा लेनार पण कोइ बीजा रूपे हुंज छुं; विद्यमान के० वर्त्तमान कालमां ते अवस्था मारी नथी. पलक के० एक पलक मात्र पण न यामें अब छपना के० शयनदशामां छुपीने एटले ढंकाइने हवे हुं रहुं नहीं. सदा सर्वदा जाग्रत दशामां जपयोगिक जावे वर्त्तिश. श्वास औ सुपन दोउ निद्राथी अलंग बुजे कहेतां पोताना चेतनने शिखामण आपे छे के हे चेतन तु हवे श्वासोश्वास अने सुपन ए बे निद्राथी अलग एटले छेटे थइने अलगो थइने जपयोगजावे बुज. एटले आत्मबोधनी वृद्धिकर तेथी करी तने सूजे सब अंग लखी आतमदरपना के०आत्मज्ञानरूप आरिसामां आत्मानुं सर्व अंग एटले. अखंड, अविनाशी, निरंजन, निराकार, निराबाध सिद्ध निष्पन्न एवुं स्वरूप छे ते सूजे एटले अनुजववारूप जाणवा, देखवा, सद्दहवामां आवे. त्यागी जयो चेतन अचेत-

नता चाव त्यागी के० एवी रीते अचेनता रूप निद्रानो त्याग करीने चेतन त्यागी थयो, एटले अनादि संबंधे निद्रा साथे रागीपणे परिणाम पाम्यो हतो तेनो अंत आव्यो. तिहां चाले दृष्टि खोली के संचाले रूप अपना के० विशुद्ध चेदज्ञान ज्योतिये अंतर चक्षु विस्तारीने देखे तो आत्म सत्ताथी अनात्म सत्ता जूदीज नजरे आवे ठे, त्यारे अनात्म सत्ताने चेतन हेय जाणीने निवर्त्ते, एटले तजे, अने पोतानी आत्मसत्ता जे शुद्धात्म स्वरूप उपयोगिक चाव तेने उपादेय जाणीने संचाले एटले अनुचवे तेनुंज नाम जाग्रत दशा ठे, ॥ १७१ ॥ अहीं चेतन निर्जय दशाने पामे अने सात चयनो नाश करे ते चावने हवे अनुक्रमे गवेखे ठे, समयसार नाटक ग्रंथना निर्जरा द्वारथी प्रथम आ चवनुं चय निवारण कथन कहे ठे,

छप्पय छंद.

नख शिखमित परवान, ग्यान अवगाहन निरखत ॥
आतमअंग अचंग, संग परधन इम अप्पत ॥
ठिन चंगुर संसार, विजव परिवार चार इसु ॥
जहां उतपति तिहां प्रलय, जसु संयोग विरह तसु ॥
परिग्रह प्रपंच परगट परखी इह चव चय उपजै न चित॥
ग्यानी निशंक निकलंकनिज,ग्यानरूप निरखंत नित्य॥२२६॥

अर्थ—नखशिखमित परवान के० पगना नखथी ते माथानी शिखा सुधी एटले शरीर प्रमाण केत्रमां चौगति संसार वासी जीव अनादि संबंधे पुद्गल मिश्रित लोली

जूत एकमेक व्यवहारना न्याये शयनदशाए, कर्म संबंधे चाल्यो आवे छे. ते कर्मना बे भेद एक घाति अने बीजो अघाति. घाति कर्मना ज्ञानावरणादि चार भेद ते कर्मना क्षयोपशम थवाथी जीव गति आदि भेदे ऊंचो आवे छे. वली काल लब्धियोगे अने क्षयोपशम वृद्धि पामवाथी घटांतर वृत्तिये ज्ञान ज्योति झगमगे छे, प्रकाश करे छे तेनुं नाम जाग्रत दशा छे, ते जाग्रत दशामां व्यवहार दृष्टि टली गइ कायाने विषे जीवपणानो भ्रम हतो ते भाग्यो, निजपर बुद्धि प्रगट थइ, काया प्रमाण क्षेत्रमां आत्माने सामान्य विशेष उपयोग लक्षणे व्याप्ति केहेतां व्यापेलो परिणमेलो कायाथी जूदो जुए छे तो आतम अंग कहेतां आत्माना असंख्यात प्रदेश, अने प्रदेशे प्रदेशे अनंतु ज्ञान तथा अनंतु दर्शन, तद्रूप अंग एटले चिन्ह मूर्त्ति तेनो अभंग केहेतां निश्चयनयनी दृष्टिये त्रण कालमां भंग न थाय, अविनाशी छे माटे सदा स्थिर भावे रहे. संग कहेतां तेना संगे जे पुद्गल छे तेने परधन कहेतां मोहरायनी राज्यधानी ज्ञानीओ कहे छे. एम असत्यपणानो अनादि संयोग छे तेज छिन भंगुर संसार केहेतां चौगति संसार क्षणभंगुर एटले विनाशी, अने तेने विषे विभव केहेतां धन्यादि, अने परिवार केहेतां कुटुंबादि ते, भारवसु केहेतां तेने एकांते पोतानुं मानवुं, रखोपुं करवुं ते कर्मबंध हेतु छे, ते कारणे जीवने माथे भार कह्यो. ए वस्तु संयोगिक भावे प्राप्त थइ ते संसार व्यवहारमां स्वामित्व संबंधे पो-

तानो कहेवाय, पण वस्तुगते जीवने पर छे तेने हित अर्थे त्रिकरण जोगे वोसराववतां जीवना माथेथी भार उतरे एम जाणवुं. ज्यां उत्पत्ति तीहां प्रलय कहेतां आ संसारमां, जेनी उत्पत्ति एटले प्रगटता छे, तेनो प्रलय कहेतां विनाश छे. वली, जासु संयोग विरह तसु के० जेनो संयोग तेनो वियोग पण थाय, एटले संयोगिक भाव सदाकाल रहे नहीं. परिग्रह के० एवो नव प्रकारना परिग्रहनो, प्रपंच कहेतां अथिर स्वभाव संध्याना रंग समान प्रगट पेखी के० प्रगटपणे दृष्टि करीने जोइए तो आ भवनुं भय चित्तमां उपजे नहीं. ए रीते समजीने जे ज्ञानी होय ते परिग्रहना वियोगनी चिंता न राखे, निवारे, अने निःशंक केहेतां शंका संदेह रहित निर्भयपणे, निःकलंकनिज कहेतां पोताना आत्मानुं द्रव्यास्तिक नयपक्षे निरावरण निर्मल एवुं ज्ञान स्वरूप कहेतां उद्योतमय प्रकाशित तेने निरखंत नित्य के० सदा सर्वदा बाह्य दृष्टि टाली अंतर दृष्टि करी अनुभव चक्षुए निरखे, ए आ भवना भयनु निवारण कथन कर्युं.

हवे बीजो परलोक भय निवारण कथन करे छे.

छप्पय छंद.

ज्ञान चक्र मम लोक, जासु अवलोक मोख्य सुख;
इतर लोक मम नांहि, नाहि जीस मांहि, दोष दूःख;
पुन्य सुगति दातार, पाप दूरगति पद दायक;
दोउ खंडित खांनिमैं, अखंडित है शिव नायक;

इहि विधि विचार परलोक भय नहि व्यापी वरतै सुधित;
ज्ञानी निसंक निकलंक निज ज्ञान रूप निरखंत नित ॥१२७॥

अर्थः—ज्ञान चक्र कहेतां अनंतु ज्ञान, अनंतु दर्शन, अनंतु चारित्र अने अनंतु वीर्य आदि अनंता गुण, वली अव्याबाधादि अनंता पर्याय शक्ति भावे तिरोभावि पणे आत्माना विषे प्रदेश प्रदेश प्रत्ये अनंता अनंता रह्या छे, त्यांज मारो रहेवास छे. ते मम लोक के० पोताना लोकमां जासु के० एम चेतनरायने पोतानो लोक जणाव्यो. आत्मसत्ताए अनंत चतुष्टयी आदि अनंती क्षायकऋद्धि अनादि संबंधे रहेली तेनुं अवलोक के०अंतर्गत घटांतर वृत्तिए तद्गत व्यापकपणे परिणाम पामी स्वरूपे उपयोग जोमी अनुभव ज्ञान चक्षुए दृष्टि प्रत्यक्ष निहाली रमण करी अनुभवी, आस्वादी निज ऋद्धिएज तृप्ति पामीए, त्यां मोख सुख के० मोक्षना अव्याबाध अतींद्रिय सुखनो विभोगी चेतन थाय, एटले भोगवे, ए चेतनरायने पोतानो लोक गवेषीने कह्यो. इतर लोक के० हवे ए कह्यो तेथी अन्य बीजो परलोक जे संसारगति ते मारो लोक नथी, मारो ज्ञान लोक मारी साथे छे. नाहि जीसमांहि दोष दुःख के० मारा ज्ञानलोकमां दोष एटले दूषण नथी, वली दुःख कहेतां अशाता नथी. पुन्य सुगति दातार के० परलोकमां सुगति एटले मनुष्यगति अने देवगतिनुं दातार एटले देवावाळुं ते पून्य छे. पाप दुर्गति पददायक के० दुर्गति जे नरकगति अने तिर्यंचगति तेनुं दायक एटले देवा-

वालुं ते पाप छे. एम दोय कहेतां पुन्य अने पाप ए वेथी प्रगट थयो जे चउगति संसार ते खंम्रित खांनिभै के० मोहरायनी राजधानीमां अनादि संबंधे रहेतां पण, अखंम्रित है के० संग्रहनयनुं ज्ञान करीने जोइए तो आत्मानुं अखंम्र अविनाशीपणुं त्रिकाल वृत्तिये नासे छे. वली शिव के० उपाधिए करीने शक्तिभावे रहित अने नायक के० ध्यान करवाने, स्मरण करवाने, चिंतवन करवाने योग्य साक्षत् परमात्मा परमपूज्य ते पोतानो आत्मा छे. इहि विधि विचार के० उपर गवेषी एम जाणता अविधि टालीने अने विधिए चेतन विभाग विचारीने परलोक नय के० आवता भवे दुर्गति पामवानुं वली दुःख भोगववानुं, नय नहि व्यापी के० हृदयकमलमां अशाता वेदना रूप नहि व्यापे, वरतै सुधित के० त्यां सदा शुद्ध स्वरूप थको वर्त्ते. एम ज्ञानी के० आत्मज्ञानी पुरुषोत्तम, परलोक नय छेदीने, निःशंक निकलंक के० अशंकितपणे कर्म कलंक रहित एवो निज के० पोतानो आत्मा, ज्ञानरूप के० लोकालोकनो ज्ञाता तेने निरखंत नित के० सदा नीरखे ॥ २९१ ॥

ए परभवना नयनुं निवारण कथन कर्युं हवे त्रीजो मरण नय निवारण कथन कहे छे.

छप्पय छंद.

फरस जीभ नासिका, नयन अरु श्रवण अक्ष इति ॥
मन वच तन बल तीन, सास उसास आउ थिति ॥

ए दस प्राण विनाश, तांहि जग मरण कहीजे ॥
ग्यान प्राण संयुक्त, जीव तीहुं काल न छीजे ॥
यहचिंत करत नहि मरण भय, नय प्रमाण जिनवर कथित ॥
ज्ञानी निशंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित ॥२२७॥

अर्थः—फरसनी ज्ञाताते फरसइंद्रि, रसनी ज्ञाता ते जीव्हाइंद्रि, गंधनी ज्ञाता ते नासिका इंद्रि अने वर्णनी वली संस्थाननो ज्ञाता ते नयन एटले चक्षुइंद्रि अने शब्द जे सुस्वर दुःस्वर अथवा सचित अचित अने मिश्र तेनो ज्ञाता ते श्रवण इंद्रि, ए पांच इंद्रि तथा मन बल, वचन बल अने कायबल ए त्रण बल, श्वासोश्वास अने आयु स्थिति ए दस द्रव्य प्राण जीवना कहेवाय छे, तेनो विनाश एटले हानि थाय, नाश थाय, तांही के० त्यां जग के० स्वर्ग मृत्यु अने पाताल ए त्रण जगतने विषे, मरण कहीजे के० मरण कहेवाय छे, तथापि ज्ञान प्राण संयुक्त के० जीव पदार्थ ज्ञान चेतना तद्रूपभाव प्राण संयुक्त तिहु काल न छीजे के० जीवना ज्ञान प्राण अतीत अनागत अने वर्त्तमान ए त्रण कालमां तूटे नहीं, यह के० एवो, चित्त के० उपयोगे करत के० चिंतवन करवाथी, नहीं मरण भय के० मरणनो भय उपजे नहीं. एम नय प्रमाण जिनवर कथित के० नय एटले द्रव्यास्तिक नयपक्षे अने प्रमाण एटले आगम प्रमाणे जिन एटले सामान्य केवलीने विषे, वर एटले अष्ट प्रातिहार्यादि ऋद्धिए पूजनिकपणा माटे अग्रेसर जे तीर्थंकर देव तेमणे कथित एटले सिद्धांतने विषे प्ररूप्युं छे, ते वच-

ननी श्रद्धाये ज्ञानी पुरुषो निःशंकपणे जीवने अजरामर कहेछे,एटले अजर के० घरुपण न पहोंचे वली अमर के०मरे नहीं वळी मरे नहीं तो जन्मेज शेनो? ते कारणे बाल तरुण अने वृद्ध ए त्रण अवस्थाए रहितपणे स्वभाव पर्यायनी अपेक्षा ए जीव छे, अने कर्म पर्याय जे कर्मे करीने उत्पन्न थया एवा नरनरकादि गति पर्याय तेनी अपेक्षाए बाल तरुण अने वृद्ध ए त्रण अवस्थाए रहित छे ते कारणे मरे तो कर्मथकी प्राप्त थया जे, उपर जीवना दश द्रव्य प्राण गवेष्या ते मरे पण स्वभाव पर्यायमय चेतन भाव प्राण धारी ते कदापि न मरे. जेने अनादि अनंत भांगो लागे छे, ते कारण माटे अविनाशी छे. निकलंक निज के० जन्म मरणरूप कलंके करीने रहित निज एटले ज्ञानी आत्मा, ज्ञानरूप एटले उपाधिनो क्षय कारक ज्ञान छे, माटे पुरण समाधिमय अरूपी चेतनने, निरखंत नित कहेतां सदा निरखे ॥ ११८ ॥ ए मरण भय निवारण कथन कर्युं हवे चोथो वेदना भय निवारण कथन कहे छे.

छप्पय छंद.

वेदनवारो जीव जांहि वेदंत सो उजिय ॥
यह वेदना अभंग सुतौमग अंग नांहिव्रिय ॥
कर्म वेदना द्विविध एक सुखमय दुतिय दुख ॥
दोउ मोहविकार पुद्गलाकार बाहिरमुख ॥
जब यह विवेक मनमहि धरत तबन वेदना भय विदित ॥
ग्यानी निशंक निकलंक निज ग्यानरुप निरखंत नित ॥११९॥

अर्थ—वेदनवारो एटले जाणनारो तेतो जीव छे, एटले जीवनो सामान्य विशेष उपयोग गुण छे, ते जांहि कहेतां आत्माना सहज स्वरूप गत त्यांहि उपयोग भावे परिणमीने वेदंत के० गुण पर्यायादि ऋद्धिने जाणवा देखवापणे वेदवु एटले अनुभववुं, रमण करवुं, आस्वादन करवुं सोउ के०ते, जीव के०ज्ञानी जीवनुं स्वरूप छे. यह के०ते ज्ञानी जीवनुं स्याद्वाद स्वरूप एज वेदना के०तद्गत् व्यापकपणे संवेदन एटले गुण-गुणगत स्वभावे पर्याय पर्यायगत स्वभावे वेदवुं एटले अनुभवं ते, अभंग के० तेनो त्रणे कालमां भंग न थाय, कारण के एतो आत्मानो तिरोभावीपणे अनादि स्वभाव छे, ते न टले माटे स्वरूप संवेदनपणुं सदा संभवे, सुतौ के० तेतो मम अंग केहेतां चेतनरायने मारुं पोतानुं अंग छे पण, नांहि विय के० उपर कहुं तेथी बीजु कर्म वेदना जे छे, ते नांहि एटले मारी नथी कर्म वेदना. द्विविध के० कर्म एटले पूर्व कृत कर्म द्विविध एटले एक शुभ अने बीजी अशुभ वेदना एटले ते कर्मनी उदिकता योगे साताअसाता विपाके प्राप्त थइ ते वेदना एक सुखमय के० शातावेदनी अने बीजी दुःख एटले अशाता वेदनी दोउ एटले ए वेहु मोहविकार केहेतां मोह मदिरानो विकार एटले छाक, जेना हृदय कमलने विषे व्यापेलो छे तेनुं अंतःकरण एटले मनयोग चपल छे अथिर छे. त्यां पुद्गलाकार एटले चेतन पुद्गल आकारे इंद्रियगत व्यापकपणे रूपी छे, वली बहिर सुख के० मुख्य वृत्तिए बहिर एटले ए बाह्यभावे परिणमेलो,

व्यापेलो अने विषय कषायनो तो ग्राहक ते सुखमय शाता वेदनीय अने दुःखमय अशाता वेदनीयने वेदे पण, शुद्धात्म स्वरूपनो ग्राहक तद्गतभावे परिणमेलो चेतन स्वस्वरूपने अनुभवे, ते अवसरे परस्वरूपने अनुभवे नहीं, अने अनुभवना अभावे वेदवुं कहेवाय नहीं. जब के० जे अवसरे यह के० उपर कह्यो एम विवेक के० भेद ज्ञानजोगे निजपर विभाग व्हेंचणरूपे मनमहि धरत केहेतां मने करीने चिंतवत, एटले जीव पुदगलना भेद जूदाइ रूपे भिन्न परिणमनपणे करत, ते अवसरे चेतन उपाधि रहितपणा माटे शिवरूप छे. वळी अनुभव अवसरे अनंत चक्षुवंत छे; तब के० ते अवसरे, न वेदनाभय के० नहीं शाता अशाता द्विविध वेदनानो भय विदित के० वेदवारुपे, ते कारणे ज्ञानी निःशंक के० ज्ञानी पुरुषोत्तम निःशंकपणे, निकलंकनिज के० पोताना आत्माने कर्म कलंकथी रहितपणे, केवल ज्ञानरूप के० ज्योतिरूप, निरखंत नित के० सदा निरखे ॥२२९॥ ए वेदना भय निवारण कथन कर्युं. हवे पांचमो अनरक्षाभय निवारण कथन कहे छे.

छप्पय छंद.

जो स्व वस्तु सत्ता सरूप, जगमहि त्रिकालगत ॥
तासु विनास न होइ, सहज निहचै प्रमाणमत ॥
सो मम आतमदरव, सरवथा नहि सहाय धर ॥
तिहि कारन रक्षक न होइ, भक्षक न कोई पर ॥

जब यहि प्रकार निरधार किय, तव अनरक्षा नय नसित ॥
ज्ञानी निशंक निकलंक निज, ज्ञान रूप निरखंत नित॥२२०॥

अर्थः—जो के० पोताना चेतनने वाह्य जावमां रह्यो थको ज्ञाता जीव, रक्षा नयने ठेदीने निर्जय थको शीखामण आपे ठे. कहे ठे के घटमां एटले अंतःकरणमां ज्ञाननावे उपयोग करीने देख. स्ववस्तु सत्ता के० वस्तु एटले षट्‌ द्रव्य तेमां कालनुं स्वरूप तो उपचारे मान्युं ठे. बाकी ठता पणे पंचास्तिकाय ठे, तेमां धर्मास्तिकाय एक द्रव्य ठे, अधर्मास्तिकाय एक द्रव्य ठे, आकाशास्तिकाय एक द्रव्य ठे. पुद्‌गलास्तिकाय अनंतां द्रव्य ठे, अने जीवास्तिकाय पण अनंतां द्रव्य ठे, तेमां द्रव्य द्रव्य प्रत्ये स्व एटले पोताने विषे पोतापणानी, ते पोताना गुणनी, पोताना पर्यायनी, अने पोताना प्रदेशनी ठती ठे, तेनुंज नाम सत्ता ठे, ते जगमहि के० स्वर्ग मृत्यु अने पाताळ ए त्रण जगतमां त्रिकाळ गत के० अतित, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणे काळने विषे द्रव्य सत्ता स्वरूपने अस्तिपणे पामीए. तास के० ए जीव अजीवादि द्रव्यनी सत्ता स्वरूपनो विनाश, न होइ के० द्रव्य द्रव्य प्रत्ये पोताना गुणपर्यायनो, वली प्रदेशनो कदापि विनाश थाय नहि. अहीं कोइ तर्क करशे के तमे प्रदेशनुं सदा अवस्थितपणुं सर्व द्रव्यने विषे कहो ठो, पण पुद्‌गलना खंध सदा मले विखरे ठे, मले ठे ते परमाणु प्रदेशनी अधिकताइने पामे अने विखरे ते परमाणु प्रदेशनी न्यूनताने पामे तेनुं केम?

तेनो उत्तर-हे जाइ! तमे० कह्युं के पुद्गलना खंध मले विखरे छे ते वात खरी छे, ए पुद्गलने विषे विजाव पर्याय छे, तेथी मले विखरे छे, ते कारणे सिद्धांतकारे सिद्धांतने विषे द्वो प्रदेशोथी मांमीने अनंत प्रदेशी पर्यंत पुद्गलना खंधने उपचलित द्रव्य एम कहीने उपचारे द्रव्य मान्यो छे. वली एक परमाणु प्रदेशने अनुपचलित द्रव्य कह्यो छे एटले मले छे तोपण परमाणु पुद्गल पोतानी जूदाइने लइने रह्यो ते सदा जिन्न छे, अजिन्न वृत्तिए कदापि पुद्गल मले नहीं अने मले नहीं त्यां विखरवुं होय नहीं, ते कारणे द्रव्यास्तिक नयपक्षे त्रणे काले एक रूपे रहे. द्रव्यनी सत्तानुं ध्रुवपणुं सदा संजवे एवुं सहज के० द्रव्य द्रव्यगत पोतानुं सहज सत्ता स्वरूप छे. निश्चय प्रमाणमत के० एम जिनेश्वर जगवानना दर्शनने विषे निश्चैनयनो मत एटले पक्ष आगम प्रमाणे छे, ते कारणे, सोमम आतमदरव के० ज्ञाता जीव चिंतवे छे के मारो आतम द्रव्य अनादि संबंधे चोगति संसार चक्रमां ज्रमण करतां अनंतां पुद्गल परावर्त्तन कर्यां, अनंतां दुःख सह्यां, तो पण वस्तुगते सिद्ध सरखी सत्तावंत पोते छे, ते कोइनी एटले एक जीवने बीजा जीवनी अथवा शुजाशुज पुद्गलनी सहाय लइने छे. तो कहे छे के, सर्वथा नहि सहायधर के० जीव छे ते सर्वथा प्रकारे बीजानी सहायने धारण करतो नथी, पोताना पराक्रमे अखंम अविनाशीपणे पोतानी सत्ताने लइने रह्यो छे. तिहि कारन के० ते कारणे रक्षक न होइ के०

एटले कोईनुं करेलुं नीपजावेलुं कृत्रिम नथी, वली केवुं छे? तो अनमित एटले माप विनानुं, प्रमाण विनानुं, अत्रुट एटले अविनाशी भावनुं धन एटले अंतर लक्ष्मी ते आत्म सत्ताए अनंतु धन छे तांहि केहेतां त्यां जइने, चौर किम गहे केहेतां चोर केम ग्रही शके, चोर नहीं लहे के० स-त्तानी भूमिने ओर जन एटले पोताना चेतनथी अन्य बीजो नहि लहे के० त्रण कालमां न पामे. चितवंत एम धरि ध्यान जब के० एम ध्यानने विषे चितवंत एटले उपयोग भावे चिंत-वीने आत्म प्रदेशे गुण पर्यायादि ऋद्धि अचल भावेरहेली तेने ग्रहीने एटले ए ऋद्धिमां व्यापकपणुं- परिणमनपणुं, रमणपणुं, अनुभव बले करीने, जब एटले जे अवसरे चेतन मूल स्वरूपे वर्त्ते, तब के० ते अवसरे अगुप्त भय एटले आत्मऋद्धि गुप्त नथी, आच्छादित नथी, तालाकुंची कब-जामां नथी. अनुभव अवसरे प्रत्यक्ष प्रमाणे उपयोग गो-चर खुल्लो छे. वली अनुभवना अभावे श्रद्धाने विषे परोक्ष प्रमाण गोचर छे, ते खुल्ला धनने साचववानो भय एटले बीक ते। उपशमी जाय. अर्थात्‌भयनो अभाव थाय, ज्ञानी केहेतां ज्ञानीने; ते कारणे निशंक एटले चोरभय शंकारहित नि-कलंकनिज के० पोतानो आत्मा भय मोहनी आदि दूष-णोए करीने रहितपणा माटे निकलंक एवु ज्ञान स्वरूप एटले आत्माने अने अनात्माने जणाववावालु ओलखाववा वालु, वली अनात्म भावने हेय जाणीने तजाववावालुं अने आत्म भावने उपादेय जाणी समाधि भावी ग्रहाववावालुं

एवुं ज्ञान स्वरूप तेने निरखंत नित के० सदा निरखे अने त्यां परमानंद पामे॥२३१॥ए चोरजय निवारण कथन कर्यु.

हवे सातमो अकस्मात् जय निवारण कथन कहे ले,

ढप्पय ढंद.

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, सहजसु समृद्ध सिद्ध सम ॥
अलख अनादि अनंत, अतुल अविचल सरूप मम ॥
चिद् विलास परगास, वीत विकलप सुख थानक ॥
जहां डुविधा नहि कोइ, होइ तहां कटू न अचानक ॥
जब यह विचार उपजंत तब, अकस्मात जय नहि उदित ॥
ज्ञानी निशंक निकलंक निज, ज्ञानरूपनिरखंत नित ॥२३२॥

अर्थः—शुद्ध केहेतां चेतन केवो ले तो उपाधि रहित अने बुद्ध केहेतां ज्ञानी, अविरुद्ध केहेतां निज स्वरूप रमणताये अने परस्वरूप अरमणताये वर्ते सहजसु केहेतां एम पोताना स्वजावसु समृद्ध के० ज्ञानादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय, तद्रूप ऋद्धिये करीने समृद्धिवंत, सिद्धिसम के० सिद्धपरमात्मानो बरोबरीउ चेतन ले, वली केवो ले ? तो अलख के० लख्यो जाएयो उद्मस्थथी जाय नहीं; केवली जगवान जाणे. वली केवो ले ? तो अनादि अनंत एटले आदि नथी अने अंत पण नथी, आदि अंत रहित ले. वली केवो ले ? तो अतुल एटले जेनी तुलना वचनयोगे केवली जगवानथी पण न थाय, एटले आठ वरसनी उमरे केवल पाम्या होय अने

तेमनुं क्रोड पूर्वनुं आयुष्य होय अने केवल पाम्या त्यांथी-ज आत्माना गुण पर्यायनी व्याख्या आयुष्यना छेडा सुधी अखंड धाराए करे, त्यारे अभिलाप्य स्वभाव धर्मनो अनंतमो भाग केहेवामां प्ररूपवामां आवे अधिक न आवे, अने अभिलाप्य स्वभाव धर्मथी, अनभिलाप्य स्वभाव धर्म आत्माने विषे अनंतगणो अधिक छे, ते तो केवली भगवानने वचन गोचर पण थतो नथी. माटे अहीं शेनी तुलना करीए अथवा माप बांधीए. आत्मानुं स्वरूप ज्ञानी गम्य छे, एटले ज्ञानीने जाणवामां आवे पण केहेवामां एटले वचनयोगे गवेखवामां न आवे माटे अतुल. वली केवो छे? तो, अविचल एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश छे, अने प्रत्येक प्रदेशे ज्ञानादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय रह्या छे, तेमां एक प्रदेशे रहेला गुण पर्याय चलीने बीजा प्रदेशे न जाय, अने बीजा प्रदेशे रहेला गुण पर्याय चलीने पेहेला प्रदेशमां न आवे, ज्यां छे त्यांने त्यांज सर्व प्रदेशे रहे माटे अविचल कहीए. "ते स्वरूप मम" केहेतां ए स्वरूप चेतनरायने पोतानुं छे, वली केवो छे? तो चिद्‌विलास केहेतां ज्ञानयोगे अनंती ऋद्धिनो भोगवनार एटले विलासी छे. परगास केहेतां स्वपर प्रकाशी चेतन छे, वली केवो छे? तो, वीत विकल्प केहेतां संकल्प विकल्प रहित निरविकल्प समाधिमय चेतन छे. वली केवो छे? तो, सुखस्थान केहेतां अव्याबाध सुखनुं स्थानक जे सिद्ध, ते संग्रहनयनी अपेक्षाए अनादि सिद्ध छे. जहां

कहेतां आत्मसत्ताये दुविधा के० द्विधा भाव, अचेतन भाव, नहीं कोइ होइ के० त्रणे काळे न पामीए, एटले शक्तिभावे आत्माने सदा निरावरण कहीए. तहां के० ते स्थानके, कतु न अचानक के० कोइ पण अणचिंतव्यो अचानक भय शोकादि न उपजे, न आवे. जब के० जे अवसरे, अहु के० ए प्रकारे, विचार उपजंत के० हृदयकमलमां ज्ञान विवेक विचार ध्यानगत चिंतवत, तब के० ते अवसरे अकस्मात भय, नहिं उदित के० उदय पामतो नथी ते कारणे ज्ञानी, निःशंक के० भयशंकारहित निर्भयथका वर्ते. वळी निकलंकनिज के० कर्मकलंक रहित, ज्ञानरूप के० जाणवाने योग्य एवुं आत्मानु स्वरूपछे तेने, निरखंत नित्य के० सदा नीरखे छे, जुए छे. नित्य एटले आंतरारहित पुनः पुनः स्वरूपगत दृष्टि करी छे जेणे तेमने ज्ञानी कहीए. ज्ञानीने बाह्य दृष्टि करवानुं कांइ प्रयोजन नथी परंतु ज्ञानी बाह्य भावमां वर्त्तता जोवामां आवेछे, तेनुं कारण एके उदयिक भावनी अपेक्षाए जोवामां आवे छे, नहीं तो आवे नहीं पण वस्तुगते वस्तुपणानो बोध एटले जाणपणुं तेनुंज नाम ज्ञान छे, अने वस्तुगते वस्तुपणानी श्रद्धा तेनुं नाम समकित छे अने पोताना स्वरूपगत रमणिपणुं अने परस्वरूपमां अरमणिपणुं तेनुं नाम चारित्रछे, वळी पोताना गुणपर्यायगत एटले गुणगुणनो स्वभाव जुदो जुदो छे वळी पर्याय पर्यायनो स्वभाव पण जुदो जुदो छे एटले अनंता

तेमनुं क्रोम पूर्वनुं आयुष्य होय अने केवल पाम्या त्यांथी-ज आत्माना गुण पर्यायनी व्याख्या आयुष्यना छेडा सुधी अखंड धाराए करे, त्यारे अभिलाप्य स्वभाव धर्मनो अनंतमो भाग केहेवामां प्ररूपवामां आवे अधिक न आवे, अने अभिलाप्य स्वभाव धर्मथी, अनभिलाप्य स्वभाव धर्म आत्माने विषे अनंतगणो अधिक छे, ते तो केवली भगवानने वचन गोचर पण थतो नथी. माटे अहीं शेनी तुलना करीए अथवा माप बांधीए. आत्मानुं स्वरूप ज्ञानी गम्य छे, एटले ज्ञानीने जाणवामां आवे पण केहेवामां एटले वचनयोगे गवेखवामां न आवे माटे अतुल. वली केवो छे? तो, अविचल एटले आत्माना असंख्याता प्रदेश छे, अने प्रत्येक प्रदेशे ज्ञानादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय रह्या छे, तेमां एक प्रदेशे रहेला गुण पर्याय चलीने बीजा प्रदेशे न जाय, अने बीजा प्रदेशे रहेला गुण पर्याय चलीने पेहेला प्रदेशमां न आवे, ज्यां छे त्यांने त्यांज सर्व प्रदेशे रहे माटे अविचल कहीए. "ते स्वरूप मम" केहेतां ए स्वरूप चेतनरायने पोतानुं छे, वली केवो छे? तो चिद्‌विलास केहेतां ज्ञानयोगे अनंती ऋद्धिनो भोगवनार एटले विलासी छे. परगास केहेतां स्वपर प्रकाशी चेतन छे, वली केवो छे? तो, वीत विकल्प केहेतां संकल्प रहित निरविकल्प समाधिमय चेतन छे. वली केवो? तो, सुखस्थान केहेतां अव्याबाध सुखनुं स्थानक सिद्ध, ते संग्रहनयनी अपेक्षाए अनादि सिद्ध छे. जहां

कषाय ने मिथ्यात ए, मोह भ्रमणनुं मूळ ॥
दुःख दाता अति मोटका, जन्म मरणनुं शूळ ॥ ६ ॥

कषाय पचवीश भेदए, पंचभेद मिथ्यात ॥
भाव उपाधि ओळखी, संत करे तस घात ॥ ७ ॥

संत शुक्ल ध्याने करी, वीर्य स्फुरणा पाय ॥
उपाधि उन्मूळ करी, सिद्ध स्वरूपी थाय ॥ ८ ॥

सिद्ध स्वरूप सत्ता विषे, ज्ञान शीतळनो मांहि ॥
शक्ति ते व्यक्ति लहे, सिद्ध पद कहीए त्यांहि ॥ ९ ॥

श्लोक संख्या २१००



श्री जैन तीर्थ निर्णय ग्रंथनुं

शुद्धिपत्रक

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१	१४	दवाइ	दवाइ
२	१६	तेहेन	तेहने
,,	१७	ग्रीवेके	ग्रैवेयके
३	१०	भेववीअं	भवेवीअं
,,	१३	परावर्तनमी	परावर्त्तनी
४	२	ग्रंथीभेदथयो	ग्रंथिभेदथये
,,	१३	पराय	प्राये
,,	१४	करतां	कर्त्ता
५	१७	इहानो	इहाना
७	२	भीन्न भीन्न अपेक्षा	भिन्न भिन्न अपेक्षा
७	६	वचननी	वचन
,,	६	अपेक्षाने	अपेक्षा न
८	४	एटल	एटले
,,	८	सम्यक सं- वेगेज्ञान	सम्यक् ज्ञान
,,	८	सम्यक सं- वेगे दर्शन	सम्यक् दर्शन
,,	९	हतुं थाय	हेतु थाय
,,	१२	हतुं छे	हेतु छे
८	१३	तमां	तेमां
,,	२२	बीनु	बीजुं
९	९	द्रष्टीने	दृष्टिने
,,	१७	एवरत	ऐरवत
१०	६	तीरथ	तीर्थ
,,	२०	संक्षेप	संक्षेपे
११	७	अनानुगा- मीक	अननुगामिक
११	१२	वर्धी	वृद्धि
११	१४	,,	,,
११	२०	महुर्त्तज	मुहूर्त्तज्ञ
१२	८	अवधी	अवधि
१२	२	महुरतमांतो	मुहूर्त्तमांतो
१२	५	अपरमत- स्थानके	अप्रमत्तस्थानके
१२	१०	भागे	भांगे
१२	९	चितवीत- भावने	चितवितभावने
१२	११	उत्सरपीणी अवसरपीणी	उत्सर्पिणि अवसर्पिणि
१३	६	क्षयोज्ञाप- समनी	क्षयोपसमनी
१३	१३	पांम्या	पाम्यां
१३	१०	क्षयोउपश- ममावे	क्षयउपशमभावे
१४	३	क्षयपसम	क्षयोपशम

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१४	४	क्षयरसम	क्षयोपशम
१७	६	मीथात्वने	मिथ्यात्वने
१७	७	चारीत्र	चारित्र
१७	१४	मीथात्ववसे	मिथ्यात्ववशे
१८	४	गउतमस्वा-मीए	गौतमस्वामीए
१८	२३	तेन	तेने
१९	११	करीए	कहीए
२०	१	मीथात्व	मिथ्यात्व
२०	९	समकीतपक्षी	समकितपक्षी
२०	१०	मीथात्व	मिथ्यात्व
२०	१२	क्रीया	क्रिया
२०	११	यथारथ	यथार्थ
२०	१६	क्रीया	क्रिया
२०	२२	चारीत्र	चारित्र
२०	२३	क्रीयाने	क्रियाने
२१	१	चारीत्र	चारित्र
२१	३	चारीत्र	चारित्र
२१	३	मीथात्वपक्षी	मिथ्यात्वपक्षी
२१	८	मीथात्वपक्षी	मिथ्यात्वपक्षी
२२	५	क्रीयाने	क्रियाने
२२	६	चारीत्र	चारित्र
२२	८	चारीत्र	चारित्र
२२	९	चारीत्र	चारित्र
२२	१०	स्थीरपणुं	स्थिरपणुं
	१३	क्रीया	क्रिया
२२	१३	चारीत्रनी	चारित्रनी
२२	१४	चारीत्रनी	चारित्रनी

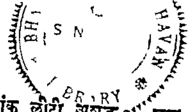
पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२२	१९	क्रीया	क्रिया
२३	१	रुजुसुत्र	ऋजुसूत्र
२३	३	रुजुसुत्र	ऋजुसूत्र
२४	३	मीथात्वी-जीव	मिथ्यात्वीजीव
२४	५	"	"
२४	६	"	"
२४	१२	स्थीती	स्थिति
२४	१३	स्थीतीवंतने	स्थितिवंतने
२४	१९	अपुरवकरण	अपूर्वकरण
२४	२०	स्थीती	स्थिति
२४	२३	स्थीतीछे	स्थितिछे
२५	२	स्थीती खपावे	स्थिति खपावे
२५	३	स्थीतीछे	स्थितिछे
२५	५	स्थीती खपावे	स्थिति खपावे
२५	५	चारीत्र	चारित्र
२५	७	स्थीतीछे	स्थितिछे
२५	८	स्थीती	स्थिति
२५	१९	महुर्तमांही	मुहूर्तमांही
२६	१	महुर्त	मुहूर्त
२६	१५	अपुर्वकरण	अपूर्वकरणे
२६	१६	महुर्त	मुहूर्त
२६	१६	मीथात्व	मिथ्यात्व
२६	१८	महुर्त	मुहूर्त
२६	२०	मीथात्वमो-हनीना	मिथ्यात्वमो-हनीना
२६	२२	महुर्तना	मुहूर्तनी
२६	९	अंतरकरणमां	अंतःकरणमां

पृष्टांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२६	८	महुर्त	मुहूर्त
२७	३	मीथात्व	मिथ्यात्व
२७	७	दर्सनमोहनीना	दर्शनमोहनीनो
२८	१४	गुणपर्यायनी	गुणपर्यायनो
२८	२३	ते परुसोमां	ते पुरुषो
२८	२३	सदगुरु	सद्गुरु
२८	२३	सनमुख	सन्मुख
२८	३	आगता	सरागता
२८	४	आगताना	सरागताना
२८	४	प्रेरयो	प्रेर्यो
२९	१	चतुरवधी	चतुर्विध
२९	२	दवादस	द्वादश
२९	३	,,	,,
२९	८	सस्त्र	शस्त्र
३१	२	अदतदान	अदत्तादान
३१	५	एवी	एवी
३१	१२	ए घेमांथी	ए यमांथी
३२	१४	मंगाववी	मंगाववी
३२	२२	वीचारवा	विचरवा
३२	२१	अहीत छ	अहित छे
३४	१४	आभक्षमां	अभक्ष्यमां
३४	१८	पंनर कर्मादान	पन्नरकर्मादान
३५	१३	त्रण भेद थाय छे	त्रण भेदे थायछे
३५	७	सदसुतपणामां	सद्भुतपणामां
३५	१६	चारीत्ररागनो	चारित्ररागनो
३५	१७	सो चारीत्ररायनी	ते चारित्ररायनी
३५	२०	अचुत	अच्युत
३६	१	चारीत्रराये	चारित्रराये
३६	३	एमवीरती	एमविरती
३७	७	क्रीयासो	क्रिया ते
३७	१०	क्रीया करेछे	क्रिया करेछे
३७	११	क्रीया	क्रिया
३७	११	क्रीयामां	क्रियामां
३७	१३	छेद्यो छे	छेद्यो छे
३७	१६	अजवीयोनी	अव्वीमां
३७	१८	माहादीक	मोहादिक
३८	६	चारीत्ररायनी	चारित्ररायनी
३९	९	कहीए	करीए
३९	२१	यथारथ	यथार्थ
४०	७	मीथात्वमोहना	मिथ्यात्वमोहना
४०	९	फरस	स्पर्श
४०	१७	रजुसूत्र	ऋजुसूत्र
४०	१८	मनजो	मनजोग
४०	२२	रजुसूत्र	ऋजुसूत्र
४४	२३	मेरयो	प्रेर्यो
४५	२२	पंनरसु	पन्नरसुं
४६	१७	क्रीयामां	क्रियामां
४६	१९	ओधामां	ओवामां
४६	२३	मीथात्वसल्य	मिथ्यात्वशल्य

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
४६	२३	मीथात्व	मिथ्यात्व
४७	७	मीथात्वसो	मिथ्यात्वते
४७	९	मीथात्व	मिथ्यात्व
४७	९	मीथात्वनुं	मिथ्यात्वनुं
४७	११	अशुभक	अशुभ
४७	१३	चारीत्ररायनो	चारित्ररायनो
४७	१३	स्थीतीनो	स्थितिनो
४७	१४	मीथात्व	मिथ्यात्व
४८	२	त्रटे	त्रुटे
४८	४	क्षहीए	कहीए
४८	५	अतीथीसं· वीभोगव्रत	अतीथिसंवि- भागव्रत
४८	११	चारीत्रथीज	चारित्रथीज
४८	१७	चारित्र जन होय	चारित्र नज होय
४८	१८	गीयच्छोय- विहारो	गीयथ्थोय- विहारो
,,	,,	गीयच्छ	गीयथ्थ
४८	१९	मणाओ	मणीओ
४९	१६	पंन्नर	पन्नर
४९	२२	यथारथ	यथार्थ
५०	१०	चारीत्र	चारित्र
५२	१०	संगट	संघट्ट
५३	३	दोषेण	दूषणे
५३	७	परमारजीने	प्रमार्जीने
५३	८	परीठवणीया	पारिठवणीया
	१२	,,	,,
	१८	महुतम	मुहूर्त्तमां

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
५३	२२	,,	,,
५४	२१	अंतह्करणे	अंतःकरणे
५६	४	उत्सरपीणी अवसरपीणी	उत्सर्पिणि अवसर्पिणि
५६	१६	मीथात्वना	मिथ्यात्वना
५६	१८	मीथात्वनुं	मिथ्यात्वनुं
५६	२	महूर्त्त	मुहूर्त
५६	३	मीथात्व	मिथ्यात्व
५७	६	तेन	तेने
५७	६	मीथात्वी	मिथ्यात्वी
५७	२२	मीथ्यात्वी	मिथ्यात्वी
५८	२	सर्व	सर्व
५८	२१	अपरमते	अप्रमत्ते
५९	३	अंतरमहुर्तनो	अंतरमुहूर्त्तनो
५९	५	मीथ्यातत्वनी	मीथ्यात्वनी
५९	१३	भांग	भांगे
६१	४	तेन	तेने
६१	२०	चा०अपेक्षाए	चारित्र अपे- क्षाए
६२	११	परिठवणीया	पारिठवणीया
६३	११	परिठवणीआ	पारिठवणीया
६३	१२	परमारथ	परमार्थ
६४	७	एनीरवरती	ए निवृत्ति
६४	१९	नवग्रीवेकन- मीछे	नवग्रैवेयकन- मळे
६५	६	भव	भाव
६६	१९	नवग्रीवेक	नवग्रैवेयक

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१७	अदगतचिं-तव्य	तद्गतचित-न्य
६७	४	तु अनादी	तुं अनादि
६७	२२	अंतःहकरणे	अंतःकरणे
६८	५	फरस	स्पर्श
६८	१३	मोरछा	मूर्च्छा
६८	२१	"	"
६९	१०	"	"
६९	१६	आंवलानो	आंबिलनो
७०	१	कुरउगुरु	कूरगडु
७१	१३	मर्षदानी	पर्षदानी
७२	१९	मोर्छात	मूर्च्छित
७३	८	तरणे यो-गीनी	त्रणे योगनी
७३	८	भीन्नता	भिन्नता
७३	११	अवश्यववता	अवश्यवक्रता
७३	१८	एक आभव	एक-आभवनो
७३	२०	लाभ छे	क्षोभ छे
७४	१४	आमाने	एमने
७४	२०	असत्तथाय	असत्य थाय
७५	१	चडेछे	चढेछे
७५	७	मोर्छा	मूर्च्छा
७५	८	मोर्छा छे	मूर्च्छा छे
७५	१६	पंजर	पञर
७६	५	उंणोद्री	उणोदरी
७६	१३	बळी	वळी
७६	१८	मजं	मज्जं
७६	१८	निद्राविकहा	निद्दाविकहाया
७७	१४	काल वखते	काळ वखते
७७	१९	आवलु आ-पसे	आवेलुं आ-पशे
७७	२२	स्थुति	स्तुति
७८	१६	उष्न	उष्ण
७८	२०	सम्रुरखा-	सुश्रुषा
७९	१८	करवी	करवी ने
७९	५	सलीनता	संलीनता
७९	६	अंतहःकरण	अंतःकरण
७९	९	जोग	जोगे
७९	१२	जोग	जोगे
७९	१२	फरणाए	स्फुर्णाए
७९	१३	अंतहःकरण	अंतःकरण
८०	२१	मुगतीआर	मुखत्यार
८०	२२	तहेतसांमि	तहत्तिसांमी
८१	१	सतभाषा	सत्यभाषा
८१	६	तेना वीनय	वीनय तेना
८१	७	चारीत्र	चारित्र
८१	१८	उपज	उपजे
८१	२१	अंतहकरणे	अंतःकरणे
८२	८	दसभेद	दसभेदे
८३	१०	साधुनुं	साधुनुं
८३	२३	नीःसंकीत	निःसंकित
८४	१२	वच्छु	वथ्थु
८४	१२	वरतुनो	वस्तुनो
८५	१	वध्वंसण	विध्वंसण
८५	३	वीखरछे	विखरेछे
८५	८	लाकानो	लोकनो
८५	१४	तने	तेने



पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
८५	१७	मीथात्व	मिथ्यात्व
८५	१९	चारीत्रमय	चारित्रमय
८६	१३	अभिलाप स्वभाव	अभिळाप्य- स्वभाव
८६	१३	अनभिलाप स्वभाव	अनभिलाप्य स्वभाव
८६	२०	चारीत्रमय	चारित्रमय
८६	२१	स्थीर	स्थिर
८७	३	कीयाना	क्रियाना
८७	४	चारीत्रमय	चारित्रमय
८७	२	सो स्थीर	ते स्थिर
८७	१०	नोंखा नों- खा छे	नोंखो नोंखो छे
८७	१५	गुणगणमत्ये	गुणगुणमत्ये
८८	७	नीरंजनआ- त्मा	निरंजन आ- त्मा
८९	२	यथारथ	यथार्थ
८९	७	द्रव्यास्तीक	द्रव्यास्तिक
८९	१५	ज्यातिए	ज्योतिए
९०	९	व्याकपणे	व्यापकपणे
९०	१७	प्रदेशनोघन	प्रदेशनो घन
९०	१९	संसारर्मेछे	संसारमांछे
९०	२२	सहित आ- त्मा	रहित आत्मा
९२	२	अग्नीमांनही	अग्निमां पळे नहीं
९२	५	चीन	चिह्न
९२	६	चीने फरीने	चिह्ने फरीने
९२	१०	करतातो	कर्त्ताते
९३	१८	नर्कगत	नरकगति
९३	१९	नकगत	नरकगति
९४	३	ञनंता	अनंतां
९४	८	केनीशलंबछे	केनिरालंब
९५	४	आतमाछे	आत्माछे
९५	४	वस्तुनो	वस्तुनो
९५	६	फरसने	स्पर्शने
९६	२१	स्थीर	स्थिर
९६	२३	आतमा	आत्मा
९७	१७	पण	पणए
९८	१२	उर्द्धलोक	ऊर्ध्वलोक
१००	१०	औरवतक्षेत्र	ऐरव्रतक्षेत्र
१००	१५	वे औरवत क्षेत्रछे	वे ऐरव्रत क्षेत्रछे
१०१	६	औरवत	औरव्रत
१०२	१५	सूर्यठे	सूर्यछे
१०४	१८	ससारीजीव	संसारीजीव
१०६	७	भव्यपणुं अभव्यपणु	अभव्यपणुं
१०६	९	परिणमता	परिणमतां
१०७	४	दर्शनावर्णीये	दर्शनावर्णीय
१०७	२१	निःशर्कपणे	निःशंकपणे
१०८	८	फरसतो	स्पर्शतो
१०९	१७	पर्यापार्थिक	पर्यायार्थिक
१०९	२१	पचेंद्रिपनो	पंचेंद्रिपनो
११०	४	संपतिपेद्तो	संपतिपदेतो
११५	८	मांखीना	माखी "ना

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
११९	९	क्रिया	क्रिया
१२०	१६	संजिपंचेंद्रि	सन्निपंचेंद्रि
१२०	२१	चेतनना अभावे	चेतनाना अभावे
१२१	२१	सर्वक्षेत्रे	सर्वक्षेत्रे
१२३	२१	क्रोध	क्रोध
१२५	६	कतो	कांतो
१२७	२०	आत्माजे करे छे	आत्मा ज करे छे
१२८	२२	द्रष्टांत	ए द्रष्टांत
१२९	५	कुळाचारन	कुळाचारने
१४५	१२	सातपर्यायछे	सांत पर्यायछे
१४८	४	सामान्ये	सामान्ये

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१५३	२०	पत्रवर्तन	प्रवर्त्तन
१६५	२१	पर्याथार्थिक	पर्यायार्थिक
१६७	२०	परिणमता	परिणमवा
१७४	१४	इंद्रिनोइंद्रि	इंद्रिनोइंद्रिनो
१७७	४	केहीये	कहीये
१७९	५	परोक्षस्पष्ट	परोक्षस्पष्ट
१९०	१०	अनादि सांत	अनादि सांत
१९४	२३	सामथ्य	सामर्थ्य
२००	२३	उर्ध्वगातः	उर्ध्वगति
२०५	१०	गीतारथना	गीतार्थना
२२७	२२	उद्योतेनो	उद्योतनो
२२८	२०	अंतमुहुर्त	अंतर्मुहूर्त्त
२२८	२१	"	"

उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काळ महात्म्य ग्रंथनुं शुद्धि पत्रक.

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२४७	५	सवानवमा-सेपूर्ण	नवमास अने चार दिवस
२५३	२२	नामकर्मनो-जीनबंधनो	जीननामकर्म-बंधनो
२५५	१	धुवेवा	भुवेवा
२५५	१०	द्वांदशागी	द्वादशांगी
२५५	१६	मार्ग	मार्ग
२५७	१७	अनिवृत्तिगु-णठाणे	अनिवृत्तिकरणे
२५८	११	रीखवदेव स्वामीना अधिकारमां चोरासी सहस्र साधु पछी त्रण लाख साध्वी वधारी लेवुं	

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२५८	१७	त्रण लाख पांचहजार श्रावक	त्रण लाख पचास हजार श्रावक
२५९	४	संयोगे हतो	संयोग हतो
२५९	८	सर्व छे	सर्वे छे
२५९	११	सर्वमां छे	सर्वेमां छे
२५९	१६	समकित	व्यवहार समकित
२६३	९	पांच लाख त्रीजहजार	पांच लाख त्रींसहजार
२६४	१२	बेलाखसत्तावनहजार	बेलाखसत्तावन हजा

पृष्ठांक	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२७६	१६	पोणोपल्या- पम	पोणोपल्योपम
२७८	१९	छत्रीससा- गरोपम	त्रीससागरोपम
२८३	२१	अढळक धन	अढळक दान
२८४	१	देहेरा	देहेरां
२८४	५	तरमता	तरतमता
२८९	९	व्याकण	व्याकरण
२९०	१४	सुरारस	सुधारस
२९०	१८	जाए	जाण
२९२	९	१९०९	१९१९
२९५	१०	तिनिरांध- कार	तिमिरांधकार
२९७	९	जतुं हेतु	जतुं हतुं
३००	१०	मोहपछिना	मोहपछिये
३११	४	तेनो	तेने
३१२	२०	गतिय	गतिये
३१७	८	जाणवा	जाणवा नहीं
३१९	२१	देवागनानी	देवांगनानी
३२३	१९	तिर्यचपंचेंद्रि अने सन्नि	तिर्यचपंचेंद्रि सन्नि
३२५	१८	ठांसीने	ठांसीनै
३२७	१	थायाथाय	थाय
३२८	२१	तेत्रीख	तेत्रीस
३२९	१९	तेनां	तेमां
३३०	७	भागे	भांगे
,,	,,	,,	,,
३३०	१९	मत्यके	मत्येक
३३१	७	देवगतिमा	देवगतिमां
३२९	३	तिरियगते	तिरियचगते
३२	१३	पज्जतले	पज्जतवे
	२१	मिनेश्वर	मिनेश्वरु
३३२	२३	तळे	टळे
३३३	१	१५	१३
३३३	३	१६	१४
३३१	९	१७	१९
३३४	६	आदिशब्द	आदिशब्दे
३३४	८	ऋदिनी	ऋद्धिनी
३३४	१८	स्फुर्णाओ	स्फुर्णाओये
३३५	१३	म्राह्यदृष्टि	बाह्यदृष्टि
३३६	११	जेणे	जिणे
३३६	१९	तेणे	तिणे
३३७	३	आत्मस्वप- रुमां	आत्मस्वरुपमां
३३७	५	वळीचालाछे	वळी चावाछे
३३९	१	जा कवहु	जो कवहु
३३९	१३	मत्यक्ष	मत्यक्ष
३३९	२२	खायछे	जायछे
३४१	११	गवेपण	गवेपणा
३४४	१७	करी	कही
३४६	२	विपयक्त	विपयरक्तपणे
३४६	२३	नपातौ	नपावै
३४७	११	जावत्यागी	भावत्यागी
३४९	१	अचेनता	अचेतनता
३५२	१४	त्रिभोगी	विभागी
३५३	७	साक्षत पर- मात्मा	साक्षात् पर- मात्मा
३५५	७	राहित छे	सहित छे
३५५	१९	सुतीमग	सुतीमप
३५६	२	गुणडे	गुणछे
३६१	१७	मदेशे अने मदेशे	अने मदेशेमदेशे
३६४	९	करेपागां	करेवामां